"एक्सॉटिक, रोमांचक,
डार्क सस्पेंस से
भरा - एक शानदार नॉवेल"
कैम्पबेल आर्मस्ट्रांग
ज़हर
कॉलिन फाल्कनर

Table of Contents

ज़हर

कॉलिन फाल्कनर

कॉपीराइट

यह एक काल्पनिक रचना है। नाम, पात्र, स्थान और घटनाएँ या तो लेखक की कल्पना की उपज हैं या काल्पनिक रूप से प्रयुक्त की गई हैं, और काल्पनिक पात्रों का किसी भी जीवित या मृत व्यक्ति, व्यावसायिक प्रतिष्ठान, घटना या स्थान से कोई भी समानता पूरी तरह से संयोगवश है।
संशोधित संस्करण का कॉपीराइट © 2011 कॉलिन फाल्कनर के पास सुरक्षित है।
ईबुक संस्करण का कॉपीराइट © 2012 कॉलिन फाल्कनर के पास सुरक्षित है।
सर्वाधिकार सुरक्षित। लेखक और प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इस पुस्तक के किसी भी भाग का उपयोग या पुनरुत्पादन किसी भी प्रकार से नहीं किया जा सकता है, सिवाय आलोचनात्मक लेखों या समीक्षाओं में शामिल संक्षिप्त उद्धरणों के।

प्रस्तावना

अगस्त 1973

दिल्ली

रेने बुडजिंस्की ने लोक अभियोजक के शुरुआती भाषण का एक शब्द भी नहीं सुना। वह वाराणसी में बीते उन निर्णायक क्षणों को याद कर रहे थे और खुद से बार-बार यही सवाल पूछ रहे थे कि क्या यह सब कुछ सार्थक था। पिछला साल अंतहीन सा लग रहा था, इस दिन का इंतज़ार करते-करते शायद यह बलिदान सार्थक हो सके।

उसने अपने सामने बैठे आदमी के सिर के पिछले हिस्से को घूरकर देखा, और देखा कि पसीने की एक बूंद आदमी की पगड़ी के नीचे से निकलकर उसकी भूरी और झुर्रीदार गर्दन पर एक झुर्रीदार मार्ग बना रही है।

क्या इतना काफी था कि उन्होंने उसे जंजीरों में जकड़ दिया था, कि हत्याएं रुक गई थीं? वे उसके साथ क्या करेंगे? क्या कोई भी सजा काफी होगी?

उसने अपना सिर उठाया और भीड़ में मौजूद चेहरों को देखा। मिशेल अपनी कुर्सी पर झुका हुआ बैठा था, उसकी कलाइयाँ उसकी गोद में हथकड़ियों से बंधी थीं। वह सोच रहा था कि उसे कैसा महसूस हो रहा है। उलझन? डर? घबराहट? उसके चेहरे पर कोई भाव नहीं दिख रहा था।

मिशेल ने बुडजिंस्की की घूरती नजर को पहचान लिया और उसके होठों पर एक व्यंग्यात्मक, आधी मुस्कान आ गई।

लेकिन बुडजिंस्की ने इसे नहीं देखा। वह एक बार फिर अपने ख्यालों में खो गया था; धूसर नदी के ऊपर धुएं का एक गुबार उठा, उसे अपनी ही चीखों की आवाज सुनाई दी। एक साल से भी ज्यादा समय बीत चुका था, लेकिन उस घटना की भयावहता अभी भी उसकी यादों में ताजा थी।

उसे एहसास हुआ कि उसके बगल में बैठा आदमी उसे घूर रहा है। लकड़ी की बेंच पर उसके हाथ मुट्ठी में कस गए थे और उसका शरीर गुस्से से कांप रहा था।

अगर भारतीयों ने उसे दोषी नहीं ठहराया तो वह खुद इस कमीने को मार डालेगा।

♦ ♦ ♦

कुछ मिनट पहले, पुरानी दिल्ली के मध्य में स्थित अपने कार्यालय की खिड़की पर खड़े होकर, न्यायाधीश चंद्र मिश्रा ने उस मूसलाधार मानसूनी बारिश को देखा था जिसने उस सुबह से पूरे शहर पर कहर बरपा रखा था। ऊपर आसमान में, तूफान छत पर तांबे की कीलों की ओलों की तरह बरस रहा था।

'पांच मिनट, जज साहब,' आधे खुले दरवाजे पर खड़े एक चेहरे ने उन्हें बताया।

उसने अनमने ढंग से सिर हिलाया और सड़क के उस पार देखता रहा। वह बारिश से मंत्रमुग्ध था। मानसून के दौरान कई बार ऐसा लगता था कि यह कभी खत्म नहीं होगी, लगातार बरसती रहेगी, जब तक कि सब कुछ बढ़ते पानी में डूब न जाए। लेकिन उसने खुद को याद दिलाया कि सभी मौसम, जीवन की तरह, गुजर जाते हैं।

दोपहर से ठीक पाँच मिनट पहले; भारतीय इतिहास के सबसे बहुप्रतीक्षित मुकदमे से ठीक पाँच मिनट पहले। न्यायाधीश मिश्रा को इस तरह के प्रचार की आदत नहीं थी। आम तौर पर, तीस हिज़ारी परिसर में स्थित उनका छोटा सा न्यायालय कक्ष लगभग खाली रहता था।

लेकिन आज का दिन अलग था।

पहली बात तो यह है कि आरोपी भारतीय नागरिक नहीं था। दरअसल, उसकी वास्तविक राष्ट्रीयता अभी तक स्थापित नहीं हो पाई थी। संभव है कि उसकी कोई राष्ट्रीयता ही न हो। उसका जन्म युद्धोत्तर काल के साइगॉन में हुआ था, वह एक फ्रांसीसी माँ और एक भारतीय पिता का नाजायज पुत्र था। उसने जिन अनेक पासपोर्टों का इस्तेमाल किया था, उनमें से कोई भी उसका अपना नहीं था।

दूसरे, हालांकि उस पर केवल एक विचित्र हत्या के प्रयास का मुकदमा चल रहा था, लेकिन पांच अन्य एशियाई देशों की पुलिस अपने-अपने देशों में अनसुलझे हत्याओं से उसे जोड़ने वाले सबूत इकट्ठा कर रही थी। इंटरपोल ने मनीला की तंग गलियों से लेकर कश्मीर की झीलों में नावों तक से शवों का संग्रह तैयार किया था। अधिकतर शवों का गला घोंटा गया था। कुछ के गले काटे गए थे।

ये सभी बातें इसी एक व्यक्ति से जुड़ी हुई थीं।

इस तरह का सनसनीखेज मामला अपने आप में ही प्रेस का ध्यान आकर्षित करने के लिए काफी था, लेकिन फिर वह लड़की भी थी; युवा और बेहद खूबसूरत। एक

फ्रांसीसी मॉडल जिसका चेहरा वोग और कॉस्मोपॉलिटन जैसी पत्रिकाओं के कवर पर छप चुका था।
अब इस कॉकटेल में एक और सनसनीखेज तत्व जुड़ गया था; जिस व्यक्ति को आरोपी का बचाव करने के लिए चुना गया था, वह पाषाण का नवाब था, जो भारत का सबसे प्रसिद्ध ट्रायल वकील था, एक ऐसा व्यक्ति जो जहां भी जाता था, वहां फ्लैशबल्ब चमकने का आदी था।
जी हां, अखबारों के लिए यह एक अच्छा दिन होगा।
फिर भी, दोपहर ठीक बारह बजे अपने न्यायालय में प्रवेश करते ही न्यायाधीश मिश्रा अपने अत्यंत आश्चर्य को दबा नहीं सके। उनकी पत्नी ने उन्हें समझाने की कोशिश की थी कि क्या होने वाला है, लेकिन उत्सुक और जिज्ञासु चेहरों की भीड़ को देखकर वे यह देखकर आश्चर्यचकित रह गए कि उनके हाथ कांप रहे थे।
अदालत का कमरा छोटा था, दीवारों के बीच केवल तीस कदम की दूरी थी, और एक छोर पर एक ऊंचा हिस्सा था जहाँ वह अब बैठकर अपने भरे हुए कक्ष का जायजा ले रहा था। कमरे में गर्मी लगभग महसूस की जा सकती थी। छत के पंखे धीरे-धीरे चल रहे थे, मानो किसी गाढ़े, भारी तरल को हिलाने की कोशिश कर रहे हों।
अधिकारियों ने अपने इस चर्चित कैदी के साथ कोई जोखिम नहीं लेना चाहा। अदालत में मौजूद हर व्यक्ति की तलाशी ली गई, उसके बाद ही उन्हें अदालत के चारों ओर तैनात संगीनों से घिरे सैनिकों के घेरे से आगे जाने की अनुमति दी गई। आरोपी व्यक्ति अपने चारों ओर मौजूद सशस्त्र सैनिकों के बीच लगभग अदृश्य सा था।
कई सीटें अखबारों और पत्रिकाओं के पत्रकारों से भरी हुई थीं। इनमें बैंकॉक पोस्ट, स्ट्रेट्स टाइम्स, पेरिस मैच, ले फिगारो और यहां तक कि न्यूयॉर्क टाइम्स के प्रतिनिधि भी शामिल थे। जज मिश्रा सोच रहे थे कि भारतीय न्याय व्यवस्था को क्रियान्वित होते देखकर उनकी क्या प्रतिक्रिया होगी।
उन्हें यह बात अविश्वसनीय लगी कि दिल्ली के सभी न्यायाधीशों में से जीवन ने उन्हें ही ऐसे सार्वजनिक समारोह की अध्यक्षता करने के लिए चुना था। वे जानते थे कि भावी पीढ़ियों के विधिज्ञ उन्हें उनकी तीक्ष्ण बुद्धि या वाक्पटुता के लिए याद नहीं रखेंगे; वे अपनी सीमाओं से भली-भांति परिचित थे, यहाँ तक कि उनसे सहज भी थे। अब तक।
उम्मीद के माहौल ने कमरे में अचानक नाटकीय सन्नाटा छा दिया। यहां तक कि सुबह

से तिस हिजारी की छत पर बरस रही बारिश भी अचानक रुक गई।
सब कुछ बीत जाता है। यहां तक कि मौसम भी, यहां तक कि जीवन भी।
पश्चिम की तरह न तो हथौड़ा पटका गया, न ही अदालत में अनुशासन बहाल किया गया। उन्होंने बस अपने मोटे, सींग के फ्रेम वाले चश्मे से लोक अभियोजक को देखा और सिर हिलाया।
मिशेल क्रिश्चियन का मुकदमा शुरू हो चुका था।

बंबई
जोगिंदर कृष्णन ने दर्द की एक और लहर को मुश्किल से दबाया। पिछले पांच वर्षों से जिस बिस्तर पर वह लेटे थे, दीवार पर पड़ती परछाइयों को देखकर उन्हें एहसास हो गया था कि अब समय आ गया है।
बिस्तर के पास ड्रेसिंग टेबल पर एक दर्पण था, जिसमें वह अपना ही प्रतिबिंब देख सकता था, जो कांच के उत्तल आकार के कारण विकृत हो गया था। उसमें देखना और अपने क्रोध और घृणा को स्वयं पर उंडेलना उसका सुख बन गया था। क्योंकि अब उसके भीतर जरा भी दया नहीं बची थी, स्वयं के लिए भी नहीं।
आईने में जो उसने देखा, उससे वह घृणा से भर गया; एक दुबला-पतला शरीर, जांघों से कटी हुई टांगें, बालों से रहित शरीर, मैली सफेद बनियान के नीचे किसी लड़की के दुबले शरीर जैसा। कभी वह लंबा-चौड़ा था, एथलीट जैसा शरीर था और उसकी त्वचा का रंग इतना हल्का था कि उसे इस बात पर गर्व था कि कई बार लोग उसे यूरोपीय समझ लेते थे। इससे उसे व्यापार और महिलाओं के साथ संबंध बनाने में मदद मिली थी।
बाद के वर्षों में उनका शरीर मोटा हो गया था, लेकिन उन्हें इस बात पर भी एक अजीब सा गर्व महसूस होता था, उनका बढ़ा हुआ वजन उनकी बढ़ती हुई दौलत का सबूत था। उन्होंने साइगॉन और बॉम्बे में लाभदायक दर्जी के व्यवसाय स्थापित किए थे, और वे महा अम्मा की गर्मी, धूल और गंदगी से दूर, छायादार पहाड़ियों में कहीं एक विला में आरामदेह सेवानिवृत्ति की कल्पना कर रहे थे।
लेकिन पिछले पांच वर्षों से वह इस जर्जर कमरे में अपंग अवस्था में पड़ा हुआ था, जो उसकी अब सीमित आर्थिक स्थिति के कारण उसके लिए सबसे अच्छा विकल्प था।
उस दिन साइगॉन में उसने सब कुछ खो दिया: अपने पैर, अपना पैसा, अपनी

आजीविका। उसने फिर कभी सिलाई का काम नहीं किया। वह छोटा कमीना। नरक में सड़ जाए वह!
सीढ़ियों पर कदमों की आहट सुनाई दी। उनका सबसे छोटा बेटा, रांची, चावल और पतली करी से भरी एक प्लेट लिए कमरे में धीरे-धीरे दाखिल हुआ। जोगिंदर मुश्किल से उठकर बैठ पाया। लड़का उसे देखता रहा, मानो अपने चेहरे पर घृणा के भाव छिपाना न चाहता हो।
'मैं आपका दोपहर का भोजन ले आया हूँ, पिताजी।'
'जी हां, जी हां। इसे नीचे रख दो।'
लड़के ने प्लेट को बिस्तर के पास वाली मेज पर गिरा दिया, जिससे कुछ मांस का स्टू फर्श पर गिर गया।
'सावधान रहो, बेवकूफ!'
जी पिताजी।
'यहाँ से चले जाओ!'
लड़के ने कंधे उचकाए और चला गया।
बच्चे! जोगिंदर ने सोचा। बोझ और अभिशाप। उसके बेटे निकम्मे थे। एक समय था जब वह उन्हें सड़क पर छोड़ देता। अब उनके पास उन्हें रखने के अलावा कोई चारा नहीं था। पत्नी की मृत्यु के बाद अब उसके काम और खाना कौन बनाएगा?
जैसे ही उसने खाना उठाने के लिए हाथ बढ़ाया, उसके पैरों में तेज़ दर्द हुआ। वह हांफने लगा और बिस्तर के लोहे के फ्रेम को कसकर पकड़ लिया, उसके माथे पर अचानक पसीना आ गया। इतने वर्षों बाद भी, वे दो गोलियां हर दिन उसके शरीर को नए सिरे से चीर रही थीं। वह खुद को बार-बार मर जाने की इच्छा करते हुए पाता था। उसे याद नहीं था कि आखिरी बार कब वह सुबह निराशा की भावना के बिना उठा था। लेकिन अपनी कब्र में आराम करने से पहले ही उसे इस बात की अंतिम, धीमी संतुष्टि का एहसास होने लगा कि वह भी मर चुका है। गिरफ्तारी के बाद से जोगिंदर ने इसके अलावा कुछ नहीं सोचा था। उसने अखबारों में छपी हर बात पढ़ डाली थी। उसे इस बात से घिन आती थी कि कुछ अखबारों में उसे किसी नायक की तरह पेश किया गया था।
उन्हें बस एक ही बात का अफसोस था कि वे स्वयं दिल्ली नहीं जा सके, क्योंकि उनके अपंग पैरों ने यात्रा को असंभव बना दिया था। उन्होंने खुद से वादा किया कि

जिस दिन उन्हें फांसी दी जाएगी, उस दिन वे अपने लिए एक बोतल आयातित फ्रांसीसी शैम्पेन खरीदेंगे और अपने बेटे की फांसी के समय जश्न मनाएंगे।
वह अपने स्वाद के हर पल का आनंद लेता था ताकि जब भी दर्द बहुत बढ़ जाए तो वह उसे फिर से चख सके, और यह उसे उन लंबे मिनटों और घंटों को सहन करने में मदद करता था जब तक कि अंततः उसके जीवन के टुकड़ों पर पर्दा न पड़ जाए।

दिल्ली

जैसे ही लोक अभियोजक ने अपना प्रारंभिक भाषण देना शुरू किया, पाषाण के नवाब अपने पूरे ठाठ-बाठ के साथ तीस हिजारी पहुंचे, उनके पीछे सहायकों और समाचार पत्रकारों की एक कतार थी, मानो कोई धूमकेतु अपनी पूंछ की तरह चल रहा हो।
न्यायाधीश की पीठ के दाहिनी ओर जल्दबाजी में खाली की गई कुर्सी की ओर बढ़ते हुए, उसने अपनी ओर झुकी हुई निगाहों के प्रति उदासीनता का दिखावा किया।
घबराया हुआ लोक अभियोजक अपने भाषण में लड़खड़ा गया। मामला अभी शुरू ही हुआ था और उसने पहले ही अपना दांव खेल दिया था।
नवाब दुबले-पतले, सांवले और वाक्पटु थे, उनके घने बाल माथे से सीधे पीछे की ओर कंघी किए हुए थे। एक भारतीय के लिए वे असाधारण रूप से गोरे थे, ऐसे व्यक्ति जिनके प्रति अधिकांश भारतीय सहज रूप से आदर भाव रखते थे। वे नए भारत के संस्थापकों में से एक थे, संविधान के रचनाकार थे और नेहरू के घनिष्ठ मित्र थे। वे गांधी को जानते थे; गांधी उन्हें पसंद नहीं करते थे।
अदालत कक्ष का जायजा लेते हुए उनके चेहरे पर शिकन आ गई, मानो किसी रईस को अपने दासों की झोपड़ियों के पास से गुजरते हुए गंदगी की बदबू आ रही हो। वे हत्या के प्रयास जैसे जघन्य मामले में शायद ही कभी हाथ डालते थे।
उन्होंने मुकदमे से पहले की सुनवाई में कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई थी और मामले की बारीकियों से भी वे नाममात्र ही परिचित थे। लेकिन भारत में ऐसी लापरवाही का कोई महत्व नहीं था। देखने में भले ही वे कुलीन लगें, लेकिन नवाब एक ऐसे बदमाश थे जो तीखे और क्रूर जिरह करने में माहिर थे, जिससे पुख्ता सबूत भी हास्यास्पद लगने लगते थे।
जब वह बाहर पहुंचे तो एक विदेशी पत्रकार ने उनसे पूछा, 'आप इस मामले में क्यों शामिल हैं?'

उन्होंने कहा था, 'क्योंकि पुलिस का व्यवहार शर्मनाक रहा है। उनके अधिकांश सबूत विदेशी पुलिस बलों के पत्रों और रिपोर्टों से बने हैं। इसका इस मामले से क्या संबंध है? राज्य ने मेरे मुवक्किल के खिलाफ अपने कमजोर मामले को विदेशों से निराधार आरोपों से बोझिल बनाकर उसे और मजबूत बनाने की कोशिश की है। मुझे लगा कि इस देश में न्याय की पवित्रता की रक्षा के लिए इस व्यक्ति का बचाव करना मेरा कर्तव्य है।'

सच तो यह है कि उसके इरादे इतने नेक नहीं थे। वह इस मामले की ओर ऐसे खिंचा चला गया था जैसे कोई मक्खी बीट की ओर खिंची चली जाती है, क्योंकि वह जानता था कि इससे जनता का पूरा ध्यान आकर्षित होगा। उसे उम्मीद थी कि इंदिरा गांधी उसे उच्च न्यायालय में नियुक्त कर देंगी। जब वह मिशेल क्रिश्चियन से कुछ ही फीट की दूरी पर बेंत की पीठ वाली कुर्सी पर बैठा, तो उसने अपने मुवक्किल की ओर एक नज़र भी नहीं डाली। क्योंकि सच में, उसे उसकी कोई परवाह नहीं थी।

अब यह उनका शो था।

पेरिस

रोलैंड फोरगेट फ्रांस के, और शायद पूरे यूरोप के, सर्वश्रेष्ठ प्लास्टिक सर्जनों में से एक थे। वे सेंट जेरोम अस्पताल के बर्न यूनिट से जुड़े थे और अपने छोटे से करियर के दौरान उन्होंने चेहरे के ऊतकों के पुनर्निर्माण में कई ऐसी तकनीकों का आविष्कार किया जिन्हें क्रांतिकारी माना गया।

किसी भी मरीज़ के लिए चेहरे का विकृत हो जाना एक त्रासदी थी। लेकिन निजी तौर पर उन्हें उन मरीज़ों के साथ काम करने में एक अनोखी पीड़ा का अनुभव होता था जो चोट लगने से पहले बेहद खूबसूरत थे। अपनी सारी विशेषज्ञता के बावजूद, वे जानते थे कि प्रकृति ने जो बनाया था, उसे वे कभी भी हूबहू नहीं बना सकते।

कमरे में प्रवेश करने से पहले उन्होंने खुद को दृढ़ किया। अपने कई सहकर्मियों के विपरीत, उनके लिए अपने काम के प्रति तटस्थ रहना मुश्किल था। यही कारण था कि उन्होंने जले हुए पीड़ितों के साथ काम करना चुना था; कॉस्मेटिक सर्जरी में उनकी कोई रुचि नहीं थी। उन्हें दिखावे में कोई दिलचस्पी नहीं थी, केवल उपचार में।

उनकी मरीज बिल्कुल शांत लेटी हुई थी, उसका सिर पट्टियों से लिपटा हुआ था। दोपहर का समय था और तेज धूप को रोकने के लिए खिड़कियों पर पर्दे लगे हुए थे,

लेकिन वह बिस्तर की चादर पर उसके दाहिने हाथ की चिड़िया जैसी घबराहट भरी हरकतों से समझ गया था कि वह जाग रही है।
वह बिस्तर के किनारे बैठ गया। अपने द्वारा किए गए सभी ऑपरेशनों के बाद भी, इस सच्चाई के पल के करीब आते ही उसे एक अजीब सी घबराहट महसूस होने लगी। उसने उसके चेहरे के बचे हुए हिस्से के साथ यथासंभव सर्वोत्तम प्रयास किया था, लेकिन उसने उसे बहुत अधिक उम्मीद न रखने की चेतावनी दी थी। इस अवस्था में, शायद चेहरे का ठीक से काम करना ही उनके लिए सबसे अच्छी उम्मीद हो सकती थी।
उसने वोग पत्रिका के फ्रेंच संस्करण के मुखपृष्ठ से फटी हुई उस लड़की की तस्वीर देखी थी और असहनीय दुख से भर गया था। ऐसी सुंदरता कितनी नाजुक होती है! उसने सावधानीपूर्वक पट्टियाँ हटाईं और परिणाम देखकर संतुष्ट हो गया। उसे संदेह था कि वह इस बात से सहमत होगी। अगर उसे दाहिनी ओर से देखा जाए, तो वह अब भी सुंदर थी, क्योंकि उसके चेहरे का आधा हिस्सा गर्मी के संपर्क में नहीं आया था। लेकिन बाईं ओर से देखें, तो वह किसी मोम की मूर्ति जैसी लग रही थी जिसे आग के बहुत पास रख दिया गया हो। कच्ची और सूजी हुई त्वचा की लालिमा तो फीकी पड़ जाएगी, लेकिन वह जहाँ भी जाएगी, लोग उसे घूरेंगे; पहले जैसी निगाहों की उसे आदत नहीं थी।
काश उसके पास काम करने के लिए और अधिक संसाधन होते।
उसे लगा था कि वह दर्पण मांगेगी और जब उसने ऐसा नहीं किया तो वह आभारी हुआ।
'धन्यवाद, रोलैंड।' शब्द लड़खड़ा रहे थे, उसके मुंह के एक तरफ के निशान के कारण उसकी वाणी अस्पष्ट हो गई थी।
‘शायद और छह महीने। हम और सर्जरी करने की कोशिश कर सकते हैं...’
'हां, शायद।' उसने नज़रें फेर लीं। 'आज से मुकदमा शुरू हो रहा है। मुझे लगता है कि अब मुझे रिहा करने का समय आ गया है।'

दिल्ली
तीस हिजारी अदालत में, लोक अभियोजक मोहिंदर सिंह ने खुलेआम आक्रोश भरी निगाहों से पाषाण के नवाब के प्रवेश को देखा, मानो कोई महाराजा अपने सिंहासन

कक्ष में प्रवेश कर रहा हो। उन्हें पता था कि सबकी निगाहें नवाब की ओर थीं; और कोई भी उनकी बात नहीं सुन रहा था।
उन्हें इसकी पहले से ही आशंका थी।
मोहिंदर सिंह युवा, जोशीला और बेहद दुबला-पतला था। उसकी सबसे खास बात उसके मोटे, गहरे लाल रंग के चश्मे थे, जिनसे उसका चेहरा उल्लू जैसा तेज दिखता था। उसने ढीली काली पतलून और काले सूती कपड़े का कोट पहना हुआ था, जिसकी कलाई फटी हुई थी। उसके कंधों के बीच के कपड़े पर पसीने के निशान साफ दिख रहे थे। उसकी नीली पगड़ी टेढ़ी थी और उस पर नमी के धब्बे थे।
इसके विपरीत, नवाब ने भूरे रंग की धारीदार पतलून और नीले रंग की सिले-सिलाए सर्ज जैकेट पहन रखी थी, जो देखने में बिल्कुल सलीकेदार लग रही थी। इससे भी अधिक अप्रिय बात यह थी कि उनका प्रतिद्वंद्वी दरबार के उमस भरे वातावरण में सहज प्रतीत हो रहा था, मानो उनकी उच्च जाति सार्वजनिक रूप से पसीना दिखना बर्दाश्त न करती हो।
नवाब को अपनी सीट पर जाने की कोई जल्दी नहीं थी। मोहिंदर सिंह ने खुद को दूसरी तरफ देखने के लिए मजबूर किया और अपना प्रारंभिक भाषण जारी रखा, हालांकि वह जानते थे कि वे वास्तव में खुद से ही बात कर रहे थे।

भाग एक

एड्रिएन 1946-52

अध्याय 1

Saigon

जून 1946
जून की उमस भरी दोपहर थी, बरसाती मौसम का समय था। बारिश की बूँदें आर्केड

की छत पर पड़ रही थीं, जिससे सड़क की नालियाँ भर गईं और टूटे-फूटे फुटपाथों पर पानी फैल गया। एड्रिएन क्रिश्चियन की नीली फ्रॉक कीचड़ से सनी हुई थी। वह छाता पकड़े हुए, लोहे के शटर वाली दुकानों के पास से तेज़ी से गुज़री।

एड्रिएन बेहद खूबसूरत थी। उसके चेहरे की बनावट बहुत ही सलीके से गढ़ी हुई थी, और उसके लंबे, नीले-काले बाल उसकी शान को दर्शाते थे। वह अपने सिर को हल्के से हिलाते हुए उन्हें अपने कंधे पर पीछे की ओर उछाल लेती थी, मानो कोई युवा घोड़ी हो। हालांकि वह काफी लंबी थी, फिर भी उसकी चाल में एक ऐसी नज़ाकत और सहजता थी जो उसे कुदरत के इस तोहफे का पूरा फायदा उठाने देती थी। उसकी त्वचा संगमरमर जैसी पीली थी, लेकिन उसकी आंखें चमकीली हरी थीं, मानो उसके चेहरे पर मलाई जैसे रेशम पर जड़े पन्ना हों।

कॉन्वेंट स्कूल की ननें उसके लिए लगातार प्रार्थना करती रहती थीं।

वह एक संकरी गली में मुड़ी और सिख मसाला व्यापारी की छोटी सी दुकान के बाहर रुक गई, इलायची, हल्दी और सौंफ की तेज़ गंध ने उसकी इंद्रियों को झकझोर दिया। उसने ऊपर देखा। सड़क से ऊपर जाने वाली संकरी लकड़ी की सीढ़ियों के ऊपर एक छोटा सा हाथ से लिखा हुआ बोर्ड लटका हुआ था:

जे.के.एस. कृष्णन, दर्जी

उसने अपने पर्स से कागज का एक टुकड़ा निकाला, जिस पर उसके पिता की साफ-सुथरी लिखावट में एक नोट लिखा था। 'यही वह नोट है,' उसने मन ही मन बुदबुदाया। उसने छाते से पानी झाड़ा और सीढ़ियों से ऊपर चली गई।

उस उमस भरी दोपहर जब वह उसके छोटे से कार्यशाला में दाखिल हुई, तो जोगिंदर कृष्णन एक पुरानी पैर से चलने वाली सिलाई मशीन पर झुके हुए थे, और एक सूती ब्लाउज़ सिल रहे थे, जिसे एक फ्रांसीसी कप्तान ने अपनी पत्नी के लिए बनवाया था। उन्होंने ऊपर देखा और खुली प्रशंसा के साथ उसे निहारने लगे। उनके चेहरे पर एक हल्की सी मुस्कान थी, जो उन्होंने महाशय क्रिश्चियन की उपस्थिति में कभी नहीं दिखाई होती।

'क्या मैं आपकी मदद कर सकता हूँ, मैडम?' उनकी आवाज़ मखमली कोमल थी, और वे फ्रेंच में स्पष्ट लहजे में बोलते थे।

'मैं एक ड्रेस जैकेट लेने आई हूँ,' एड्रिएन ने कहा। 'महाशय इमैनुअल क्रिश्चियन के लिए।'

जोगिंदर ने वर्कबेंच से चमड़े की जिल्द वाली एक छोटी नोटबुक उठाई और नाम ढूंढने का नाटक करते हुए पन्ने पलटने लगा। असल में, उसे इमैनुअल क्रिश्चियन अच्छी तरह याद था। एक सफ़ेद बालों वाला फ्रांसीसी, जो उसे ऐसे निर्देश देता था मानो वह 'लेस जॉन्स' में से एक हो। घमंडी कमीना।

‘अहा, हाँ। महाशय क्रिश्चियन। सफेद ड्रेस जैकेट।’

मेरे पिता ने कहा था कि यह आज तैयार हो जाएगा।

जोगिंदर ने कहा, 'मैंने इसे आज सुबह ही पूरा किया। बस एक पल।' वह एक छोटे से पिछले कमरे में चले गए।

एड्रिएन उसे देखती रही। उसने सोचा था कि वह नीचे की दुकान में भारतीय मसाला व्यापारी की तरह धोती और रेशमी पगड़ी पहने होगा। लेकिन जोगिंदर कृष्णन ने पश्चिमी पोशाक पहनी थी; सफेद सूती पतलून, खुली गर्दन वाली कमीज़ और पश्चिमी जूते। वह उसे बिल्कुल भी एशियाई नहीं लगा। वह... खैर, एक लैटिन जैसा लग रहा था। वह उन फ्रांसीसी अधिकारियों की तरह सुंदर नहीं था जिनके साथ उसने कारवेल नृत्य किया था; बल्कि वह - सुंदर था। हाँ, यही सही शब्द था। उसके चेहरे पर वैसी ही शांत अभिव्यक्ति थी जैसी उसने मंदिरों में मूर्तियों के चेहरों पर देखी थी। उसकी त्वचा अविश्वसनीय रूप से चिकनी और बहुत हल्की थी, जैसे कॉफी का रंग। उसकी आँखें बड़ी और भूरी थीं, और उसके हाथ नाजुक थे, लंबी, नुकीली उंगलियों वाले।

कुछ क्षण बाद वह फिर से प्रकट हुआ और एड्रिएन ने एक बार फिर उदासीनता का भाव दिखाया।

‘मैडमोजेल?’

वह मुड़ी। उसके हाथों में भूरे कागज का एक बड़ा सा पैकेट था। उसने उसे उसकी ओर बढ़ाया। उसकी निगाहें स्पष्ट थीं।

एड्रिएन शरमा गई। 'तुम क्या देख रहे हो?'

“मुझे माफ़ करना,” उसने धीरे से कहा। “लेकिन तुम अब तक देखी सबसे खूबसूरत चीज़ हो।” उसने उसे पैकेट पकड़ाया और अपनी उंगलियों को उसकी उंगलियों से छुआया। एक पल के लिए उनकी नज़रें मिलीं। एड्रिएन घबराहट से उसे देखती रही, जैसे नग्न हो गई हो।

उसने पार्सल लिया और पूरी तरह से घबराई हुई हालत में दुकान से भाग गई।

♦ ♦ ♦

'आज रात तुम चुप हो, एड्रिएन।'

जी पिताजी।

'क्या बात है? तुमने तो पूरी शाम एक शब्द भी नहीं बोला।'

'कुछ नहीं, पिताजी।'

इमैनुअल क्रिश्चियन ने अपनी प्लेट एक तरफ हटा दी और नैपकिन से अपनी ठुड्डी पोंछी। वह एक अनुशासित व्यक्ति थे और उन्हें कोई भी ऐसी परिस्थिति नापसंद थी जो उनके जीवन के संतुलन को बिगाड़ दे। उनकी बेटी का उदास रहना उनके स्वभाव के विपरीत था। वास्तव में, उन्हें अक्सर उसकी वाक्पटुता बोझिल लगती थी, खासकर खाने के समय।

वह लंबा, मजबूत शरीर वाला, लोहे जैसे भूरे बालों वाला व्यक्ति था, जिसके होंठों के कोनों पर गहरी लकीरें हमेशा की तरह गुस्से से सिकुड़ी रहती थीं। उसकी चाल अकड़ी हुई थी, मानो वर्षों के कठोर आत्म-अनुशासन ने उसके भीतर तक कठोरता भर दी हो। वह सार्वजनिक सेवा में पदोन्नति पाते हुए साइगॉन में सूचना एवं प्रचार कार्यालय का निदेशक बन गया था। उसके करियर ने उसके भीतर दो दृढ़ विश्वासों को मजबूत किया था: व्यवस्था का महत्व और अपनी संस्कृति की अंतर्निहित श्रेष्ठता।

माई ओंग, जो एक उम्रदराज महिला थीं, ने अपनी थाली उठाई और रसोई में चली गईं। कमरे में सन्नाटा पसरा हुआ था, सिवाय फ्रेंच खिड़कियों से आती झींगुरों की भनभनाहट और एड्रिएन द्वारा अपनी थाली में चिकन का एक टुकड़ा इधर-उधर करते समय चांदी के बर्तनों की हल्की झंकार के। इमैनुअल क्रिश्चियन ने आह भरी, अपनी कुर्सी पर पीछे झुक गए और माई ओंग के अपने कॉन्यैक के साथ वापस आने का इंतजार करने लगे।

वह अपनी बेटी से प्यार करता था, हालाँकि उसके साथ रहना उसे पसंद नहीं था। उसकी लगातार बकबक से वह चिढ़ जाता था और उसकी चुप्पी से असहज महसूस करता था। उसे इस बात से कुछ राहत मिली कि अब वह लगभग उस उम्र की हो गई थी जब वह उसके लिए एक उपयुक्त जीवनसाथी ढूंढ सकता था।

एड्रिएन ने अचानक चाकू और कांटा अपनी प्लेट पर गिरा दिया। शांत कमरे में उसकी आवाज़ किसी दराज के गिरने जैसी गूंजी।

'एड्रीएन?'

‘मुझे अच्छा नहीं लग रहा है। मुझे लगता है कि मुझे अपने कमरे में जाकर लेट जाना चाहिए।’ उसने अपना रुमाल मेज पर फेंका और खड़ी हो गई।
इमैनुएल भी उछल पड़ा। 'क्या मैं डॉक्टर को बुलाऊं?'
‘नहीं, यह तो बस...’ एड्रिएन को एक विचार आया। ‘...बस एक महिला की समस्या है।’
‘ओह... बिल्कुल... अच्छा, शुभ रात्रि, एड्रिएन।’
‘शुभ रात्रि, पिताजी।’ उसने उनके गाल पर हल्का सा चुंबन किया और कमरे से बाहर चली गई।

♦ ♦ ♦

एड्रिएन ने अपने बेडरूम का दरवाजा बंद किया और एक लंबी आह भरकर अपने अंदर के तनाव को दूर होने दिया। वह अपनी ड्रेसिंग टेबल के पास गई और अपने बालों से क्लिप निकालकर उन्हें कंधों पर फैला दिया।
‘अरे बूढ़े मूर्ख,’ उसने अपनी परछाई से बुदबुदाते हुए कहा, ‘तुम मुझे घुटन महसूस करा रहे हो।’
एड्रिएन के शयनकक्ष से बगीचा दिखाई देता था। उसकी खिड़की के बाहर बरामदे में बोगनविलिया के फूल खिले हुए थे, और रात की हल्की हवा से शाखाओं के हिलने पर एड्रिएन उनकी खुशबू को महसूस कर रही थी। कमरे में चिपचिपी गर्मी थी। एड्रिएन ने लाइट बंद कर दी, अपने कपड़े उतार दिए और धीरे-धीरे हिलते मच्छरदानी के नीचे नग्न अवस्था में लेट गई। उसने अपने हाथ सिर के ऊपर फैलाए और धीरे से कराह उठी; एक हल्की, जानवरों जैसी आवाज़। उसके पेट में गहरा दर्द हो रहा था। उसे उस दोपहर मिले चिकने चेहरे वाले दर्जी का चेहरा बार-बार याद आ रहा था।
उसकी उंगलियाँ उसकी जांघ के अंदरूनी हिस्से की मखमली चिकनी त्वचा को छू गईं, और उसे स्कूल में होने वाली फुसफुसाहट भरी बातें और दूसरी लड़कियों द्वारा उससे किए गए वास्तविक और काल्पनिक कबूलनामे याद आ गए। पाप का आकर्षण उसे उत्तेजित और भयभीत कर रहा था। उसने खुद को एक पुरुष के साथ बिस्तर पर कल्पना करने की कोशिश की, सोचा कि कैसा महसूस होगा।
हर हफ्ते जब वह साइगॉन रॉयल में शाम के समय आयोजित होने वाले नृत्य समारोहों में युवा सेना अधिकारियों के साथ नृत्य करती थी, या जब उसे सर्कल स्पोर्टिफ में महत्वाकांक्षी राजनयिकों और उपनिवेशवादियों के साथ अनौपचारिक रूप से

इश्कबाजी करने का मौका मिलता था, तो उसकी कल्पनाएं नए सिरे से जागृत हो जाती थीं। उनमें से कोई भी उसकी कल्पनाओं को साकार करने में उसकी मदद करना चाहता था, लेकिन इमैनुअल क्रिश्चियन एक समझदार व्यक्ति थे और उन्होंने उसे कहीं भी अकेले नहीं जाने दिया।

अब जोगिंदर ने एक नया और मोहक मोड़ दिया था। उसने कल्पना की कि एक अंधेरा कमरा कमल की पंखुड़ियों से भरा है और उस पर गहरे लाल रंग का रेशमी बिस्तर बिछा है; कमरे में सितार की मधुर ध्वनि गूंज रही है और वातावरण अगरबत्ती की खुशबू से भरा है। वह बिस्तर पर लेटी हुई थी, ठीक उसी तरह जैसे वह अब थी, उसकी बाहें कामुक आलस्य में सिर के ऊपर उठी हुई थीं, उसके बाल तकिये पर पंखे की तरह फैले हुए थे।

पतले, रेशमी पर्दों के पीछे से जोगिंदर कमरे में दाखिल हुआ, उसका शरीर तेल से सना हुआ और रेशम की तरह चिकना था, उसकी त्वचा उसके पिता की ब्रांडी की तरह गहरी और भूरी थी। वह उसके बगल में बिस्तर पर लेट गया, उसके गालों, गर्दन, होंठों को चूमने लगा, उसके बालों को सहलाने लगा और उसके पूरे शरीर को कोमल चुम्बनों से ढक लिया।

बाकी की कल्पना रहस्य में विलीन हो गई, अकल्पनीय के धुंधले पर्दे के पीछे। जैसे-जैसे छवियां धुंधली होती गईं, वह उमस भरी, घुटन भरी गर्मी और एक अनाम लालसा के साथ अकेली रह गई।

वह रात भर करवटें बदलती रही। झींगुरों की कान फाड़ देने वाली आवाज़ से बचने के लिए उसने तकिया अपने सिर पर रख लिया। आखिरकार भोर होने से पहले उसे नींद नहीं आई।

♦ ♦ ♦

मैं चाहता हूं कि तुम मेरे लिए उस भारतीय दर्जी से मिलो।

एड्रिएन ने अपनी स्कूल की किताब से नज़रें ऊपर उठाईं। उसके चेहरे का रंग उड़ गया। 'पिताजी?'

इमैनुअल ने नीले मखमली स्मोकिंग जैकेट को आगे बढ़ाते हुए कहा, 'इसमें अस्तर में एक छेद है। और इस जेब को ठीक करने की ज़रूरत है।'

मैं इसे आपके लिए ठीक कर सकता हूँ।

‘तुम? तुम्हें तो बटन लगाना भी नहीं आता। इसे किसी भारतीय के पास ले जाओ।

सुबह स्कूल जाते समय तुम इसे वहाँ छोड़ सकते हो।'
'जी पिताजी,' एड्रिएन ने धीरे से कहा और नज़रें फेर लीं, उसे डर था कि उसकी आँखों का भाव उसकी पोल खोल देगा।

♦ ♦ ♦

जब जोगिंदर ने उसे अंदर आते देखा तो उसके चेहरे पर एक आनंदमय मुस्कान खिल उठी। 'बोनजोर, मैडमोजेल क्रिश्चियन!'
मेरे पिताजी इस जैकेट की मरम्मत करवाना चाहते हैं।
'ज़रूर।' उसने कपड़ा उठाकर उसकी अस्तर की जाँच की। 'यह मुश्किल नहीं है। मैं इसे सुबह तक उसके लिए तैयार कर दूंगा।'
जेब भी फटी हुई है।
'मैं इस पर ध्यान दूंगा।' वह फिर मुस्कुराया।
उसका दिल ज़ोर से धड़क रहा था। जाने का समय होते हुए भी वह हिचकिचाई। उसने खुद को कहते सुना, 'तुम तो बहुत होशियार हो। मैं तो एक बटन भी नहीं सिल सकती।'
उसकी निगाहें उसकी आंखों में गहराई से गड़ी हुई थीं। 'शायद मैं तुम्हें सिखा सकता हूँ।'
'शायद।' उसकी आवाज कर्कश थी।
'शायद जब आप जैकेट लेने आएंगे...'
उसका हौसला जवाब दे गया। 'मुझे अभी स्कूल जाना है,' वह हकलाते हुए बोली और दुकान से भाग निकली।
अगले दिन इमैनुअल क्रिश्चियन ने खुद जैकेट लेने का फैसला किया। एड्रिएन के वापस लौटने का कोई कारण नहीं था।
लेकिन हर दिन कैथोलिक स्कूल जाते और आते समय वह रू ले लोई पर स्थित उसकी दुकान के पास से गुज़रती थी और गली के आखिर में भारतीय मसालों के व्यापारी की दुकान के ऊपर लटके छोटे से हाथ से बने साइनबोर्ड को टकटकी लगाए देखती रहती थी। यह एक रोमांचक खेल था, यह जानते हुए कि उस अंधेरी सीढ़ी के ऊपर कुछ पापपूर्ण और वर्जित चीज़ छिपी है। वह रात भर जागती रहती और इस कल्पना में खोई रहती कि अगर वह कभी उन सीढ़ियों पर चढ़ गई तो क्या होगा।

♦ ♦ ♦

दोपहर के कुछ ही समय बीता था, लेकिन बारिश के कारण सड़कें पहले से ही गर्म थीं। वियतनामी स्कूली छात्राएं सफेद रेशमी पतलून पहने साइकिल से घर जा रही थीं और कैफे में पासे खड़क रहे थे जहां फ्रांसीसी सैनिक क्वात्रे-विंग्ट-एट-उन खेल रहे थे। हमेशा की तरह, एड्रिएन गली के प्रवेश द्वार पर रुक गई। उसने अपने होंठ दबाए, उसका एक जूता मिट्टी पर रगड़ खा रहा था।

उसने एक बहाना सोच रखा था कि अगर वह कभी दोबारा दर्जी की दुकान पर लौटी तो अपने पिता से क्या कहेगी। उसने खुद से कहा था कि वह ऐसा कुछ नहीं करेगी, यह तो बस एक मनोरंजक पहेली थी।

लेकिन अब जब उसके पास पूरी कहानी तैयार थी, तो अंदर जाने का प्रलोभन बहुत प्रबल था। अब उसे बस हिम्मत जुटाने की जरूरत थी।

उसने अपने कंधे पर टंगा थैला ठीक किया और गहरी सांस ली। अगर उसके पिता को कभी पता चल गया तो...

भाड़ में जाए वो घमंडी बूढ़ा आदमी। वह गली से बाहर निकल गई।

हमेशा की तरह, जब वह अंदर आई तो जोगिंदर अपनी वर्कबेंच पर बैठा था और एक मशीन पर झुका हुआ था। उसने उसे स्पष्ट आश्चर्य से देखा।

उसने उससे कहा, 'मैं अपनी पढ़ाई के लिए आई हूं।'

♦ ♦ ♦

वह आकर्षक और सौम्य स्वभाव के थे। सप्ताह में दो-तीन बार एड्रिएन स्कूल से घर लौटते समय सीढ़ियों से दौड़कर उस छोटी सी दुकान पर जाती और उनके साथ आधा घंटा सुई-धागे से काम करती। वह एक अनाड़ी छात्रा थी, लेकिन जोगिंदर एक धैर्यवान शिक्षक साबित हुए। उन्होंने उसे छूने की कोई कोशिश नहीं की, और एड्रिएन को राहत और निराशा दोनों महसूस हुई।

एक दोपहर, वे दोनों वर्कबेंच पर अगल-बगल बैठे थे और जोगिंदर दोहरी सिलाई की अपनी तकनीक का प्रदर्शन कर रहा था। उसकी उंगलियां फुर्तीली और अभ्यास से भरी हुई थीं।

‘यहाँ। अब तुम।’

'मैं नहीं कर सकता।'

‘एड्रीएन, तुम्हें कोशिश करनी चाहिए।’
उसने सुई उठाई और काम में जुट गई। उसे अपनी गर्दन के पिछले हिस्से के बारीक बालों पर उसकी गर्म सांसों का एहसास हो रहा था। उसने अपनी तर्जनी उंगली के सिरे को सुई से छेदना शुरू किया।
'ओह ...'
‘तुमने खुद को चुभो लिया है।’
'यह कुछ भी नहीं है।'
‘तुम्हें खून बह रहा है।’
जोगिंदर ने उसका हाथ अपने हाथ में इस तरह लिया, मानो किसी घायल चिड़िया को सहला रहा हो। फिर उसने उसकी तर्जनी उंगली अपने मुंह में डाली और खून की उस छोटी सी बूंद को चूस लिया। उसने ऊपर उसकी ओर देखा, उसकी विशाल भूरी आँखें उसकी आँखों में गहराई से गड़ी हुई थीं।
एड्रिएन उसे अपनी जीभ पर उंगली घुमाते हुए देख रही थी, उसके संगमरमर जैसे सफेद दांतों के बीच उसके होंठों का गुलाबी रंग उसे मंत्रमुग्ध कर रहा था। उसने उसका हाथ नीचे किया और उसे अपनी ओर खींच लिया। उसने अपने होंठ उसके होंठों से सटा दिए, और एड्रिएन ने उसकी जीभ की मधुर गर्माहट को अपने होंठों में महसूस किया। उसने उसे दूर धकेलने की कोशिश की, इसलिए नहीं कि वह उसे चूमना नहीं चाहती थी, बल्कि इसलिए कि वह उसे दर्द दे रहा था। इसके बजाय, जोगिंदर ने खुद को और भी जोश से उसके शरीर से सटा लिया, और उसकी कुर्सी पीछे की ओर फर्श पर गिर गई। वह कठोर लकड़ी के तख्तों पर पीठ के बल लेट गई, उसके शरीर के नीचे दबी हुई।
‘यहाँ नहीं,’ उसने हांफते हुए कहा।
जोगिंदर ने उसे उठाया और अपने बेडरूम में ले गया।
कमरे में फर्श पर एक लकड़ी का पलंग था, जिसके नीचे एक काम करने की मेज और दीवार के सहारे रखे कपड़े के कुछ थान रखे थे। उसने दरवाजा जोर से बंद किया और उसे बिस्तर पर फेंक दिया। उसका हाथ उसकी रेशमी ब्लाउज के बटनों को खींचने लगा।
‘एड्रीएन,’ उसने फुसफुसाते हुए कहा। ‘एड्रीएन, तुम बहुत खूबसूरत हो।’
वह खड़ा हुआ, और वह उसे अपने कपड़े उतारते हुए देखती रही। उसने पहले कभी

किसी पुरुष को नग्न नहीं देखा था, और कमरे की हल्की रोशनी में भी वह उसके खड़े लिंग के आकार को देखकर दंग रह गई। उसे यकीन था कि वह उसके अंदर कभी समा नहीं पाएगा। वह भागना चाहती थी, उस गंदे कमरे और अजीब गंध वाले बिस्तर से बाहर निकलना चाहती थी, लेकिन अचानक जोगिंदर उसके ऊपर आ गया।
'मैं तुम्हारे लिए इसे अच्छा बना दूंगा, एड्रिएन,' उसने फुसफुसाते हुए कहा। 'बहुत अच्छा।' उसने उसके स्कर्ट और पैंट को टटोला और फिर वह उसके पैरों के बीच लेट गया और जबरदस्ती उसके अंदर प्रवेश करने लगा।
एड्रिएन ने उसे दूर धकेलने की कोशिश की, लेकिन वह बहुत भारी था। यह बिल्कुल वैसा नहीं था जैसा उसने सोचा था। वह एक शिकार किए गए जानवर की तरह दर्द से कराह उठी और लुढ़कने की कोशिश की, लेकिन जोगिंदर ने उसकी पीड़ा को जुनून समझ लिया और अपने कूल्हों से फिर से उस पर झपटा। एड्रिएन चीख पड़ी।
जोगिंदर का चेहरा विकृत था, उसकी आँखों में ज़रूरत के सिवा कोई भाव नहीं था। उसकी उंगलियाँ उसके बालों में उलझी हुई थीं, उसका सिर पीछे की ओर खींच रही थीं। वह दर्द से बेहाल थी। यह खूबसूरत रहस्य हिंसा और अधिकार के एक छाया नाटक के अलावा कुछ नहीं था।
'तुम मुझे चोट पहुंचा रहे हो,' उसने हांफते हुए कहा।
'एड्रीएन,' जोगिंदर ने धीमी आवाज़ में कहा। 'एड्रीएन...'
'कृपया, आप मुझे चोट पहुँचा रहे हैं...'
'मैं तुमसे प्यार करता हूँ, एड्रिएन...'
यह सब शुरू ही हुआ था कि शुक्र है कि यह सब खत्म हो गया। जोगिंदर कुछ पल और उसके ऊपर कराहता रहा, फिर अकड़ गया और एक छोटी, तीखी चीख निकाली। उसे उसके शरीर का भारी भार अपने ऊपर महसूस हुआ।
सदमे और दर्द की लहरों से जूझते हुए, जो उसे पूरी तरह से जकड़ लेने वाली थीं, वह किसी तरह उसके नीचे से निकलने में कामयाब रही। उसने धीरे से एक कोहनी के बल खुद को ऊपर उठाया।
जोगिंदर उसके बगल में एकदम शांत लेटा हुआ था, एक हाथ फैलाए, बस उसकी छाती का लयबद्ध रूप से ऊपर-नीचे होना ही हलचल थी। उसके माथे पर पसीने की छोटी-छोटी बूँदें थीं। उसकी पलकें झपकीं और उसने संतुष्टि भरी धीमी सी आवाज़ निकाली। 'यह बहुत बढ़िया था, एड्रिएन।'

'मैं और अधिक चाहता हूँ।'
उसकी निगाहें उसकी ओर टिकी थीं। 'क्या?'
‘फिर से करो,’ उसने फुसफुसाते हुए कहा। उसने अपने कूल्हों को उसके ऊपर घुमाया और उसकी उंगलियों के नाखूनों ने उसके गाल पर बह रही पसीने की बूंद को छुआ। वह उसके शरीर से लिपटकर हिलने लगी।
'मैं नहीं कर सकता ...'
एड्रिएन ने अपने पैरों को सटाकर उसकी जांघों के बीच इस तरह लेट गई जैसे वह पुरुष हो और वह स्त्री। उसने अपने हाथों के बल उठकर अपने कूल्हों को धीमी, प्राचीन लय में हिलाना शुरू कर दिया। 'हाँ, तुम कर सकते हो।'
‘एड्रियान...’
मुझे यह फिर से चाहिए।
जोगिंदर हांफ उठा, उसकी युवा मांसपेशियों ने उसे जकड़ रखा था, उसे दबा रखा था। जैसे ही वह हिली, उसके स्तन उसकी छाती से छू गए। उसने महसूस किया कि वह फिर से उत्तेजित हो रहा है। 'यह तुमने कहाँ से सीखा?' उसने कहा।
‘फिर से,’ उसने फुसफुसाते हुए कहा। ‘इस बार धीरे से।’ उसके होंठ उसके होंठों पर आ गए, गर्म, कोमल और बेहद मीठे।

♦ ♦ ♦

इमैनुअल क्रिश्चियन ने अपनी नाक से चश्मा हटाया और गोद में रखी किताब को ज़ोर से बंद कर दिया। वह अपनी लाइब्रेरी में पंखों वाली कुर्सी पर बैठे थे। किताबों की अलमारियाँ चमड़े की जिल्द वाली किताबों से भरी थीं और उनके पीछे की सफेद दीवारों पर वैन गॉग और गौगुइन की प्रतिकृतियाँ टंगी थीं। उन्होंने नीले मखमली स्मोकिंग जैकेट पहनी हुई थी जिसे जोगिंदर ने उनके लिए सिला था।
एड्रिएन ने अपनी स्कूल की किताबें हॉल स्टैंड पर रखीं और पश्चाताप दिखाने के प्रयास में अपने हाथों को सामने की ओर जोड़कर पुस्तकालय में प्रवेश किया।
आप लगभग दो घंटे लेट हैं।
'माफ़ कीजिए, फादर। मैं गिरजाघर में था।'
इमैनुएल ने भौंहें चढ़ा लीं, वह असमंजस में था। 'कैथेड्रल?'
मैं मम्मा के लिए प्रार्थना कर रही थी। उन्हें गुज़रे दस साल हो गए हैं...

'हां, मुझे याद है।' अपनी मृत पत्नी का जिक्र सुनकर अब भी उन्हें असहज महसूस होता था।
मैंने उससे वादा किया था कि मैं इस सप्ताह हर दिन उसके लिए एक मोमबत्ती जलाऊंगा।
इमैनुएल को इसकी उम्मीद नहीं थी। उसका गुस्सा शांत हो गया। 'तुम्हें मुझे बताना चाहिए था। मैं लगभग पुलिस को तुम्हारी तलाश में भेज ही देता।'
'मुझे माफ कर दीजिए, पिताजी। मुझे बिल्कुल भी अंदाजा नहीं था कि आप चिंतित होंगे।'
'भविष्य में यदि आपको देर हो रही हो तो मुझे अवश्य बताएं।'
जी पिताजी।
इमैनुएल ने अपनी नाक पर चश्मा लगाया और फिर से पढ़ने लगा। 'बहुत अच्छा। आप जा सकती हैं।' उसने हाथ हिलाकर उसे विदा किया।
एड्रिएन कमरे से बाहर निकली। इसके लिए उसे बहुत हिम्मत जुटानी पड़ी; वह दौड़ना, नाचना, चीखना चाहती थी। वह अब छोटी बच्ची नहीं थी। वह एक औरत थी, और वह प्यार में थी।
बेचारे पिता! काश उन्हें पता होता!

♦ ♦ ♦

अगले दिन दोपहर को काले घने बालों वाली एक खूबसूरत फ्रांसीसी युवती भारतीय मसालों की दुकान के बगल वाली सीढ़ियों से ऊपर चढ़ी। बूढ़े सिख ने लकड़ी की सीढ़ियों पर कदमों की आहट सुनी और ऊपर से हंसी की आवाज सुनी। उसने चिड़चिड़ाकर अपनी दाढ़ी खुजाई और कुछ बुदबुदाया। फेरेंगी! वे सब सूअर थे!
जोगिंदर ने एड्रिएन को अपनी बाहों में भर लिया, उसके बालों की मनमोहक खुशबू को महसूस करते हुए, उसके युवा शरीर को अपने ऊपर खिंचाव महसूस किया। 'मुझे डर था कि तुम नहीं आओगी,' उसने धीरे से कहा।
मैं स्कूल से दौड़ता हुआ आया हूँ। जल्दी करो! हमारे पास ज्यादा समय नहीं है। मुझे गिरजाघर में होना है।
'बड़ा गिरजा?'
'मैं एक अच्छी कैथोलिक लड़की हूँ। क्या तुम्हें पता नहीं चलता? अब जल्दी करो -

मुझे बिस्तर पर ले चलो!'
जोगिंदर ने दुकान का दरवाजा बंद किया और एड्रिएन के पीछे-पीछे पिछले कमरे में चला गया। हरे रंग के शटर लगे हुए थे और कमरा अंधेरा और गर्म था। एड्रिएन पहले से ही उसके बिस्तर पर नग्न अवस्था में लेटी हुई थी, उसके पैर कमर तक मुड़े हुए थे। जोगिंदर को अपने सौभाग्य पर मुश्किल से ही विश्वास हो रहा था।
यह एक यादगार पल था। उसे न सिर्फ एक खूबसूरत फ्रांसीसी लड़की के साथ संबंध बनाने का मौका मिला, बल्कि फ्रांसीसियों के साथ भी संबंध बनाने का मौका मिला।

अध्याय दो

सितंबर 1946
नोट्रे-डेम बेसिलिका चौक में, डाक और टेलीग्राफ कार्यालय के सामने स्थित थी। पेरिस में स्थित अपने समकक्ष के विपरीत, यह एक छोटी, सादी इमारत थी जो फीकी लाल ईंटों से बनी थी। भिखारी सीढ़ियों पर जमा रहते थे, और वहाँ आने वालों से ईसाई धर्म में आस्था रखने की अपील करते थे।
एक दोपहर एड्रिएन कैथोलिक स्कूल से घर लौटते समय चौक पार कर रही थी, और रू ले लोई में प्रवेश करने के बजाय, धीरे-धीरे बेसिलिका की सीढ़ियों से चढ़कर गिरजाघर के ठंडे पवित्र स्थान में प्रवेश कर गई। वह काफी देर तक मुख्य हॉल में खड़ी रही, जब तक उसकी आँखें अंधेरे में अभ्यस्त नहीं हो गईं, फिर गलियारे से होते हुए आगे बढ़ी और धन्य वर्जिन मैरी की मूर्ति के नीचे एक बेंच पर बैठ गई। अंत में, वह घुटनों के बल बैठ गई और अपना सिर झुका लिया।
'हे ईश्वर,' वह सिसकते हुए बोली, 'कृपा करके ऐसा न होने दें। मैं कुछ भी करूँगी, कुछ भी। कृपया इसे मुझसे दूर कर दीजिए।' लेकिन वह जानती थी कि यह असंभव है। उसके मन में ईश्वर और उसके पिता का चेहरा एक जैसा था, और वह जानती थी कि उसके पिता क्या कहेंगे: 'अपने भारतीय प्रेमी को छोड़ दो।' और वह ऐसा कभी नहीं करेगी। कभी नहीं।
वह काफी देर तक कठोर पत्थर पर घुटने टेककर बैठी रही, मोमबत्तियों की टिमटिमाती रोशनी को देखती रही और निराशा को खुद पर हावी होने दिया। वह क्या कर सकती थी? उसके पिता कभी भी जोगिंदर को उसके लिए उपयुक्त जीवनसाथी

के रूप में स्वीकार नहीं करेंगे। वे उसे दूर भेजने की कोशिश करेंगे। ‘हे पवित्र माता,’ उसने बार-बार कहा, ‘कृपया इस चीज को दूर कर दीजिए।’
वह उठी और दोपहर की तेज धूप में बाहर चली गई।

♦ ♦ ♦

जब वह घर लौटी तो माई ओंग ने उसके लिए दरवाजा खोला। बूढ़ी औरत मुस्कुराई, जिससे उसके पान से सने दांत दिखाई दिए। 'फिर नमाज पढ़कर आई हो?'
एड्रिएन ने उसकी बात अनसुनी कर दी। वह उस बुढ़िया से नफरत करती थी। 'यह तुम्हारा काम नहीं है। मेरे पिता कहाँ हैं?'
‘उसने संदेश भेजा। आज रात ऑफिस में देर तक काम करना है। देखो, शायद कैथेड्रल में थोड़ी देर और रुकना ठीक रहेगा...’
एड्रिएन ने सोचा, 'उसे पता है। मेरे लिए चाय ले आओ। मैं बगीचे में रहूंगी।'
बुढ़िया रसोई की ओर चली गई, बूढ़ी चुड़ैल की तरह झुकी हुई। एड्रिएन ने अपनी किताबें हॉलस्टैंड पर रख दीं और बाहर चली गई। वह बरामदे में बैठकर केले के पेड़ों पर तोतों को उड़ते और खेलते हुए देखने लगी।
वह क्या करने वाली थी?
वह अब भी अपने शरीर द्वारा किए गए इस घिनौने धोखे को स्वीकार नहीं कर पा रही थी। उसने कभी सोचा भी नहीं था कि उसके नाजायज संबंध का कोई परिणाम भी हो सकता है और अब बहुत देर हो चुकी थी।
उसने सोचा, यहाँ चुपचाप बैठे रहने और इसे होने देने से कोई फायदा नहीं है। मुझे कुछ करना होगा।
वह दौड़कर ऊपर अपने बेडरूम में गई और ड्रेसिंग टेबल के सबसे ऊपरी दराज का ताला खोला। उसने दराज के पीछे हाथ डालकर अपना गहनों का डिब्बा निकाला। अंदर पन्ना और नीलम जड़े हुए सोने की एक छोटी अंगूठी थी। यह उसकी माँ की थी। उसने अंगूठी अपने पर्स में रखी और नीचे चली गई। माई रसोई के दरवाजे पर चांदी की ट्रे और चीनी चाय का बर्तन लिए खड़ी थी। उसने कहा, 'आपकी चाय।'
‘मुझे चाय नहीं चाहिए,’ एड्रिएन चिल्लाई।
'आप कहां जा रहे हैं?'
‘बाहर निकलो,’ एड्रिएन ने कहा और फिर वह चली गई।

♦ ♦ ♦

अगले दिन दोपहर को एड्रिएन ने बीमारी का बहाना बनाकर स्कूल से जल्दी छुट्टी ले ली। लेकिन सीधे घर जाने के बजाय वह चोलोन की ओर चल पड़ी, जो चीनी लोगों का इलाका है। उसके पर्स में पाँच हज़ार पियास्त्र थे और एक पता था जो उसकी एक सहेली ने कागज़ के टुकड़े पर लिखकर उसे दिया था।

चोलोन, साइगॉन का विकृत जुड़वां था। यह कभी एक अलग बस्ती हुआ करती थी, लेकिन झुग्गी-झोपड़ियों का विशाल जाल इतना फैल गया था कि दोनों की सीमाएं भेदना मुश्किल हो गया था। कहा जाता था कि चोलोन, शंघाई से भी ज़्यादा चीनी था, और कम से कम एक हॉलीवुड फिल्म निर्माता ने चीन पर आधारित एक महाकाव्य फिल्म की शूटिंग के लिए इसकी सड़कों को चुना था।

खस्ताहाल झोपड़ियों और दुकानों की कतारों के बीच, कीचड़ भरी गलियों में मोटे पेट वाले बच्चे आपस में झगड़ रहे थे। लोग सड़कों पर खाना खाते, ताश खेलते, अपना भविष्य बताते, दांत निकलवाते और यहां तक कि नहाते भी थे। भिखारी और कुत्ते नालियों में अगल-बगल बैठे रहते थे। कुली भारी बोझ के नीचे झुके हुए धीरे-धीरे चल रहे थे।

एड्रिएन को जो पता दिया गया था, वह सु वान हान पर था, जो रेसकोर्स के पास था। वहाँ से एक भीड़भाड़ वाली गली दिखती थी, जहाँ खोखली पसलियों वाले कुत्ते कूड़े के ढेरों में सूंघते रहते थे। सड़े हुए फलों की दुर्गंध और पास के मछली बाजार की खट्टी गंध से एड्रिएन ने घृणा से अपनी नाक सिकोड़ी।

जर्जर हो चुकी उस दुकान में मिट्टी के बर्तनों की लंबी कतारें लगी हुई थीं। वहां मृत प्राणियों की दुर्गंध फैली हुई थी। एड्रिएन सिहर उठी। लकड़ी के काउंटर पर चमगादड़ों और सांपों के सूखे हुए शव ढेर लगे हुए थे।

बाक सी एक प्राचीन टोंकिन चीनी महिला थी, जिसके बाल बिखरे हुए और भूरे थे, और उसके दांत पुराने मकबरों की तरह बड़े और पान के दाग से सने हुए थे। उसका चेहरा बंदर की तरह झुर्रियों से भरा और भूरा था। उसने गंदे नीले रंग के पायजामे पहन रखे थे।

वह एक छोटी सी मेज पर अजीबोगरीब जड़ों को ओखली और मूसल में पीस रही थी, तभी उसने ऊपर देखा। 'तुम्हें क्या चाहिए?' उसने फ्रेंच में चीख कर पूछा।

‘मुझे... मुझे... मदद चाहिए,’ एड्रिएन हकलाते हुए बोली।

वह उठी और पास आई। जैसे ही बूढ़ी औरत करीब आई, एड्रिएन ने देखा कि उसकी केवल एक ही आँख थी। दूसरी आँख बीमारी के कारण अंधी हो चुकी थी, और उसकी पुतली मोतियाबिंद की पीली-धुंधली झिल्ली से ढकी हुई थी। बूढ़ी औरत ने अपनी एक अच्छी आँख से एड्रिएन को देखने के लिए अपना चेहरा घुमाया।

‘मैं... मैं गर्भवती हूँ,’ एड्रिएन ने कहा।

बुढ़िया ने उसके पेट पर थप्पड़ मारा। 'बच्ची? हाँ?' उसने इशारा किया। 'बच्ची?'

'हां।' उसने गहरी सांस ली। 'मैं इससे छुटकारा पाना चाहती हूं।'

‘तुम्हारे लिए बुरी खबर है, मिस्सी,’ बूढ़ी औरत ने कहा। उसने अपना हाथ आगे बढ़ाया। ‘पैसे?’

एड्रिएन ने अपना पर्स निकाला और उसे पांच हजार पियास्त्र दिखाए।

‘तुम्हें इतना पैसा कहाँ से मिला?’

मैंने एक अंगूठी बेची।

बुढ़िया ने सिर हिलाया और कैंटोनीज़ में कुछ बुदबुदाई। 'तुम इंतज़ार करो,' उसने कहा और दुकान के पीछे अंधेरे में चली गई। जब वह लौटी, तो उसके हाथों में एक टूटा हुआ चीनी मिट्टी का प्याला था। उसने उसे एड्रिएन को ऐसे दिया जैसे वह कोई पवित्र पात्र हो। 'पियो,' उसने आदेश दिया।

एड्रिएन ने प्याला उठाया। उसमें मौजूद तरल पदार्थ भूरा-काला था और उसमें कब्र जैसी गंध आ रही थी। 'पियो,' बूढ़ी औरत ने दोहराया।

एक पल के लिए एड्रिएन ने कप को अपने होठों से लगाया, औषधि की दुर्गंध और जो वह करने वाली थी उसके ज्ञान से उसका पेट खराब हो गया।

उसने मदर सुपीरियर को फुसफुसाते हुए सुना, "यह एक घोर पाप है। इसके लिए कोई क्षमा नहीं हो सकती।"

'पीना!'

‘नहीं!’ उसने प्याला ज़मीन पर फेंक दिया। वह चकनाचूर हो गया और उसमें से तरल पदार्थ बुढ़िया के पैरों पर फैल गया। एड्रिएन मुड़ी और दुकान से भाग गई, उस गुस्सैल औरत की चीखें उसके कानों में गूंज रही थीं।

♦ ♦ ♦

सीढ़ियों पर जानी-पहचानी पदचाप सुनकर जोगिंदर उछल पड़ा। वह अपनी वर्कबेंच के

पास खड़ा होकर इंतज़ार करने लगा। ‘मेरी नन्ही कमल...’ उसने कहा। उसने उसे अपनी बाहों में भर लिया, पर उसने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। ‘तुम कहाँ थीं? मैंने तुम्हें लगभग एक सप्ताह से नहीं देखा।’
‘बस मुझे थाम लो, जोगी।’
उसका चेहरा संगमरमर की तरह पीला पड़ गया था। 'क्या हुआ?'
मैं गर्भवती हूँ।
'क्या?'
वह थोड़ा पीछे हट गई ताकि वह उसका चेहरा देख सके। 'मैं एक बच्चे को जन्म देने वाली हूँ। तुम्हारा बच्चा।'
जोगिंदर ने जबरदस्ती मुस्कुराते हुए कहा, 'यह तो बहुत बढ़िया है।'
उसने उसकी आँखों में देखा। 'क्या सच में?'
'बिल्कुल है। मैं तुमसे प्यार करता हूँ।'
'क्या आप करेंगे मुझसे शादी?'
'बिल्कुल।' उसके पिता तो इसकी इजाज़त कभी नहीं देंगे!
एड्रिएन ने अपनी बाहें उसकी गर्दन के चारों ओर लपेट लीं और उसे गले लगा लिया। 'जोगी, मुझे डर लग रहा है।'
‘सब ठीक है,’ उसने गुनगुनाते हुए कहा। ‘सब कुछ ठीक है।’
‘मैं तुमसे प्यार करती हूँ, जोगी।’
जोगिंदर ने उत्तेजित होकर उसे अपने करीब खींच लिया। पूरे हफ्ते उसने सिर्फ उसी के बारे में सोचा था। यह बुरी खबर थी, लेकिन अब उसे कुछ करने की ज़रूरत नहीं थी। उनके पास समय था। उसके पास समय था। 'रुको,' उसने फुसफुसाते हुए कहा।
‘बस मुझे पकड़ लो,’ उसने कहा।
‘ठीक है।’ जोगिंदर ने झूठ बोला और दरवाजा बंद कर दिया। वह उसे पीछे के छोटे से कमरे में ले गया, जहाँ उसका संकरा, लकड़ी का पलंग था। अंदर पहुँचते ही उसने अपने कपड़े फाड़ने शुरू कर दिए।
‘क्या तुम मुझसे प्यार करते हो?’ एड्रिएन ने उससे पूछा।
मैंने इससे ज्यादा किसी चीज से प्यार नहीं किया।
‘तुम इस बच्चे को चाहती हो, है ना?’
जोगिंदर ने उसका ब्लाउज खोल दिया। उसने विरोध करने की कोशिश नहीं की। 'हां,

मेरी जान, हां,' उसने फुसफुसाते हुए कहा और उसे वापस बिस्तर पर धकेल दिया।
नीचे, कामिल सिंह अपनी दुकान में एक स्टूल पर बैठे थे, दोपहर की उमस भरी गर्मी से बचने के लिए धातु के शटर नीचे गिरे हुए थे। उनकी गंभीर भूरी आँखें ऊपर की ओर घूम गईं जब उन्होंने अपनी छत के तख्तों को फिर से चरमराते हुए सुना। लगभग एक हफ्ते से दोपहरें शांत थीं। अब वह लड़की लौट आई थी। फेरेंगी!
वह दरवाजे के पास गया और सड़क पर थूक दिया।

♦ ♦ ♦

इमैनुअल क्रिश्चियन अपनी लाइब्रेरी में बैठे थे, उनकी गोद में चमड़े की जिल्द वाली एक किताब खुली पड़ी थी। एड्रिएन दरवाजे पर खड़ी उन्हें देख रही थी। पढ़ने वाले लैंप की हल्की रोशनी उनके करीने से कंघी किए हुए बालों में चांदी जैसे सुनहरे बालों को और भी खूबसूरत बना रही थी।
'पिता । । ।?'
इमैनुएल ने एक लंबी, दर्द भरी सांस ली। 'क्या बात है, बच्चे?'
'मुझे आपसे बात करनी है।'
उसने किताब को पटकते हुए बंद कर दिया। 'ठीक है। तुम्हें क्या परेशान कर रहा है?'
वह दिन भर इस पल के लिए खुद को तैयार करती रही थी और अब जब यह पल आ गया था, तो उसे नहीं पता था कि वह इसे निभा पाएगी या नहीं। उसकी क्या प्रतिक्रिया होगी? उसे याद नहीं था कि उसने अपनी माँ की मृत्यु के दस साल बाद से उसे कभी कोई भावना व्यक्त करते देखा हो।
उसके हाथ इतनी कसकर बंद थे कि उसे महसूस हो रहा था जैसे उसके नाखून उसकी हथेलियों को काट रहे हों। 'पिताजी, मैं...' शब्द उसके गले में अटक गए।
इमैनुअल उसे देखता रहा, उसका जबड़ा एक कठोर रेखा में जकड़ा हुआ था।
‘एड्रीएन, बस कह दो।’
'मुझे आपकी मदद की जरूरत है।'
‘यह क्या है? स्कूल?’
उसने सिर हिलाया। 'नहीं, स्कूल नहीं।'
‘चलो, बच्चे। बताओ तो सही!’
उसकी आँखों से आंसू बहने लगे, वे गर्म थे और उनकी आँखों में जलन हो रही थी। 'मैं

माँ बनने वाली हूँ!'
उसे क्रोध की आशंका थी; उसने प्रार्थना की थी कि किसी चमत्कार से वह उसे सांत्वना देने का प्रयास करे। उसने कल्पना की थी कि वह किस तरह प्रतिक्रिया दे सकता है, लेकिन उसे इस बात की बिलकुल भी उम्मीद नहीं थी कि कोई प्रतिक्रिया नहीं होगी।
इमैनुअल क्रिश्चियन वहीं अविचल बैठा रहा और एड्रिएन के आंसू रुकने तक इंतजार करता रहा। जब एड्रिएन ने दोबारा ऊपर देखा, तो उसका चेहरा पत्थर की तरह कठोर हो चुका था।
'कुछ बोलो!' वह उस पर चिल्लाई।
वह अपनी कुर्सी से उठा, साइडबोर्ड के पास गया और एक क्रिस्टल डेकैंटर से अपने लिए ब्रांडी डाली। काफी देर तक कमरे में केवल ब्रांडी के गुब्बारे में गाढ़े सुनहरे रंग के तरल के घूमने की ही हलचल सुनाई दे रही थी।
अंत में: 'यह कौन है?'
'उनका नाम है... जोगिंदर।'
'जोगिंदर? आपका मतलब...?'
वह ... पर रहता है।
'एक आदिवासी? तुम 'लेस जॉन्स' में से किसी एक के साथ सो रही थी?' उसने गिलास देवदार की लकड़ी के फर्श पर गिरा दिया और हाथ उठाकर उसकी ओर दो कदम बढ़ाए। एक पल के लिए उसे लगा कि वह उसे मारने वाला है। उसके पिता ने उसे कभी नहीं मारा था, कभी नहीं।
'वह वियतनामी नहीं है। वह भारतीय है। और मैं उससे प्यार करती हूँ!'
'प्यार? तुम्हें तो इस शब्द का मतलब भी नहीं पता! ये सब कब से चल रहा है मैडम?'
जब से मैंने जैकेट ली है...
'जैकेट? वो... वो दर्जी है?' उसने उसके बालों का एक गुच्छा पकड़ा और उसे ज़मीन पर पटक दिया। 'तू कुतिया! तू मूर्ख, एहसानफरामोश छोटी कुतिया!'
एड्रिएन ने ऊपर उसकी ओर देखा। उसकी कनपटी पर एक नस उभरी हुई थी। यह पहली बार था जब उसने उसे अपना आपा खोते देखा था और उसे जीत का एक सुखद रोमांच महसूस हुआ। आखिरकार उसने उस बूढ़े कमीने को उसकी उदासीनता से बाहर निकाल दिया था।

'मैं उससे प्यार करता हूं!'
‘अरे मूर्ख! तुम फ्रांसीसी हो! तुम एक श्वेत महिला हो! तुम कुलियों के साथ नहीं सोती!’
‘लेकिन मैं उससे प्यार करती हूँ!’ वह फिर से चिल्लाई।
‘बेशर्म छोटी वेश्या! तुम बिलकुल अपनी माँ जैसी हो!’
कमरे में काफी देर तक सन्नाटा छाया रहा। इमैनुएल को बहुत देर बाद एहसास हुआ कि उसने क्या कह दिया था।
'पिता ...?'
‘बाहर निकलो,’ उसने उस पर फुफकारते हुए कहा। ‘अपने कमरे में जाओ।’
'तुम्हारा क्या मतलब था ...'
'चले जाओ!'
एड्रिएन झट से खड़ी हुई। उसके घुटने कांप रहे थे। कमरे से भागने से पहले उसने एक बार पीछे मुड़कर देखा, और ठीक उसी समय उसने देखा कि उसके पिता ने साइडबोर्ड से अपनी और अपनी माँ की तस्वीर उठाई और पूरी ताकत से दीवार पर फेंक दी।

♦ ♦ ♦

अगली सुबह ऐसा लगा मानो कुछ हुआ ही न हो।
इमैनुएल बरामदे में लाल और बैंगनी बोगनविलिया की घनी मालाओं के नीचे बैठा था। सुबह की तेज़ धूप इमली के पेड़ों की पत्तियों से छनकर आ रही थी, बगीचा आखिरी खिले हुए फ्लेमबॉयंट फूलों से जगमगा रहा था। सागौन की मेज पर कड़क सफेद लिनेन का कपड़ा बिछा था। इमैनुएल दीवार से लगी एक कुर्सी पर बैठा था और गिवराल से माई ओंग द्वारा हर दिन ताज़ा खरीदे गए क्रोइसैन्ट में से एक खा रहा था। उसने एक साफ-सुथरा सफेद ट्रॉपिकल सूट पहना था और उसका पिथ हेलमेट चांदी की कॉफी पॉट के बगल में मेज पर रखा था।
वह ले फिगारो की एक सप्ताह पुरानी प्रति पढ़ रहा था।
एड्रिएन दूसरी कुर्सी पर बैठ गई और माई ओंग के उसके कप में गरमागरम काली कॉफी भरने का इंतज़ार करने लगी। उसने आसमान की ओर देखा। रूई जैसे घने बादलों की विशाल दीवारें समुद्र के ऊपर उमड़ रही थीं, मानो आसमान के हल्के नीले रंग को ढक रही हों। उसे दूर से गरजने की आवाज़ सुनाई दी, हालाँकि पूर्व दिशा में साफ़ आसमान में सूरज अभी भी चमक रहा था।

‘क्या तुम नाश्ता नहीं करना चाहती?’ इमैनुएल ने उससे पूछा।
'मुझे भूख नहीं है।'
इमैनुएल ने अपना चश्मा उतारा और कुर्सी पर पीछे झुक गए। उन्होंने कहा, 'मैं तुम्हें वापस फ्रांस भेज रहा हूँ।'
‘फ्रांस?’
मैं बच्चे को गोद देने का इंतजाम कर दूंगी। सबको लगेगा कि आप छुट्टी मनाने वापस गए हैं। बाद में आप वापस आ सकते हैं और ऐसा लगेगा जैसे कुछ हुआ ही नहीं था।
मैं फ्रांस वापस नहीं जाना चाहता।
'तुम्हें इसके बारे में पहले सोचना चाहिए था। तुमने जो बोया है, अब उसका फल तुम्हें भुगतना ही पड़ेगा।'
मुझे फ्रांस वापस क्यों जाना चाहिए?
मुझे लगा था कि यह बात स्पष्ट होगी। क्या आप साइगॉन में सबके सामने मुझे शर्मिंदा करना चाहते हैं?
क्या बस इतना ही आपके दिमाग में आ रहा है?
‘भले ही आप अपने अच्छे नाम को कोई महत्व न दें, लेकिन मैं देता हूँ। आप फ्रांस में बच्चे को जन्म देंगी और मैं उसे गोद लेने की व्यवस्था कर दूंगा।’
मैं ऐसा नहीं करूंगा।
'यदि तुम मेरी बेटी बनकर रहना चाहती हो, तो तुम्हें ठीक वही करना होगा जो मैं कहूँ।'
मैं जोगिंदर से शादी करना चाहती हूं।
इमैनुएल ने अपनी जैकेट से जेब घड़ी निकाली और उस पर सरसरी नज़र डाली। फिर वह आगे झुका और अपनी कॉफी का प्याला खाली किया। 'मैं आज सुबह ही इंतज़ाम कर लूंगा। अगले हफ्ते मार्सिले के लिए एक नाव रवाना हो रही है।'
एड्रिएन ने इससे पहले कभी खुलेआम अपने पिता का विरोध नहीं किया था। लेकिन वह उन्हें ऐसा नहीं करने देगी; वह जोगिंदर से प्यार करती थी, और उसे इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता था कि उसकी त्वचा का रंग कैसा है। वह उससे प्यार करती थी, और वह उससे प्यार करता था; वे दोनों मिलकर उसके पिता जैसे पुरुषों के छोटे-मोटे पूर्वाग्रहों पर विजय प्राप्त करेंगे। 'मैं नहीं जाऊंगी।'
इमैनुएल का कठोर संयम टूटने लगा। उसने अपना अखबार उठाया और मेज पर पटक दिया, जिससे उसकी कॉफी साफ सफेद कपड़े पर गिर गई। 'मैं इस पागलपन को एक

पल भी और नहीं चलने दूंगा! जब तक तुम्हारे जाने का समय नहीं आ जाता, तुम इसी घर में रहोगे। मैं तुम्हें इस... मूल निवासी... से दोबारा मिलने से मना करता हूँ!'
मैं उससे शादी करना चाहती हूं।
और अपना बाकी जीवन एक बदबूदार छोटे से कमरे में गुजारना?
'जोगी एक दिन अमीर आदमी बनेगा। उसके पास योजनाएँ हैं। वह हांगकांग और मुंबई में दुकानें खोलने जा रहा है...'
'बकवास! वह तो बस एक घिनौना काला आदमी है और हमेशा वैसा ही रहेगा!'
'मैं उससे शादी करने का इरादा रखती हूं,' एड्रिएन ने दोहराया।
तो उससे शादी कर लो! लेकिन अगर तुम यह घर छोड़ोगी, तो शायद कभी वापस न आ सको। मैं भूल जाऊंगी कि मेरी कभी कोई बेटी भी थी!
एड्रिएन अपने कंधे पीछे खींचते हुए खड़ी हो गई। 'बहुत अच्छा। और मैं यह भूल जाऊंगी कि मेरा कभी कोई पिता भी था।' और उसने आगे कहा: 'यह ज्यादा मुश्किल नहीं होना चाहिए।'
इमैनुएल उसे जाते हुए देखता रहा, उसकी मुट्ठियाँ बेबस गुस्से से भींची हुई थीं। हे भगवान! वह तो अपनी माँ जैसी ही थी! कितना घमंडी! और साथ ही बदचलन भी। ये तो खून में था। खैर, उसे प्यार के बारे में जितना चाहे विरोध करने दो, उसने सोचा। अगले हफ्ते इसी समय वह फ्रांस जाने वाली नाव पर होगी। वह उसे अपनी माँ की तरह हंसी का पात्र नहीं बनने देगा। चाहे वह चीखे-चिल्लाए, लेकिन अंत में वह अपना आलीशान घर छोड़कर उस भारतीय कुली और उसकी सिलाई मशीनों के साथ बदहाली में नहीं रहेगी।

♦ ♦ ♦

जोगिंदर खिड़की के पास अपनी वर्कबेंच पर एक नई जैकेट की सिलाई पर झुका हुआ था। जब उसने घिसी हुई लकड़ी की सीढ़ियों पर कदमों की आहट सुनी तो उसने ऊपर देखा और अपने ग्राहकों के लिए आरक्षित विनम्र मुस्कान अपने चेहरे पर ला दी। जब उसने देखा कि यह एड्रिएन है, तो उसकी मुस्कान गायब हो गई। वह दिन के इस समय यहाँ क्या कर रही थी?
'एड्रीएन?'
उसने अपना भूरे रंग का चमड़े का सूटकेस फर्श पर रख दिया। 'जोगी,' उसने फुसफुसाते हुए कहा। 'मुझे तुम्हारी मदद चाहिए।'

वह उठा और उसकी ओर बढ़ा। 'क्या तुमने अपने पिता को इसके बारे में बताया है...?'
‘उसने मुझे बाहर निकाल दिया,’ एड्रिएन ने झूठ बोला। दरअसल, उसे अभी तक पता ही नहीं था कि वह जा चुकी है।
जोगिंदर को इसकी उम्मीद तो थी ही। 'शायद जब वह देखेगा कि तुम दोनों एक-दूसरे से कितना प्यार करते हो, तो वह अपना मन बदल लेगा।'
‘किसे परवाह है? हमें उसकी जरूरत नहीं है, जोगी। हम एक-दूसरे के साथ हैं।’
जोगिंदर ने उसे अपनी बाहों में भर लिया, ताकि वह उसके चेहरे पर दिख रही राहत को न देख सके। बेशक, उनकी शादी नहीं हो सकती थी। लेकिन वह इस रिश्ते को खत्म नहीं करना चाहता था, अभी नहीं। एक दिन उसे उसके गोरे और सुंदर शरीर को छोड़ना ही पड़ेगा। लेकिन अभी नहीं। बस यह देखना बाकी था कि वह कब तक इस खेल को जारी रख सकता है।
बाद में उसी रात, जब वे बिस्तर पर लेटे थे, एड्रिएन ने फुसफुसाते हुए कहा: 'तुम मुझसे प्यार करते हो ना, जोगी?'
'बिल्कुल। अपनी जान की बाजी लगाकर।'
और क्या तुम मुझसे शादी करोगी?
‘हां,’ उसने झूठ बोला। ‘हां, हम शादी करेंगे। जल्द ही।’
एड्रिएन एक कोहनी के बल झुककर मुड़ी। वह महसूस कर सकता था कि उसकी आँखें अंधेरे को भेदने और उसके चेहरे को पढ़ने की कोशिश कर रही हैं। 'कब?'
मैं तो बस एक मामूली दर्जी हूँ। आप मुझसे कहीं ज़्यादा की उम्मीद करते हैं, जितना मैं अभी आपको दे सकता हूँ।
‘इससे कोई फर्क नहीं पड़ता,’ उसने कहा, और उसकी आवाज में व्याप्त बचकाना उत्साह ने उसे चिढ़ा दिया। ‘हम एक दूसरे से प्यार करते हैं। यही सबसे महत्वपूर्ण बात है।’
'एक गरीब दर्जी में भी स्वाभिमान होता है। तुम्हारे पिता सोचेंगे कि मैंने तुमसे किसी और वजह से शादी की है।'
‘भाड़ में जाए वो।’
‘धैर्य रखो, एड्रिएन। कृपया।’
उसने महसूस किया कि उसके होंठ उसके गाल को छू रहे हैं। 'क्या तुम वादा करती

हो?'
'मैं वादा करता हूँ।'

मई 1947
जिस रात मिशेल का जन्म हुआ, उसी रात चीन सागर से एक तूफान शहर में आया। एक और तीव्र पीड़ा से तड़पते हुए एड्रिएन ने अपनी कमर को मोड़ लिया, ऊपर गरजते बादलों में उसकी चीखें दब गईं। दर्द के आगे उसने अपनी इंसानियत को बहुत पहले ही त्याग दिया था। दुनिया उसके लिए एक अवास्तविक, भयानक पीड़ा से भरी जगह बन गई थी। दो दिनों से वह बांस की जाली के पीछे, अपने ही पसीने में भीगी हुई, बच्चे को जन्म देने की कोशिश कर रही थी। लेकिन बच्चा बाहर नहीं आ रहा था, और एड्रिएन बस मरना चाहती थी।
उसकी चीख सुनकर एक नन वहाँ आ गई, उसका सिकुड़ा हुआ चेहरा एड्रिएन की आँखों के सामने आ गया, जो बिजली की तेज़ कड़क से जगमगा रहा था। तूफान ठीक उनके ऊपर था। छत पर कुछ हलचल हुई।
‘यह ईश्वर का दंड है तुम पर। तुम्हें उनकी क्षमा के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।’ सभी सिस्टर्स ने यह पता लगाने का प्रयास किया कि किन लड़कियों के बच्चों के लिए उचित पिता नहीं हैं। पापियों के प्रति दयालु होने के लिए यह उनका सांत्वनादायक व्यवहार था।
‘प्लीज...’ एड्रिएन हांफते हुए बोली, ‘प्लीज... कुछ करो...’
‘यह ईश्वर की इच्छा है,’ सिस्टर ने तूफ़ान के शोर के बीच चिल्लाकर उससे कहा, हालाँकि वह जानती थी कि अगर कोई अच्छा डॉक्टर मौजूद होता तो शायद वह उसकी मदद कर सकता था। लेकिन यह एक चैरिटी वार्ड था और अच्छे अस्पतालों के लिए भी यहाँ पर्याप्त डॉक्टर नहीं थे।
ऐंठन थम गई और एड्रिएन ने गहरी सांस ली। बचने का कोई रास्ता नहीं था। बच्चा एक राक्षस था और वह धीरे-धीरे उसे मार रहा था।
अन्य सांवली त्वचा वाली लड़कियां आईं और चली गईं, कैरिटास ननों के ताने सहे और अब कहीं अपने बच्चों को गोद में लिए बैठी थीं। वह चाहती थी कि काश वह पंद्रह वर्षीय मेओ लड़की से अपनी जगह बदल पाती, जो एक युवा तोपखाने अधिकारी की प्रेमिका थी और साइगॉन नदी के पास एक आरामदायक अपार्टमेंट में वापस जा रही

थी, जहाँ उसके लिए ठंडे पेय और सिगरेट लाने के लिए एक नौकरानी और उसके सांवले शिशु की देखभाल के लिए एक धाय थी।
इसके बजाय, वह चालीस घंटे तक इस बदबूदार चैरिटी वार्ड में दर्द से कराहती और चीखती रही थी। उसे अब बच्चे की कोई परवाह नहीं थी। वह बस इस भयानक दर्द से छुटकारा पाना चाहती थी।
उसे एक और संकुचन का अहसास हुआ। उसने अपने लंबे बालों का एक गुच्छा मुंह में ठूंस लिया और उसे दांतों से दबा लिया।
'भगवान से क्षमा मांगो,' उसने नन को कहते सुना, और फिर वह चली गई और एड्रिएन अपनी पीड़ा और खिड़की पर बारिश की बूंदों की उदास आवाज के साथ अकेली रह गई। उसने अपने नाखूनों को अपनी जांघों के मांस में गड़ा दिया और जोर से दर्द सहने लगी।
ऐसा लग रहा था मानो बच्चा उसे चीर-फाड़ रहा हो। वह चीख-चीखकर बेहाल हो गई और बच्चे तथा उस आदमी को कोसने लगी जिसका वह बच्चा था।

♦ ♦ ♦

वह लड़का अपने पिता की हूबहू प्रति था। उसका रंग भी उन्हीं की तरह हल्का भूरा था, आँखें गहरे भूरे रंग की थीं और बाल काले और लटों में लिपटे हुए थे। जब उसने उसे अपनी गोद में लिया, तो वह लगातार उसकी ओर देखता रहा, मानो उसका ध्यान और प्यार पाने के लिए बेताब हो।
एड्रिएन दीवार की ओर देखना पसंद करती थी। मुझे अकेला छोड़ दो, उसने सोचा। मुझे जोगी चाहिए, तुम नहीं। अभी नहीं। बस मुझे अकेला छोड़ दो।
'क्या हुआ, बच्ची?' सोउर ओडिले बाकी बहनों से अलग थीं। वह लालिमा लिए, गुलाबी गालों वाली और सींग के फ्रेम वाले चश्मे पहने एक दयालु बूढ़ी महिला थीं।
एड्रिएन ने अपने गालों पर लगे आंसू पोंछे। 'कुछ भी गलत नहीं है। मुझे बस आराम करने की जरूरत है।'
'हर शिशु ईश्वर का उपहार है, आप जानते हैं।'
एड्रिएन का मन किया कि वह उसके चेहरे पर ही हंस दे। लेकिन जब उसने उस बूढ़ी नन की आंखों में देखा, तो उसे समझ आ गया कि वह सच कह रही है। 'ऐसे और भी उपहार थे जो मुझे इससे कहीं ज्यादा पसंद आते।'

ओडिले ने उसका हाथ थपथपाया। 'तुम बेवजह परेशान हो रही हो। बात सिर्फ बच्चे की ही नहीं है, है ना?'

एड्रिएन ने देखा था कि कुछ युवक दूसरी लड़कियों से मिलने आते थे, उनके बच्चों को देखकर मुस्कुराते थे, फूल और चॉकलेट लाते थे। जोगिंदर कहाँ था?

'क्या किसी ने मेरे बारे में पूछा था? एक भारतीय... वो लंबा है... अगर आप उसे देख लें तो उसे भूल नहीं सकते। वो बहुत ही आकर्षक है।'

ओडिले ने अपना सिर हिलाया। मोटे चश्मे के पीछे उसकी उदास आँखें उल्लू जैसी लग रही थीं। 'तो बात ये है...'

'His name is Joginder. Joginder Krisnan.'

'मेरे बच्चे, तुम्हें ढूंढने के लिए कोई यहाँ नहीं आया था। मुझे खेद है।'

एड्रिएन ने नन का हाथ कसकर पकड़ लिया। 'क्या आप मेरे लिए कुछ कर सकती हैं?'

'यदि मैं कर सकता।'

'मुख्य चौक के पास उसकी एक दर्जी की दुकान है। यह ज्यादा दूर नहीं है।'

'क्या आप चाहते हैं कि मैं वहां जाऊं?'

'क्या आप करेंगे? कृपया। यह ज्यादा दूर नहीं है।'

ओडिले ने आह भरी। 'ठीक है। मैं देखती हूँ कि क्या मैं आज दोपहर बाद निकल सकती हूँ। अब आपको आराम करना चाहिए। आपको अपनी ताकत वापस पानी होगी।'

'धन्यवाद। आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।'

♦ ♦ ♦

शाम के समय सोउर ओडिले वापस लौटीं। वह बिस्तर के पास खड़ी हुईं और एड्रिएन का हाथ पकड़ लिया।

एड्रिएन ने बूढ़ी नन के चेहरे पर वास्तविक खेद देखा। 'मुझे खेद है,' उसने कहा। 'मैंने उनसे बात की। लेकिन उनका कहना है कि वे अभी नहीं आ सकते। वे बहुत व्यस्त हैं।'

एड्रिएन ने सिर हिलाया और अपना चेहरा दीवार की ओर कर लिया।

अध्याय 3

नवंबर 1951

कभी साइगॉन को मेकांग नदी के किनारे बसा एक शांत फ्रांसीसी गाँव बताया जाता था। अब इसकी सड़कें कांटेदार तारों और मशीनगनों से घिरी हुई हैं।
जैसे-जैसे टोंकिन में युद्ध लंबा खिंचता गया, औपनिवेशिक फ्रांसीसियों के खिलाफ आतंक का अभियान चलाया जाने लगा। फ्रांसीसी स्वामित्व वाली इमारतों पर बमबारी की गई और नदी में फूली हुई लाशें दिखाई देने लगीं। कैफे और सिनेमाघरों में ग्रेनेड फेंके गए, और हर रात, कर्फ्यू के बाद, आसपास की पहाड़ियों से मोर्टार के गोले उपनगरों में गूंजते थे।
फ्रांसीसी इलाके में उन्होंने अपने विलाओं के दरवाजों और खिड़कियों पर बैरिकेड लगा दिए और घेराबंदी के तहत जीवन बिताने के लिए मजबूर हो गए।
हर दिन किसी न किसी नई क्रूरता की खबर आती थी। साइगॉन रॉयल होटल में ठहरे एक फ्रांसीसी मेजर ने अपने कमरे में दाढ़ी बनवाने के लिए एक वियतनामी नाई को बुलाया। दुर्भाग्य से मेजर के लिए, नाई वियत मिन्ह का एजेंट निकला। उस आदमी ने मौके का फायदा उठाकर अधिकारी के गले पर ठंडे रेजर से वार कर दिया।
जब मालिक कमरे में दौड़ा तो उसने देखा कि मेजर फर्श पर एक किनारे पड़ी मछली की तरह गरगरा रहा था और फड़फड़ा रहा था, और उसके चारों ओर उसके अपने खून का एक बड़ा सा तालाब फैला हुआ था।
फ्रांसीसी स्वयं भी यह स्वीकार करने को तैयार नहीं थे कि वे युद्ध हार रहे हैं, लेकिन हर साल इंडोचीन में फ्रांसीसी अभियान बलों ने सेंट साइर स्थित अपनी सैन्य अकादमी से स्नातक होने वाले अधिकारियों की तुलना में अधिक अधिकारियों को खो दिया।
रक्तपात और बमबारी के इस माहौल के बीच, एक और छोटा, अधिक व्यक्तिगत युद्ध अपने अपरिहार्य निष्कर्ष की ओर बढ़ रहा था।

♦ ♦ ♦

एड्रीएन संकरे पलंग पर लेटी हुई थी, छत पर उखड़ते हुए पेंट को घूर रही थी, जिसकी आकृतियाँ मंद अंधेरे में विचित्र लग रही थीं। ऊपर लगा पंखा चरमरा रहा था, लेकिन उमस भरी हवा में लगभग बेकार था। खिड़कियाँ पूरी तरह खुली होने के बावजूद कमरा घुटन भरी गर्मी से भरा था, और चादरें पसीने से तर थीं।
कोने में अपनी चारपाई पर बेचैनी से लेटे मिशेल ने हल्की सी चीख मारी।

आधी रात हो चुकी थी। जॉगिंदर ने आखिरकार वर्कशॉप का लैंप बंद किया और चुपके से अंदर आई। उसने बंद खिड़की से उसकी परछाई को देखा, जब वह अपने कपड़े उतार रहा था। वह बहुत मोटा हो रहा था। वर्कबेंच पर घंटों काम करने की वजह से। और उसके सिर पर एक चमकदार भूरा धब्बा था जहाँ बाल झड़ने लगे थे।
व्यापार खूब फल-फूल रहा था, फिर भी पैसों की कमी नहीं थी। जोगिंदर ने एड्रिएन को बटनहोल सिलना और सिलाई नापना सिखाया था, और अब उसने दुकान में एक और दर्जी को काम पर रखा था, जो चिकनी त्वचा और बादाम जैसी आंखों वाली वियतनामी लड़की थी। उसने उससे वादा किया कि एक दिन वह अमीर आदमी बनेगा। यही उसके सपने का एकमात्र अंश बचा था।
वह सोचती थी कि कब उन दोनों का प्यार खत्म हो गया था, या जोगिंदर ने कभी उससे सच्चा प्यार किया भी था या नहीं। जैसे ही उसका पेट बढ़ने लगा, ऐसा लगा जैसे जोगिंदर की उसमें दिलचस्पी कम हो गई हो।
मिशेल के जन्म के बाद कुछ समय के लिए, उसे लगा कि उनके बीच प्यार की चिंगारी फिर से जाग उठी है। लेकिन उसने अपने बेटे में कभी कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई और मिशेल के बड़े होने के साथ-साथ जोगिंदर उससे और दूर होता चला गया। उसने खुद को समझाने की कोशिश की कि ऐसा इसलिए है क्योंकि वह बहुत मेहनत कर रहा था, लेकिन दिल ही दिल में वह जानती थी कि उसने कितनी बड़ी गलती कर दी है। अब वह अपनी ज़िद और स्वाभिमान के कारण वहीं रुकी रही। वह अपने पिता के पास वापस जाने, उनसे माफी मांगने और उनकी मदद मांगने की हिम्मत नहीं जुटा पाई।
वह ऐसा नहीं करेगी।
जोगिंदर के उसके बगल में बिस्तर पर लेटते ही उसे पसीने की हल्की सी गंध महसूस हुई। वह अपने अकेलेपन से घिरी हुई थी। उसे किसी के गले लगने और प्यार करने की तीव्र इच्छा हो रही थी। कितना लंबा समय बीत चुका था।
‘जोगी...’
'मैं थक गया हूं।'
एड्रिएन ने चादर के नीचे हाथ डाला, उसके लिंग की कोमल त्वचा को महसूस किया और खुद को उससे रगड़ा। 'प्लीज़, जोगी।'
उसने उसे धक्का देकर दूर कर दिया। 'मैंने तुमसे कहा था, मैं थक गया हूँ।'

अस्वीकृति से आहत होकर एड्रिएन लुढ़क गई। 'तुम बहुत ज्यादा मेहनत करते हो।'
‘सफल होने के लिए व्यक्ति को कड़ी मेहनत करनी पड़ती है।’
‘आप अपनी सेहत खराब कर रहे हैं।’
उसने कोई जवाब नहीं दिया, और उसे लगा कि वह सो गया है। लेकिन फिर उसने कहा: 'हाँ, यही तो मैं तुम्हें बताना चाहता था।'
'मुझे बताओ । । ।?'
मैंने छुट्टी लेने का फैसला किया है।
'एक अवकाश?'
मैंने अगले हफ्ते बॉम्बे जाने वाले जहाज का टिकट खरीद लिया है। मैं अपने परिवार से मिलना चाहता हूं। मैंने उन्हें लगभग छह साल से नहीं देखा है।
'मेरा क्या?'
‘मुझे आपकी जरूरत है कि आप यहीं रुकें और दुकान की देखभाल करें।’
उसे अचानक सुन्नपन महसूस हुआ। 'मैं तुम्हारे साथ आना चाहती हूँ।'
'यात्रा बहुत कठिन होगी। इसके अलावा, मैं दुकान बंद नहीं कर सकता। आप ही एकमात्र ऐसे व्यक्ति हैं जिन पर मैं भरोसा कर सकता हूँ।'
लेकिन...आप कितने समय तक दूर रहेंगे?
एक महीना। शायद दो महीने।
'कृपया मुझे अपने साथ आने दीजिए।'
मैंने तुमसे कहा था, यह असंभव है। अब सो जाओ।
लेकिन तुमने हमेशा कहा है कि तुम चाहोगी कि मैं तुम्हारे परिवार से मिलूँ। तुमने कहा था कि जब हमारी शादी होगी...
‘सो जाओ! हम सुबह इस बारे में बात करेंगे।’
लेकिन जोगी...
‘अभी नहीं!’ जोगिंदर ने दोहराया। ‘सुबह।’
वह उससे दूर हट गया।
एड्रीएन घंटों जागती रही, ऊपर लगे पंखे की चरमराहट सुनती रही। उसने निराशा में चादर हटा दी। उसे रू कैटिनैट स्थित अपना शयनकक्ष याद आया, सूती चादरें, खिड़की के बाहर बरामदे में खिले बोगनविलिया के फूलों की खुशबू। उसने खुद को कोसते हुए कहा कि उसने ये सब कुछ इस तंग बिस्तर, गरीबी, सीलन और एक लापरवाह

भारतीय पति के लिए क्यों छोड़ दिया।
उसने क्या किया था?
'क्या तुम अब भी मुझसे प्यार करते हो, जोगी?' उसने अंधेरे में फुसफुसाते हुए पूछा।
एड्रिएन को उससे जवाब की उम्मीद नहीं थी। वह सो रहा था। या शायद वह सोने का नाटक कर रहा था। खैर, उसे लगा कि उसे जवाब पहले से ही पता था।
एड्रिएन अंधेरे में तब तक देखती रही जब तक कि नोट्रे-डेम बेसिलिका की घंटियों की आवाज पूरे शहर में गूंजने लगी, जो श्रद्धालुओं को छह बजे की प्रार्थना के लिए बुला रही थी, लेकिन धीरे-धीरे रू ले लोई पर साइकिल की घंटियों और साइक्लोपोसेस के बढ़ते शोर में उनकी आवाज दब गई।
जब उसने आखिरकार अपनी आँखें बंद कीं, तो उसे अपने पिता के कहे शब्द याद आए: 'तुमने खुद ही अपना बिस्तर बनाया है। अब तुम्हें उसी पर लेटना होगा।'

♦ ♦ ♦

जोगिंदर के गए लगभग दो सप्ताह हो चुके थे, तब जाकर एड्रिएन ने आखिरकार अपना मन बना लिया। उस सुबह वह जल्दी उठी, वियतनामी लड़की साई के दुकान पर आने से पहले ही, और स्नान किया। वह छोटे से सफेद टाइलों वाले शौचालय में नग्न खड़ी थी और लंबे हैंडल वाले छुरी से अपने सिर पर ठंडा पानी छिड़क रही थी। उसके बाद वह टूटे हुए दर्पण के सामने खड़ी होकर अपनी छवि को ध्यान से देखने लगी। अब वह तेईस वर्ष की थी; उसकी सुंदरता अपने चरम पर थी। मिशेल से मिलने से पहले वह जितनी सुडौल और लचीली थी, अब उतनी नहीं थी, लेकिन वह जानती थी कि वह अब भी आकर्षक महिला है। वह अब भी सड़क पर पुरुषों का ध्यान अपनी ओर खींच सकती थी।
लेकिन जोगिंदर के साथ बीते इन कुछ सालों ने उसके गाल पिचके हुए थे और उसकी आँखों के आसपास झुर्रियाँ पड़ गई थीं। वह अब किसी भारतीय दर्जी पर समय बर्बाद नहीं कर सकती थी। उसकी सुंदरता खोखली वासना में बर्बाद हो सकती थी, जैसा कि जोगिंदर के साथ हुआ था, या फिर यह उसे उस आराम और विलासितापूर्ण जीवन में वापस ले जा सकती थी जिसे उसने बड़ी बेदर्दी से त्याग दिया था। कितनी मूर्ख थी वह! उसका रोमांटिक साहस तो बस एक स्कूली लड़की की कल्पना मात्र था। कितनी मूर्खता! उसने इन दो गंदे, बदबूदार कमरों के लिए एक सुखमय जीवन त्याग दिया था।

अब समय आ गया था कि वह अपना अहंकार त्याग दे।
उसने वही हल्के हरे रंग की चेकदार फ्रॉक पहनी जो उसने आखिरी बार जोगिंदर के साथ रहने आने वाले दिन पहनी थी और कानों के पीछे जोई परफ्यूम छिड़का। फिर वह कोने में रखे लोहे के पलंग के पास गई और मिशेल को उसके सबसे अच्छे कपड़े पहनाए।
उस लड़के की शक्ल अपने पिता से इतनी मिलती-जुलती थी कि वह चौंका देने वाला था। चार साल बीत जाने के बाद भी उसे यकीन नहीं हो रहा था कि वह बच्चा उसका अपना है। उसकी गहरी भूरी त्वचा और गहरे भूरे रंग की आंखें अब भी उसे हैरान कर देती थीं। यह मानना मुश्किल था कि वह कभी उसके अपने शरीर का हिस्सा था।
दो भूरी भुजाएँ उत्सुकता से उसकी ओर बढ़ीं। 'चलो, नन्ही मिशेल,' उसने फुसफुसाते हुए कहा। 'मम्मी आज काम पर नहीं जा रही हैं। हम दोनों बाहर जा रहे हैं।'
'हम कहाँ जा रहे हैं?' बच्चे ने नींद में बुदबुदाते हुए पूछा।
हम किसी बहुत खास व्यक्ति से मिलने जा रहे हैं। आपको वादा करना होगा कि आप अच्छा व्यवहार करेंगे।
'यह कौन है?' उसने उत्सुकता से पूछा।
'मुझसे वादा करो कि तुम अच्छे बच्चे बनोगे। तुम्हें चिल्लाना या चीखना नहीं है, और तुम्हें वे शिष्टाचार याद रखने होंगे जो मैंने तुम्हें सिखाए हैं। क्या तुम वादा करते हो?'
'जी मां। लेकिन हम कहां जा रहे हैं?'
एड्रिएन ने अपने बेटे को सफेद सूती कमीज और नीले रंग के शॉर्ट्स पहनाए। उसने उससे कहा, 'हम तुम्हारे दादाजी से मिलने जा रहे हैं।'

♦ ♦ ♦

पिछले चार सालों से एड्रिएन रोज़ बाज़ार जाते समय रू कैटिनैट पर स्थित अपने पिता के विला के पास से गुज़रती थी। कभी-कभी उसे खिड़कियों के पीछे कोई साया हिलता हुआ दिखाई देता था और वह सोचती थी कि क्या उसके पिता उसे देख रहे हैं। दो बार वह सड़क पर उनसे मिली, लेकिन उन्होंने उससे बात नहीं की, यहाँ तक कि उसकी तरफ देखा भी नहीं। उसने सोचा कि उन्हें कंधों से पकड़कर अपनी तरफ देखने पर मजबूर कर दे, लेकिन उसके स्वाभिमान ने इसकी इजाज़त नहीं दी।
अब, केले के पेड़ों के बीच से गुज़रते हुए लंबी सड़क पर चलते हुए, वह सोच रही थी

कि वह क्या करेगा। साफ-सुथरे बगीचे हल्के नारंगी और पीले रंग के टाइगर फ्लावर्स से घिरे हुए थे। वह लाल और बैंगनी बोगनविलिया से सजे परिचित बरामदे पर खड़ी हुई और अपने मन को शांत करने के लिए एक गहरी सांस ली।
‘कंधे पीछे करो,’ उसने मिशेल पर फुफकारते हुए कहा। लड़के ने अपनी छाती फुला ली और उसका हाथ और कसकर पकड़ लिया।
उसने अपना जर्जर भूरा सूटकेस नीचे रखा और घंटी बजाई। वह इंतजार करती रही। माई ओंग ने दरवाजा खोला। उसे देखते ही बुढ़िया के चेहरे पर एक दुष्ट मुस्कान आ गई। 'तो, मिस, तुम वापस आ गई हो?'
एड्रिएन पूरी तरह से सीधी खड़ी हो गई। 'मेरे पिता को बता देना कि मैं यहाँ हूँ।'
उस लड़की ने मिशेल की ओर नीचे देखा। 'अब यह तुम्हारा है?'
एड्रिएन एक कदम आगे बढ़ी। वह उसे मारना चाहती थी। 'बस मेरे पिता को बता दो कि मैं यहाँ हूँ। बता दो!'
‘तुम्हारे शिष्टाचार अब भी कमाल के हैं।’ वह मुड़ी और संगमरमर के फर्श वाले गलियारे में लड़खड़ाते हुए चली गई। ‘तुम रुको। मालिक बरामदे में हैं, नाश्ते का समय हो गया है। शायद वह तुमसे मिलना न चाहें।’
तो बात यहाँ तक आ गई है, एड्रिएन ने सोचा। अपने ही पिता से इंटरव्यू के लिए नौकरों से भीख माँगनी पड़ रही है। मेरे साथ एक आवारा की तरह व्यवहार किया जा रहा है, जैसा कि हर कोई मुझे समझता है।
वह याद करने की कोशिश करते हुए अंदर झाँकने लगी। पुस्तकालय का दरवाज़ा खुला था, और उसे अपने पिता की पसंदीदा विंग-बैक कुर्सी, चमड़े की जिल्द वाली इतिहास की किताबों से भरी अलमारियाँ दिखाई दे रही थीं। अंदर ठंडक थी, और घर में एक गिरजाघर जैसी पवित्रता थी। उसे अचानक इन सब की इतनी याद आई कि उसकी साँसें रुक गईं। उसने खुद पर तरस खाते हुए आँसू रोकने की कोशिश की।
तो, तुम वापस आ गए हो।
इमैनुएल दरवाजे पर खड़ा था, उसके हाथ पीठ के पीछे बंधे हुए थे। उसने एकदम कड़क सफेद ट्रॉपिकल सूट पहना हुआ था, और उसके चांदी जैसे भूरे बाल करीने से संवारे हुए थे। उसने अपनी नाक की लंबाई तक उसे देखा।
‘मैं भीख नहीं मांगूंगी,’ एड्रिएन ने कहा। ‘मैं पहले भूखी मर जाऊंगी।’
'मुझे लगता है कि जीवन के बुरे पहलुओं के आपके अनुभव ने आपको नहीं बदला है।'

‘आपका मतलब है कि इसने मुझे गुलाम नहीं बनाया?’
मेरा मतलब आभारी होना था।
हे भगवान! मैं भूल ही गई थी कि मैं तुमसे कितनी नफरत करती हूँ! एड्रिएन ने सोचा। बस एक मुस्कान, एक पल की कोमलता और मैं तुम्हारे चरणों में गिरकर आँसू बहा देती। 'तुम मुझसे क्या चाहते हो?' उसने कहा।
‘तुम ही मेरे पास आई थी,’ उसने उसे याद दिलाया और अपना ध्यान उसके पैरों के पास बैठे सांवले रंग के बच्चे पर केंद्रित किया। उसने भौंहें चढ़ाईं। ‘क्या यह तुम्हारा शरारती बच्चा है?’
उनका नाम मिशेल है।
‘यह एक फ्रांसीसी नाम है। बच्चा तो जाहिर तौर पर फ्रांसीसी नहीं है।’ उसने एड्रिएन की ओर मुड़कर देखा। ‘तो अब तुम्हें अक्ल आ गई है?’
वह कमीना! वह उससे यह कहलवाना चाहता था। उसने सिर हिलाया। 'मैं वापस आना चाहती हूँ।'
'बहुत अच्छा। लेकिन बच्चा नहीं।'
लेकिन... आपका मतलब क्या है?
‘वह अश्वेत है। आप उसे इस घर में नहीं ला सकते।’
एड्रिएन ने मिशेल का हाथ और कसकर पकड़ लिया। 'मैं... मैं उसकी माँ हूँ।'
'बिल्कुल सही। इसीलिए मैं उसे कभी भी अपने घर में रहने नहीं दूँगा, ताकि वह तुम्हें तुम्हारी शर्मिंदगी की याद दिलाता रहे।'
'लेकिन पापा ...'
‘तुम वापस आ सकती हो, एड्रिएन। लेकिन तुम्हें बच्चे को यहीं छोड़ना होगा।’
एड्रिएन विरोध करना चाहती थी, लेकिन उसके मुंह से शब्द नहीं निकल रहे थे। उसने कभी सोचा भी नहीं था कि उसके पिता उससे ऐसी मांग करेंगे।
वह ऐसा नहीं कर सकी। मिशेल उसका खून था। उसने अपना सूटकेस उठाया। 'जैसा आप चाहें, पापा।' उसने मिशेल को घसीटते हुए कहा, 'चलो चलें!'
‘एड्रीएन!’
वह इस उम्मीद में मुड़ी कि शायद वह मान जाएगा। लेकिन उसके चेहरे के भाव ने उसकी उस झूठी उम्मीद को चकनाचूर कर दिया। 'जब तुम्हारा मन भर जाए, तो इस बच्चे को अनाथालय में दे देना और फिर तुम घर आ सकती हो।'

एड्रिएन जल्दी से चली गई, तभी उसने अपने पीछे दरवाजा जोर से बंद होने की आवाज सुनी। वह मिशेल का हाथ पकड़े हुए तेजी से चली गई, छोटा लड़का उसके पीछे-पीछे भागने की कोशिश कर रहा था।

♦ ♦ ♦

जब एड्रिएन दुकान पर वापस आई तो साई फुट-पेडल सिंगर मशीन पर झुकी हुई थी। उसने कहा, 'तुम रो रही थी।'

'यह कुछ भी नहीं है।'

उसका सुंदर अंडाकार चेहरा गुस्से से सिकुड़ गया। 'जोगिंदर को तुम्हें अपने साथ ले जाना चाहिए था।'

लड़की के लहजे में कुछ ऐसा था जिससे एड्रिएन घबरा गई। वह मुझे उकसा रही है, एड्रिएन ने सोचा। वह चाहती है कि मैं चली जाऊं। 'मिस्टर क्रिसनन क्या करना चाहते हैं, इससे तुम्हारा कोई लेना-देना नहीं है। अपना काम करो।'

साई ने मुंह फुलाकर उसे देखा। एड्रिएन छोटे से बेडरूम में गई और दरवाजा बंद कर लिया। उसने अपना सूटकेस फर्श पर गिरा दिया और बिस्तर पर लेट गई। उसने अपनी दोनों मुट्ठियाँ तकिए पर पटकीं। 'तुम्हें धिक्कार है! तुम्हें धिक्कार है, तुम्हें धिक्कार है, तुम्हें धिक्कार है!'

'मम्मी?' मिशेल की उंगलियों ने उसके बालों को सहलाया।

'वो निर्दयी, कमीना!'

'मम्मी, क्या हुआ?' मिशेल बिस्तर के पास खड़ा था, उसकी बड़ी-बड़ी भूरी आँखें आश्चर्य से चौड़ी हो गई थीं। 'आप क्यों रो रही हैं?'

मैं इस बच्चे का क्या करूँगी? एड्रिएन ने सोचा। उसका कोई कानूनी पिता नहीं है, कोई राष्ट्रीयता नहीं है, कैथोलिक अस्पताल के रिकॉर्ड में हाथ से लिखी गई प्रविष्टि के अलावा उसका कोई अस्तित्व नहीं है। उसने उसे गले लगाया, और अपने गाल पर उसके दिल की धड़कन महसूस की।

'मैं तुम्हारे साथ क्या करूंगी?' उसने जोर से कहा।

दरवाजे पर दस्तक हुई। दरवाजा धीरे से खुला। एड्रिएन उठ बैठी। यह साई थी।

'तुम यहाँ क्या कर रहे हो? अपने काम पर वापस जाओ!'

मैंने तुम्हें रोते हुए सुना।

'चले जाओ बस!'

लेकिन साई वहीं खड़ी रही। उसने कहा, 'मुझे आपसे बात करनी है।'
'चले जाओ!'
‘यह जोगिंदर के बारे में है।’
‘जोगी? उसका क्या हुआ?’
‘आप जानते हैं कि वह क्या कर रहा है, है ना? उसकी पत्नी बॉम्बे में है। इसीलिए वह वापस गया है। वही उसका परिवार है।’
पत्नी? जॉगिंदर?’ वह किस बारे में बात कर रही थी?
‘उसने मुझे उसके बारे में बताया। उसका नाम सुशीला है।’
‘उसने तुम्हें बताया? वह तुम्हें क्यों बताएगा?’
साई ने कोई जवाब नहीं दिया। लेकिन जैसे ही एड्रिएन उस सुंदर भूरे चेहरे और कोमल पतले शरीर को निहारती रही और बाजारों में बिताए अपने लंबे घंटों के बारे में सोचने लगी, उसे बात समझ में आने लगी। 'बस चले जाओ।'
'मैं बस आपकी मदद करना चाहता हूँ, मैडम।'
मुझे पूरा यकीन है कि आप ऐसा करते हैं।
साई ने कंधे उचकाए और कमरे से बाहर चली गई। कुछ ही क्षण बाद दुकान में सिलाई मशीन फिर से चलने लगी। एड्रिएन दीवारों के उखड़े हुए प्लास्टर को देखती रही, उसे उन धुंधली आकृतियों में अपने पिता का चेहरा दिखाई दिया। वह मुस्कुरा रहे थे।

♦ ♦ ♦

दो सप्ताह बाद जोगिंदर लौट आया। एक रात वह देर से लौटा और चुपचाप उसके बगल में बिस्तर पर लेट गया। कुछ ही मिनटों में वह खर्राटे लेने लगा। अगली सुबह वह भोर में उठा और बिना कुछ कहे दुकान में काम पर वापस चला गया।
एड्रिएन ने अपनी फीकी हरी फ्रॉक पहनी और वर्कबेंच पर उसके बगल में आकर खड़ी हो गई। 'जोगी।'
उसने मेज पर अधूरी बनी कमीज से अपनी नज़रें उठाईं और सुई-धागा नीचे रख दिया।
'मेरी नन्ही कमल। क्या तुम्हारे पास अपने पति के लिए एक चुंबन है?'
'नहीं।'
उसने कंधे उचकाते हुए कहा, 'क्या तुम अब भी मुझसे नाराज़ हो?'
मैं जानना चाहता हूं कि क्या आपकी पत्नी है?

‘आपको यह विचार कहाँ से आया?’
‘साईं की ओर से।’
‘मेरे जाने के बाद वो तुमसे बात कर रही थी, है ना?’ उसने उसका हाथ पकड़ लिया। ‘हम इस बारे में बाद में बात करेंगे। तुम्हारे पति के लिए घर वापसी पर स्वागत कैसा रहेगा?’
एड्रिएन ने उसका हाथ झटक दिया। 'मैं सच जानना चाहती हूं।'
जोगिंदर ने आह भरी। 'बेशक मेरी पत्नी है। हमारी शादी भारत में हुई थी जब मैं तेरह साल का था।'
‘तू कमीना है!’ उसने गुस्से से कहा। उसका कितना मन कर रहा था कि वो उस मुस्कुराते, घमंडी चेहरे को मुक्के से कुचल दे। ‘तूने मुझे क्यों नहीं बताया?’
‘क्यों? क्योंकि इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।’
‘कोई फर्क नहीं पड़ता? जब तुमने इतने सालों तक मुझे शादी से वंचित रखा है?’
‘यह सब मेरे परिवार ने तय किया था। मैं उससे प्यार नहीं करता। वह मोटी है और उसकी जुबान बहुत तेज है।’
‘तो फिर तुम उसे तलाक क्यों नहीं दे देते?’
'मैं नहीं कर सकता।'
एड्रिएन को अचानक समझ में आ गया कि कभी पैसे क्यों नहीं थे; वह सारा पैसा भारत भेज देता था। 'लेकिन... लेकिन तुमने कहा था कि तुम मुझसे प्यार करते हो।'
'मैं तुमसे प्यार करता हूँ। लेकिन मुझे अपने बेटों के बारे में भी सोचना है।'
उसने एक हल्की सी चीख सुनी और समझ गई कि यह उसकी अपनी ही चीख है। यह सब एक क्रूर और घिनौना मजाक था। 'तुम्हारे बेटे?'
'बिल्कुल। मैंने तुम्हें बताया था, हमारी शादी तेरह साल की उम्र में हुई थी। तब वह इतनी मोटी नहीं थी।'
'तुम सुअर हो।'
उसके चेहरे का भाव बदल गया। जब उसने दोबारा बोलना शुरू किया तो उसकी आवाज धीमी थी। 'मुझसे फिर कभी इस तरह बात मत करना।'
‘तुम जानती थी कि तुम मुझसे कभी शादी नहीं कर सकती। और तुमने मुझे बताया भी नहीं! तुमने मुझे खुद को मूर्ख बनाने दिया!’
‘बेशक मैं तुमसे शादी नहीं कर सकती! क्या तुम्हें यह एहसास नहीं है, छोटे मूर्ख! तुम

हिंदू नहीं हो! मेरा धर्म इसकी इजाज़त नहीं देता!'
एक पल के लिए एड्रिएन इतनी स्तब्ध रह गई कि जवाब नहीं दे पाई। उसने उसके लिए सब कुछ कुर्बान कर दिया था, अपने पूर्वाग्रहों को दरकिनार कर उसके साथ रहने के लिए। उसने खुद को इतना नीचा कर लिया था! अब वह उससे कह रहा था कि वह उसे काफी अच्छा नहीं समझता?
'अज्ञानी कुली,' उसने गुस्से से कहा। 'तूने मेरा क्या बिगाड़ा है?'
जोगिंदर उछलकर खड़ा हुआ और उसने अपने दाहिने हाथ से एड्रिएन के चेहरे पर जोरदार प्रहार किया।
वह ज़मीन पर पीछे की ओर लुढ़क गई। एक पल के लिए वह बेहोश हो गई। जब उसने आँखें खोलीं तो जोगिंदर उसके ऊपर खड़ा था, उसका चेहरा गुस्से से लाल था। 'मुझे कभी उस नाम से मत पुकारना, छोटी फ्रांसीसी वेश्या!' उसने उसे फिर से अपने हाथ के पिछले हिस्से से मारा। उसके मुँह में अपने ही खून का स्वाद आ गया।
एड्रीएन झट से खड़ी हो गई। उसकी उंगलियाँ वर्कबेंच पर रखी कैंची पर जा टिकीं। वह उसकी ओर बढ़ा, लेकिन बहुत देर हो चुकी थी। उसने उस पर वार किया, कैंची की नोक उसके चेहरे की ओर बढ़ गई। वह उसके चेहरे से वह घमंडी मुस्कान हमेशा के लिए मिटा देना चाहती थी।
उसने खुद को बचाने के लिए अपना हाथ ऊपर उठाया और उसके हाथ से उसकी कलाई पर चोट लगी, जिससे कैंची उसके हाथ से गिर गई। वे वर्कबेंच के नीचे गिरकर नज़र से ओझल हो गईं।
जोगिंदर ने उसे पकड़ लिया, उसका हाथ पीछे की ओर खींचकर उसकी पीठ पर मरोड़ दिया और उसके कंधों के बीच दबा दिया। 'तू कुतिया!' वह फुफकारा। 'मैं तुझे सबक सिखाऊंगा!' और उसे घसीटते हुए बेडरूम की ओर ले गया।
'मुझसे दूर रहो!' वह किसी तरह एक पल के लिए छटपटाने में कामयाब हुई, लेकिन फिर उसने उसे दोबारा मारा, एक ऐसा ज़ोरदार प्रहार जिससे वह घुटनों के बल गिर पड़ी। उसने उसे औंधे मुंह बिस्तर पर पटक दिया, उसकी नाइटगाउन ऊपर खींची और उसके नीचे पहनी हुई सूती पैंट फाड़ दी।
'नहीं,' वह कराहते हुए बोली।
उसने अपने वजन से उसे दबा दिया। 'यही तो तुम चाहती थी, है ना?' उसने उसके कान में फुसफुसाया। 'एक काला प्रेमी?' उसने अपनी उंगलियाँ उसके बालों में घुमाईं

और उसका सिर पीछे की ओर धकेल दिया। उसे घुटन महसूस हुई, साँस लेने में तकलीफ होने लगी। जैसे ही उसने जबरदस्ती उसके अंदर प्रवेश किया, उसे एक तीव्र, भयानक पीड़ा हुई। उसने चादरों को नोचा और उससे दूर हटने की कोशिश की, लेकिन उसने उसका सिर और पीछे खींच लिया, जब तक कि वह उससे रुकने की भीख नहीं मांगने लगी।

जब वह उस पर मुक्के बरसा रहा था, तब वह अपने पिता के पुस्तकालय, उनकी हवाना सिगार की बहती हुई सुगंध, पीले बाघ के फूलों के बीच बगीचे में गर्मियों के पक्षियों, ताजी पिसी हुई कॉफी की खुशबू और मुलायम सफेद मलमल की स्कर्ट के एहसास के बारे में सोच रही थी।

अचानक जोगिंदर ने अपनी कमर उसके शरीर से रगड़ी और एक सूखी चीख मारी। वह हांफते हुए उसके ऊपर गिर पड़ा। एड्रिएन ने किसी के चीखने की आवाज़ सुनी, उसे एहसास हुआ कि यह मिशेल है, जो अपने पलंग से यह सब देख रहा था। उसने उसे दिलासा देने के लिए हाथ बढ़ाया, लेकिन साई कमरे में दौड़कर आई और उसे उठाकर शांत करने की कोशिश करने लगी। उसके चेहरे पर एक दबी हुई मुस्कान थी। एड्रिएन की शर्मिंदगी पूरी हो चुकी थी।

अध्याय 4

मिशेल अपनी चारपाई से उठ खड़ा हुआ और अपनी माँ को नग्न अवस्था में बिस्तर से उठते हुए देखने लगा। उसकी बड़ी-बड़ी गंभीर आँखें कोने में रखी छोटी सी ड्रेसिंग टेबल तक उसका पीछा करती रहीं। मिशेल अपनी माँ से बहुत प्यार करता था। उसे उन्हें कपड़े पहनते देखना अच्छा लगता था, उनकी अनोखी, जादुई खुशबू उसे बेहद पसंद थी। वह पूरी दुनिया में इकलौती खूबसूरत चीज थी।

कभी-कभी रात में, वह उसे अपने पिता के बगल में सोते हुए देखता था; वह एकदम निखरी हुई, संगमरमर जैसी सफेद, अपने पिता की महोगनी रंग की त्वचा के बगल में। कल उसने उसे फिर चोट पहुँचाई थी। उसे वो घिनौनी, घुरघुराहट भरी आवाज़ें और अपनी माँ का चेहरा याद था, जो उसकी तरफ मुड़ा हुआ था, आँखें कसकर बंद थीं, होंठ खामोश चीख रहे थे। एक बार पहले, वह बीच में ही चिल्ला उठा था और वे रुक गए थे, इसलिए तब से वह हर रात जागने और उसे अपने पिता से बचाने की पूरी कोशिश करता था। उसके पिता ने अब काफी समय से उसकी माँ को चोट नहीं

पहुँचाई थी। कल तक; फिर वह चीखता रहा, चीखता रहा, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ।
वह उससे कितनी नफरत करता था।
लेकिन अब वे अकेले थे। जोगिंदर हर रविवार सुबह की तरह गणेश जी की पूजा करने मंदिर गया था। सूरज अभी उगा नहीं था और आसमान धुंधले बैंगनी रंग का था। पहले से ही असहनीय गर्मी थी। उसकी माँ के स्तनों के बीच पसीने की एक बूँद टपक रही थी।
वह संतुष्टि से उसे अपने लंबे रेशमी बालों को संवारते हुए देखता रहा जो उसके नंगे कंधों पर बिखरे हुए थे। उसने अपनी हरी फ्रॉक पहनी और कुछ कपड़े एक पुराने भूरे सूटकेस में डाल दिए।
‘हम कहाँ जा रहे हैं, माँ?’
‘मिशेल! मुझे पता ही नहीं था कि तुम जाग रहे हो।’
क्या हम दादाजी से दोबारा मिलने जा रहे हैं?
आज नहीं। मुझे थोड़ी देर के लिए बाहर जाना है।
'क्या मैं आप के साथ आ सकता हुँ?'
‘तुम यहीं रहो। अपनी मां के प्रति अच्छे व्यवहार रखना, प्लीज।’
मिशेल को अचानक घबराहट महसूस हुई। 'तुम रो रही हो।'
वह उसके पलंग के पास झुक गई। 'मुझे बस थोड़ी देर के लिए जाना है। तुम यहाँ ठीक रहोगे। तुम्हारे पिता तुम्हारा अच्छे से ख्याल रखेंगे।'
जा रही हो? मुझे छोड़कर जा रही हो? उसका क्या मतलब है? वो ऐसा कैसे कह सकती है? वो सदमे में उसे देखता रहा। उसे पता था कि उसे किसी तरह उसे रोकना होगा, लेकिन वो पलंग की लोहे की सलाखों में फंसा हुआ था।
वह घबरा गया। 'नहीं, मां! नहीं!'
एड्रीएन ने अपना सूटकेस उठाया और दरवाज़े की ओर दौड़ पड़ी। 'प्लीज़, नन्हे मिशेल, प्लीज़...' उसका चेहरा आँसुओं से भीगा हुआ था। उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि ऐसा हो रहा है। दुनिया की इकलौती खूबसूरत चीज़ उसे छोड़कर जा रही थी?
उसका चेहरा एकदम सिकुड़ा हुआ था, उसकी वह अद्भुत देवी अचानक एक बंदर जैसी लग रही थी। आखिर क्या हो रहा था?
'नहीं!!'

एक पल के लिए एड्रिएन दरवाजे पर खड़ी रही, उसका चेहरा पीड़ा से भरा हुआ था, एक ऐसा भाव जिसे वह जीवन भर याद रखेगा। एक पल के लिए उसे लगा कि वह उसके लिए वापस आएगी और उसने अपनी बाहें फैलाकर चीख मारी। फिर अचानक दरवाजा ज़ोर से बंद हो गया और उसकी नुकीली हील की घंटियाँ लकड़ी की सीढ़ियों से नीचे गली में जा गिरीं, उसके जाने के बहुत देर बाद भी उस छोटे से कमरे में उसकी निराशा भरी चीखें गूँजती रहीं।

♦ ♦ ♦

जब जोगिंदर उस सुबह बाद में अपनी प्रार्थना से लौटा, तो उसे गली से चीखने की आवाज़ें सुनाई दीं। मोटा सिख व्यापारी अपनी दुकान के लोहे के शटर समेट रहा था। उसने गुस्से में कहा, 'तुम्हारा छोटा बच्चा सुबह से ऐसे ही चीख रहा है।'

‘मैं देख लूंगा, मैं देख लूंगा,’ जोगिंदर ने कहा। वह दौड़कर दुकान की लकड़ी की सीढ़ियों पर चढ़ गया।

साईं अपनी वर्कबेंच पर बैठी हुई थी और फुट-पेडल वाली सिंगर मशीन पर झुकी हुई थी।

जोगिंदर ने उससे पूछा, ‘क्या हो रहा है? ये झगड़ा किस बात का है?’

‘मैंने उसे मनाने की कोशिश की। वह मुझे अपने पास नहीं आने देता। उसने मुझे काट लिया,’ उसने कहा और अपनी बांह पर गुस्से से लाल निशान दिखाया।

‘एड्रीएन कहाँ है?’

'वह जा चुकी है।'

‘कहां गए?’

'आज सुबह जब मैं यहां पहुंची तो मैंने उसे सीढ़ियों पर देखा। उसके पास उसका सूटकेस था। उसने कहा कि मैं आपको बता दूं... उसने कहा कि मैं आपको बता दूं कि वह कभी वापस नहीं आएगी।'

जोगिंदर ने शयनकक्ष का दरवाजा खोल दिया। मिशेल लोहे के फ्रेम वाले पलंग पर खड़ा था, चीखने-चिल्लाने से उसका चेहरा चुकंदर की तरह लाल हो गया था। उसकी नाक से हर जगह बलगम बह रहा था। उसकी आँखें किसी जानवर की तरह बेकाबू थीं। जोगिंदर को देखते ही वह पीछे की ओर गिर पड़ा और बार-बार अपना सिर सलाखों से टकराने लगा।

‘चुप रहो!’ जोगिंदर उस पर चिल्लाया। ‘चुप रहो!’
मिशेल चीखता-चिल्लाता रहा और अपना सिर पटकता रहा, इसलिए जोगिंदर दौड़कर कमरे में गया और उसने लड़के को अपनी हथेली से पूरी ताकत से थप्पड़ मारा। इससे वह बस एक पल के लिए चुप हुआ। फिर वह दोबारा रोने लगा।
साई ने कहा, 'वह अपने पिता के पास वापस चली गई है।'
जोगिंदर ने पलटकर पूछा, 'तुमने उसे रोकने की कोशिश क्यों नहीं की?'
‘क्या यही हम चाहते थे?’
‘यही तो तुम चाहती थी!’ एड्रिएन! कमीनी! उसने उसे अपने उस छोटे से बच्चे के साथ छोड़ दिया! खैर, अगर उसे लगा था कि वह उसकी देखभाल करेगा, तो वह बहुत गलत थी।
‘तुम क्या करने वाले हो?’ साई ने उससे पूछा।
जोगिंदर को घिन आ रही थी। लड़के ने अपने पायजामे गंदे कर दिए थे। 'इसे यहाँ से बाहर निकालो!'
और उसे कहाँ ले जाएँगे?
‘मुझे परवाह नहीं कि तुम उसके साथ क्या करते हो। बस उसे यहाँ से बाहर निकालो।’
‘आपका मतलब अनाथालय से है?’
'अगर आपको पसंद है तो ठीक है। या फिर आप उसे सड़क पर फेंक सकते हैं। बस उससे छुटकारा पाइए!'
उस सुबह, लड़के के चले जाने के बाद, जोगिंदर का मन प्रसन्न हो गया। उसे ऐसा लगा जैसे उसके कंधों से एक बहुत बड़ा बोझ उतर गया हो। उसने अपनी कार्यशाला के ऊपर दीवार पर टंगी गणेश जी की तस्वीर के सामने धन्यवाद के कुछ शब्द बुदबुदाए और कृतज्ञता के प्रतीक के रूप में तस्वीर के नीचे अगरबत्ती जलाई।

दिसंबर 1951
रविवार की दोपहर थी और चारों ओर धुंध छाई हुई थी। गिरजाघर की घंटियों की गूंज साइगॉन में गूंज रही थी। एड्रिएन और उसके पिता कॉन्टिनेंटल होटल की छत पर धीमी गति से चल रहे पंखों के नीचे बैठे थे, और रू कैटिनैट को देख रहे थे, जिसकी चौड़ी, इमली के पेड़ों से घिरी गलियाँ घोड़ों और घोड़ों द्वारा खींची जाने वाली गाड़ियों से भरी हुई थीं, घोड़ों के खुरों की आवाज सड़क विक्रेताओं की आवाजों को दबा रही

थी। दूर क्षितिज पर शहर का धूसर विस्तार समुद्र के निर्मल नीले रंग में विलीन हो रहा था।

एड्रिएन ने अपनी वाइन ब्लैंक की चुस्की ली और रेस्टोरेंट में चारों ओर से पड़ रही घूरती निगाहों को नज़रअंदाज़ कर दिया। फ्रांसीसी उपनिवेश, प्रवासियों के हर गढ़ की तरह, गपशप से भरा हुआ था और इमैनुअल क्रिश्चियन की बदनाम बेटी हर सैलून और क्लब में चर्चा का मुख्य विषय बन चुकी थी। इमैनुअल, हमेशा की तरह अपने सफ़ेद कपड़ों में एकदम सजे-धजे, घूरती निगाहों और कानाफूसी से बेखबर लग रहे थे। लेकिन एड्रिएन जानती थी कि वह अंदर ही अंदर घुट रहे होंगे।

उन्होंने कहा, 'तुम बहुत शांत हो।'

‘क्या मैं हूँ, पापा?’

'मुझे खेद है अगर आपको मेरी संगति थकाऊ लगे। शायद यह उतनी... रोमांचक नहीं है जितनी आपको आदत है।'

‘तुम मुझसे क्या चाहते हो? तुम मुझे इस तरह सबके सामने घुमाने पर तुले हुए हो। क्या तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारे साथ एक छोटी स्कूली बच्ची की तरह हंसूं और खिलखिलाऊं?’

इमैनुएल शर्मिंदा होकर दूसरी तरफ देखने लगा। 'बेशक मैं आपसे कृतज्ञता की उम्मीद नहीं करता, लेकिन मुझे उम्मीद थी कि...'

'कृतज्ञता?'

'जी हां, आभार व्यक्त करें, और कृपया अपनी आवाज धीमी रखें।'

‘मैं किस बात के लिए आभारी होऊं? क्या आप चाहते हैं कि मैं आपको अपने ही घर से बेदखल करने और फिर अपना घर छोड़ने के लिए मजबूर करने के लिए धन्यवाद दूं...’ एड्रिएन ये शब्द कह नहीं पाई। उसने खुद को संभालते हुए सिट्रॉन प्रेसे की एक-एक घूंट ली। गिलास उसके हाथ में कांप रहा था।

‘तुमने मुझे कोई विकल्प नहीं छोड़ा। यह बात सब जानते हैं। और तुम जीवन भर विला में छिपकर नहीं रह सकते। बेहतर होगा कि तुम फिर से सभ्य समाज में दिखाई दो। उन्हें जो चाहे कहने दो, वे जल्द ही इससे ऊब जाएंगे। वैसे भी, मैं तुमसे अतीत के बारे में नहीं, बल्कि भविष्य के बारे में बात करना चाहता था।’

'ओह?'

‘तुम अभी भी जवान हो... तुम अभी भी अपने जीवन में कुछ कर सकते हो।’

‘मेरी जिंदगी? क्या यह सचमुच मेरी है?’
इमैनुएल ने आह भरी। 'प्लीज़, एड्रिएन, तुम्हें यह कड़वाहट छोड़नी होगी। खुद को देखो। तुम कभी कितनी खूबसूरत लड़की हुआ करती थी। तुम अपने साथ क्या कर रही हो? तुम ठीक से खाती भी नहीं हो और तुम्हारी आंखों के नीचे काले घेरे पड़ गए हैं।'
मुझे नींद नहीं आ रही है।
क्या आपको डॉक्टर से मिलने की जरूरत है?
उसने अपना सिर हिलाया, उसे फिर से आंसू आने का एहसास हुआ।
‘तुम पीली और दुबली-पतली लग रही हो।’
मैं बिल्कुल ठीक हूँ! बस... ये महिलाओं की परेशानियाँ हैं।
इससे वह हमेशा की तरह चुप हो गया। फिर भी वह जानती थी कि वह सही कह रहा है। उसे आश्चर्य हुआ कि उसका घमंड कहाँ चला गया, वह जानती थी कि उसने खुद को थोड़ा ढीला छोड़ दिया है। किसी तरह अब उसमें किसी भी काम के लिए हिम्मत नहीं बची थी। हर रात वह जागती और सोचती कि उसे मिशेल के रोने की आवाज़ सुनाई दे रही है। कभी-कभी, आधी नींद में, वह बिस्तर से उठकर उसके पलंग को ढूँढ़ने के लिए कमरे में इधर-उधर भटकती, फिर उसे याद आता कि वह कहाँ है और मिशेल वास्तव में वहाँ नहीं है।
जब उसने अपनी आँखें बंद कीं, तो उसे आज भी उसके चेहरे पर वही भाव दिखाई दे रहे थे जिस दिन वह उसे छोड़कर गई थी, सीढ़ियों से नीचे उतरते समय उसकी चीखें सुनाई दे रही थीं। तुम एक राक्षस हो, एड्रिएन।
अब चिंता करने के लिए और भी बातें थीं। उसका मासिक धर्म नहीं आया था। शायद इसमें कुछ खास बात नहीं थी; वैसे भी उसका मासिक धर्म आमतौर पर इतना नियमित होता था। शायद दर्जी की आखिरी बेइज्जती एक और बीज बोने जैसी थी। अब वह क्या करे?
उसने रेलिंग के ऊपर से नीचे सड़क पर चल रहे वाहनों को देखा। एक बस गली से अचानक मुड़ी और एक साइकिल सवार को सड़क पर बुरी तरह गिरा दिया। चारों ओर चीख-पुकार, हॉर्न और साइकिल की घंटियों की आवाज गूंज उठी, क्योंकि रिक्शा और रेनॉल्ट गाड़ियां गिरे हुए साइकिल सवार के चारों ओर से निकलने लगीं। बस चालक चीखता-चिल्लाता और वाहनों की ओर इशारे करता हुआ बाहर निकला।

चमत्कारिक रूप से, गिरा हुआ व्यक्ति खुद उठा और अपनी क्षतिग्रस्त साइकिल उठा ली। बस चालक हंसते हुए दौड़ा और उसकी पीठ थपथपाकर उसे बाल-बाल बचने पर बधाई दी। साइकिल चालक ने भी मुस्कुराते हुए हाथ मिलाया और अपनी टूटी हुई साइकिल को धकेलते हुए चला गया।

‘पश्चिमी और एशियाई लोगों में यही अंतर है,’ इमैनुएल ने कहा। ‘ऐसा लगता है जैसे उनके लिए अपने कार्यों की ज़िम्मेदारी लेना नामुमकिन है। बस चालक दोषी था, फिर भी उसने और उस बेचारे व्यक्ति ने, जिसे उसने टक्कर मारकर सड़क पर गिरा दिया, उस पूरी घटना को ऐसे माना जैसे वह ईश्वर की मर्ज़ी हो। वहीं साइकिल वाला सोचता है कि वह सचमुच भाग्यशाली है और शायद घर जाकर ताश के खेल में अपने आखिरी पियास्त्र भी दांव पर लगा देगा।’

आप तो प्रोफेसर की तरह बात कर रहे हैं।

मैं तुम्हें यथासंभव विनम्रता से यह समझाने की कोशिश कर रहा हूँ कि उस घृणित भारतीय के साथ तुम्हारा प्रेम संबंध शुरू से ही असफल क्यों था। तुम उसकी राह में बस एक और साइकिल थी, मेरी प्रिय।

टेबल पर एक परछाई पड़ी। एड्रिएन ने हैरानी से ऊपर देखा।

एक आदमी ने कहा, 'महाशय क्रिश्चियन।'

इमैनुएल मुड़ा। 'आह, जीन-क्लाउड। क्या हाल है?'

'हां यह ठीक है।'

'मुझे लगता है कि आपको मेरी बेटी से मिलने का सौभाग्य नहीं मिला है। एड्रिएन, ये जीन-क्लाउड ब्रेटन हैं। ये मेरे कार्यालय में मेरे स्टाफ में हैं।'

एड्रिएन मुस्कुराई। वह आदमी लंबा और दुबला-पतला था, उसके बाल पतले और सुनहरे थे और मूंछें हल्की-सी थीं। 'महाशय ब्रेटन।'

उन्होंने झुककर अभिवादन किया। 'आपसे मिलकर खुशी हुई, महोदया।'

‘क्या आप हमारे साथ एक गिलास वाइन पीना चाहेंगे?’ इमैनुएल ने प्रस्ताव रखा।

‘धन्यवाद, लेकिन नहीं,’ जीन-क्लाउड ने उत्तर दिया। ‘मैं यहाँ काम के सिलसिले में आया हूँ। ले फिगारो के एक महत्वपूर्ण पत्रकार आज साइगॉन पहुँचे हैं। मुझे उनसे यहाँ मिलना है और उन्हें टोंकिन की स्थिति के बारे में जानकारी देनी है। क्षमा करें।’

‘तुम बहुत ज्यादा मेहनत करते हो, जीन-क्लाउड,’ इमैनुएल ने हल्के से डांटते हुए कहा। ‘शाबाश।’

जीन-क्लाउड ने एड्रिएन की ओर देखा। वह इंतज़ार करती रही, सोच रही थी कि वह उससे कुछ कहने वाला है। लेकिन इसके बजाय वह शरमा गया और नज़रें फेर लीं।
'अच्छा, मुझे जाना होगा,' वह हकलाते हुए बोला। 'तो फिर आज शाम को मिलते हैं।'
वह तेज़ी से सीढ़ियों की ओर चल पड़ा और सबसे ऊपर वाली सीढ़ी पर लड़खड़ा गया।
‘एक बहुत ही होनहार युवक,’ इमैनुअल ने कहा।
'अगर आप ऐसा कहते हैं, तो मुझे लगता है कि आप सही होंगे।'
'आज शाम आप खुद ही फैसला कर सकते हैं।'
'यह शाम?'
मैंने उसे रात के खाने पर आमंत्रित किया है। वह आपसे मिलना चाहता है।

♦ ♦ ♦

माई ओंग ने केसरिया रंग का चिकन मेज पर रखा और चावल लाने के लिए कमरे से बाहर चली गई। इमैनुएल ने लाल बरगंडी की बोतल उठाई और जीन-क्लाउड का गिलास फिर से भर दिया। 'फ्रांस चलते हैं,' उसने कहा।
‘फ्रांस के लिए,’ जीन-क्लाउड ने टोस्ट दोहराया। उन्होंने पिया।
एड्रिएन अपने गिलास के किनारे से अपने मेहमान को देख रही थी। जीन-क्लाउड ब्रेटन शायद उसकी सोच से कम उम्र के थे। उनकी त्वचा कोमल और पीली थी, जो उनके ऊपरी होंठ पर हल्की मूंछों के कारण उन्हें लगभग स्त्री जैसा बना देती। उनका शरीर दुबला-पतला और लचीला था, और उनका क्रीम रंग का डबल-ब्रेस्टेड सूट उनके कंधों पर ढीला लटका हुआ था। उन्होंने अपनी लगभग सारी बातचीत एड्रिएन के पिता से ही की, हालांकि खाने के दौरान कई बार एड्रिएन ने ऊपर देखा तो पाया कि वह उसे घूर रहे हैं। लेकिन जैसे ही एड्रिएन की नज़र उन पर पड़ती, वह नज़रें हटा लेते।
वह जानती थी कि उसके पिता ने उसे यहाँ क्यों बुलाया था। वह उसकी शादी करवाना चाहते थे और आखिरकार उससे अपना पीछा छुड़ाना चाहते थे। उसे आश्चर्य होता था कि उसके पिता इतने भोले कैसे हो सकते हैं कि उन्होंने इसी को चुना।
वह धीरे-धीरे खाना खा रही थी, मानो बातचीत में दिलचस्पी दिखा रही हो। जीन-क्लाउड और उसके पिता उस रिपोर्टर के बारे में बात कर रहे थे जो उस सुबह कॉन्टिनेंटल होटल पहुंचा था। उसने जम्हाई को दबा लिया।

लेकिन उनके पिता की कोई बात नहीं छिपी: 'मुझे उम्मीद है कि हम इस सारी बातचीत से आपको बोर नहीं कर रहे हैं,' उन्होंने कहा।
‘नहीं, बिलकुल नहीं,’ एड्रिएन ने कहा। ‘यह तो बेहद दिलचस्प है।’
'जीन-क्लाउड मेरे सबसे अच्छे अधिकारियों में से एक है। मुझे उसे खोने का बहुत दुख होगा।'
एड्रिएन ने पहली बार सीधे जीन-क्लाउड की ओर देखा। 'क्या आपको पदोन्नति मिली है?'
मुझे डकार में पदभार ग्रहण करना है।
‘डाकार? सेनेगल में?’
‘क्षेत्रीय ब्यूरो का नेतृत्व करने वाले सबसे कम उम्र के व्यक्तियों में से एक,’ इमैनुअल ने आगे कहा। ‘उनका भविष्य उज्ज्वल है।’
‘बधाई हो!’ एड्रिएन मुस्कुराई और जश्न मनाते हुए अपना गिलास उठाया। और उसने सोचा: पश्चिम अफ्रीका! मेरे पिता सचमुच मुझे यहाँ से हटाना चाहते हैं!
कॉफी पीने के बाद, इमैनुएल बरामदे में सिगार पीने के लिए चले गए।
‘मैं आपके साथ आऊंगा, महोदय,’ जीन-क्लाउड ने कहा।
नहीं, नहीं। यहीं रुको और मेरी बेटी का साथ दो। मुझे ज्यादा देर नहीं लगेगी।
बाहर पत्थर की पट्टियों पर इमैनुएल के कदमों की आहट सुनाई दे रही थी। जीन-क्लाउड अपनी उंगलियों से मेज की पॉलिश की हुई सागौन की लकड़ी पर थपथपा रहा था। एड्रिएन अपनी कुर्सी पर पीछे झुककर बैठ गई और अचानक ही उसने अपनी बाहें मोड़ लीं, जिससे उसके नीले क्रेप-डे-चाइन शाम के गाउन के नीचे उसकी मलाई जैसी उभरी हुई छाती और भी आकर्षक लग रही थी। उसने जीन-क्लाउड के माथे पर पसीने की एक धार को छोटे-छोटे फफोलों की तरह उभरते हुए देखा।
अंत में उन्होंने कहा, 'यह बहुत ही सुंदर पोशाक है।'
'धन्यवाद।'
जीन-क्लाउड के सारे दांव-पेच खत्म हो चुके थे। वह घबराकर कमरे में इधर-उधर देखने लगा। वह किसी शिकार किए गए जानवर जैसा लग रहा था। एड्रिएन को अचानक उस पर दया आ गई। 'तुम डकार कब जा रहे हो?'
‘तीन और हफ्ते।’ और फिर उन्होंने कहा, ‘मुझे अब जाने का दुख होगा...’
'ओह क्यों?'

मैं... मैं आपसे दोबारा मिलना चाहूंगा।
‘शायद आप ऐसा कर लें,’ एड्रिएन ने कहा, हालांकि वह जानती थी कि इसकी कोई संभावना नहीं थी। ‘क्या मुझे थोड़ी और शराब मिल सकती है?’
‘ज़रूर।’ उसने बहुत जल्दी-जल्दी वाइन डाली और उसके हाथ काँप रहे थे। गहरे लाल रंग की वाइन गिलास में छलक गई और कुछ बूँदें उसकी पोशाक पर गिर गईं। वह उछलकर बाथरूम की ओर भागी ताकि अपनी सबसे अच्छी फ्रॉक को दाग लगने से पहले उन्हें साफ कर सके। उसने उसकी धीमी आवाज़ में कही गई माफी सुनने का भी इंतज़ार नहीं किया।

♦ ♦ ♦

‘वह अनाड़ी है और उससे बात करना बिल्कुल नामुमकिन है,’ एड्रिएन ने कहा। ‘मुझे नहीं पता कि तुमने उसे यहाँ क्यों बुलाया।’
ऐसा लगता है कि तुमने अपने सबक अच्छे से नहीं सीखे हैं।
‘कौन से सबक?’
‘उस प्रेम प्रसंग से न तो सिर पर छत मिलती है और न ही खाने को। जीन-क्लाउड एक नेक नौजवान है जिसका भविष्य उज्ज्वल है। और न जाने क्यों, उसे लगता है कि तुम नारीत्व की पराकाष्ठा हो।’
'वह एक काफी मिलनसार सज्जन हो सकते हैं। मुझे एक पुरुष में कुछ और भी चाहिए।'
‘शायद कोई ऐसा व्यक्ति जो सूट सिल सके।’ इमैनुएल ने एक क्रिस्टल का गिलास उठाया और अपने लिए ब्रांडी डाली। वह आराम से अपनी विंग-बैक कुर्सी पर बैठ गया।
मैं अपना पति खुद ढूंढ लूंगी।
‘तुम्हें समझ नहीं आ रहा, है ना? तुम साइगॉन में नहीं रह सकते। यहाँ हर कोई तुम्हारे बारे में जानता है। तुम्हारी बदनामी हो चुकी है, और यह अच्छी बात नहीं है। इसीलिए जीन-क्लाउड ब्रेटन तुम्हारे लिए इतना बेहतरीन विकल्प हैं। तीन हफ़्ते में वह डकार में होंगे। तुम बिना अपमान और ताने-बाने के एक नई ज़िंदगी शुरू कर सकते हो।’
किसी ने मेरा अपमान नहीं किया है।
‘मैंने उन्हें मौका नहीं दिया। लेकिन साइगॉन एशियाई लोगों से घिरा एक प्रांतीय

फ्रांसीसी गाँव है। आप अपने अतीत से कभी नहीं बच सकते। यहाँ तो बिल्कुल नहीं।’
एड्रिएन उठ खड़ी हुई। 'मैं थक गई हूँ। मुझे लगता है मुझे सोने जाना चाहिए।'
‘सोचो, प्यारी। अगर तुम अपने भले के लिए नहीं करोगी, तो मेरे बारे में सोचो।’
उसने उसे कड़वी मुस्कान दी। 'मुझे आश्चर्य था कि तुम इसे कब तक कर पाओगे।'
उसने अपनी पोशाक की ओर देखा। 'इसे देखो। यह पूरी तरह से खराब हो गई है। शुभ रात्रि।'

अध्याय 5

अगली शाम, इमैनुअल क्रिश्चियन रू पास्टूर से गुज़र रहे थे। ढीली-ढाली सफेद कमीज़ पहने कई युवा वियतनामी क्लर्कों के बीच वे एक लंबे और आकर्षक व्यक्तित्व वाले व्यक्ति थे, जो दिन भर के काम के बाद सरकारी दफ्तरों से घर लौट रहे थे। नुकीली भूसे की टोपी पहने बूढ़ी औरतें फुटपाथ पर गुब्बारे बेच रही थीं, जबकि उनकी बेटियाँ सिगरेट बेच रही थीं। तभी अल्जीरियाई सैनिकों से भरा एक ट्रक गड़गड़ाता हुआ गुज़रा।
इमैनुअल क्रिश्चियन अपने ही विचारों में खोया हुआ था। वह एड्रिएन के बारे में सोच रहा था, और यह समझ नहीं पा रहा था कि उसने ऐसा क्या किया था कि उसे इतनी ज़िद्दी और अनैतिक बेटी मिली। उसने उसे सब कुछ दिया था, उसे एक अच्छे स्कूल में भेजा था, उसे सबसे अच्छे कपड़े दिलाए थे, उसे ऐसे उत्तम शिष्टाचार सिखाए थे जो अगर वह चाहती तो उसे फ्रांसीसी समाज के उच्च वर्ग तक पहुंचा सकते थे। बदले में उसने उसे अपमानित किया, उसका करियर बर्बाद कर दिया, उसे उस समाज में बहिष्कृत और अछूत बना दिया जहाँ कभी उसका सम्मान और प्रशंसा होती थी। लेकिन उसने उसे उस बात के लिए माफ कर दिया था और उसे अपने घर लौटने की इजाजत दे दी थी। उसने बदले में उसे क्या दिया? ज़हर उगलकर। वह बिलकुल ही बेताब थी। उससे तर्क करना नामुमकिन था, बिल्कुल उसकी माँ की तरह।
वह कैफे गिवराल के पास से गुजरा। उसकी खिड़कियों पर बारीक जाली लगी हुई थी ताकि पिछले महीने हुई उस भयानक घटना की पुनरावृत्ति न हो, जब अंदर एक ग्रेनेड फेंका गया था, जिसमें एक मेज पर बैठे छह सैनिक मारे गए थे और सोलह अन्य घायल हो गए थे।
यह एपेरिटिफ़ का समय था। कैफ़े उनके जैसे अधिकारियों और फ्रेंच एक्सपेडिशनरी

कोर के कुछ अधिकारियों से खचाखच भरा हुआ था। अब इसे खाने के लिए एक अच्छी जगह माना जाता था क्योंकि आम राय यह थी कि एक ही जगह पर दो बार बिजली नहीं गिरती। एक जर्मन सैनिक फुटपाथ पर रखी लकड़ी की मुड़ी हुई मेज़ों में से एक पर बैठा था और सेवा के लिए अपनी उंगलियां चटका रहा था।
शाम का आसमान नींबू-धूसर रंग का था, परछाइयाँ लंबी थीं। इमैनुएल ने ग्रे सूती कमीज़ पहने वियतनामी व्यक्ति को गिवराल के बगल वाली गली से बाहर निकलते और कुछ ही गज की दूरी पर दरवाजे में लापरवाही से ग्रेनेड फेंकते हुए नहीं देखा। एक ज़ोरदार धमाका हुआ और तेज़ रोशनी की एक किरण उसकी आँखों को चुभ गई। किसी चीज़ ने उसकी छाती के किनारे पर ज़ोर से वार किया। वह पीठ के बल गिर पड़ा और एक पल के लिए उसे लगा कि कोई साइकिल सवार फुटपाथ पर आ चढ़ा है और उससे टकरा गया है। उसने अपने अनदेखे हमलावर को कोसना शुरू किया, लेकिन शब्द नहीं निकल रहे थे। वह हिल भी नहीं पा रहा था। आसमान काला हो गया। उसे पता नहीं था कि वह मर रहा है, न ही उसने फुटपाथ पर अपने बगल में पड़े घायलों की चीखें सुनीं, जो अपने ही खून के तालाब में तड़प रहे थे।
उनका आखिरी विचार था: अगर मैं सौ साल तक भी जी लूं तो भी मैं महिलाओं को कभी नहीं समझ पाऊंगा।

♦ ♦ ♦

एड्रिएन बरामदे में बैठी थी, उसका चेहरा भावहीन था।
'मर गया,' उसने धीरे से अपने आप से कहा, 'मर गया।' उसने सोचा कि इन शब्दों को ज़ोर से कहने से शायद सच्चाई ज़्यादा वास्तविक लगे। उसे अब भी उम्मीद थी कि वह किसी भी क्षण फ्रांसीसी खिड़कियों से अंदर आ जाएगा, अपनी बेतुकी मखमली स्मोकिंग जैकेट या सफेद टोपी पहने, हाथ में ले फिगारो की एक प्रति लिए, और उसके चेहरे पर वही आदत वाली नाराज़गी भरी शिकन होगी। उसे उम्मीद थी कि उसे अपने किए पर पछतावा होगा, या शायद इस बात की राहत होगी कि अब वह उस पर अपना अधिकार नहीं जमा सकता। लेकिन इसके बजाय वह बस सुन्न महसूस कर रही थी।
उनकी मृत्यु को अब दो सप्ताह हो चुके थे। उनका अंतिम संस्कार पलक झपकते ही बीत गया। वकील ने वसीयत पढ़ी। उसे यह जानकर गहरा सदमा लगा कि उसके पिता ने अपनी संपत्ति पर कुछ शर्तें रखी थीं, जो स्पष्ट रूप से उन्होंने पाँच साल पहले

ही सोच ली थीं। उन्होंने शर्त रखी थी कि जब तक उसकी शादी किसी फ्रांसीसी नागरिक से नहीं हो जाती, तब तक उसे एक भी फ्रैंक नहीं मिलेगा। यदि ऐसा कोई विवाह नहीं होता, तो पैसा ट्रस्ट में ही रहेगा।

मानो इतनी बुरी खबर काफी नहीं थी, अब उसे लगभग यकीन हो गया था कि वह गर्भवती है, और इस संभावना ने उसकी आत्मा को झकझोर दिया। अब वह क्या करेगी? फ्रांसीसी प्रशासन उसे फ्रांस वापस भेजने की तैयारी कर रहा था। जब तक वह पेरिस लौटेगी, तब तक वह तीन महीने की गर्भवती हो चुकी होगी और उसके पास कोई निजी साधन नहीं होंगे। 'जब तुम किसी गंदे आदिवासी के बच्चे को जन्म दोगी, तो तुम्हें कौन चाहेगा?' उसने अपने पिता को कहते सुना।

वह क्या करने वाली थी?

माई ओंग अचानक बरामदे में प्रकट हुईं। 'मिस, आपसे मिलने के लिए महाशय ब्रेटन आए हैं।'

पहले तो एड्रिएन को नाम याद नहीं आया। 'ब्रेटन? मैं किसी को नहीं जानती... आह, हाँ। जीन-क्लाउड। वही जिसने मेरी सबसे अच्छी ड्रेस खराब कर दी।'

'मैंने उससे कहा कि तुम यहाँ नहीं हो?'

नहीं, कोई बात नहीं। मैं उससे मिल लूंगा।

जीन-क्लाउड ने एड्रिएन के पिता के सम्मान में असुविधा सहन करते हुए काला सूट और टाई पहनी थी। उनके माथे पर पसीने की छोटी-छोटी बूँदें चमक रही थीं और गर्मी से उनके गाल गुलाबी हो गए थे। उन्होंने एक बड़े सफेद रुमाल से अपना चेहरा पोंछा।

'मैडम,' उन्होंने कहा और झुककर अभिवादन किया। 'मैं आपको श्रद्धांजलि अर्पित करने और आपका हालचाल जानने आया हूँ। आपके पिता का निधन एक दुखद घटना थी। वे विभाग के सबसे सम्मानित व्यक्तियों में से एक थे।'

'धन्यवाद, महाशय ब्रेटन,' एड्रिएन ने कहा। 'क्या आप बैठेंगे?' उसने माई ओंग की ओर देखा। 'हमारे लिए नींबू का रस का एक जग ले आइए।'

बुदबुदाते हुए बूढ़ी औरत अंदर चली गई।

जीन-क्लाउड ने कहा, 'मुझे नहीं लगता कि वह मुझे पसंद करती है।'

'वह किसी को पसंद नहीं करती। मेरे पिता ही एकमात्र ऐसे व्यक्ति थे जो उसके साथ कुछ कर सकते थे।'

'आपके बेचारे पिता। यह एक बर्बर हमला था। बर्बर! यह आपके लिए बहुत भयानक

रहा होगा।'
एड्रिएन ने सिर हिलाया। 'हाँ, ऐसा ही है।' वह कितना गंभीर और सच्चा है, उसने सोचा। अफसोस की बात है कि वह इतना नीरस भी है।
'अब आप क्या करेंगे?'
वे मुझे वापस फ्रांस भेज रहे हैं।
क्या वहां आपका कोई परिवार है?
एड्रिएन ने कंधे उचकाते हुए कहा, 'एक चाचा। लेकिन मैंने उन्हें बारह साल से ज़्यादा समय से नहीं देखा है। मुझे यह भी नहीं पता कि वे अभी भी जीवित हैं या नहीं।'
फिर भी, मुझे पूरा यकीन है कि तुम्हारे पिता ने तुम्हारा ख्याल रखा होगा।
एड्रिएन ने जबरदस्ती कड़वी मुस्कान दी। 'हां। उसने इंतजाम कर दिए थे।'
माई ओंग नींबू पानी का जग और दो गिलास वाली ट्रे लेकर लंगड़ाते हुए वापस आई। उसके जाने के बाद एड्रिएन ने जीन-क्लाउड की ओर मुड़कर कहा: 'तुम आए ही क्यों थे?'
वह उसके सीधे सवाल से चौंक गया। 'अच्छा, मैं... जैसा कि मैंने कहा, मैं यह सुनिश्चित करना चाहता था कि आप ठीक हैं या नहीं। अगर मैं कुछ कर सकता हूँ तो...'
'आपकी बहुत मेहरबानी हुई,' एड्रिएन ने कहा और मुस्कुराते हुए उसे धन्यवाद दिया।
'जीन-क्लाउड, मैं इसकी आभारी हूँ।' उसने हाथ बढ़ाकर हल्के से उसका हाथ छुआ। उसका नाम सुनकर वह खुशी से लाल हो गया और उसके स्पर्श से उसका चेहरा लाल हो गया। वास्तव में, उसे इतना आनंद आया कि उसने नींबू पानी का जग ज़मीन पर पटक दिया।

♦ ♦ ♦

अगले सप्ताह तक वह जीन-क्लाउड से लगभग हर दिन मिलती रही। रामुंचो और वैलेंको में दोपहर का भोजन और कॉन्टिनेंटल और कारवेल में रात का भोजन होता था। जीन-क्लाउड बहुत ध्यानपूर्वक और विनम्र था। उसने एक बार भी उसे चूमने की कोशिश नहीं की। एड्रिएन अधीर होने लगी। समय बीतता जा रहा था।
उन्हें सूचना मिली थी कि उनका जहाज अगले बुधवार को रवाना होगा। उन्होंने हिसाब लगाया कि उनके पास मैडम जीन-क्लाउड ब्रेटन बनने के लिए चार दिन का समय है। यह फैसला उसने हल्के में नहीं लिया था। लेकिन उसके पिता और किस्मत के क्रूर

मोड़ ने उसे कोई विकल्प नहीं छोड़ा था। अगर वह अभी, गर्भ दिखने से पहले, जीन-क्लाउड से शादी कर लेती, तो उसे पति की सुरक्षा मिल जाती और वह अपने पिता की वसीयत की शर्तों को भी पूरा कर लेती। बेशक, जब उसे बच्चे के बारे में पता चलता, तो उसे उससे कुछ कहना पड़ता। लेकिन तब तक उसके लिए अपने फैसले पर पुनर्विचार करना बहुत देर हो चुकी होती।

एड्रिएन अपनी व्यावहारिकता पर हैरान थी। अठारह साल की उम्र में वह जिस भोली-भाली रोमांटिक लड़की जैसी थी, अब वैसी नहीं रही थी। अब वह मान सकती थी कि उसके पिता हमेशा सही थे। वह मूर्ख थी। इसके अलावा, भले ही वह जीन-क्लाउड से प्यार न करती हो, लेकिन उसे पसंद तो करती थी। और वह जानती थी कि जीन-क्लाउड भी उसे चाहता है।

काश वो जल्दी से यह बात कह देता।

♦ ♦ ♦

उस रविवार को वे हाथ में हाथ डाले बोटैनिक गार्डन में टहल रहे थे। रेशमी पोशाक पहने वियतनामी लड़कियाँ छायादार रास्तों पर साइकिल चला रही थीं, उनके प्रेमी शॉर्ट्स, सूती कमीज़ और टोपी पहने उनके बगल में थोड़े अजीब लग रहे थे। उनके ऊपर आसमान में सारस पेड़ों की सबसे ऊँची शाखाओं पर अपने घोंसले बना रहे थे। पार्क में संडे स्कूल जैसा माहौल था। वहां कृत्रिम फूलों की भेंट बेचने वाले स्टॉल थे, और सफेद दाढ़ी वाले ज्योतिषी आवर्धक लेंस से ग्राहकों की आंखों में झांक रहे थे। जीन-क्लाउड ने एड्रिएन को छायादार रास्ते की ओर ले जाते हुए, उसके सीने में दिल ज़ोर से धड़क रहा था। उसने अपने पूरे जीवन में कभी इतना घबराया हुआ महसूस नहीं किया था।

‘एड्रीएन...’ उसने गहरी सांस ली। ‘एड्रीएन, मुझे तुमसे कुछ कहना था।’

'जी हां, जीन-क्लाउड?'

‘जल्द ही तुम फ्रांस वापस जाने के लिए निकल जाओगे। मैं डकार जाऊंगा। शायद हम फिर कभी न मिलें और...’

'क्या तुम्हे मेरी कमी महसूस होगी?'

‘ओह जी हाँ,’ जीन-क्लाउड ने कहा और अपने बगल में खड़ी उस खूबसूरत, काले बालों वाली लड़की की ओर देखा। उसने अपने जीवन में कभी इतनी सुंदर चीज नहीं देखी थी। ‘ओह जी हाँ, बिलकुल।’

‘आपकी बाकी बेटियों का क्या? क्या आपको उनकी भी याद आएगी?’
जीन-क्लाउड का चेहरा लाल हो गया। उसने उससे कहा, 'और कोई नहीं है।'
मुझे आप पर विश्वास नहीं है।
‘मैं सच कह रहा हूँ। मैं सिर्फ तुमसे प्यार करता हूँ।’ आखिरकार उसने ये कह दिया।
फिर वो जल्दी से बोला: ‘मैंने पहले कभी किसी औरत के लिए ऐसा महसूस नहीं किया।’ उसने उसके मुँह फेरने का इंतज़ार किया, ताकि वो उन शब्दों को कहे जिनका उसे डर था: तुम जानती हो कि मैं तुम्हें बहुत पसंद करता हूँ, लेकिन...
इसके बजाय, उसने उसकी आँखों में गहराई से देखा। 'क्या तुम, जीन-क्लाउड? क्या तुम सचमुच मुझसे प्यार करते हो?'
‘तुम जानते हो कि मैं ऐसा करता हूँ।’
'मेरे बारे में ऐसी बहुत सी बातें हैं जो आप नहीं जानते।'
‘ऐसा कुछ भी नहीं है जो मुझे बदल सके।’ बेशक, उसने ये कहानियां सुनी थीं। साइगॉन में हर किसी ने इमैनुअल क्रिश्चियन की बेटी के बारे में सुना था। यहां तक कि एक स्थानीय महिला से उसके नाजायज बच्चे की अफवाहें भी थीं।
जीन-क्लाउड को कोई परवाह नहीं थी; असल में, उसके शरीर पर मौजूद निशान ही थे जिन्होंने उसे उसकी ओर आकर्षित किया था। इससे उसे उसके साथ एक फायदा मिलता था, एक ऐसा फायदा जो उसे दूसरी महिलाओं के साथ नहीं मिलता था। वह जवान थी; वह खूबसूरत थी; वह पढ़ी-लिखी थी; उसे और क्या चाहिए था? पिछली रात ही, कॉन्टिनेंटल होटल की छत पर, उसने दो अन्य युवकों को उसकी ओर चोरी-छिपे देखते हुए देखा था, और उसने उनके चेहरों पर ईर्ष्या देखी थी। जीन-क्लाउड जीवन भर महिलाओं के साथ असहज रहा था और ऐसी महिला का साथ पाना जिसे दूसरे पुरुष चाहते थे, उसके लिए एक नया अनुभव था।
‘जीन-क्लाउड, तुम क्या कह रहे हो?’
‘एड्रीएन...’ उसने मुश्किल से अपनी बात कही। ‘क्या तुम मुझसे शादी करोगी?’
‘जीन-क्लाउड! ये तो अचानक हो गया!’ उसने अपना हाथ अपनी छाती पर रखा।
‘मुझे समझ नहीं आ रहा कि क्या कहूँ। मुझे इसकी उम्मीद नहीं थी।’
आपको तुरंत जवाब देने की जरूरत नहीं है...
उसने उसके हाथ अपने हाथों में ले लिए। ‘लेकिन हमारे पास अभी बहुत समय है। तो शायद, भले ही यह सब अचानक हुआ हो, मुझे लगता है कि शायद मुझे जवाब पता

है...'

♦ ♦ ♦

एक महंगी मलमल की पोशाक पहने फ्रांसीसी महिला के सीढ़ियों पर चढ़ने पर जोगिंदर कृष्णन ने बनावटी विनम्रता का भाव धारण किया। यह भाव शीघ्र ही आश्चर्य में बदल गया, और फिर तिरस्कार में।

'आप यहां पर क्या कर रहे हैं?'

उसके पीछे साई की पैर से चलने वाली मशीन रुक-रुक कर शांत हो गई। एड्रिएन क्रिश्चियन, जो जल्द ही ब्रेटन बनने वाली थी, ने दोपहर की तेज़ धूप से बचने के लिए लाई गई छतरी को समेटा और खट्टी यादों से भरे कमरे में चारों ओर देखा। इलायची और हल्दी की तेज़ गंध से उसे उल्टी आने लगी।

मैं साइगॉन छोड़ रहा हूँ। मेरी शादी होने वाली है।

जोगिंदर ने उदासीनता से कंधे उचका दिए। 'तो क्या?'

मैं जाने से पहले मिशेल से मिलना चाहता हूँ।

उसने चिड़चिड़ाकर अपने पेट को खुजलाया। 'क्यों?'

मैं अलविदा कहना चाहता हूँ।

'आप ऐसा नहीं कर सकते। वह यहाँ नहीं है।'

'वह कब लौटेगा?' यहाँ वापस आने के लिए उसे बहुत हिम्मत जुटानी पड़ी थी। उसे नहीं पता था कि वह क्या हासिल करना चाहती है, लेकिन उसे उस लड़के को एक बार फिर देखना ही था। शायद उसे समझाने के लिए। यह सुनिश्चित करने के लिए कि वह ठीक है।

'देखो, वह यहाँ नहीं है। मुझे नहीं पता कि वह कहाँ है।'

'यहाँ नहीं?'

मैंने तुम्हें चेतावनी दी थी। इसमें मेरी कोई गलती नहीं है। अगर तुम उसे इतना ही चाहती थी, तो तुम्हें उसे अपने साथ ले जाना चाहिए था।

एड्रिएन उस आदमी के गुस्से से भरे, मोटे चेहरे को घूर रही थी जिसे वह कभी प्यार करती थी, और उसके पीछे खड़ी अंडाकार चेहरे वाली लड़की को भी। 'नहीं,' वह कराह उठी। 'नहीं, तुमने नहीं किया।'

'वह तुम्हारा बिगड़ैल बच्चा था। मैं उसे कभी नहीं चाहती थी। तुम यह जानती थी।'

‘वह तुम्हारा बेटा था।’
मेरे पहले से ही दो बेटे हैं। मुझे एक और बेटे की क्या जरूरत है?
एड्रिएन दीवार के सहारे बैठ गई। 'हे भगवान, वह कहाँ है?'
मैंने तुमसे कहा था, मुझे नहीं पता। अब जाओ, चले जाओ। मुझे तुम्हारी यहाँ और ज़रूरत नहीं है।
एड्रिएन लड़खड़ाते हुए सीढ़ियों से नीचे उतरी। वह रू कैटिनैट पर खड़ी थी, जबकि साइगॉन के लोग उसके चारों ओर सुन्न और अंधे होकर हलचल मचा रहे थे। उसने क्या किया था? यह सब उसकी गलती थी। अब वह स्वर्गदूतों के क्रोध से कभी नहीं बच पाएगी।

जून 1952
सोउर गैब्रिएल ने नीचे चौक में एक छोटे लड़के को चलते हुए देखा और वह एक कोने में दीवार से पीठ टिकाकर बैठ गया। उसका नाम मिशेल था। उसे छह महीने पहले यहाँ लाया गया था, वह पीला पड़ा हुआ और भूखा था। उसकी माँ ने उसे यूँ ही छोड़ दिया था। उसने कहा कि उसकी माँ फ्रांसीसी थी। फ्रांसीसी!
कभी-कभी इतने दुख-तकलीफों के बीच एक दयालु ईश्वर में अपना विश्वास बनाए रखना उसके लिए बहुत मुश्किल हो जाता था। उसने अपने जीवन में बहुत निराशा देखी थी। उसका जन्म तीस साल पहले साइगॉन में हुआ था और उसकी परिस्थितियों ने उसे हर दिन दुख के अनेक और घिनौने रूपों को देखने का अवसर दिया था। 1920 के दशक में रबर के बढ़ते कारोबार के दौरान, उसके दादा को रुंग सैट के एक बागान में ठेका मजदूर के रूप में काम करते समय पीट-पीटकर मार डाला गया था; उसके दो भाई अफीम के आदी हो गए थे और कंकाल जैसे दुबले-पतले हो गए थे; उसने ह्यू में हमलावर जापानी सैनिकों द्वारा अपनी दो साथी ननों के साथ बलात्कार और उनकी बेरहमी से हत्या करते हुए देखा था। हिंसा और अपमान वियतनाम का उतना ही अभिन्न अंग थे जितना कि नुओक माम और आओ-दाई।
वियत मिन्ह और फ्रांसीसियों के बीच चल रहे युद्ध ने कई बच्चों को अनाथ कर दिया था। यहाँ, कम से कम, बच्चों को थोड़ा भोजन और रहने की जगह तो मिल रही थी। लेकिन फिर भी वह सोचती रही कि वह उन्हें किसलिए बचा रही है। वह जानती थी कि ऐसा सोचना पाप है; आस्था तो रखनी ही चाहिए।

वह जानती थी कि नीचे पड़ा वह छोटा लड़का कभी जीवित नहीं रह पाएगा। वह बहुत कम खाता था, दूसरे बच्चों में उसका कोई दोस्त नहीं था, वह किसी से बात नहीं करता था। वह शायद ही अंदाज़ा लगा सकती थी कि वह दुनिया और उसमें अपनी जगह के बारे में क्या सोचता होगा। उसने देखा कि उसका सिर उसके घुटनों के बीच झुक गया। वह एक हारे हुए कुत्ते जैसा लग रहा था।
नहीं, वह जीवित नहीं रह पाएगा।

भाग दो

मिशेल और वैलेंटाइन 1954-64

अध्याय 6

‘यह लड़का जानवर है। दरिंदा है। मुझे नहीं पता कि हम इसके साथ क्या करें।’ कुन्या अपनी गोद में रखी माला से खेलने लगी। सिस्टर गैब्रिएल ने उसे इतना परेशान पहले कभी नहीं देखा था। ‘ठीक है, बोलो। अपने मन की बात कहो।’
‘मुझे नहीं पता कि क्या कहूँ, माँ। मुझे पता है कि लड़का मुश्किल है—’
'कठिन!'
‘...लेकिन मुझे यकीन है कि समय के साथ—’
‘वह तीन साल से अधिक समय से हमारे साथ है। इस दौरान उसने हमें उन सैकड़ों अन्य बच्चों से कहीं अधिक परेशानी दी है जो यहां रहे हैं।’
सिस्टर गैब्रिएल ने अपना सिर झुकाया। 'जी माँ।'
बुजुर्ग महिला ने अधीरता से अपनी मेज के किनारे पर थपथपाया। 'वह मुझे डराता है। मैं उसकी आँखों में देखती हूँ और मुझे केवल बुराई ही दिखाई देती है।'
‘वह तो अभी बच्चा ही है, माँ।’
‘हाँ, लेकिन एक दिन वो बड़ा होकर आदमी बनेगा।’ बड़ी नन उठीं और हरे रंग के शटर वाली खिड़की के पास गईं। उन्होंने चैपल में बच्चों की मधुर आवाज़ में गाए जा रहे ‘ओ होली नाइट’ गीत को सुना। उन्हें ले सैक्रे-कोउर पर गर्व था। यह अनाथालय लगभग

डेढ़ सौ बच्चों को आश्रय देता था, जो युद्ध के अनाथ या फ्रांसीसी सैनिकों के अवांछित मिश्रित नस्ल के बच्चे थे। उन्हें एक नाम दिया गया था: बुई डोई - जीवन की धूल; पिटे हुए, भूखे, अपंग।
ननों ने यथासंभव अधिक से अधिक लोगों को आश्रय और सहायता प्रदान की थी। लेकिन यह वाला... यह वाला अलग था। उसने उनकी दयालुता को उनके मुंह पर थूक दिया, जितनी बार खाना खाया उतनी ही बार खाने से इनकार कर दिया, भले ही उसकी हड्डियां उसकी त्वचा से दिखाई दे रही थीं, और उसने उन्हें गालियां दीं और मुक्कों से उन पर वार किए।
केवल सोउर गैब्रिएल ही उनके करीब पहुंच सकती थीं।
‘आप मुझसे क्या करवाना चाहती हैं?’ छोटी नन ने कहा।
मुझे नहीं पता। मैं उसके लिए लगातार प्रार्थना करता हूं। अभी तक मुझे जवाब नहीं मिला है।
‘वह कष्ट सह रहा है, माँ।’
‘ये सभी बच्चे पीड़ित हैं! फिर भी मैंने किसी बच्चे में इतनी नफरत, इतना द्वेष कभी नहीं देखा। उसकी उम्र कितनी होगी? आठ साल, शायद नौ, इससे ज्यादा नहीं।’
मुझे पूरा यकीन है कि समय मिलने पर...
'आपका विश्वास आपके लिए प्रशंसनीय है, सिस्टर। मुझे खुद यहां के अन्य बच्चों की चिंता है। उनकी उपस्थिति उन पर जहरीला प्रभाव डाल रही है।'
उसने दीवार की ओर देखा। छत में एक दरार से एक छोटी सफेद छिपकली निकली और धन्य वर्जिन मैरी की एक सस्ती सी तस्वीर के पीछे छिप गई।
‘क्या आपको फ्रांसीसी आव्रजन विभाग से कोई और खबर मिली है, माँ?’
चर्च की अध्यापिका ने सिर हिलाया। दो साल पहले, उन्होंने लड़के को फ्रांस वापस भेजने के लिए आवेदन किया था, क्योंकि उसमें स्पष्ट रूप से यूरोपीय वंश था। ऐसी प्रक्रियाएँ बेहद धीमी होती हैं।
'शायद जल्दी।'
'शायद, सिस्टर। हो सकता है कि यही हमारे लिए जवाब हो, लेकिन मुझे डर है कि यह उन सभी के लिए जवाब नहीं होगा जिनके जीवन को वह छूएगा।'
कक्षाओं में से एक से चीखें पूरे प्रांगण में गूंज उठीं। कुछ ही क्षणों बाद गलियारे में दौड़ते कदमों की आहट सुनाई दी और सिस्टर थेरेसे ने दरवाजा खोल दिया:

‘मां, जल्दी आओ!’
‘यह क्या है? क्या हुआ है?’
‘मिशेल! उसने काम को चाकू से गोद दिया!’

♦ ♦ ♦

मिशेल खाली कक्षा में एक स्टूल पर बैठा हुआ था और फीकी लाल रंग की टेराकोटा टाइलों को घूर रहा था। खिड़की के पास खून का एक चमकीला धब्बा था।
सोउर गैब्रिएल ने देखा कि कुष्ठ चिकित्सक छोटे लड़के के पास आ रही है। उसके दाहिने हाथ में हड्डी के हैंडल वाला एक छोटा चाकू था। 'यह तुम्हें कहाँ से मिला?'
मिशेल ने उदास चेहरे से उसकी ओर देखा। 'मैंने इसे रसोई से चुराया है।'
‘भगवान के नाम पर, तुम क्या कर रहे थे? तुम अपने सहपाठी की जान ले सकते थे।’
‘माँ, वे अपने पाठ पढ़ रहे थे,’ सोउर ने कहा। ‘मिशेल को पढ़ने में कठिनाई हो रही थी।’
‘क्या तुमने काम को इसलिए चाकू मारा क्योंकि वह तुम पर हँसा था?’
मिशेल ने कोई जवाब नहीं दिया। उसकी झुकी हुई आँखें उसे घूर रही थीं, काली और द्वेषपूर्ण।
वृद्ध नन ने थेरेसे की ओर मुड़कर पूछा, 'काम कैसी है?'
'चाकू से उसके हाथ पर चोट लगी है। यह गंभीर नहीं है।'
उस महिला ने चाकू सिस्टर थेरेसे को सौंप दिया। 'इसे रसोई में वापस ले जाओ, सिस्टर।'
उसके जाने के बाद, उसने सोउर गैब्रिएल की ओर मुड़कर कहा, 'मुझे उसे विदा करना होगा।'
‘प्लीज, मां। उसे एक और मौका दे दीजिए। भगवान के लिए।’
संतनी का हाथ उनके गले में लटके लकड़ी के क्रूस पर गया। एक पल के लिए वह असमंजस में दिखीं। अंत में उन्होंने कहा, 'आप मुझे शर्मिंदा करती हैं, सिस्टर। मुझे आशा है कि आपका विश्वास सही साबित होगा।'
'कृपया।'
बुजुर्ग नन ने लगभग न के बराबर ही सिर हिलाया। सिस्टर गैब्रिएल ने कृतज्ञतापूर्वक सिर झुकाया।

सोअर गैब्रिएल उस छोटे लड़के के सामने घुटनों के बल बैठ गई। फटी हुई सफेद टी-शर्ट उसके ढीले-ढाले शरीर पर बहुत बड़ी लग रही थी, और उसकी टांगें ढीले शॉर्ट्स से डंठलों की तरह बाहर निकली हुई थीं।

'मिशेल,' युवा नन ने कोमल स्वर में कहा, 'तुम्हें समझना होगा, हम तुम्हारी मदद करना चाहते हैं। हम तुमसे प्यार करते हैं। नननी तुमसे प्यार करती है। मैं तुमसे प्यार करती हूँ।'

आप सभी से प्यार करते हैं।

'हां। हां, मैं करता हूं।'

तो तुम्हारे प्यार का मेरे लिए क्या फायदा?

उसे समझ नहीं आ रहा था कि इसका क्या जवाब दे। अंत में उसने कहा: 'आपको हम पर भरोसा करना होगा, मिशेल।'

लड़के ने गले में गहरी खांसी की और उसके चेहरे पर थूक दिया।

कैनोनीज़ आक्रोश से हांफ उठीं।

गैब्रिएल ने अपना सिर झुकाया और बड़ी सावधानी से अपने माथे से थूक को अपने वस्त्र के किनारे से पोंछा। फिर वह आगे झुकी और मिशेल के गाल पर चुंबन किया।

♦ ♦ ♦

ऐसा कभी नहीं हुआ कि मिशेल ने यह मान लिया हो कि उसकी माँ उसके पास वापस नहीं आएगी। सड़कों पर सोने या फ्रांसीसी इलाके की गलियों में भटकते हुए उसकी एक झलक पाने की प्रार्थना करते हुए उन लंबी, भूखी रातों में भी, एक पल भी ऐसा नहीं आया जब उसने उम्मीद छोड़ी हो।

जब ननें उसे यहाँ लाईं, तो उसने खुद को यकीन दिला दिया कि एक दिन वह उसे लेने के लिए द्वार पर प्रकट होगी और समझाएगी कि यह सब एक भयानक गलती थी।

उसके विश्वासघात का एहसास उसे अचानक नहीं हुआ। उसका मन इसकी इजाज़त नहीं देता था। यह धीरे-धीरे पनपा, एक कड़वे बीज की तरह जो उसकी आत्मा में गहराई तक जड़ जमाता गया और सभी भयानक पीड़ाओं की तरह, एक विषैले क्रोध में बदल गया।

ननें उसके प्रति दयालु थीं, लेकिन इससे उसके मन में उनके प्रति घृणा और भी बढ़ गई। वह जानता था कि वे उसे केवल इसलिए अपने वश में करना चाहती थीं ताकि वे

उसे भी चोट पहुँचा सकें। आख़िरकार, वे औरतें थीं; औरतों पर भरोसा नहीं किया जा सकता था।

दूसरे बच्चे उसके अचानक और हिंसक व्यवहार से डरकर उसे अकेला छोड़ना सीख गए थे। यहाँ तक कि ननें भी उससे डरती थीं।

सिस्टर गैब्रिएल को छोड़कर।

उसे उसकी गालियों और अपमानों से कोई फर्क नहीं पड़ता था। वह चाहे कुछ भी करे, वह उसका साथ देती थी। मिशेल को लगा कि वह पागल हो गई है।

लेकिन आज उसने उसे झकझोर दिया था।

उसे अब भी वह दिख रही थी, उसके चिकने भूरे माथे पर थूक की एक बूँद, उसके चेहरे पर वह मूर्खतापूर्ण आधी मुस्कान, खिड़की से आती धूप उसके चश्मे पर चमक रही थी। उसने देखा कि वह अपने आओ-दाई से उसका थूक पोंछ रही थी, और वह उस कोमलता को महसूस कर सकता था जिससे उसने उसे चूमा था। मानो उसने उसे सीने पर लात मार दी हो।

अब वह अंधेरे छात्रावास में पीठ के बल लेटा हुआ था और छोटे बच्चों के सिसकने की आवाज़ सुन रहा था, जो हर रात की तरह रो रहे थे, ठीक वैसे ही जैसे वह यहाँ आने पर पहली बार रोया था। उसके मन में संदेह के भाव उठने लगे। उसने अपने बिस्तर के बगल में खुली खिड़की से दिख रहे चाँद को देखा और अपना मन बना लिया।

♦ ♦ ♦

बच्चों की कतार पत्थर के आंगन में दूर तक फैली हुई थी। सिस्टर गैब्रिएल मठ के छायादार हिस्से में, लकड़ी के तंबू के पीछे खड़ी थीं और चम्मच से बच्चों के पानीदार चावल के दलिया को उनके पानीयुक्त कटोरे में डाल रही थीं। सूरज अभी मुश्किल से निकला ही था कि फाटकों के बाहर की सड़क साइकिलों, एक पैर वाले घोड़ों और शंकु के आकार की पुआल की टोपियाँ पहने झुकी हुई महिलाओं से भर गई थी, जो अपने हाथगाड़ी को बाजार की ओर धकेल रही थीं।

वह दलिया का एक और चम्मच डालने ही वाली थी कि रुक गई। उसके सामने खड़ा छोटा लड़का अपने कटोरे के बिना था। वह मेटिस (यहूदी मूल का) मिशेल था। लड़का हमेशा अपना सिर नीचे रखता था, लेकिन आज सुबह उसने खुलकर उसके चेहरे की ओर देखा। अचानक उसने हाथ बढ़ाया, उसका हाथ पकड़ा और उसे चूमा। फिर वह मुड़ा और भाग गया।

सिस्टर गैब्रिएल विस्मय से उसे देखती रही।
‘ईश्वर की स्तुति हो।’ वह मुड़ी। वह सौएर थेरेसे थीं।
‘देखिए, सिस्टर,’ गैब्रिएल ने कहा, ‘चमत्कार हो सकते हैं।’
उस पल से, उसे एक और साया मिल गया। मिशेल हर सुबह सबसे पहले उसके पास होता, नाश्ते के लिए चावल का दलिया परोसने में उसकी मदद करता, और फिर दोपहर की नींद तक चुपचाप एक कक्षा से दूसरी कक्षा तक उसके पीछे-पीछे चलता। यहाँ तक कि तब भी, छात्रावास में वापस जाने के बजाय, वह उसके कमरे के बाहर बने गलियारे में सोता था।
हर दोपहर वह कक्षा में उसके साथ बैठती और उसे पढ़ने में मदद करती; वह शाम को भी उसके साथ बैठकर देखता जब वह चैपल में प्रार्थना करती थी। रविवार को वह मास के लिए वाइन और वेफर्स तैयार करने में उसकी मदद करता था।
सैक्रे-कोउर की बाकी सभी ननों ने उनके इस परिवर्तन को चमत्कार माना। केवल वृद्ध कैनोनेस को ही संदेह था।
उसने उसे चेतावनी देते हुए कहा, 'तुम्हें उस बच्चे का ध्यान रखना चाहिए, उसमें जो बदलाव आएगा वह उतना बड़ा नहीं होगा जितना तुम सोचती हो।'
‘मुझे समझ नहीं आ रहा, माँ।’
बुजुर्ग महिला ने अपने गले में लटके लकड़ी के क्रूस को छुआ। 'क्या आपको उसकी ये हरकतें थका देने वाली नहीं लगतीं?'
हाँ, लेकिन...
क्या वह अन्य सिस्टर्स के प्रति भी उतनी ही निष्ठा दिखाता है?
'नहीं ...'
नहीं। बाकी लोगों के साथ भी वह बिल्कुल वैसा ही व्यवहार करता है।
'यह प्रगति है। हम बहुत जल्द बहुत अधिक उम्मीद नहीं कर सकते।'
‘प्रगति, सिस्टर गैब्रिएल? शायद। या शायद यह सब कुछ पहले जैसा ही है।’
‘माँ, मुझे समझ नहीं आया।’
‘सिस्टर, मैंने कई वर्षों तक होपिटल मिसरिकॉर्ड में काम किया। मैंने सीखा कि अगर त्वचा कट जाए तो नसें खून बहाती हैं, लेकिन कुछ समय बाद खून जम जाता है। यह सामान्य है, है ना? लेकिन अस्पताल में मैंने कुछ ऐसे दुर्लभ मामले देखे जिनमें बच्चे इस तरह के घाव भरने की क्षमता के बिना पैदा हुए थे। उनका खून बहना बंद नहीं

होता। उनके घाव कभी भरते नहीं।'
लेकिन पिछले साल जब मिशेल आंगन में गिर गया था...
'बहन, मेरा मतलब उसके भौतिक शरीर से नहीं है। उसकी आत्मा है जो लगातार पीड़ा झेल रही है। आपने फिलहाल तो उसका दर्द रोक दिया है। लेकिन आपको सावधान रहना होगा कि उसे अपने ऊपर निर्भर न बनाएं, वरना जब वह आपको खो देगा तो उसकी पीड़ा पहले से भी बदतर हो जाएगी। तब उसे कौन ठीक करेगा?'
सोउर गैब्रिएल ने अपना सिर झुकाया। 'मुझे लगता है मैं समझ गई, माँ।'
'बहन, संभलकर चलना।'
जब सोउर गैब्रिएल कैनोनेस के अध्ययन कक्ष से बाहर निकलीं तो मिशेल उनका इंतजार कर रहा था। वह उनके पीछे-पीछे चलने लगा:
'आप कहां जा रहे हैं?'
'चैपल की ओर।'
'प्रार्थना करने के लिए?'
'हां, प्रार्थना करने के लिए।'
'क्यों?'
'यही तो ईश्वर की अपेक्षा है।'
'मेरे बारे में पादरी ने क्या कहा?'
सिस्टर गैब्रिएल रुक गईं और उन्हें नीचे देखने लगीं। उनकी विशाल भूरी आँखें उन्हें सीधे देख रही थीं। हमेशा की तरह, वह उन आँखों में छिपी शक्ति से प्रभावित हुईं।
'आपको कैसे पता चला कि हम आपके बारे में बात कर रहे थे?'
उसने कंधे उचकाते हुए कहा, 'मैंने खिड़की से कान लगाकर सुना।'
'छुपकर बातें सुनना गलत है। मैंने तुम्हें पहले भी बताया है।'
जी हां, बहन।
वह मुड़ी और चैपल की ओर चल पड़ी।
लेकिन उसने क्या कहा?
अगर आप सुन रहे होते, तो आपको पता होता।
मैंने सुना तो सही, लेकिन समझ नहीं पाया।
'तो फिर इसके लिए भगवान का शुक्रिया अदा करो।'
वे चैपल में गए। वहाँ अँधेरा था, और वेदी के ऊपर विशाल क्रूस पर अंकित ईसा

मसीह का चेहरा मूक पीड़ा में उन्हें घूर रहा था।
'आपको प्रायश्चित करना चाहिए,' सोयूर गैब्रिएल ने कहा।
'क्यों?'
‘छुपकर बातें सुनने के लिए। बीस बार जय मेरी की प्रार्थना करो। जब मैं प्रार्थना करूँ तो तुम मेरे बगल में घुटने टेक सकते हो।’
जी हां, मम्मा।
सिस्टर गैब्रिएल रुक गईं। मानो किसी ने उनकी आत्मा पर बर्फीला पानी डाल दिया हो। 'आपने क्या कहा?'
मिशेल उससे दूर जाने लगी। 'कुछ नहीं।'
उसने उसका कंधा पकड़ा और उसे घुमा दिया। 'मैं तुम्हारी माँ नहीं हूँ। समझे? मैं तुमसे प्यार करती हूँ, मिशेल, लेकिन मैं कभी तुम्हारी माँ नहीं बन सकती।'
'जी हां, बिल्कुल। मैं समझ गया।'
लेकिन जैसे ही वह चैपल के गलियारे से होते हुए उससे दूर जाने लगा, सोउर गैब्रिएल ने मदर सुपीरियर द्वारा कही गई बातों के बारे में सोचा और उसे एहसास हुआ कि बूढ़ी नन सही थी।
उसका खून बहना जारी था। यह कभी बंद नहीं होगा।

अध्याय 7

मई 1955
कुष्ठाचार्य ने सोउर गैब्रिएल को अपने कार्यालय में बुलाया। अंदर आते ही उन्होंने अपनी मेज के दूसरी ओर रखी प्राचीन बेंत की कुर्सी की ओर इशारा किया। 'कृपया बैठ जाइए, बहन।'
'मां आपका शुक्रिया।'
‘मुझे खेद है कि मेरे पास कुछ बुरी खबर है।’ बूढ़ी नन ने अपनी दराज से तार का चश्मा निकाला और पहन लिया। उसने अपने सामने रखे पत्र पर सरसरी नज़र डाली और उसे मेज पर सरका दिया। ‘यह ह्यू से पेरे जीन-पॉल का पत्र है।’
सिस्टर गैब्रिएल ने चिट्ठी को जल्दी से पढ़ा, पतले कागज़ की चादर उनके हाथ में कांप रही थी। उन्होंने क्रॉस का चिन्ह बनाया। 'उनकी आत्मा को स्वर्ग में शांति मिले,' उन्होंने

धीरे से कहा।
‘मुझे खेद है, बहन। फिर भी, कोई दर्द नहीं था। प्रभु दयालु थे।’
सिस्टर गैब्रिएल ने अपने आंसू रोकने की कोशिश की। 'हां, मां।'
क्या अब आपके पिता की देखभाल करने वाला कोई है?
नहीं... मैं... इकलौती बेटी थी।
मठाध्यक्षा का कहना है कि वह एक बीमार व्यक्ति है।
सिस्टर गैब्रिएल ने सिर हिलाया। उन्हें बोलने की हिम्मत नहीं थी।
आपको घर जाना होगा। आपको यहां अपने कर्तव्यों से तब तक के लिए छूट दी जाएगी जब तक आवश्यक हो।
लेकिन माँ...
तुम्हारे पिता को तुम्हारी जरूरत है।
सिस्टर गैब्रिएल जाने के लिए उठीं।
हम इस रविवार को आपकी माताजी के लिए प्रार्थना सभा आयोजित करेंगे।
'धन्यवाद।'
सिस्टर गैब्रिएल मुड़ी और भाग गई। लेकिन जब वह मठ में पहुँची तो उसने देखा कि मिशेल दफ्तर के बाहर खुली खिड़की के पास दुबका हुआ है। उसने सब कुछ सुन लिया था। 'तुम मुझे छोड़कर नहीं जाओगी?' उसने कहा।
गैब्रिएल ने उससे आगे निकलने की कोशिश की, लेकिन उसने उसका पैर पकड़ लिया, जिससे वह लड़खड़ा गई।
‘तुम्हें मुझे छोड़कर नहीं जाना चाहिए!’
‘प्लीज, मिशेल! अभी नहीं! कृपया, मुझे अकेला छोड़ दो!’
पादरी दरवाजे पर प्रकट हुई। 'मिशेल! भगवान के लिए! उसे छोड़ दो!'
‘तुम्हें उसे दूर नहीं भेजना चाहिए!’
‘उसे जाने दो!’
‘तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए!’
उस महिला ने उसका हाथ पकड़ लिया, लेकिन वह गुस्से से कांपते हुए उससे दूर हट गया।
वह गैब्रिएल की ओर मुड़ा। 'प्लीज, मां! ऐसा मत करो!'
वह रोते हुए चैपल की ओर भागी।

उस महिला ने छोटे लड़के की ओर एक कदम बढ़ाया, लेकिन वह पीछे हट गया, उसका चेहरा किसी जंगली जानवर की तरह विकृत हो गया था। 'मैं तुमसे नफरत करता हूँ! मैं तुम सब से नफरत करता हूँ! मैं चाहता हूँ कि तुम सब मर जाओ!' और वह भाग गया।

♦ ♦ ♦

1955 तक फ्रांसीसी सैनिक जा चुके थे, लेकिन युद्ध जारी रहा। लगभग एक साल पहले हुए डिएन बिएन फू के युद्ध में जार्स के मैदान पर फ्रांसीसी सेना की करारी हार हुई थी, और इससे इंडोचीन में संघर्ष समाप्त हो जाना चाहिए था।

इसके बजाय, राष्ट्रपति डिएम ने संयुक्त राज्य अमेरिका के पूर्ण समर्थन से साइगॉन में सत्ता संभाली।

डिएम ने वियत कांग के खिलाफ युद्ध की घोषणा कर दी और बिन्ह ज़ुयेन नामक डाकुओं की सेना से भी मुकाबला करने की तैयारी कर ली, जो फ्रांसीसी प्रशासन के संरक्षण में प्रमुखता हासिल कर चुकी थी। उनकी शक्ति और धन से ईर्ष्या करते हुए, उसने उन्हें कुचलने का निश्चय कर लिया।

और इसलिए, 28 मार्च को, उन्होंने साइगॉन पुलिस मुख्यालय में स्थित उनके गढ़ पर हमला करने के लिए पैराट्रूपर्स भेजे। डाकुओं ने, ड्यूक्सिएम ब्यूरो और एसडीईसीई के शेष फ्रांसीसी अधिकारियों के समर्थन से, अगली रात राष्ट्रपति भवन पर मोर्टार हमले के साथ जवाब दिया।

अगले महीने तक राजधानी के आसपास छिटपुट झड़पें जारी रहीं, लेकिन अनाथालय में जीवन पर साइगॉन के बाकी हिस्सों में चल रही लड़ाई का कोई खास असर नहीं पड़ा। कभी-कभी रात में मिशेल को मशीनगन की आवाज़ या दूर से मोर्टार के फटने की आवाज़ सुनाई देती थी, लेकिन वह उन्हें नज़रअंदाज़ कर देता था। ये आवाज़ें उसकी दुनिया के शोरगुल का उतना ही हिस्सा थीं जितना कि गेट के बाहर सड़क विक्रेताओं की आवाज़ें या पुरानी प्यूजो टैक्सियों के तेज़ हॉर्न।

लेकिन 2 मई की सुबह अलग थी। उसी दिन डिएम की एआरवीएन ने बिन्ह ज़ुयेन को साइगॉन से बाहर निकालने के लिए अपना अंतिम प्रयास किया।

शहर के केंद्र से लगातार शोरगुल आ रहा था। ननें फुसफुसाते हुए बातें कर रही थीं, अपनी माला को उंगलियों से छुपकर शहर के क्षितिज को घबराहट से देख रही थीं, जबकि धुएं के गुबार आसमान में फैल रहे थे। सड़क कारों, स्कूटरों और साइकिलों से

भरी हुई थी। मिशेल द्वार पर खड़ा होकर शरणार्थियों की अफरा-तफरी देख रहा था, साइकिलों के फ्रेम से बंधे सामानों के दयनीय गट्ठे, या हाथगाड़ियों पर ऊंचे-ऊंचे ढेर, बत्तखों से भरे बर्तन और टोकरियाँ चीखते-चिल्लाते, नाक बहते बच्चों के बगल में बेतहाशा लड़खड़ा रही थीं।

लड़ाई नजदीक आती जा रही थी।

अचानक तीन सशस्त्र सैनिक दौड़ते हुए आए और राइफल के बटों से लोगों को धक्का देते हुए एक तरफ हट गए। उनकी काली बेरेट पर गुर्राते हुए बाघ के बैज लगे थे: बिन्ह ज़ुयेन।

एक बूढ़ा आदमी अपनी पुरानी साइकिल पर सवार था और बहुत धीरे चल रहा था, तभी एक लुटेरे ने उसे धक्का देकर नाले में गिरा दिया। साइकिल की पीठ पर टंगा हुआ बांस का पिंजरा फट गया और उसमें से दो बत्तखें बाहर गिर पड़ीं, जो चीखती-चिल्लाती हुई फुटपाथ पर जा गिरीं।

उसने मोर्टारों की खोखली धमक सुनी। पास ही गर्म नीले आकाश में काले धुएं के गुबार उठ रहे थे। एक और धमाका। एक और धमक।

वे करीब आ रहे थे।

मलबा आंगन में बिखर गया।

सड़क पर मौजूद लोग चीखने-चिल्लाने लगे और भागने के लिए एक-दूसरे पर चढ़ने लगे।

'मिशेल!'

वह मुड़ा। सामने सोउर गैब्रिएल थी। वह चैपल के द्वार पर खड़ी थी, उसकी बाहें उसकी ओर फैली हुई थीं।

'मिशेल! जल्दी करो! अंदर आओ!'

उसे एहसास हुआ कि आंगन में सिर्फ वही बचा है। बाकी बच्चों को पहले ही अंदर ले जाया जा चुका था।

वह उसकी ओर दौड़ा।

एक और क्रम्प।

'जल्दी करो, मिशेल!'

ऊपर से एक तीखी चीख सुनाई दी। उत्सुकतावश उसने ऊपर देखा।

'मिशेल!'

सहज प्रवृत्ति से प्रेरित होकर उसने खुद को जमीन पर पटक दिया।
विस्फोट से उसका शरीर पत्थरों से ऊपर उठ गया और फिर इतनी ज़ोर से नीचे गिरा कि उसकी नाक चकनाचूर हो गई। मलबा उसकी पीठ और पैरों पर ज़ोर से गिरा और उसे असहनीय दर्द हुआ।
फिर अचानक एक अजीब सी खामोशी छा गई।
वह धीरे-धीरे उठा और अपनी कमीज़ और शॉर्ट्स को थपथपाया। नाक से खून बहने के अलावा, वह पूरी तरह से ठीक लग रहा था। उसने एक भीगे हुए कुत्ते की तरह अपना सिर हिलाया, उसके कान अभी भी मोर्टार के गोले के धमाके से गूंज रहे थे। अनाथालय गायब हो चुका था। उसकी जगह जलते-धुएँ से धुएँ निकलते मलबे का ढेर था। फिर कराहने की आवाज़ें आने लगीं, एक भयानक जानवर जैसी आवाज़, गर्म पत्थरों और जलती लकड़ियों के नीचे दबे लोगों का रोना।
सौ गज की दूरी पर एक और गोला फटा और मलबा उसके चारों ओर के आंगन में बिखर गया। उसने इसे नजरअंदाज कर दिया।
वह चैपल की ओर बढ़ा, या यूँ कहें कि उस जगह की ओर जहाँ कभी चैपल हुआ करता था। जलती हुई लकड़ियों की गर्मी इतनी तीव्र थी कि उसका चेहरा झुलस गया। उसने मलबे से बाहर निकला हुआ एक हाथ देखा, जिसकी उंगलियों के बीच अभी भी माला के मोती थे।
वह घुटनों के बल गिर पड़ा और ईंटों को खुरचकर जो कुछ भी हटा सकता था, हटाने लगा। उसका चेहरा सफेद पड़ गया था, सिवाय कनपटी पर लगे गहरे घाव के। उसे आश्चर्य हुआ कि खून इतना कम क्यों बहा था। उसने उसकी बांह खींची और उसे खींचकर बाहर निकालने की कोशिश की। यह उसकी उम्मीद से कहीं ज्यादा आसान था। उसने महसूस किया कि उसका शरीर मुक्त हो रहा है।
वह पीछे की ओर गिर पड़ा। कुछ क्षणों तक वह वहीं पड़ा रहा, स्तब्ध, अपने हाथों में फंसी कटी हुई बांह को घूरता रहा, ठूंठ से खून रिस रहा था और उसकी कमीज पर फैल रहा था। फिर वह चिल्लाया और उस भयानक चीज को अपने से दूर मलबे के ढेर में फेंक दिया।
तब उसे एकदम स्पष्ट रूप से समझ में आया कि क्या हुआ था: मैं तुमसे नफरत करता हूँ! मैं तुम सब से नफरत करता हूँ! मैं चाहता हूँ कि तुम सब मर जाओ!
वह उन्हें मारना चाहता था, लेकिन उसके भीतर की किसी शक्ति ने उन्हें नष्ट कर

दिया। अब उसे डरने की कोई ज़रूरत नहीं थी। उसके पास न्याय करने की शक्ति थी।

♦ ♦ ♦

साइगॉन युद्ध का आदी हो चुका था। लड़ाई खत्म होने के महज तीन दिन बाद, जब शहर पर मौत की मीठी, घुटन भरी बदबू अभी भी छाई हुई थी, तब भी सड़क किनारे के कैफे फिर से खुल गए।

मिशेल कैफे सीन के बाहर खड़ा था और गरमागरम खाने की खुशबू से उसके पेट में गुड़गुड़ाहट होने लगी। उसने तीन दिन से कुछ नहीं खाया था। बमबारी वाले दिन उसे एक घर के मलबे में चमत्कारिक रूप से बिना छुआ हुआ ताजा पानी मिला था। बाद में उसे नदी के पास एक गोदाम के मलबे में थोड़े से चावल मिले, लेकिन उसे उबालने के लिए उसके पास कुछ नहीं था, इसलिए उसने उसे कच्चा ही खाने की कोशिश की। इससे उसकी आंतों से खून बहने लगा।

कैफे में ज्यादातर अमेरिकी ही थे। फुटपाथ पर लगी मेजों पर सिर्फ एक ही कोर्सिकन बैठा था, सफेद ट्रॉपिकल सूट पहने एक सख्त दिखने वाला आदमी, जो परनोड पी रहा था। बगल वाली मेज पर एमसीवी की वर्दी पहने एक दुबला-पतला, छोटे बालों वाला आदमी ग्रिल्ड मछली और चावल की प्लेट चट कर रहा था। वह उसे मंत्रमुग्ध होकर देख रहा था।

वेटर ने उसे देखा और उसे ऐसे भगा दिया जैसे वह कोई कुत्ता हो।

मिशेल जाने लगा, लेकिन जब वेटर दूसरे ग्राहक को खाना परोसने के लिए चला गया, तो वह वापस आ गया। उसे खाना था। उसे भोजन चाहिए था।

अमेरिकी व्यक्ति रेशमी पोशाक पहने एक वियतनामी लड़की का अभिवादन करने के लिए उछल पड़ा। मिशेल जानता था कि यही उसका मौका है।

वह गमलों की छोटी सी कतार को पार करके फुटपाथ और मेजों के बीच से गुजरा और मेज से अमेरिकी की थाली छीन ली। फिर वह सड़क पर वापस कूदा और भागने लगा।

'आप इंतजार करें!'

उसे पता था कि कोई उसका पीछा कर रहा है, लेकिन उसने पीछे मुड़कर नहीं देखा। अगर वह तू डो से निकलने वाली गलियों के भूलभुलैया में घुस जाता तो वह सुरक्षित हो जाता। भागते हुए उसने मछली के बचे हुए टुकड़ों को पूरा का पूरा अपने मुंह में

ठूंस लिया।
किसी चीज ने उसकी छाती पर जोर से प्रहार किया और वह पीठ के बल गिर पड़ा, भोजन गले में अटकने से उसका दम घुट रहा था। प्लेट सड़क पर गिर पड़ी और इससे पहले कि वह सांस ले पाता, किसी ने उसे कॉलर से पकड़कर खड़ा कर दिया।
उसने ऊपर देखा। एक पुलिसवाला। वह सीधे उससे टकरा गया होगा। उसने छटपटाने की कोशिश की, लेकिन पुलिसवाले ने उसकी बांह कसकर पकड़ ली और वह दर्द से चीख उठा।
अमेरिकी हांफते हुए दौड़ा। उसका चेहरा लाल हो गया था। 'यही है! यही है वह चोर!' थप्पड़ उसके चेहरे पर ज़ोर से पड़ा। उसकी आँखों में पानी आ गया और घायल नाक से खून बहने लगा। मिशेल दर्द से नहीं, बल्कि निराशा से चीखा। थप्पड़ की ज़ोर से मछली का बचा हुआ हिस्सा उसके मुंह से बाहर गिर गया, इससे पहले कि वह उसे निगल पाता।
एक गहरे हरे रंग की पुलिस जीप आकर रुकी। मिशेल को जबरदस्ती पीछे बिठा दिया गया। पुलिसकर्मी ने अमेरिकी से कुछ कहा जिससे वह शांत हो गया। एक पुलिसकर्मी जीप के पीछे बैठा था और उसने मिशेल की गर्दन पर अपना जूता रखा हुआ था।
मिशेल ने संघर्ष करना छोड़ दिया। उसे उम्मीद थी कि वे उसे जहाँ भी ले जा रहे हैं, शायद उसे कुछ चावल दे दें।

♦ ♦ ♦

बच्चों की जेल शहर के बाहरी इलाके में, टैन सोन न्हुत हवाई अड्डे की ओर जाने वाले मुख्य राजमार्ग कैच मांग पर स्थित थी। यह दो मंजिला लाल ईंटों की इमारत थी, जिसे मूल रूप से एक दशक पहले फ्रांसीसियों द्वारा बनाया गया था। यह सात फुट ऊंची दीवारों से घिरी हुई थी, जिन पर कांटेदार तार और टूटे हुए कांच लगे हुए थे।
मिशेल को जीप से बाहर निकाला गया और उबलते हुए प्रांगण से होते हुए मुख्य वार्डन के कार्यालय में ले जाया गया।
फाम ची थिएन दुबले-पतले गालों वाला, सफ़ेद बालों वाला और करीने से संवरी काली मूंछों वाला एक पूर्व सैन्य अधिकारी था। मिशेल को कमरे में धकेल कर उसकी मेज की ओर ले जाया गया।
थिएन उसे घूर रहा था, उसके हाथ डेस्क टॉप पर करीने से मुड़े हुए थे, उसकी लंबी

उंगलियां तितलियों की तरह बेचैन थीं।
‘यह यहाँ किसलिए है?’ थिएन ने कहा। उसकी आवाज़ पतली और तीखी थी।
पुलिसकर्मी ने कहा, 'उसने एक कैफे से खाना चुराने की कोशिश की। सावधान रहें। उसने मेरा हाथ काटने की कोशिश की।'
थिएन उठा और मेज के चारों ओर घूमने लगा। उसने एक दयालु चाचा की तरह मुस्कुराते हुए अपने दो सोने के दांत दिखाए।
‘हमें अकेला छोड़ दो,’ थिएन ने उसे लाने वाले व्यक्ति से कहा।
थिएन ने अपने हाथ कमर पर रख लिए। वह मिशेल से काफी लंबा था। 'तुम्हारा नाम क्या है?'
‘मिशेल क्रिश्चियन।’
‘अरे, एक मेटिस। एक फ्रांसीसी का नाजायज बच्चा।’
मिशेल ने कुछ नहीं कहा। थियेन ने सिगरेट जलाई। 'तुम्हारे पास विकल्प है। तुम्हारा यहाँ रहना बहुत आसान या बहुत कठिन हो सकता है। तुम्हें समझना होगा। किसी को परवाह नहीं कि तुम्हारा क्या होता है। किसी को नहीं। तुम मिट्टी हो। अगर तुम मर जाते हो, तो किसी को परवाह नहीं। क्या तुम समझते हो?'
मिशेल को यह बात पूरी तरह समझ आ गई थी। यह कोई नई बात नहीं थी।
थिएन ने तीखी हंसी हंसते हुए कहा, 'अगर तुम मेरे साथ अच्छा व्यवहार करोगे, तो मैं भी तुम्हारे साथ अच्छा व्यवहार करूंगी।'
मिशेल को थियेन का मतलब समझ नहीं आया, यहाँ तक कि जब वार्डन ने अपनी खाकी ड्रिल पैंट के सामने के बटन खोलने शुरू किए तब भी नहीं। ‘इस जगह में मैं भगवान हूँ। तुम्हें हमेशा वह सब कुछ करना चाहिए जिससे भगवान प्रसन्न हों।’
मिशेल ने अपने गले के पिछले हिस्से से पित्त उगलते हुए बड़ी कुशलता से थियेन के चेहरे पर थूक दिया। लार की बूंद थियेन के गाल पर फैल गई।
एक पल के लिए थिएन की आँखों में चमक आ गई। फिर, अचानक, वह फिर से खिलखिला उठा। 'तो तुम यही रास्ता चुनते हो? ठीक है, नन्हे मेटिस। मुझे कोई आपत्ति नहीं है। दोनों ही तरह से, मुझे मज़ा आएगा।'

♦ ♦ ♦

कमरे में कोई खिड़की नहीं थी और दीवारें सिर्फ कंक्रीट की थीं। कोने में छत में लगे हुक से एक जंजीर लटकी हुई थी। मिशेल उल्टा लटका हुआ था, उसके पैर जंजीर से

बंधे थे और हाथ पीछे की ओर हथकड़ी से जकड़े हुए थे। वह नग्न था।
मिशेल ने थियेन का मुस्कुराता हुआ चेहरा अपनी दृष्टि के सामने आते-जाते देखा। जंजीर के अंत में उसका शरीर झटका खा गया।
थिएन ने कहा, 'संघर्ष करने का कोई फायदा नहीं है। इससे स्थिति और भी खराब हो जाएगी।'
मिशेल ने अपनी आँखें बंद कर लीं और दर्द पर ध्यान केंद्रित किया। उसकी कलाई पर लगी भारी धातु की हथकड़ियों ने उसकी बाहों को लगभग अपनी जगह से बाहर निकाल दिया था, लेकिन उसने अपने होंठ काट लिए और खुद को चीखने से रोका। चाहे कुछ भी हो जाए, वह थियेन को यह संतुष्टि नहीं देना चाहता था।
थिएन ने अपनी बेल्ट का बकल खोला। यह चमड़े की थी, जिसमें ठोस चांदी का बकल लगा था। 'अब मैं आपको दिखाऊंगा कि हम वैन ट्रांग में चोरों से कैसे निपटते हैं।'
उसने चमड़े के दोनों लूप को अपनी हथेली के चारों ओर इस तरह लपेटा कि चांदी का बकल उसकी टांग के बगल में ढीला लटक रहा था, सांप की तरह फड़फड़ा रहा था। उसने मिशेल को चेन के सिरे से घुमाया, जिससे उसकी पीठ और नितंब उसकी ओर हो गए।
मिशेल को बेल्ट की सीटी की आवाज़ सुनाई दी और फिर ऐसा लगा जैसे किसी ने चाकू से उसकी पीठ की मांसपेशियों को हड्डी तक चीर दिया हो। उसकी पसलियों के अचानक सिकुड़ने से उसके होंठों से सिसकी निकल पड़ी।
उसने खुद से वादा किया, मैं चीखूंगा नहीं। मैं चीखूंगा नहीं।
वह अगले प्रहार का इंतज़ार करता रहा, लेकिन वह नहीं आया। थियेन बहुत चालाक था। उसने उस छोटे लड़के को जंजीर के सिरे पर लगभग एक मिनट तक छटपटाने और कराहने दिया, फिर बेल्ट एक बार फिर हवा में लहराई।
मिशेल को अपनी त्वचा पर बकल की गीली थपकी सुनाई दी और इस बार उसने चीखने से बचने के लिए अपनी जीभ को कसकर दबा लिया। उसे अपने ही खून का स्वाद मुंह में महसूस हुआ। ऐसा लगा जैसे उसका पूरा शरीर आग से जल रहा हो। उसने हताशा में महसूस किया कि अगर थियेन ने उसे दोबारा मारा तो वह चुप नहीं रह पाएगा।
बेल्ट कटने और सरसराहट की आवाज करने लगी।

मिशेल चीख उठा।
लेकिन यह किसी छोटे बच्चे की चीख नहीं थी। यह एक दहाड़ थी जो उसके कानों में गूंज रही थी, उसकी सारी इंद्रियों को सुन्न कर रही थी। वह बार-बार चीखता रहा, और उसकी चीखें पत्थर की दीवारों में तब तक गूंजती रहीं जब तक थियेन आखिरकार अपना खेल खत्म करके उसे कोठरी में अकेला छोड़कर चला नहीं गया।
'एड्रीएन!'
'ममन!'
'एड्रिएनएनएनएन ...

अध्याय 8

गोल-मटोल चेहरे वाला लड़का उसके ऊपर घुटनों के बल बैठ गया और मुस्कुराया। 'उसने तुम्हें हरा दिया, है ना?'
मिशेल ने अपनी आँखें खोलीं। वह एक संकरी कोठरी के पत्थर के फर्श पर लेटा हुआ था। उसने उठने की कोशिश की, लेकिन पीठ और नितंबों में अचानक तेज दर्द होने से वह हांफने लगा। इसके बजाय, उसने धीरे से करवट ली और चारों ओर देखा। कोठरी में चार और लड़के थे। उनमें से एक पीठ के बल लेटा हुआ था, उसकी आँखें ऊपर की ओर चढ़ी हुई थीं। उसकी बाहों और पैरों की नसों में सुई जैसी लकीरें थीं। उसके होंठों पर झाग के छींटे थे।
उसके सामने बैठा लड़का सो रहा था, उसके पैर फैले हुए थे, कंकाल जैसे और बेजान। मिशेल ने अनुमान लगाया, पोलियो है।
बाकी दोनों लड़के उससे बड़े थे। वे दूर वाली दीवार के सहारे बैठे थे और उसे उदासीनता से घूर रहे थे।
गोल-मटोल चेहरे वाले लड़के ने एक धातु का बर्तन उसकी छाती में ठूँस दिया। 'मैंने तुम्हारे लिए थोड़े चावल बचाए हैं। कल अपने राशन में से मुझे वापस कर देना।'
मिशेल ने उससे बर्तन छीन लिया और मुट्ठी भर चावल अपने मुँह में डाल लिए।
लड़के ने कहा, 'तुम्हारा चेहरा बहुत सुंदर है। थियेन को सुंदर चेहरे वाली लड़कियां पसंद हैं। इसी वजह से तुम इस मुसीबत में फंसी हो।'
'नंबर दस कमीने हरामी,' मिशेल ने गुस्से में कहा और अपने सारे अपशब्दों का इस्तेमाल किया।

‘वे मुझे गुमनाम कहते हैं। तुम्हारा क्या?’
‘मिशेल।’
‘फ्रेंच, है ना? गोल आंखें। इसीलिए तो तुम्हारी नाक इतनी खूबसूरत है, है ना?’
मेरी मां फ्रांसीसी थी। दसवें नंबर की वेश्या।
‘क्या वो मर गई?’
नो नेम एक मासूम चेहरे वाला टोंकिनीज़ कुत्ता था, जिसके गाल कांस्य रंग के थे और आँखें तेज़ और चंचल थीं। उसके बाल सिर से बिल्कुल छोटे कटे हुए थे। 'तुमने क्या किया?'
‘मैंने एक अमेरिकी का खाना चुरा लिया।’ मिशेल ने चावल के आखिरी कुछ दाने अपने मुंह में ठूंस लिए।
मिशेल ने सावधानी से अपनी उंगलियाँ अपनी कमीज के नीचे डालीं, अपनी पीठ पर सूजे हुए और उभरे हुए निशानों को महसूस किया, और खून की पपड़ी को भी देखा जहाँ बकल ने उसके मांस को चीर दिया था।
‘उसकी चिंता मत करो। वह हमेशा नए बच्चों को हरा देता है। खासकर उन्हें जो उसके साथ नखरे नहीं दिखाते।’
'इस जगह क्या है?'
‘वैन ट्रांग। यह बच्चों की जेल है।’
‘वे हमें यहाँ कब तक रखेंगे?’
जब तक वे चाहें। तुम्हारी उम्र कितनी है?
मुझे नहीं पता। आपकी उम्र कितनी है?
'शायद नौ। तुम कब से सड़क पर हो?'
मिशेल ने झूठ बोलने के बारे में सोचा। अंत में उसने सच बोलने का फैसला किया।
'तीन दिन।'
‘धत् तेरे की। एक कुंवारा।’ उसने मिशेल के कंधे पर हाथ रखा। ‘कोई बात नहीं, राउंड आई। मैं तुम्हारा ख्याल रखूंगा।’

♦ ♦ ♦

जूँ निकालने के लिए मिशेल के बाल मुंडवा दिए गए और फिर उसे एक धातु का कटोरा और एक टिन का प्याला दिया गया। दिन में दो बार वह चावल का राशन और

नमकीन, काँटेदार मछली का एक छोटा टुकड़ा लेने के लिए लाइन में खड़ा होता था। वह मुश्किल से खाने लायक होता था और जब वह उसे जबरदस्ती खा भी लेता था, तो उसके शरीर पर असहनीय खुजली वाले दाने निकल आते थे। कुछ दिनों बाद मिशेल ने, बाकी लड़कों की तरह, मछली फेंक दी और सिर्फ चावल खाने लगा।
उन्हें पता चला कि वैन ट्रांग जेल की रसोई में खाना पकाने वाली महिलाओं को कैदियों के लिए भोजन खरीदने के लिए साप्ताहिक भत्ता मिलता था। वे हमेशा सबसे सस्ता चावल खरीदती थीं और मछली को साफ करने या उसके छिलके उतारने की जहमत भी नहीं उठाती थीं। वे अतिरिक्त पैसे खुद रख लेती थीं।
वियतनामी बच्चों के लिए भी दैनिक राशन काफी कम होता था, जो उसे मुश्किल से ही जीवित रख पाता था। वह और भी दुबला हो गया। उसकी पीठ के घावों में संक्रमण हो गया और उनसे मवाद निकलने लगा।
रात को वह अपनी कोठरी के सख्त पत्थर के फर्श पर सोता था, मच्छरों की असहनीय भिनभिनाहट सुनता रहता था और जागने की कोशिश करता रहता था। पहली रात जब उसकी नींद खुली तो उसने खुद को एक छोटी, भूरे रंग की बिल्ली के बच्चे के मुंह को घूरते हुए पाया, जिसके मूंछों वाले मुंह को वह पहले एक छोटा सा भूरा बिल्ली का बच्चा समझ रहा था। उसने उसे पकड़ने के लिए हाथ बढ़ाया, लेकिन वह भाग गया। तब उसे एहसास हुआ कि वह एक चूहा था, जो लगभग एक फुट लंबा था।
वैन ट्रांग में उसके जैसे और भी बहुत से लोग थे। रात में वे नालियों से निकलकर पैरों की उंगलियों और पिंडलियों को कुतरने लगते थे।
और हर दिन अभ्यास होता था। थियेन उन्हें कतार में खड़ा करता और दोपहर की तेज़ धूप में सैनिकों की तरह परेड करवाता। अभ्यास तब तक चलता रहता जब तक कम से कम एक दर्जन लड़के बेहोश न हो जाते। इन्हें दोपहर में आगे की ड्यूटी के लिए चुना जाता था, जिसमें रसोई और शौचालयों की सफाई शामिल थी। थियेन का कहना था कि वह उन्हें अनुशासन सिखा रहा था।
मिशेल कभी बेहोश नहीं हुआ, हालांकि कई बार आकाश, इमारतें और ज़मीन उसकी आँखों के सामने धुंधली सी दिखाई देती थीं। अगर यह अनुशासन था, तो उसने इसे बखूबी सीखा था। वह कई बार लड़खड़ाया, लेकिन कभी गिरा नहीं।
इससे कोई फर्क नहीं पड़ा। थियेन ने थूक के उस घूंट के लिए मिशेल को कभी माफ नहीं किया। हर दो-तीन दिन में एक बार पहरेदार मिशेल की कोठरी में आते, उसे

गलियारे से घसीटकर थियेन के दफ्तर तक ले जाते और बांस की लाठियों से उसकी पिटाई करते, जबकि थियेन छत की ओर धुएं के छल्ले उड़ाते हुए देखता रहता। अनुशासन।

दिन, सप्ताह और महीने दर्द, भूख और निराशा के एक बुरे सपने में तब्दील हो गए।

♦ ♦ ♦

फिर अचानक दो ऐसी घटनाएं घटीं जिन्होंने वैन ट्रांग में जीवन की दिनचर्या को पूरी तरह बदल दिया।

यह सब थिएन के दफ्तर से आई एक लंबी, तीखी चीख से शुरू हुआ। वह दोपहर बहुत गर्म और उमस भरी थी, बारिश छत पर बरस रही थी और ड्रिलिंग ग्राउंड पर डामर से भाप उठ रही थी। अपनी कोठरियों में दुबके लड़कों ने गलियारे में इधर-उधर भागते कदमों की आहट सुनी, थिएन की घबराहट भरी चीखें सुनीं। काफी देर बाद एम्बुलेंस की घंटी की आवाज सुनाई दी।

नो नेम ने उनके लिए रहस्य सुलझा दिया।

उस रात उसने उनसे कहा, "आज दोपहर थिएन में एक नया लड़का आया है," उसकी आँखें उत्साह से चमक रही थीं, "एक और सुंदर लड़का, बिल्कुल मिशेल जैसा, है ना।"

‘उसके साथ क्या हुआ?’ मिशेल ने कहा।

‘उसने उसे काट डाला!’ नो नेम ने उत्साह में अपने हाथों की हथेलियों से फर्श पर थपथपाते हुए कहा। ‘थिएन ने अपनी पैंट उतारी और लड़के ने उसे अपने मुंह में डाला और काट डाला!’

बाकी लड़कों ने ताली बजाई और खुशी मनाई। मिशेल को छोड़कर सभी ने। 'तुम्हें क्या हुआ है?' नो नेम ने उससे पूछा।

मिशेल ने कहा, 'मैं उसे खुद चोट पहुंचाना चाहता था। मैं उसे चीखते हुए देखना चाहता था, सिर्फ सुनना नहीं।'

उन्हें कभी पता नहीं चला कि उस नए लड़के का क्या हुआ। कभी नहीं।

♦ ♦ ♦

जब नया मुख्य वार्डन आया, तो बेवजह की पिटाई बंद हो गई। साइगॉन अस्पताल की एक नर्स को कुछ दिनों में उनसे मिलने की अनुमति दी गई और वह उन्हें कपड़े, साबुन और दवाइयाँ देती थी। जब मिशेल की कोठरी में बंद लड़कों में से एक, फुओंग को

दस्त और उल्टी होने लगी, तो मिशेल ने नर्स को उसे देखने के लिए बुलाया।
वह ऑस्ट्रेलिया नाम की जगह से थी, एक ऐसा देश जिसके बारे में मिशेल ने कभी सुना भी नहीं था। वह लंबी थी, उसकी हड्डियाँ पतली और पतली थीं, और उसकी त्वचा पीली और झाइयों वाली थी। वह थोड़ी-बहुत फ्रेंच बोलती थी, लेकिन उसकी आवाज़ में एक अजीब सा लहजा था जिसे मिशेल समझ नहीं पाता था। उसकी आवाज़ बत्तख की आवाज़ जैसी थी।
मिशेल और नो नेम उसे फुआंग की जांच करने के लिए झुकते हुए देख रहे थे, उसकी लंबी उंगलियां उसके पेट को टटोल रही थीं, फिर उसकी कलाई पर नब्ज़ टटोल रही थीं। उसने उसकी जीभ के नीचे एक छोटा सा चांदी का थर्मामीटर रखा और जब उसे बाहर निकाला तो चिंता से सिर हिलाया। उसने उसके टखनों पर चूहे के काटने से बने घावों और उसके बालों और चेहरे पर जमी गंदगी को देखकर माथे पर शिकन डाली। जब वह खड़ी हुई तो उसने नए वार्डन से कुछ कहा, जिसने कंधे उचकाकर सिर हिला दिया। आधे घंटे बाद एक गार्ड फुओंग को कोठरी से बाहर ले आया। सलाखों वाली खिड़की से उन्होंने उसे सफेद नर्स की खस्ताहाल प्यूजो कार में बिठाते हुए देखा।
‘वे उसे अस्पताल ले जा रहे हैं!’ नो नेम ने फुसफुसाते हुए कहा।
मिशेल मुस्कुराया। फुआंग ने अभी-अभी उसे वैन ट्रांग से बाहर निकलने का रास्ता दिखाया था।

♦ ♦ ♦

‘थिएन वापस आ रहा है,’ नो नेम ने फुसफुसाते हुए कहा। वे वार्डन के कार्यालय के बाहर गलियारे में घुटनों के बल बैठे थे और कड़े तार वाले ब्रशों से पत्थर के फर्श को साफ कर रहे थे। उनके पास पानी की एक बाल्टी और एक मोटा साबुन था।
'आपको कैसे मालूम?'
एक गार्ड ने मुझे बताया। उसने कहा: 'अगर आपको लगता है कि पहले उसकी आवाज़ कर्कश थी, तो अब उसकी आवाज़ सुनिए!' नो नेम हँस पड़ा। उसे यह बात मज़ेदार लगी।
मिशेल भयभीत हो गया। 'अगर वह वापस आ रहा है तो हमें यहां से निकलना होगा। वह दुष्ट कमीना हम सब पर अपना बदला लेगा।'
‘खासकर तुम, है ना?’
मिशेल को याद दिलाने की ज़रूरत नहीं थी। जेल में नए वार्डन के पदभार संभालने के

बाद से वह यहीं रहकर खुश था। कम से कम उन्हें खाना तो मिल रहा था, भले ही राशन कम ही क्यों न हो। उसे नहीं पता था कि वह वापस सड़क पर कैसे जीवित रह पाएगा।

लेकिन अगर थियेन को वापस आना था, तो उसे वहां से भागना ही था।

अगर मैं यहां से निकल जाऊं, तो क्या तुम मेरे साथ आओगे?

'मेरे बिना तुम कैसे जीवित रहोगे, हाँ?'

मिशेल ने बाल्टी में हाथ डालकर साबुन निकाला। उसने उसे बीच से तोड़कर एक टुकड़ा नो नेम को दे दिया। फिर उसने अपना टुकड़ा मुंह में डाला और चबाने लगा।

'इसे खाओ,' उसने कहा।

क्या तुम बिल्कुल पागल हो?

'इसे खाएं।'

'इस चीज से आप बीमार पड़ जाएंगे।'

मिशेल ने किसी तरह पहला निवाला निगलने की कोशिश की। 'हाँ, इससे हम बीमार पड़ जाएँगे। अगर हमने ज़्यादा मात्रा में पी लिया, तो हम इतने बीमार हो जाएँगे कि उन्हें गोल आँखों वाली नर्स को बुलाना पड़ेगा।'

नो नेम को कुछ समझ नहीं आया। वह हिचकिचाया, फिर उसने कठोर कास्टिक साबुन अपने मुंह में डाला। उसे एक बार उल्टी जैसा महसूस हुआ, लेकिन उसने किसी तरह खुद को उल्टी करने से रोक लिया। फिर उसने उसे निगल लिया।

साबुन खाने के बाद वे एक गार्ड के पास गए और उससे कहा कि उन्हें और साबुन चाहिए। गार्ड उन्हें भंडारगृह में ले गया। अंदर जाकर नो नेम ने साबुन की एक और टिकिया उठाई और गार्ड की नज़र न होने पर मिशेल ने चुपके से साबुन की दो और टिकिया अपनी शॉर्ट्स की जेब में रख लीं।

फिर वे अपने काम पर लौट गए, फर्श को रगड़ते हुए धीरे-धीरे कास्टिक सोडा की तीनों टिकिया चबाने लगे।

♦ ♦ ♦

मिशेल एक तरफ लुढ़क गया और उसे उल्टी आने लगी। उसका पेट काफी देर पहले ही खाली हो चुका था और अब उसमें सिर्फ पित्त ही बचा था। उसकी अपनी ही दुर्गंध उसकी नाक में भर गई। ऑस्ट्रेलियाई नर्स ने अपने ठंडे, नम हाथ से उसके माथे को

छुआ और फिर चांदी का छोटा सा थर्मामीटर उसकी जीभ के नीचे रख दिया।
नो नेम कोठरी के दूसरी तरफ दर्द से कराहते हुए लेटा था। ऐंठन के कारण उसका चेहरा पीड़ा से सिकुड़ा हुआ था। उसने फुसफुसाते हुए कहा, 'तुम्हें धिक्कार है, राउंड आई! तुम बिल्कुल पागल हो!'
'चुप रहो!' मिशेल ने फुफकारा। 'यह काम कर रहा है!'
हम मरने वाले हैं!
नर्स उठी और कोठरी से बाहर चली गई। कुछ मिनट बाद वह वार्डन के साथ वापस अंदर आई।
वह उसकी कही हुई बातों को पूरी तरह समझ नहीं पाया, लेकिन उसने उन दो शब्दों को पहचान लिया जिन्हें वह सबसे ज्यादा सुनना चाहता था:
साइगॉन अस्पताल।

♦ ♦ ♦

अस्पताल शहर के केंद्र में बाज़ार के पास स्थित था, और यह साइगॉन का सबसे गरीब और सबसे भीड़भाड़ वाला अस्पताल था। प्रवेश कक्ष ही आपातकालीन कक्ष के रूप में इस्तेमाल होता था और उसमें लकड़ी के स्टैंड पर केवल आधा दर्जन स्ट्रेचर रखे थे। जब स्ट्रेचर भर जाते थे, तो इलाज की ज़रूरत वाले मरीज़ों को ज़मीन पर लेटने के लिए छोड़ दिया जाता था।
जब वे पहुंचे, तो ड्यूटी पर केवल दो नर्सें और एक युवा, तरोताज़ा मेडिकल छात्र मौजूद थे। सभी डॉक्टर घर जा चुके थे। छात्र और नर्सें एक स्ट्रेचर के चारों ओर जमा हो गईं, जिस पर एक बूढ़ा आदमी हांफता और घुटता हुआ पड़ा था, मानो डूब रहा हो, खाली हवा में हाथ-पैर मार रहा हो।
गोल आंखों वाली नर्स उनके बगल में फर्श पर बैठ गई और देखने लगी। तभी उस युवा वियतनामी चिकित्सक ने उससे अंग्रेजी में कुछ कहा और वह उसकी मदद करने के लिए उठ खड़ी हुई।
मिशेल ने अपना सिर घुमाया। नो नेम उसके बगल में स्ट्रेचर पर लेटा हुआ था, दर्द से उसका चेहरा पीला पड़ गया था। 'तुम कैसा महसूस कर रहे हो?'
मैं तो बस मरना चाहता हूँ। आपका क्या ख्याल है?
मिशेल ने सिर हिलाया। 'क्या तुम्हें लगता है कि तुम हिल सकते हो?'

'अब?'
'क्यों नहीं?'
मिशेल एक कोहनी के बल उठा, जी मिचलाने की तेज़ बेचैनी को दबाते हुए नर्स को ढूंढने लगा। नर्स व्यस्त थी, स्ट्रेचर पर झुकी हुई बूढ़े आदमी की छाती पर कुछ कर रही थी। मिशेल घुटनों के बल रेंगते हुए दरवाजे तक गया। नो नेम उसके पीछे-पीछे गया। मिशेल लड़खड़ाते हुए खड़ा हुआ। उसे तुरंत ठंडे पसीने आने लगे और उसे अपनी आँखें बंद करके दीवार को पकड़ना पड़ा क्योंकि दुनिया उसके चारों ओर घूमती और झुकती हुई सी लग रही थी। आखिरकार मतली शांत हुई। उसे चक्कर आ रहा था, लेकिन वह जानता था कि वह द्वार तक पहुँच जाएगा। उसने नो नेम की ओर रुख किया।
'तैयार?'
उसका दोस्त इतना कमजोर था कि जवाब भी नहीं दे पा रहा था।
मिशेल ने पीछे मुड़कर देखा। कोई उनकी तरफ ध्यान नहीं दे रहा था। वह लड़खड़ाते हुए दरवाजे से बाहर निकला, नो नेम उसके पीछे-पीछे चल रहा था। कुछ ही पलों में वे साइगॉन की सड़कों पर वापस आ गए।

♦ ♦ ♦

हजारों चूल्हों से उठते लकड़ी के धुएं की गंध पूरे शहर में फैल गई। बमबारी से तबाह इमारतों के ढांचे बैंगनी रंग की धुंधली रोशनी में एक परछाई की तरह दिखाई दे रहे थे।
‘अब कहाँ?’ मिशेल ने कहा।
‘मेरे पीछे आओ,’ नो नेम ने उससे कहा। ‘मैं तुम्हें अपने घर ले चलूंगा।’
नो नेम अंधेरी गलियों में ऐसे चल रहा था मानो दिन का समय हो। मिशेल हांफ रहा था, अपने दोस्त के साथ कदम मिलाकर चलने के लिए संघर्ष कर रहा था, जो संकरी गलियों से होकर अर्रोयो चिनोइस की मलबे से भरी सड़कों में घुस रहा था, जहां कुछ महीने पहले एआरवीएन और बिन्ह ज़ुयेन के बीच भीषण लड़ाई हुई थी। जैसे ही रात हुई, पीले चांद की रोशनी में घरों और गोदामों के खंडहर वीरान और वीरान दिखाई देने लगे।
अचानक नो नेम रुका, मिशेल का हाथ पकड़ा और बोला, 'यहाँ नीचे!' वह एक काले गड्ढे के भीतरी हिस्से में कूद गया और देखते ही देखते अंधेरे में गायब हो गया।
‘चलो, कूद जाओ!’ उसने अंधेरे से फुफकारा।

मिशेल ने गहरी सांस ली और उसके पीछे-पीछे चलने लगा, लेकिन वह झटके से गिरा और मलबे के एक टुकड़े पर उसका टखना मुड़ गया। नो नेम ने उसे उठने में मदद की। 'बस पहुंचने ही वाला हूँ।'

वे एक तहखाने के खंडहरों में थे। आधी ज़मीन धंस गई थी, जिससे एक ढलान बन गई थी जो तहखाने तक जाती थी। इस भयानक गुफा के अंधेरे से एक रहस्यमयी रोशनी निकली। यह एक छोटी, नारंगी रंग की आग से आ रही थी; उसके चारों ओर तीन छोटी-छोटी आकृतियाँ सिमटी हुई थीं।

उनमें से एक आकृति अचानक खड़ी हो गई और उनकी ओर दौड़ी। मिशेल ने अंधेरे में कुछ चमकता हुआ देखा, संभवतः एक चाकू।

‘तीन उंगली!’ नो नेम चिल्लाया। ‘दिन्ह! टाइगर आई! मैं हूँ!’

वह आकृति अचानक रुक गई। 'कोई नाम नहीं?' यह एक लड़की की आवाज थी।

'हां यह मैं हूँ।'

‘वो कौन है?’

मैं अपने साथ एक दोस्त को लेकर आया हूँ।

‘एक दोस्त?’ छोटी सी आग के पास से एक आवाज आई। ‘धत् तेरे की! बाकी लोगों के लिए खाना कम हो गया।’

‘चलो,’ नो नेम ने मिशेल को अपने आगे धकेलते हुए कहा। ‘बैठ जाओ। आराम से बैठो।’

मिशेल ईंटों और गारे के टुकड़ों के बीच धंस गया। नो नेम उसके बगल में दुबक गया। नो नेम के दोस्त छोटी सी आग पर कुछ पका रहे थे। उन्होंने उसे एक लंबी छड़ी पर पिरोकर आग पर भून रहे थे। जले हुए जीव की चर्बी कोयलों पर चटक रही थी।

मिशेल को अचानक समझ आया कि यह क्या है। 'एक चूहा,' उसने फुसफुसाया।

‘यहाँ हमारी बारी है,’ नो नेम ने खुशी से फुसफुसाते हुए कहा। ‘वान ट्रांग में वे हमें काटते हैं। यहाँ, हम उन्हें काटते हैं।’

चाकू लिए लड़की ने उसे आग से उठाया और चाकू से उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिए। मिशेल थका हुआ सिर झुकाए बैठा और अपने चारों ओर मलबे में छिपकलियों और चूहों की सरसराहट सुनने लगा।

नो नेम ने उसे कोहनी मारी और धुएं से काला हुआ मांस का एक टुकड़ा आगे बढ़ाया। 'लो, इसे खाओ,' उसने कहा।

मिशेल ने उसे लिया और अपनी उंगलियों से धीरे-धीरे उसे कुरेदने लगा।
‘ऐसे नहीं। ऐसे।’ नो नेम ने चूहे का अपना हिस्सा मुंह में डाला और चबा लिया।
मिशेल को उसके दांतों के बीच हड्डियों के चटकने की आवाज़ सुनाई दी और चिकनाई की एक पतली धार उसकी ठुड्डी से नीचे बहकर आग की रोशनी में चमक उठी। ‘जो लड़का साबुन खा सकता है, वो घर का बना बढ़िया मांस भी खा सकता है, है ना?’
मिशेल ने चूहे को अपने मुंह में डाला और चबाने लगा। उसने मन ही मन सोचा, ये तो बस एक तरह का मांस है। इतनी भूख लगने पर मेरे पेट को क्या फर्क पड़ता है?
मिशेल ने अपनी आँखें बंद कर लीं और मलबे में बनी एक छोटी सी जगह में ऐसे दुबक गया जैसे वह कोई नरम तकिया हो। उसे दूर से गोलियों की आवाज सुनाई दे रही थी; बिल्लियाँ कूड़े के ढेर में खाना ढूंढते हुए बच्चों की तरह रो रही थीं।
उसने एड्रिएन के बारे में सोचा।
वह सोच रहा था कि वह अब क्या कर रही होगी। उसने अनुमान लगाया कि वह कहीं नरम चादरों में सो रही होगी, अच्छा खाना खा रही होगी, 'गर्म और सुरक्षित'।
उसने मुझे इस हालत में छोड़ दिया।
खैर, मैं बच जाऊंगा, उसने सन्नाटे में छिपे उस काले सन्नाटे से वादा किया।
मैं बच जाऊंगा, और मैं वापस आकर तुम्हें परेशान करूंगा। तुम सबको।
‘लेकिन खासकर तुम, एड्रिएन,’ उसने जोर से कहा। ‘खासकर तुम।’

अध्याय 9

1960

डकार, पश्चिम अफ्रीका
डाकार फ्रांसीसी पश्चिम अफ्रीका का एक शानदार केंद्र था और पेरिस की तरह ही फ्रांसीसी संस्कृति से प्रभावित था। आम बोलचाल की भाषा फ्रेंच थी; हर जगह फ्रेंच रेस्तरां थे; अधिकारियों की पत्नियां फाउबर्ग सेंट-होनोरे से सीधे फैशन का सामान खरीद सकती थीं और बंदरगाह में लंगर डाले युद्धपोतों के पिछले हिस्से पर तिरंगा लहराता था।

आधुनिक गगनचुंबी इमारतें, स्थानीय मदीना की मीनारों और झुग्गी-झोपड़ियों के ऊपर खड़ी थीं। दुबले-पतले सेनेगलवासी चमकीले जेलबा पहने गलियों में शान से चल रहे थे, उनकी महिलाएं आकर्षक पगड़ी जैसी मौसोइरे पहने थीं, उनके लहराते बूस-बूस रंग-बिरंगे रंगों में लहरा रहे थे। साल के आठ महीने, हर दिन बादल रहित आकाश में सूरज चमकता था, जो सफेदी की हुई इमारतों से परावर्तित होकर बंदरगाह के नीले पानी में जगमगाता था।

जीन-क्लाउड और एड्रिएन ब्रेटन का विला पठार पर, कस्बे के साफ-सुथरे और समृद्ध फ्रांसीसी इलाके में स्थित था, जहाँ से बर्नार्ड खाड़ी और कैप मैनुअल दिखाई देते थे। बगीचे में कभी-कभी बबूल के पेड़ों की शाखाओं के नीचे जंगली घास चरने वाले जानवर सूंघते नज़र आते थे, जबकि अबाबीलें छज्जे से अंदर-बाहर आती-जाती रहती थीं।

शाम ढल रही थी। एड्रिएन छायादार बरामदे में बेंत की कुर्सी पर ऊंघ रही थी और बगीचे में कीड़ों की धीमी भिनभिनाहट सुन रही थी। समुद्र की ठंडी हवा उसके चेहरे को छू रही थी और अपने साथ कस्बे के बाहर की किसी चक्की से भुनी हुई मूंगफली (काकाहुइट्स) की खुशबू ला रही थी।

उसे बरामदे पर कदमों की आहट सुनाई दी। यह वैलेंटाइन था।

'हैलो, माँ।'

एड्रिएन ने अपनी आँखें खोलीं। 'आह, मेरी प्यारी, तुम हो। इधर आओ और अपनी माँ को एक चुंबन दो।'

वैलेंटाइन ने आज्ञाकारी भाव से अपनी माँ के गाल पर चुंबन किया। फिर वह उनके बगल में रखी बेंत की कुर्सियों में से एक पर बैठ गई।

एड्रिएन वहीं लेटी अपनी बेटी को निहार रही थी। वह बेहद खूबसूरत बच्ची थी, अपनी उम्र के हिसाब से लंबी और उसके बाल कौवे के पंखों की तरह काले और चमकदार थे। आज उसने अपने बालों को सिर के पीछे पोनीटेल में बांध रखा था, जिससे दो लंबे बाल उसके गालों पर लहरा रहे थे। अफ़्रीकी धूप में उसकी त्वचा महोगनी रंग की हो गई थी और मुस्कुराने पर उसके दांतों की सफेदी और भी निखर रही थी।

यह सोचकर अजीब लगता है कि आठ साल पहले, बच्चे की पहली झलक ने उसे दहशत से भर दिया था। उन्होंने उसे उसकी गोद में रखा था, गर्भनाल अभी भी धड़क रही थी, और वह रोना चाहती थी। वैलेंटाइना का जन्म जैतून जैसी त्वचा और घने

काले बालों के साथ हुआ था। एड्रिएन की त्वचा संगमरमर की तरह पीली थी, और जीन-क्लाउड भी बिल्कुल उसी की तरह पीला था। यहाँ तक कि डॉक्टर भी शर्मिंदा लग रहे थे।

और इसलिए वह सैन्य अस्पताल में अपने बिस्तर पर भय से लेटी रही, उस दृश्य की कल्पना करते हुए जब जीन-क्लाउड अपनी नवजात बेटी को देखने आएगा। उसे पहले से ही पता होगा कि बच्ची उसकी नहीं है, हालांकि उन्होंने इस बारे में कभी बात नहीं की थी। आखिरकार, साइगॉन में उनकी शादी को अभी मुश्किल से छह महीने ही हुए थे, और बच्ची का वजन सात पाउंड था और वह स्वस्थ थी।

लेकिन उसे आश्चर्य हुआ कि जीन-क्लाउड का इरादा जादू तोड़ने का नहीं था। उसने मधुर स्वर में कहा, 'उसके बाल मेरे पिता की तरह काले हैं, लेकिन चेहरे की बनावट मुझसे मिलती-जुलती है।'

एड्रिएन ने राहत की सांस ली। वह जानती थी कि वह क्या कर रहा है। आखिरकार, सच्चाई से किसी को भी सांत्वना नहीं मिलने वाली थी। अगर उसने पहले उसे धोखा दिया था, तो बाद में उसने पूरी तरह से उसका साथ दिया था। उसे वह पति मिल गया था जिसकी उसे ज़रूरत थी; उसे वह पत्नी मिल गई थी जो वह चाहता था। उसे कृतज्ञता के भाव से यह एहसास हुआ कि उसे इस बात की परवाह नहीं थी कि बच्चा किसका है।

और अंत में, सब कुछ ठीक हो गया।

‘बैठो और थोड़ी देर मुझसे बात करो,’ एड्रिएन ने कहा। ‘स्कूल कैसा रहा? क्या तुमने मेहनत की?’

जी हां, मम्मा।

मुझे बताओ तुमने क्या किया।

वैलेंटाइन ने एड्रिएन के बालों को सहलाते हुए बातें शुरू कीं, उसकी आवाज़ एड्रिएन को किसी नशे की तरह सुकून दे रही थी। एड्रिएन फिर से नींद में डूब गई, उन भूतों से राहत पाकर जो उसे हर दिन सताते थे।

♦ ♦ ♦

वैलेंटाइन ने अपनी माँ के होठों के कोने पर जमा हुई लार की छोटी सी बूंद को बहते हुए देखा, जो धीरे-धीरे उनकी ठुड्डी तक टपक रही थी। अब अपनी माँ की निगाहों से

बचकर, वैलेंटाइन ने अपनी माँ की साँसों में शराब की खट्टी गंध को सूंघते हुए अरुचि से भौंहें सिकोड़ीं। उसकी नज़र कुर्सी के बगल में रखी शराब की खाली बोतल पर पड़ी।

उसे याद नहीं था कि कभी ऐसा हुआ भी था। बचपन से ही उसकी माँ ऐसी ही थी, बूढ़ी बिल्ली की तरह सुस्त, मोटी और आलसी। उसे आश्चर्य होता था कि उसके पिता ने उसमें ऐसा क्या देखा था।

और वहाँ शराब थी। आठ साल की उम्र में भी वैलेंटाइना इतनी समझदार थी कि जानती थी कि उसकी माँ शराब के नशे में चूर रहती है। उसे अपनी माँ पर तरस आता था, पर साथ ही उससे नफ़रत भी। वह बगीचे और उसके पार की चट्टानों की ओर लालसा भरी निगाहों से देखती रही। एड्रिएन के जल्द ही सो जाने पर वह वहाँ से निकल सकती थी।

‘मिशेल,’ एड्रिएन ने धीमी आवाज़ में कहा, उसकी आँखें आधी नींद में झपक रही थीं। ‘मिशेल...’

वैलेंटाइना उस अपरिचित नाम को सुनकर चौंक गई। 'ममन?' वह और करीब झुकी। 'ममन?'

वह इंतज़ार करती रही, लेकिन एड्रिएन ने कुछ और नहीं कहा, और जिस रहस्य की झलक उसे इतनी मोहक रूप से मिली थी, वह एक बार फिर उसके सपनों की दुनिया में बंद हो गया। वैलेंटाइन ने अपनी माँ का हाथ वापस पलंग पर रख दिया और वह गर्म धूप में निकल गई।

♦ ♦ ♦

जब जीन-क्लाउड उस दोपहर घर लौटा, तो एड्रिएन अभी भी बेंत की कुर्सी पर सो रही थी, उसका मुंह खुला था और वह खर्राटे ले रही थी। उसने निराशा के साथ देखा कि वह अभी भी अपनी नाइटगाउन में थी।

‘जेमल! जेमल, तुम कहाँ हो?’

नौकर अचानक प्रकट हो गया जैसे जादू से। 'महाशय?'

‘मैडम ब्रेटन कब से यहां हैं?’

जेमल ने सिर हिलाते हुए विनम्रता से कहा, "चूंकि बारह बजकर साढ़े बारह मिनट हो चुके हैं, इसलिए मुझे बहुत खेद है। बहुत खेद है।"

जीन-क्लाउड ने जेमल को उसकी टोपी और छड़ी थमा दी। 'माफी मत मांगो, इसमें तुम्हारी कोई गलती नहीं है। क्या उसने शराब पी रखी थी?'
'थोड़ा सा, महोदय।'
जीन-क्लाउड ने उसे हाथ हिलाकर विदा किया। 'ठीक है, तुम जा सकते हो।' वह अपनी पत्नी की ओर मुड़ा, उसके कंधों को पकड़कर उसे हिलाया। 'एड्रीएन!'
उसने एक आंख खोली और फिर उसका सिर उसकी छाती पर पीछे की ओर गिर गया।
'एड्रीएन!' उसने उसे फिर से हिलाया।
एड्रिएन ने खुद को संभाला और अपने हाथ के पिछले हिस्से से अपना मुंह पोंछा। जीन-क्लाउड को साइगॉन में देखे गए अफीम के आदी लोगों की याद आ गई; उनकी आंखें भी वैसी ही खाली थीं और होंठ लटके हुए थे।
'तुम ये क्या कर रहे हो?' उसने फुफकारते हुए कहा। 'अगर सोना है तो अपने कमरे में जाओ। नौकरों के सामने यहाँ शराबी की तरह मत लेटे रहो!'
'मैं जो चाहूँगी वही करूँगी,' एड्रिएन ने कहा। 'मुझे एक ड्रिंक चाहिए। जेमल! जेमल!'
नौकर तुरंत बरामदे में आ गया। जीन-क्लाउड घूम गया। 'चले जाओ! रसोई में वापस जाओ!'
'जेमल, मेरे लिए एक ड्रिंक लाओ!' एड्रिएन चिल्लाई।
मैंने कहा, 'चले जाओ! रसोई में वापस जाओ!'
जेमल ने स्पष्ट भय से एक से दूसरे की ओर देखा, फिर भाग गया।
एड्रिएन ने अपने पति को घूरकर देखा। 'तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई!'
'तुमने काफी शराब पी ली है।'
मुझे अकेला छोड़ दो।
नहीं। हमें बात करनी होगी।
मैं बात नहीं करना चाहता। मुझे अकेला छोड़ दो।
मैं इसे और बर्दाश्त नहीं कर सकता। क्या तुम्हें नहीं दिख रहा कि तुम अपने साथ क्या कर रहे हो? क्या तुम्हें कोई परवाह नहीं?
'भाड़ में जाओ।'
एड्रिएन लड़खड़ाते हुए उठी और उसे धक्का देकर आगे बढ़ने की कोशिश की। उसने उसका हाथ पकड़कर उसे फिर से नीचे गिरा दिया। वह उसके ऊपर झुक गया, उसका

चेहरा उसके चेहरे से कुछ ही इंच दूर था। 'प्लीज़, एड्रिएन। प्लीज़ इसे रोक दो।'
‘क्या रोकूँ? तुम किस बारे में बात कर रहे हो?’
‘क्या गड़बड़ है? क्या आप मुझे बता नहीं सकते? आप हमारे साथ ऐसा क्यों कर रहे हैं?’
मैं कुछ नहीं कर रहा हूँ।
'नहीं, तुम सही कह रहे हो। तुम कुछ नहीं कर रहे हो। तुम बस यहाँ दिन-रात बैठे-बैठे शराब पीकर बेहोश होते जा रहे हो।'
‘तुम्हें क्या फर्क पड़ता है? तुम तो बस अपने काम के बारे में सोचते हो।’
‘यह सच नहीं है! मुझे तुम्हारी परवाह है! मुझे हमारी परवाह है!’
हम इस बारे में बाद में बात करेंगे।
नहीं, हम अभी इस बारे में बात करेंगे!
‘ठीक है, तो फिर। क्या तुम सच में जानना चाहते हो कि क्या गड़बड़ है? मैं ऊब गया हूँ, जीन-क्लाउड। डकार रैली से ऊब गया हूँ। ज़िंदगी से ऊब गया हूँ।’
और माइग्रेन? नींद में बड़बड़ाने और चिल्लाने का तुम्हारा तरीका? क्या यह इसलिए है क्योंकि तुम ऊब गए हो?
'शायद।'
और मेरे बारे में क्या? क्या आप भी मुझसे ऊब गए हैं?
मुझे हमेशा से ही तुमसे ऊब महसूस होती रही है।
जीन-क्लाउड को अंदर से कुछ टूटता हुआ सा महसूस हुआ। उसने इतनी ज़ोर से उसके चेहरे पर थप्पड़ मारा कि उसका सिर पीछे की ओर झुक गया। उसने लगभग अविश्वास से देखा कि उसके होंठ से खून की एक पतली धार रिसकर उसकी ठुड्डी पर बह गई।
एड्रिएन ने अपना हाथ अपने मुंह पर रखा और खून के धब्बे को पोंछ दिया, अपनी उंगलियों पर लगे लाल धब्बे को अविश्वास भरी निगाहों से देखती रही।
‘हे भगवान,’ जीन-क्लाउड ने फुसफुसाते हुए कहा। ‘मुझे माफ कर दो।’
वह उसके सामने घुटनों के बल गिर पड़ा। उसने अपनी जेब से एक बड़ा सफेद रुमाल निकाला और उसके मुंह से खून पोंछने की कोशिश की।
एड्रिएन ने उसे धक्का देकर दूर कर दिया। 'जीन-क्लाउड, कृपया मुझे अकेला छोड़ दो। कुछ नहीं किया जा सकता। बस मुझे अभी अकेला छोड़ दो।'

‘तुम मुझे इस तरह क्यों सता रहे हो?’
'क्योंकि तुम यहां हो,' एड्रिएन ने कहा और अपने पैरों पर खड़ी हो गई और उसे बरामदे में घुटनों के बल बैठा छोड़कर चली गई।

♦ ♦ ♦

अजगर दरियाई घोड़े के रहने वाले कीचड़ भरे गड्ढे के पास, सरू के पेड़ की छाया में सो रहा था। उसके शरीर पर लिपटे हुए विशाल कुंडल उसे लापरवाही से फेंके गए बगीचे के पाइप की तरह दिखा रहे थे। बेहतर दृश्य पाने के लिए वैलेंटाइन झाड़ियों के बीच से रेंगते हुए उसके करीब गया।
उस जीव की सुंदरता ने उसे स्तब्ध कर दिया। वह उसकी चिकनी भूरी त्वचा और शरीर की लचीली शक्ति से मंत्रमुग्ध हो गई। वह घुटनों के बल बैठकर उसे देखती रही, मानो साँस लेने की भी हिम्मत न कर पा रही हो।
कठोर सफेद ज़मीन पर नंगे पैर जलने लगे और वह बेचैनी से कराहने लगी। वह एक पूर्ण विकसित व्यक्ति के बेहद करीब थी, इतना करीब वह पहले कभी नहीं आई थी। ज़ाहिर है, वह जीव उसके संग्रह के लिए बहुत बड़ा था। वह सोच रही थी कि उसके विशाल कुंडल खुले होने पर उसका शरीर कितना लंबा होगा। पच्चीस फीट, शायद इससे भी ज़्यादा।
इतने करीब होने के रोमांच से वह सिहर उठी।
उसने झुककर एक और कदम आगे बढ़ाया। उसके पैर की एक उंगली एक नुकीले पत्थर से टकराई और वह घुटनों के बल गिर पड़ी।
सर्प ने कंपन को सुना नहीं, बल्कि महसूस किया। तुरंत ही उसने अपनी कुंडली खोली और लंबी घास के बीच से रेंगता हुआ दूर चला गया।
‘ज़ट!’ उसने झुंझलाहट में अपना हाथ ज़मीन पर पटका और फिर झुककर अपने पैर के अंगूठे को देखा। नाखून के नीचे से खून रिस रहा था।
वह उठी और लड़खड़ाते हुए विला की ओर वापस चली गई। बर्नार्ड खाड़ी के ऊपर सूरज पहले ही ढल चुका था; शायद जितना उसने सोचा था उससे कहीं ज्यादा देर हो चुकी थी।
उसे उम्मीद थी कि उसके पापा अभी तक घर नहीं आए होंगे। जब वह अकेले चली जाती थी तो पापा बहुत परेशान हो जाते थे।
बेचारे पिता। वे बहुत ज्यादा चिंता करते थे।

♦ ♦ ♦

सूरज समुद्र पर सपाट पड़ा था, मानो एक फूला हुआ गेरूआ गोला हो। वैलेंटाइन अपने घायल पैर को संभालते हुए बगीचे में लंगड़ाती हुई चल रही थी। जीन-क्लाउड का कोई अता-पता नहीं था। उम्मीद थी कि वह फिर से दफ्तर में देर तक काम कर रहा होगा।

लेकिन जैसे ही वह रसोई से चुपके से निकलने की कोशिश में घर के एक तरफ से तेज़ी से भागी, तभी उसने ड्राइंग रूम की बंद खिड़की से उसे भौंकते हुए सुना। क्रीम रंग का शटर ज़ोर से खुला और वह बाहर झुक गया, उसका चेहरा गुस्से से लाल हो गया था।

‘वैलेंटाइन! इधर आओ!’

वह रुक गई और पीछे हट गई, उसकी नजरों से बचते हुए बोली, 'क्या हुआ पापा?'

'आप कहां थे?'

‘मुझे देर हो गई, पापा, इसके लिए मुझे माफ़ करना। मैं वादा करती हूँ कि मैं दोबारा देर नहीं करूँगी—’

‘आपको स्कूल के बाद अपने कमरे में रहकर अपना होमवर्क करना चाहिए!’

वैलेंटाइन ने मुस्कुराने की कोशिश नहीं की। पापा गुस्से में थोड़े अजीब से लगते थे, जैसे कोई चिड़चिड़ा चूहा हो। वह जानती थी कि पापा उससे ज़्यादा देर तक नाराज़ नहीं रहेंगे और इसी वजह से वह उनसे बहुत प्यार करती थी।

'जी पापा।'

मैंने तुम्हें पहले भी अकेले घूमने जाने के बारे में बताया है! यहाँ आसपास की लंबी घास में कुछ खतरनाक साँप हैं। मुझे कितनी बार तुम्हें चेतावनी देनी पड़ेगी?

'क्षमा करें पिताजी।'

उसका गुस्सा पहले ही शांत हो चुका था। उसने आह भरी। 'तुमने खुद को चोट पहुँचाई है,' उसने कहा।

वैलेंटाइन ने नीचे देखा; उसके पैर के अंगूठे से अभी भी खून रिस रहा था।

‘तुम्हें ज़्यादा सावधान रहना चाहिए,’ उसने उससे कहा। फिर, नरम स्वर में बोला, ‘अंदर आओ, हम इस पर कुछ लगा देते हैं। जल्दी करो। तुम्हें रात के खाने के लिए तैयार होना है।’

♦ ♦ ♦

शाम का भोजन वह समय था जिससे वैलेंटाइन को सबसे ज़्यादा नफ़रत थी। एड्रिएन दोपहर से पहले शायद ही कभी उठती थी, इसलिए नाश्ते के समय उसे अपने पिता के साथ पूरा समय बिताने का मौका मिलता था। वह अपना दोपहर का भोजन स्कूल में करती थी। शाम का भोजन ही वह एकमात्र समय था जब वे तीनों एक साथ होते थे। जेमल जब सफेद चीनी मिट्टी की प्लेटों में सुगंधित चिकन और चावल परोस रहा था, तब वे चुपचाप बैठे रहे। वैलेंटाइन मेज़पोश के लेस वाले किनारे से खेल रही थी, उसकी कड़क सफेद सूती पोशाक उसकी बगल की त्वचा को चुभ रही थी।
'सीधे बैठो, वैलेंटाइन,' जीन-क्लाउड ने उसे याद दिलाया।
वह देवदार की लकड़ी की लंबी मेज पर अपनी माँ के सामने बैठी थी। उसने देखा कि आज रात उसकी माँ के गालों पर कुछ ज़्यादा ही रूज लगा हुआ था और लिपस्टिक होंठों के कोनों तक फैली हुई थी। एड्रिएन ने बरगंडी की बोतल उठाई और अपने लिए एक और गिलास भर लिया। थोड़ी सी शराब मेज़पोश पर गिर गई, और दाग तेज़ी से फैलने लगा।
‘क्या आपको नहीं लगता कि अब बहुत हो गया?’ जीन-क्लाउड ने कहा।
‘तुम्हें पता है मुझे खाने के साथ एक गिलास वाइन पसंद है,’ एड्रिएन ने जवाब दिया। ‘इतने उबाऊ मत बनो।’
वैलेंटाइन ने अपना भारी चांदी का चाकू और कांटा उठाया और जल्दी-जल्दी चिकन खाने लगी। अगर वह अपना खाना जल्दी खत्म कर लेती, तो होमवर्क करने के बहाने अपने कमरे में जा सकती थी।
जीन-क्लाउड ने कहा, 'वैलेंटाइन फिर से झाड़ियों में खेल रहा था।'
उसे जो चाहे करने दो।
जीन-क्लाउड ने कहा, 'यह खतरनाक है। मुझे उम्मीद है कि जब मैं यहां नहीं रहूंगा तो आप उसे संभाल पाएंगे।'
अरे भगवान के लिए, बच्चे को अकेला छोड़ दो। क्या तुम्हारा स्कूल में दिन अच्छा बीता, प्यारी?
वैलेंटाइन ने सिर झुकाकर सहमति में सिर हिलाया। उसे उनके झगड़े बिल्कुल पसंद नहीं थे। उसने कुछ ऐसा कहने की कोशिश की जिससे वे अपने झगड़े भूल जाएं।
‘मिश्रित रक्त क्या होता है?’ उसने कहा।
अचानक सन्नाटा छा गया। वैलेंटाइन जानती थी कि उसने कुछ भयानक कह दिया है,

लेकिन उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहा है।
जीन-क्लाउड अपनी पत्नी को देखता रहा, उसका चेहरा पीला पड़ गया था। एड्रिएन ने अपनी प्लेट एक तरफ धकेल दी। उसने खाना मुश्किल से छुआ था। 'मुझे लगता है मैं सोने जा रही हूँ,' उसने कहा। संतुलन बनाए रखने के लिए उसने मेज का किनारा पकड़ा और उठकर दरवाजे की ओर लड़खड़ाते हुए चल पड़ी।
जीन-क्लाउड और वैलेंटाइन चुपचाप बैठे रहे और सीढ़ियों पर उसके दूर जाते कदमों की आवाज सुनते रहे।
‘क्या हुआ पापा?’
उसने बनावटी मुस्कान बिखेरी। 'वैलेंटाइन, तुमने ये कहावत कहाँ से सुनी? मिश्रित रक्त।'
स्कूल में एक लड़का था, आंद्रे गोंडेट। वह मुझे चिढ़ा रहा था। उसने कहा कि उसके पिता ने उसे बताया था कि मैं मिश्रित नस्ल का हूं।
'बस उसे नजरअंदाज करो। इसका कोई मतलब नहीं है। वह बस बेवकूफी कर रहा था, बस इतना ही।'
उस रात जब वैलेंटाइन अपने कमरे में लेटी हुई, फ्रेंच खिड़कियों से आती हवा को पर्दों से खेलते हुए देख रही थी, तो उसने फिर से उस बात पर विचार किया और सोचा कि जीन-क्लाउड ने उससे झूठ क्यों बोला था। उसे लगा कि इसका उसकी माँ से कुछ संबंध है।

अध्याय 10

अगले रविवार को जीन-क्लाउड और वैलेंटाइन चर्च गए। वे हर रविवार चर्च जाते थे, वैलेंटाइन अपनी सबसे अच्छी सफेद पोशाक पहनकर धूप से बचने के लिए छाता लेकर जाती थी। कभी-कभी वे घोड़े पर सवार होकर जाते थे, लेकिन आमतौर पर जीन-क्लाउड पैदल जाना पसंद करते थे।
एड्रिएन लंबे समय से उनके साथ चर्च नहीं गई थी और जीन-क्लाउड ने बहुत पहले ही उसे अपने साथ आने के लिए कहना बंद कर दिया था।
आसमान साफ और नीला था। चर्च से वापस आने वाली सड़क पैलेस डी जस्टिस के पास पार्क से होकर गुजरती थी और मेडेलीन बीच के ऊपर चट्टानों के किनारे बने रास्ते पर जाकर मिलती थी।

वैलेंटाइन ने पेड़ों के नीचे बैठे बच्चों के एक समूह को पहचाना, उनमें से कुछ उसके फ्रेंच स्कूल के सहपाठी थे। उनमें से अधिकतर आंद्रे के दोस्त थे, वही लड़का जो उसे चिढ़ा रहा था। उसने अपने पिता का हाथ और कसकर पकड़ लिया।

आंद्रे उनके साथ नहीं था; बाद में उसने सोचा कि वह झाड़ियों के पीछे छिपकर उनका इंतज़ार कर रहा होगा। वह चीखता हुआ बाहर निकला, मानो कोई भूतनी चिल्ला रही हो, उसके चारों ओर एक सफेद चादर लिपटी हुई थी, मानो वह उसका स्कर्ट हो, और उसका चेहरा बूट पॉलिश से काला हो गया था।

'वैलेंटाइन एक नीग्रो है!' वह चिल्लाया। 'वैलेंटाइन एक नीग्रो है!'

वह उसके सामने उछल-कूद कर नाचने लगा, जबकि दूसरे बच्चे तालियाँ बजा रहे थे और हँस रहे थे। वैलेंटाइना को लगा कि सदमे और शर्म से उसका चेहरा जड़ों तक लाल हो गया है।

जीन-क्लाउड को प्रतिक्रिया देने में काफी समय लगा। शायद इस दुस्साहस ने उसे चौंका दिया था। जब तक वह उसके पीछे गया, तब तक बहुत देर हो चुकी थी। आंद्रे भाग चुका था, उसके बाकी साथी इधर-उधर बिखर गए थे, और जीन-क्लाउड असहाय होकर उन्हें देखता रह गया, गुस्से में अपनी छड़ी ज़मीन पर पटक रहा था।

'छोटे बदमाशो!' वह उनके पीछे चिल्लाया। 'तुम छोटे कमीने!'

वैलेंटाइन ने अपने पिता को इससे पहले कभी गाली देते नहीं सुना था। उसने अपनी नज़रें नीचे कर लीं।

जब जीन-क्लाउड वापस आया तो उसका चेहरा पीला पड़ गया था और वह गुस्से और अपमान से कांप रहा था। उसने उसका हाथ पकड़ा और उसे वापस विला ले गया। वैलेंटाइन को उसके साथ चलने के लिए दौड़ना पड़ा।

घर पहुँचने पर ही उसने उसे छोड़ा और पैर पटकते हुए अंदर चला गया। वैलेंटाइन ने अपना सफेद दस्ताना उतारकर अपना हाथ रगड़ा; उसने उसका हाथ इतनी ज़ोर से पकड़ा था कि उसकी उंगलियों से सारा खून निकल गया था।

उसने उसे घर के पीछे वाले बगीचे में एक बेंत की कुर्सी पर बेसुध पड़ा पाया। वह रो रहा था, उसकी नाक से आंसू टपक रहे थे। उसने उसे पहली बार रोते देखा था। वह पूरी तरह टूट गई।

'पापा...'

मुझे माफ कर दो, वैलेंटाइन, मुझे माफ कर दो...

‘प्लीज, पापा, रोना मत...’
'मुझे खेद है!'
वैलेंटाइन यह देखकर दंग रह गई कि एक इतनी मूर्खतापूर्ण, बचकानी शरारत से उसे इतना गहरा दुख कैसे हो सकता है। खुद उसे शर्मिंदगी तो हुई, लेकिन दुख नहीं हुआ। उसे समझ नहीं आ रहा था कि आंद्रे गोंडेट उसके लिए इतना महत्वपूर्ण क्यों था। उसके लिए महत्वपूर्ण बात यह थी कि इससे उसके पापा को दुख पहुंचा था।
उसने अपने पिता के कंधे पर हाथ रखा और जैसे ही उसने उनका दर्द महसूस किया, उसे लगा मानो उसका बचपन गायब हो गया हो। जैसे ही उसने उन्हें थपथपाया, उसका दिल एक भयानक आग से जल उठा। उसने कसम खाई कि वह आंद्रे को अपने पिता के साथ ऐसा करने की सजा जरूर देगी।
और उसे यह करने का सही तरीका पता था।

♦ ♦ ♦

उसने बगीचे में लगे बबूल के पेड़ों में से एक के नीचे उससे मिलने का इंतज़ाम किया। बर्नार्ड खाड़ी से पठार पर एक ताज़ा समुद्री हवा बह रही थी। धातुई नीले रंग के समुद्र में सफेद लहरों के बीच गोरी द्वीप एक प्रहरी की तरह खड़ा था।
कैप मैनुअल के सफ़ेद रंग के विलाओं पर पड़ रही तेज़ धूप आँखों को चुभ रही थी और वेलेंटाइन को उसे आते देखने के लिए आँखें सिकोड़नी पड़ीं। वह धूल भरी सड़क से लड़खड़ाते हुए उसकी ओर बढ़ा, उसके हाथ उसकी शॉर्ट्स की गहरी जेबों में थे।
‘क्या बात है?’ उसने कहा। ‘क्या तुम अब भी उस दिन वाली बात से नाराज़ हो? वह तो बस एक मज़ाक था।’
'इससे मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता,' वैलेंटाइन ने कहा।
‘सच में?’ वह निराश लग रहा था। ‘आप मुझसे किसलिए मिलना चाहते थे?’
वैलेंटाइन ने ज़मीन की ओर देखा। 'क्या तुमने पहले कभी किसी लड़की को चूमा है?'
उन्होंने जवाब देने में काफी समय लिया। अंत में उन्होंने कहा: 'कई बार।'
'क्या तुम मुझे चूमोगे?'
आंद्रे ने अपने हाथ शॉर्ट्स से बाहर निकाले। 'यहाँ?'
‘नहीं, कोई देख लेगा। इधर से।’ उसने उसका हाथ पकड़ लिया। ‘चलो।’

♦ ♦ ♦

तहखाना ठंडा था और उसमें फफूंद की गंध आ रही थी। बगीचे से नीचे उतरने वाली पत्थर की सीढ़ियाँ नंगे पैरों से ठंडी लग रही थीं। यहाँ केवल भारी देवदार के दरवाजे की दरारों और पत्थर की दीवार में ऊँचाई पर बनी छोटी जालीदार खिड़की से छनकर ही रोशनी आ रही थी।

सीढ़ियों के शीर्ष पर पहुँचकर आंद्रे हिचकिचा उठा। उसने कहा, 'यह डरावना है।'

'डर गया क्या?'

'बिल्कुल नहीं।'

'तो पर आजा।'

वह हिचकिचाया, फिर उसके पीछे-पीछे नीचे चला गया। 'यह जगह क्या है?'

‘ये तहखाना है। देखो, उस दीवार के किनारे पापा की शराब रखी है। लेकिन वो कभी यहाँ नहीं आते। सिर्फ जेमल आता है। वो किसी को नहीं बताएगा।’

'क्या बताएँ?'

वैलेंटाइन ने आंद्रे का हाथ पकड़ा और उसे तहखाने के आखिरी छोर तक ले गया। अँधेरे में कुछ हलचल हुई और हल्की सरसराहट की आवाज़ आई, जैसे लकड़ी के बरामदे पर पत्ते उड़ रहे हों।

आंद्रे रुक गया, तेज धूप के बाद अंधेरे में उसकी आँखें अभी भी अभ्यस्त नहीं थीं। उसने देखा कि दीवार के सहारे कई बक्से रखे हुए हैं। वैलेंटाइन उनमें से एक के पास झुक गया।

आंद्रे को एहसास हुआ कि वे बक्से नहीं, पिंजरे थे, और उनमें जीवित, गतिशील चीजें थीं। वह भागना चाहता था, लेकिन वह एक लड़की से डरने वाला नहीं था।

वह एक कदम और करीब आया।

‘वहाँ साँप हैं!’

‘ये कितने खूबसूरत हैं ना...?’ वैलेंटाइन ने फुसफुसाते हुए कहा।

वह हांफने लगा। उसने उस गहरे रेशमी रंग को पहचान लिया; उसके पिता ने उसे बाज़ार में ऐसे ही सांप दिखाए थे। वह घबराकर सांस रोक बैठा। 'पुटेन! वैलेंटाइन, वह तो मांबा सांप है!'

उसने अंधेरे में उसकी ओर देखकर मुस्कुराया। ‘क्या तुम्हें डर लगता है?’

‘मैं डरा हुआ नहीं हूँ। मैं बस पूछ रहा हूँ। आखिर तुम्हें मांबा सांप कैसे मिला?’

मैंने उसे खुद पकड़ा। वह बरगद के पेड़ के नीचे सो रहा था। मैंने एक दोमुंही छड़ी का इस्तेमाल करके उसका सिर फंसा लिया।
‘झूठा!’
‘यह सच है। मैं उसे हमेशा अपने पास नहीं रखूंगी। मैं उसे जल्द ही जाने दूंगी। मुझे बस यहाँ आकर उसे निहारना अच्छा लगता है। वह कितना बलवान और कितना सुंदर है। क्या आपको ऐसा नहीं लगता?’
'हां, और अगर यह आपको काट ले तो आप मर जाएंगे। यह इतना खूबसूरत है।'
वैलेंटाइन अचानक खड़ी हो गई और पिंजरों में से एक का दरवाज़ा खोला। उसने अपना हाथ अंदर डाला और उसकी ओर बढ़ी, उसकी उंगलियों के बीच दो छोटी नारंगी आँखें चमक रही थीं। आंद्रे को लगा जैसे वह डर के मारे पेशाब कर देगा। उसके हाथ में वह मनहूस चीज़ थी!
'आप क्या कर रहे हो?'
मैं तुम्हें सबक सिखाने जा रहा हूँ।
मुझे समझ नहीं आ रहा, मैं...
'तुम मेरे पिता के सामने फिर कभी मेरा मजाक नहीं उड़ाओगे!'
‘वैलेंटाइन! मैंने तुमसे कहा था, यह सिर्फ एक मजाक था...’
'अच्छा। तुमने खूब हंस लिया। अब मेरी बारी है।'
वह लड़खड़ाकर पीछे गिरा और पीठ के बल ज़मीन पर आ गया। 'वैलेंटाइन!' उसकी तीखी आवाज़ तहखाने से होते हुए पूरे घर में गूंज उठी। 'वैलेंटाइन, प्लीज़!'
वह उसके ऊपर खड़ी थी। वह जानता था कि वह असहाय है। सांप का सिर उसकी आंखों के सामने नाच रहा था और उसने उसकी जीभ बाहर निकलते हुए देखी, मानो वह पहले उसे चखना चाहता हो।
‘पापा रो पड़े, तुम्हारा वो छोटा सा मजाक इतना मजेदार था। वो बगीचे में बैठ गए और रोते ही रहे, रोते ही रहे।’
‘बस करो! कृपया! मुझे माफ़ कर दो! इसे हटाओ... वैलेंटाइन, ऐसा मत करो!’
अचानक तहखाने में जीन-क्लाउड की आवाज गूंज उठी। 'वैलेंटाइन!'
उसने ऊपर देखा और दरवाजे पर अपने पिता की परछाई देखी। आंद्रे को मौका मिल गया। वह झट से उठा और भाग गया।
‘आप ये सब क्या कर रही हैं, मैडम!’

वैलेंटाइन सांप को वापस उसके पिंजरे में ले गया और उसे अंदर गिरा दिया, फिर पिंजरे का ढक्कन जोर से बंद कर दिया।
'धत्!' उसने धीरे से खुद से कहा। 'अब मैं बड़ी मुसीबत में फंस गई हूँ!'

♦ ♦ ♦

जब एड्रिएन ने शादी के कुछ ही हफ्तों बाद अपनी गर्भावस्था की घोषणा की, तो जीन-क्लाउड स्तब्ध रह गया। क्योंकि अगर एड्रिएन शादी में कोई राज़ लेकर आई थी, तो वह भी। बचपन में हुई एक ग्रंथि संबंधी बीमारी के कारण वह बांझ हो गया था, लेकिन उसने एड्रिएन को यह बात बताने से हिचकिचाया था, क्योंकि उसे डर था कि वह अपनी तंगहाली में भी शादी को ठुकरा देगी।
इसलिए, अगर उसे कभी बच्चा होना भी था, तो वह हमेशा किसी और का ही बच्चा होगा।
जीन-क्लाउड एक व्यावहारिक व्यक्ति थे। अगर एड्रिएन किसी टूटे हुए इंसान की तरह थी, तो वह भी। उन्हें पता था कि वह किस स्थिति में फंसने वाले हैं। जब डॉक्टरों ने उन्हें सफेद रंग से रंगे अस्पताल के कमरे में ले जाया, जहां एड्रिएन बिस्तर पर थकी हुई लेटी थी, तो उनकी बेटी की पहली झलक देखकर उन्हें जो खुशी हुई, वह अप्रत्याशित थी। वह अविश्वसनीय रूप से सुंदर थी। उन्हें इस बात की बिल्कुल परवाह नहीं थी कि एड्रिएन ने नौ महीने पहले बच्चे को गर्भ धारण करने के लिए क्या किया था। अब वह उनकी थी।
और इसीलिए उस रात प्रसव कक्ष में जीन-क्लाउड ने एड्रिएन को जो मुस्कान दी थी, वह बिल्कुल सच्ची थी।
वह उसे अपने सभी दोस्तों के सामने गर्व से दिखाता था, हालाँकि किसी और को उसे गोद में लेने की अनुमति नहीं थी। अगर कभी किसी ने उसकी त्वचा के रंग पर आपत्ति जताई भी हो, तो उसने कभी ध्यान नहीं दिया। वह हमेशा उसकी चिंता में डूबा रहता था। जैसे ही वह अपने सफेद पालने से हल्की सी भी आवाज़ निकालती, वह तुरंत वहाँ पहुँच जाता, उसे अपनी बाहों में उठाकर दिलासा देता। वह घंटों उसके साथ बैठा रहता, उसकी सुनहरी भूरी त्वचा और रेशमी काले बालों को निहारता और उन अनूठे संयोगों पर आश्चर्य करता जिनसे उसे इतनी सुंदर बेटी मिली थी।
यह उसके प्रिय स्त्री में आए उस रहस्यमय परिवर्तन के लिए कुछ सांत्वना थी। उसने

बहुत पहले ही भाग्य से यह पूछना छोड़ दिया था कि उसकी कभी खूबसूरत पत्नी एक मोटी और मैली शराबी में क्यों बदल गई, क्यों वह अब उससे बिना अपमान किए कुछ शब्द भी नहीं बोल सकती। इसके बजाय उसने केवल वैलेंटाइन, अपनी 'छोटी परी' के लिए जीना सीख लिया था।

लेकिन अब, जब वह अपने अध्ययन कक्ष में खड़ा था, तो उसे उस नन्ही परी पर आश्चर्य हो रहा था जिसे उसने कुछ ही मिनट पहले एक स्कूली दोस्त के चेहरे पर सांप लहराते हुए देखा था। 'अच्छा, अब तुम अपने बारे में क्या कहना चाहती हो?'

‘मुझे माफ कर दो पापा,’ वैलेंटाइन ने धीरे से कहा।

‘माफी? माफी? तुमने उस लड़के के चेहरे पर सांप तान रखा था!’

‘यह एक छोटा रॉक पाइथन था। इससे उसे कोई नुकसान नहीं होता। मैंने इसे पालतू जानवर के रूप में रखा है।’

उन्हें यह बात पता नहीं थी!

वैलेंटाइन मुस्कुराया। 'नहीं, उसने ऐसा नहीं किया। उसने अपनी पैंट में पेशाब कर दिया, है ना?'

जीन-क्लाउड ने गहरी सांस ली और खुद को काबू में करने की कोशिश की। उसे एहसास हुआ कि उसका पछतावा पूरी तरह से बनावटी था। 'तुम्हारे पास ये... घर के नीचे रहने वाले ये सरीसृप कब से हैं?'

‘क्या तुम मुझे उन्हें जाने देने के लिए मजबूर नहीं करोगे?’

मैंने आपसे पूछा था कि कितना समय लगेगा?

मुझे याद नहीं है। मैं उनमें से किसी को भी छह महीने से अधिक समय तक नहीं रखता।

जीन-क्लाउड ने अपनी बेटी द्वारा बताई गई भयावहता को मानने से इनकार कर दिया। उसकी बेटी ने जिन खतरों का सामना किया था, उनके बारे में सोचना भी असहनीय था। 'उनमें से कुछ सांप बेहद ज़हरीले हैं। एक पिंजरे में काला मांबा है और—'

मुझे पता है। वो मेरा पसंदीदा है। वो बहुत सुंदर है।

जीन-क्लाउड ने कभी किसी को मांबा को सुंदर कहते नहीं सुना था। 'यह अफ्रीका का सबसे घातक सांप है।'

‘मैं उनके साथ बहुत सावधानी बरतता हूँ। जेमल ने मुझे उन्हें पकड़ने का तरीका सिखाया। इसके लिए एक खास तरह की छड़ी का इस्तेमाल करना पड़ता है।’

‘मैं जानना नहीं चाहता,’ जीन-क्लाउड हकलाते हुए बोला। ‘तुम उस लड़के के साथ क्या कर रही थी? मुझे बताओ।’
मुझे खेद है। सचमुच। मैंने यह तुम्हारे लिए किया।
मेरे लिए?
वही उस दिन पार्क में मेरा मजाक उड़ा रहा था। उसने तुम्हें रुला दिया। मैं किसी को ऐसा नहीं करने दूंगी!
जीन-क्लाउड का गुस्सा मोमबत्ती की लौ की तरह बुझ गया। 'ओह, वैलेंटाइन,' उसने कहा। 'हम तुम्हारे साथ क्या करें?'

♦ ♦ ♦

जब जीन-क्लाउड बेडरूम में दाखिल हुआ तो उसने एड्रिएन को बिस्तर पर लेटे हुए पाया, वह अभी भी अपने ड्रेसिंग गाउन में थी, सफेद वाइन की चुस्कियां ले रही थी और एक पत्रिका को मूर्खतापूर्ण ढंग से घूर रही थी। ठीक यही वह कर रही थी जब वह उस सुबह गया था।
एक समय वह कितनी खूबसूरत, कितनी प्यारी और कितनी आत्मविश्वासी थी। उसने पहले की तरह ही यह सोचने की कोशिश की कि आखिर उनके बीच सब कुछ कब बदल गया। अगर वह खुद से ईमानदार होता, तो वह जानता था कि कुछ भी पहले जैसा नहीं था। यह बदलाव उनकी शादी से पहले ही शुरू हो गया था। साइगॉन में उसके साथ जो कुछ भी हुआ था, वह डकार तक उसका पीछा करता रहा, और अफ्रीकी उपनिवेश के साफ नीले आसमान ने उसकी परेशानी को दूर करने में कोई मदद नहीं की। उसे साइगॉन में उसके बारे में फुसफुसाए जाने वाली कहानियाँ याद आईं और अब वह उन्हें अनसुना करने के लिए खुद को मूर्ख समझ रहा था।
उसने कई बार उससे इस बारे में बात करने की कोशिश की थी, लेकिन वह बस परेशान हो जाती थी, कभी-कभी तो हिस्टीरिया जैसी हालत में भी पहुंच जाती थी; उसने खुद को समझाया था कि समय के साथ यह ठीक हो जाएगा।
लेकिन हालात और भी बदतर हो गए।
अब उसे गहरे दुख का अहसास होने लगा। वह बिस्तर के किनारे बैठ गया।
‘मेरी जान,’ उसने फुसफुसाते हुए कहा।
एड्रिएन ने ऊपर उसकी ओर देखा। वह ठीक से ध्यान केंद्रित नहीं कर पा रही थी। हे

भगवान! उसने सोचा। क्या वह पूरे दिन नशे में रही है?
'यह क्या है?'
उसने उसका हाथ थाम लिया। वह ठंडा था। 'क्या तुम अब भी मुझसे थोड़ा बहुत प्यार करती हो?'
‘जीन-क्लाउड, आज रात मेरा उस मूड में नहीं है—’
नहीं, मेरा मतलब वो नहीं है। उसे पता है, एड्रिएन। मुझे उसे बताना ही पड़ा। अभी-अभी। बच्चे स्कूल में उसे चिढ़ा रहे हैं और...
‘क्या? मुझे समझ नहीं आया। आप किस बारे में बात कर रहे हैं?’
‘वैलेंटाइन! मैंने उसे बताया! मैंने उसे बताया कि मैं उसका असली पिता नहीं हूँ।’
एड्रिएन ने गहरी सांस ली। 'तुम मूर्ख हो।'
क्या मैं हूँ?
‘तो क्या? वो तुम्हारी नहीं है। तुम्हें उसे ये बात बताने की क्या ज़रूरत थी?’
उसे जानने का पूरा अधिकार है। वह काफी बड़ी हो चुकी है। पिता कौन है?
मुझे याद नहीं है।
जीन-क्लाउड ने उसके कंधे पकड़कर उसे झकझोर दिया। शराब चादर पर गिर गई।
'एड्रीएन! बस करो! ठीक है, तो तुमने किसी और आदमी से बच्चा पैदा किया! अब मुझे इससे कोई फर्क नहीं पड़ता! मुझे कभी फर्क नहीं पड़ा! तो, वह... अश्वेत था। मुझे परवाह नहीं!'
‘इससे क्या फर्क पड़ता है कि आप परवाह करते हैं या नहीं?’
उसने उसे जाने दिया और अपना चेहरा हाथों में छिपा लिया। इसका कोई फायदा नहीं था। 'हम जल्द ही फ्रांस वापस जाएंगे।'
मैं फ्रांस नहीं जाना चाहता। मुझे यहीं अच्छा लगता है।
‘डाकारो के लोगों को इस साल आजादी मिल जाएगी। प्रशासन को भंग किया जाना है। मैंने आपको पहले भी बताया है, यह मेरा फैसला नहीं है। मुझे वहीं जाना होगा जहां वे मुझे भेजेंगे।’
'हां, बिल्कुल। दौड़ो, जीन-क्लाउड। स्थिर खड़े रहो, जीन-क्लाउड। घेरे के पार कूदो, जीन-क्लाउड।'
‘इससे पहले तो तुम्हें कभी कोई परेशानी नहीं हुई! इतनी मेहनत करके हमने ये विला हासिल किया!’ उसने अपना गुस्सा दबाते हुए उसका हाथ थपथपाया, ताकि अगली

प्रतिक्रिया में वो शांत हो जाए। 'शायद ये अच्छा ही होगा। फ्रांस में अच्छे डॉक्टर हैं। हम पेरिस जा सकते हैं और—'

हमें डॉक्टर की क्या जरूरत है? हम बीमार नहीं हैं...

'तुम्हारे लिए, एड्रिएन। पेरिस में ऐसे डॉक्टर हैं जो मन को समझते हैं और...'

'तुम्हें लगता है कि मैं पागल हूँ, है ना? मुझमें कोई खराबी नहीं है! गलती तुम्हारी है! तुमने ही मुझे ऐसा करने पर मजबूर किया!'

उसने उसका चेहरा नोचने की कोशिश की और जीन-क्लाउड कमरे के दूसरे कोने में भाग गया। 'तुम क्या बात कर रही हो? मैंने तुमसे क्या करवाया?'

'यहाँ से निकल जाओ!' उसने शराब का गिलास उठाया और उसके सिर पर निशाना साधा। लेकिन वह दीवार से टकराकर बेजान होकर टूट गया। 'निकल जाओ!'

'प्लीज़, एड्रिएन—'

'यहाँ से निकल जाओ, तुम सब!'

जीन-क्लाउड धीरे से दरवाजा बंद करते हुए बाहर चला गया। उसे बेडरूम के अंदर से एड्रिएन के तकिये में सिर रखकर रोने की दबी हुई सिसकियाँ सुनाई दे रही थीं। घबराया हुआ जीन-क्लाउड चुपके से निकल गया और उसने एक नौकर से दूसरे कमरे में बिस्तर लगाने को कहा।

♦ ♦ ♦

एड्रिएन ने कमरे में धीरे-धीरे फैलती परछाइयों को देखा। उसके सिर के ऊपर लगी जाली पर एक मच्छर भिनभिनाया।

'मिशेल,' एड्रिएन ने घने अंधेरे में फुसफुसाते हुए कहा, 'कृपया मुझे माफ कर दो।'

क्या वह जीवित था? नहीं। अधिक संभावना है कि वह वर्षों पहले साइगॉन की किसी सड़क पर भूख से मर गया होगा।

मैंने उसे मार डाला। मैंने उसे मरने के लिए छोड़ दिया।

उसकी नज़र दीवार पर टंगे क्रूस पर पड़ी। मंद रोशनी में लटकते हुए ईसा मसीह का चेहरा घृणा से विकृत हो उठा था। वहाँ क्षमा का कोई नामोनिशान नहीं था। उसने चर्च में अपने पापों का प्रायश्चित भी नहीं किया था। वास्तव में, क्षमा न मिलना ही बेहतर था। वह पीड़ा सहना चाहती थी। वह इसकी हकदार थी।

मैंने अपने ही बेटे को त्याग दिया।

उसने आराम और विलासिता के इस जीवन के लिए उसे त्याग दिया था। कितनी

विडंबना है कि अंत में सब कुछ इस तरह हो गया। उसने सोचा था कि वह साइगॉन को पीछे छोड़ देगी, लेकिन वह उसका पीछा करते हुए यहाँ तक आ गया। अब वह बस हमेशा के लिए सोना चाहती है, और फिर कभी खुद का सामना नहीं करना चाहती।
'ओह, मिशेल। तुम्हें क्या हुआ?'
हाँ, वह अपने कष्टों की हकदार थी। और जीन-क्लाउड। उसने उसे क्यों नहीं छोड़ा? वह इस हालत में कैसे रह सकता था? उसे सताना नामुमकिन नहीं था, क्योंकि उसी की वजह से उसने अपने बेटे को छोड़ा था। उसने उसे एक रास्ता दिखाया था और वह इसके लिए उसे कभी माफ नहीं कर सकती थी।
'ओह, मिशेल, कृपया मुझे माफ कर दो।'
कमरा धीरे-धीरे अंधेरे में डूब गया और एड्रिएन ने अपनी आंखें बंद कर लीं।

अध्याय 11

Saigon
साइगॉन एक वेश्यालय बन चुका था। इसने जापानी और फ्रांसीसी सैनिकों के जूते चमड़े और अपनी औरतें उन्हें बेची थीं, और युद्ध ने बढ़ती आबादी, इसके साइक्लोपोस चालकों, इसके भिखारियों, इसके दर्ज़ियों और प्राचीन कलाकृतियों के जालसाजों को पाला-पोसा था।
कभी यह शहर साइकिलों का शहर हुआ करता था। अब उनकी जगह वेस्पा और लैम्बरेटा, सेना के ट्रक और टैंकों ने ले ली थी। शहर की सफेद रंग से रंगी दीवारों पर भित्तिचित्र दिखाई देने लगे: 'राष्ट्रपति डिएम का समर्थन करें!'
किसी भी वेश्या की तरह, साइगॉन ने अपने आकर्षण का इस्तेमाल गहरी पीड़ाओं को छुपाने के लिए किया। रुए कैटिनैट (अब तू डो नाम दिया गया) के चौड़े, पेड़ों से घिरे रास्तों पर खूबसूरत वियतनामी महिलाएं, शरीर से चिपकी हुई आओ-दाई पोशाक में बेहद आकर्षक लग रही थीं, उनके बगल में केसरिया वस्त्र पहने भिक्षु, सलीके से और नज़ाकत से चल रहे थे। लेकिन फूलों से सजे बगीचों और पुराने औपनिवेशिक फ्रांसीसी विलाओं की लैवेंडर और क्रीम रंग की दीवारों के परे, झुग्गियां, गत्ते के घर और बुई डोई (गली के बच्चे) थे, जो हर कोने पर मंडराते रहते थे, या होटलों और

बाजारों के बाहर भीख मांगते हुए झुंड बनाकर खड़े रहते थे, अनाथ और परित्यक्त बच्चों की एक पीढ़ी, जिनके पास घर नहीं था, खाना नहीं था और उम्मीद भी नहीं थी।

♦ ♦ ♦

मिशेल तेरह साल का था। उसे पहले से ही चार भाषाएँ आती थीं: फ्रेंच, अंग्रेजी, वियतनामी और चिउ चाओ, जो चोलोन की चीनी बोली है। इन कौशलों के अलावा, वह एक माहिर चोर और जेबकतरों का सफ़र भी करता था। वह रेज़र से शॉपिंग बैग को चीरकर पर्स निकाल लेता था और हाम न्घी स्ट्रीट के बाज़ारों में चलती होंडा कारों के पीछे से शॉपिंग बैग छीन लेता था। उसका अपना एक नेटवर्क था और वह आधा दर्जन कालाबाज़ार डीलरों से अच्छी दोस्ती रखता था। वह गली ही उसका घर थी। वह नो नेम और अपनी उम्र के दूसरे वियतनामी लड़कों से पहले ही एक सिर लंबा था। वह दुबला-पतला था, लेकिन उसके शरीर की मांसपेशियां रस्सी की तरह सख्त और तनी हुई थीं। उसने ब्रुकलिन डॉजर्स की बेसबॉल कैप और एक सफेद टी-शर्ट पहनी हुई थी, जिसकी बाईं आस्तीन में लकी स्ट्राइक सिगरेट का एक पैकेट दबा हुआ था। उसने अपनी शॉर्ट्स की पिछली जेब में एक जिपो लाइटर और एक फोल्डिंग चाकू रखा हुआ था।

उनकी सांवली त्वचा और चिकनी बनावट ने उन्हें अपने परिवेश में घुलमिल जाने में मदद की, और केवल उनकी लंबाई ही उनके यूरोपीय वंश का संकेत देती थी। लेकिन उनकी सबसे यादगार विशेषता उनकी आंखें थीं; वे देखने में असमान प्रतीत होती थीं। इससे ऐसा लगता था मानो उनके चेहरे के दोनों हिस्सों को अलग-अलग ढाला गया हो और फिर उन्हें एक साथ जोड़ा गया हो। यह प्रभाव विचलित करने वाला और सम्मोहक था।

‘देखो आज मैंने क्या हासिल किया,’ उसने कहा। उसने अपनी अमेरिकी सेना द्वारा जारी की गई शॉर्ट्स की बड़ी-बड़ी जेबों में हाथ डाला और एक भारी-भरकम रोलेक्स घड़ी निकाली, जिसमें चांदी का मोटा पट्टा लगा हुआ था।

नो नेम ने धीरे से सीटी बजाई। 'यह तुम्हें कहाँ से मिला, हं?'

'कैरावेल के बाहर एक लंबा-चौड़ा अमेरिकी खड़ा था। उसने तुरंत अपनी कलाई से बंदूक उतारी और हवा की तरह भाग गया।'

थ्री फिंगर ने अपनी टोकरी ज़मीन पर खाली कर दी। उसमें लक्स साबुन की छह टिकिया, कार्नेशन दूध के एक दर्जन डिब्बे और कोलगेट टूथपेस्ट की कुछ ट्यूबें थीं। 'मैं

शरणार्थी शिविर गया था। ये लो, अमेरिका के लोगों की तरफ से एक तोहफा।'
टाइगर आई ने अपनी खाकी शर्ट की जेब में हाथ डाला और कुछ मुड़े हुए नीले नोट ज़मीन पर फेंक दिए। नो नेम ने उन्हें उठाया और ध्यान से देखा। 'उनसे डॉलर में भुगतान करवाओ।'
टाइगर आई ने उन्हें वापस छीन लिया। 'तुम्हें डॉलर चाहिए, तो उन्हें चोद डालो।'
थ्री फिंगर ने साबुन और टूथपेस्ट उठाया। 'मैं इन्हें बाजार में बेचूंगा।'
मिशेल ने घड़ी को टोकरी में फेंक दिया। 'लो। इसे भी मेरे लिए बेच दो।'
नो नेम ने दिन्ह की ओर सिर हिलाया, जो इमारत की जर्जर दीवार से सटी नालीदार चादर और चटाई से बनी एक छोटी सी झोपड़ी के नीचे पीठ के बल लेटा हुआ था। वह कराह रहा था। उसकी जांघ पर चूहे के काटने से घाव हो गया था और उसमें संक्रमण हो गया था। आज सुबह वह घाव सूजा हुआ और गर्म था और उस पर पपड़ी जम गई थी। उसके नीचे से पीले रंग का सड़ा हुआ पदार्थ रिस रहा था।
‘शायद हम दिन्ह के लिए कुछ दवा खरीद सकते हैं, है ना?’ नो नेम ने कहा।
'हम शरणार्थी शिविर से उसके लिए कुछ गोलियां ले आएंगे,' मिशेल ने कहा।
‘ये तो सिर्फ दिमागी शैतानों के लिए है। हमें इससे भी सख्त दवा चाहिए।’
दवाइयां महंगी हैं। हमें भोजन की अधिक आवश्यकता है।
नो नेम ने मिट्टी में थूका। उसने धीरे से कहा, 'कभी-कभी तुम गोल आँख वाले की तरह बात करते हो।'
‘कभी-कभी,’ मिशेल ने उसे जवाब दिया, ‘तुम एक बूढ़ी औरत की तरह बात करते हो।’
हमें एक दूसरे का ख्याल रखना होगा।
‘वह तो मरने ही वाला है। उस पर पैसा क्यों बर्बाद करें?’
नो नेम ने अपना सिर हिलाया। 'मैं तुम्हारे बारे में गलत था। तुम कभी हमारे जैसे नहीं बन पाओगे। मुझे तुम्हें वैन ट्रांग में ही छोड़ देना चाहिए था।'
अगर मैं न होता तो तुम अभी भी वहीं होते।
नो नेम उछलकर खड़ा हो गया। उसके हाथ में एक चाकू आ गया। 'मेरा सुझाव है कि हम दवा खरीद लें।'
मिशेल धीरे-धीरे खड़ा हुआ। वह उस छोटे टोंकिनीज़ कुत्ते से काफी लंबा था। उसने अपनी शॉर्ट्स में हाथ डाला और अपना स्विचब्लेड निकाला। 'मेरा कहना है कि हमें

ऐसा नहीं करना चाहिए।'
वे एक-दूसरे के चारों ओर चक्कर लगाने लगे, और बाकी लोग उन्हें जगह देने के लिए पीछे हट गए।
एक खोखली गड़गड़ाहट से उनके पैरों तले ज़मीन हिल गई। दोनों लड़के चौंककर मुड़े और अपनी लड़ाई भूल गए।
'बाल-बाल बच गए,' मिशेल ने धीरे से कहा।
नो नेम ने चाकू को दूर धकेल दिया। 'चलो चलते हैं।'
यह बार कैरावेले के अमेरिकी इंजीनियरों का पसंदीदा अड्डा था। लेकिन खिड़कियों पर लगी जालीदार पट्टी इस बार काम नहीं आई; एक वियत कांग सैनिक ने मेज के नीचे प्लास्टिक का टुकड़ा छोड़ दिया था। जब मिशेल और नो नेम वहाँ पहुँचे, तो सड़क अभी भी लाशों से भरी पड़ी थी, और हवा घायलों की भयानक कराहों से गूंज रही थी। दूर से एम्बुलेंस की घंटियों की आवाज़ सुनाई दे रही थी।
जलती हुई राख को लपटें चाट रही थीं। इमारत का पूरा भूतल उड़ गया था, दीवारें बाहर की ओर उखड़ रही थीं और ईंटें और पत्थर दोनों तरफ की दुकानों में बिखर रहे थे।
एक हरे रंग की एआरवीएन जीप पहुंची और सैनिकों में से एक ने प्लास्टिक के रिबन से इलाके की घेराबंदी शुरू कर दी।
'हम इंतजार करेंगे,' मिशेल ने कहा।

♦ ♦ ♦

उस शाम बच्चे मलबे में से ऐसे रास्ता बनाते हुए आगे बढ़े जैसे गीदड़ शिकार ढूंढ रहे हों। थ्री फिंगर को एक घड़ी मिली। उसका स्टील का पट्टा मुड़ा-तुड़ा था, और शीशा टूटा हुआ था, लेकिन उसका मैकेनिज़्म अभी भी काम कर रहा था। वह उसे बाज़ार में कुछ पियास्त्रों में बेच सकता था। टाइगर आई को एक कटी हुई उंगली मिली और उसने खून से लथपथ उस अवशेष से सोने का पतला पट्टा निकालकर अपनी शॉर्ट्स में पहन लिया।
कैफे के बगल वाली दवा की दुकान वीरान पड़ी थी, एक दीवार उड़ गई थी, अलमारियां और दराजें मलबे में बिखरी पड़ी थीं। मिशेल लकड़ी और ईंटों को खींचते हुए अपने हाथों को खुरचकर और छाले डालकर आगे बढ़ा, जो काली पड़ चुकी थीं

लेकिन फिर भी आग की तरह गर्म थीं।
बैक्सिआ की दुकान अमेरिकी और पारंपरिक दोनों बाजारों की जरूरतों को पूरा करती थी। सूखे जड़ी-बूटियों और सूखे कीड़ों और पौधों से भरी टूटी बोतलों और जारों के बीच, मिशेल को पश्चिमी दवाओं का भंडार मिला, छोटी-छोटी शीशियों में गोलियां थीं जिन पर लंबे-लंबे, अस्पष्ट नाम लिखे थे। उसने ऐसी आधी दर्जन बोतलें अपनी खाकी शॉर्ट्स की बड़ी जेबों में रख लीं।
जब वे अपने अस्थायी आश्रय में वापस आए, तो मिशेल ने उन्हें उस छोटे से खजाने के ढेर पर फेंक दिया जिसे उन्होंने बचाया था।
'दिन्ह के लिए दवा,' मिशेल ने कहा।
नो नेम ने एक बोतल को अपनी हथेली में रखकर उसका वजन किया। उसने धीरे-धीरे पढ़ा, 'मैन-ड्रैक्स। यह क्या करता है, हाँ?'
मिशेल ने कंधे उचकाते हुए कहा, 'यह दवा है।'
नो नेम ने ढक्कन खोला और कुछ सफेद गोलियां अपनी हथेली पर गिरा लीं। 'हम उसे कितनी गोलियां दें?'
'दो,' टाइगर आई ने कहा। 'शरणार्थी शिविर में वे हमेशा आपको दो चीजें लेने के लिए मजबूर करते हैं।'
'लेकिन दिन्ह बहुत बीमार है,' थ्री फिंगर ने कहा। 'बेहतर होगा कि चार लोग हों।'

♦ ♦ ♦

उनकी आग से उठता धुआं ऊपर की ओर उठने लगा। गोदाम की कंकालनुमा दीवारों के नीचे की परछाइयां चौड़ी और गहरी होती चली गईं।
'उसके पैर की हालत और खराब हो गई है,' नो नेम ने कहा। 'उससे बदबू आ रही है। घाव के आसपास की त्वचा हरी दिख रही है। दवा का कोई असर नहीं हुआ।'
थ्री फिंगर ने कहा, 'चलो उसे कुछ और देते हैं।' उसके हाथ में कांच की एक और छोटी बोतल थी। 'इनके बारे में क्या ख्याल है?'
नो नेम ने उन्हें उससे ले लिया। 'को-डीन। ज़रूर। क्यों नहीं?'
'क्या वह अभी भी सो रहा है?' टाइगर आई ने कहा।
नो नेम ने सिर हिलाया।
'शायद वह मर रहा है।'
'या शायद दवा का असर था,' मिशेल ने कहा। 'अमेरिकियों के पास ऐसी गोलियां

होती हैं जिनसे नींद आ जाती है।'
'अगर वह जल्द ही होश में नहीं आता है, तो हम उसे और गोलियां नहीं दे सकते,' नो नेम ने कहा।
मिशेल आग को घूरता रहा। 'यह बहुत ही असरदार दवा होनी चाहिए। वह लगभग दो दिनों से सो रहा है।'
अगर इससे सिर्फ नींद आती है तो इसका कोई फायदा नहीं। इसे फेंक दो।
मिशेल ने अपना सिर हिलाया। 'कभी-कभी आप इतने बेवकूफ हो सकते हैं।'
'ठीक है, गोल आँख वाले, तुम तो बड़े होशियार हो। इस मैन-ड्रैक्स से हमारा क्या काम है?'
मिशेल मुस्कुराया और उसे बताया।

♦ ♦ ♦

टाइगर आई इसे जिस्मफरोशी कहती थी। नो नेम या थ्री फिंगर उसके लिए गली में दलाली करते थे, जो हवाईयन शर्ट या बेढंगी फिटिंग वाली हरी वर्दी पहने क्रू कट वाले अमेरिकी इंजीनियरों और ठेकेदारों की भीड़ को पटाते थे। सौदा किसी गली में तय होता और फिर वह उन्हें एक छोटे से चीनी होटल में ले जाती, जहाँ वह प्रति घंटे के हिसाब से कमरे का किराया लेती थी।
अमेरिकी सैनिक बड़े और भारी-भरकम थे और उनसे चोट लगती थी, लेकिन चोरी करने से तो ये आसान था, और अगर वो कुंवारी होने का नाटक करती तो उसे दुगनी रकम मिलती थी। उन्हें उसका थोड़ा चीखना पसंद था और कभी-कभी उसे नाटक करने की ज़रूरत भी नहीं पड़ती थी। लेकिन उनमें से कुछ उसके प्रति दयालु भी थे और उसे कैमल सिगरेट, हर्शे बार और कोका-कोला की बोतलें देते थे।
खेल में रोमांच बढ़ाने का विचार मिशेल का ही था। वह उसे सड़क पर काम करते हुए देखती रही और कुछ ही मिनटों में वह उसके लिए एक ग्राहक लेकर आया। उसने उसे एक कैफे में नूडल्स खाते हुए पाया।
'हे महोदय, क्या आप मेरी बहन के साथ सोना चाहते हैं? नंबर वन लड़की। एकदम कसी हुई योनि।'
अमेरिकी व्यक्ति ने अपने दोपहर के भोजन के बचे हुए टुकड़ों को एक छोटी लकड़ी की टूथपिक से कुरेदते हुए पूछा, 'क्या यह नंबर एक लड़की तुम्हारी छोटी बहन है या

तुम्हारी दादी?'
हालांकि मिशेल अंग्रेज़ी बहुत अच्छी तरह बोल सकता था, फिर भी वह गली-मोहल्ले की बनावटी बोली का इस्तेमाल करता था। उसे लगता था कि अगर अमेरिकी उसे एक आम ठग समझें तो यह उसके धंधे के लिए फ़ायदेमंद रहेगा। 'बहुत जवान। नंबर वन। आकर देख लो।' उसने उस आदमी की कमीज़ खींची। उस पर हरे ताड़ के पेड़ों के बीच चमकीले पीले केले और नारंगी अनानास बने हुए थे।
'कितना?'
‘आओ और देखो। नंबर एक लड़की। इधर आओ, महोदय।’
वह आदमी मिशेल के पीछे-पीछे गली में चला गया। टाइगर आई दीवार से टेक लगाकर खड़ी थी। उसके हाथ-पैर टहनियों की तरह नाज़ुक लग रहे थे। उसकी झुकी हुई आँखें अमेरिकी को बेपरवाही से घूर रही थीं।
अमेरिकी व्यक्ति आश्चर्यचकित होकर रुक गया। उसने अपने मुंह से टूथपिक निकाली और अपने कम होते, सुनहरे बालों में हाथ फेरा। 'उसकी उम्र कितनी है?'
टाइगर आई तेरह साल की थी और अपने ग्राहकों को बताती थी कि वह सोलह साल की है। मिशेल ने अमेरिकी की छोटी गुलाबी जीभ को उसके नम लाल होठों के बीच फड़फड़ाते हुए देखा, मानो कोई छिपकली अपने अगले शिकार को परख रही हो। उसे अंदर से महसूस हुआ कि यह आदमी बाकी लोगों से अलग है। 'वह ग्यारह साल की है,' उसने कहा।
वह आदमी उसे धक्का देकर आगे बढ़ा और अपना एक विशाल हाथ टाइगर आई के छोटे स्तन पर रख दिया। 'अरे, इसके तो अभी स्तन हैं ही नहीं।' यह कोई फटकार नहीं थी; वह प्रसन्न प्रतीत हो रहा था।
मिशेल उसे देखता रहा। उस आदमी की गुलाबी खोपड़ी सुनहरे घुंघराले बालों के नीचे चमक रही थी। शायद वह कभी ताकतवर आदमी रहा होगा, लेकिन अब उसका पेट पैंट की बेल्ट से बाहर निकला हुआ था। मिशेल को लगा कि वह उसे हरा सकता है।
‘क्या तुम्हारी छोटी बहन कुंवारी है?’
'बिल्कुल।'
टाइगर आई होटल की ओर आगे बढ़ गई, अमेरिकी उसके पीछे-पीछे लड़खड़ाते हुए चल रहा था। होटल के बाहर मिशेल ने टाइगर आई को मिशेलोब बियर की एक बोतल और मैंड्रैक्स की चार गोलियां दीं।

'जब तुम उसे बीयर दो, तो इन्हें पीसकर बोतल में डाल देना,' मिशेल ने फुसफुसाते हुए कहा।
‘ठीक है,’ टाइगर आई ने कहा। वह घबराई हुई लग रही थी।
और शोर मचाना मत भूलना। तुम्हें कुंवारी होना चाहिए।
टाइगर आई ने नाराज़गी से सिर हिलाया। 'मुझे मेरे निजी मामलों में मत बताओ। मुझे पता है क्या करना है। मैं जितनी बार कुंवारी रही हूँ, उतनी बार तुम गिन भी नहीं सकते।'

♦ ♦ ♦

एक घंटे बाद जब टाइगर आई होटल से बाहर निकली तो उसकी कमर पर एक अजीब सा उभार था और उसकी आँखें उत्साह से चमक रही थीं। उसने अमेरिकी का बटुआ अपनी अंडरपैंट के अंदर छिपा रखा था।
वे दोनों एक गली में घुस गए, और टाइगर आई ने अपनी पोशाक ऊपर उठाकर बाहर खींच ली। मिशेल ने उसे उससे छीन लिया। 'यह काम कर गया!' मिशेल ने कहा। उसके दिमाग में कहने के लिए बस यही एक शब्द था।
‘पहले तो वो बीयर नहीं पीना चाहता था, लेकिन मैंने उसे जबरदस्ती पिला दी। मैंने कहा कि ये वियतनामी रिवाज है। फिर उसने अपने कपड़े उतारने शुरू कर दिए।’
टाइगर आई ने मुँह बनाया। ‘उसका पेट व्हेल जैसा था। लेकिन यकीन मानिए, उसका प्राइवेट पार्ट ऐसा था।’ उसने अपनी छोटी उंगली ऊपर उठाई, ‘फिर वो मेरे ऊपर चढ़ गया और मुझे लगा शायद हमने उसे पर्याप्त दवा नहीं दी थी। फिर, आप जानते हैं, वो सो गया। बिल्कुल मेरे ऊपर। मुझे लगा मेरा दम घुट जाएगा।’
जब वह अपनी कहानी सुना रही थी, मिशेल ने अपना बटुआ अपनी गोद में खाली कर दिया। उसमें एक अमेरिकी की एक महिला और दो मुस्कुराती हुई लड़कियों के साथ तस्वीर थी, जिनके लंबे, करीने से कंघी किए हुए भूरे बाल थे। मिशेल ने आश्चर्य से सोचा, वह टाइगर आई से ज़्यादा उम्र का नहीं था। कुछ बिजनेस कार्ड और सैन फ्रांसिस्को के एक प्राइवेट क्लब की सदस्यता भी थी। मिशेल ने उन्हें गली में फेंक दिया।
उसने जेब की ज़िप खोली और उसमें से अमेरिकी डॉलर के नोटों और वियतनामी पियास्त्रों का एक गट्ठा बाहर गिर पड़ा। मिशेल ने उन्हें जल्दी से गिना। 'बावन अमेरिकी

डॉलर और दो हज़ार पियास्त्र,' उसने धीमी आवाज़ में कहा।
टाइगर आई ने मुट्ठियों से ज़मीन पर पटका और खिलखिलाकर हंस पड़ी। मिशेल ने आश्चर्य से अपना सिर हिलाया। आज उसने जीवन से दो महत्वपूर्ण सबक सीखे थे। कामुकता की शक्ति; और अमेरिकी चिकित्सा की शक्ति।

अध्याय 12

भित्तिचित्र पर लिखा था:
केवल राष्ट्रपति डिएम का समर्थन करें... वियत कांग को कोई जानकारी न दें।
दीवार के नीचे, पीले दांतों वाली दो बिल्लियाँ कूड़े के ढेर में खाने के टुकड़ों के लिए आपस में झगड़ रही थीं। थ्री फिंगर ने एक आधी ईंट उठाई और उन पर फेंक दी, जिससे वे चीखती हुई गली में भाग गईं।
उसके बगल में बैठी टाइगर आई ने दिन्ह का सिर अपनी गोद में थाम रखा था। उसके चेहरे पर पसीना चमक रहा था, जिससे टाइगर आई की पोशाक भीग गई थी। बुखार से कराहते हुए वह सिसक रहा था। टाइगर आई उसके बालों को सहला रही थी और धीरे-धीरे आगे-पीछे हिल रही थी।
‘उसका पैर सड़ गया है,’ नो नेम ने कहा। ‘हमें उसे अस्पताल ले जाना चाहिए, है ना?’

मिशेल ने एक लकी स्ट्राइक सिगरेट जलाई और मुंह के एक तरफ से धुआं उड़ाया, जैसा कि उसने कारवेल में कुछ अमेरिकी सैनिकों को करते देखा था। 'क्यों? वह तो वैसे भी मर चुका है।'

टाइगर आई ने कहा, 'शायद वे उसे दवा दे सकते हैं।'

नहीं, वे ऐसा नहीं करेंगे। वे उसे बाकी सब लोगों के साथ कोने में सड़ने के लिए छोड़ देंगे।

हम उसे इस हालत में नहीं छोड़ सकते।

'क्यों नहीं?'

नो नेम ने जमीन पर थूका। 'तू नंबर दस का कमीना है, राउंड आई।'

मिशेल ने कंधे उचकाते हुए कहा, 'मैं अब भी यही कहता हूं कि तुम अपना समय बर्बाद कर रहे हो।'

♦ ♦ ♦

न्ही डोंग चिल्ड्रन हॉस्पिटल सु वान हान रोड पर रेसकोर्स के पास स्थित था। सड़क पर सड़े हुए फलों की दुर्गंध फैली हुई थी और कभी-कभार चलने वाली हवा अपने साथ पास के मछली बाजार की गंध भी ले आती थी।

मिशेल सड़क पर इंतज़ार कर रहा था जबकि बाकी लोग दिन्ह को अस्पताल ले जा रहे थे। उसने खाकी वर्दी पहने एक आदमी को बाहर आते देखा, जिसके हाथ में एक फटी हुई चादर में लिपटा एक छोटा सा बंडल था। काले पजामे पहने एक बूढ़ी वियतनामी महिला गेट पर धैर्यपूर्वक इंतज़ार कर रही थी। उस आदमी ने बंडल उसे दे दिया। जैसे ही उसने उसे लेने के लिए हाथ बढ़ाया, चादर हट गई और मिशेल ने देखा कि वह एक किशोर लड़के का शव था, जिसकी उम्र शायद मिशेल की ही थी।

महिला शव को लेकर बच्चे को गोद में लिए हुए चली गई।

'हो सकता है एक दिन तुम भी ऐसे ही हो जाओ, है ना?'

मिशेल एकदम से घूम गया। वह कोई जाना-पहचाना चेहरा नहीं था।

नहीं, मैं नहीं मरूंगा। जब तक मैं हिसाब बराबर नहीं कर लेता, तब तक नहीं मरूंगा।

‘क्या स्कोर?’

'आप देखेंगे।'

‘तुम पागल हो, गोल आँख वाले। तुम्हारे दिमाग में कुछ गड़बड़ है।’

'शायद।'
क्या आप यह नहीं जानना चाहते कि दिन्ह के साथ क्या हुआ?
'नहीं।'
मिशेल वहां से चला गया। नो नेम उसे देखता रहा। उसने थ्री फिंगर और टाइगर आई की ओर मुड़कर अपनी कनपटी की ओर इशारा किया।
थ्री फिंगर ने कंधे उचका दिए। पागलपन तो था, लेकिन मिशेल अब भी सबसे होशियार और सबसे ताकतवर था। शायद कभी उसकी ज़रूरत पड़ जाए।
वे उसके पीछे-पीछे गली में वापस चले गए।

♦ ♦ ♦

दिन्ह मरा नहीं। कुछ महीनों बाद वह फिर से सड़क पर आ गया, शहर के भीड़-भाड़ वाले भिखारियों में एक और लंगड़ा भिखारी। वह भूख से मर सकता था, लेकिन गिरोह ने अपनी सारी जमा पूंजी इकट्ठा कर ली और आपस में बांट ली। मिशेल भी इस व्यवस्था से सहमत हो गई। इसके अलावा, टाइगर आई उन सभी से ज़्यादा पैसे कमा रही थी, और उसने ज़ोर देकर कहा कि अगर बाकी लोग उसके लिए दलाली करना चाहते हैं और मुनाफ़े में हिस्सा लेना चाहते हैं, तो दिन्ह को भी बराबर हिस्सा मिलना चाहिए।
टाइगर आई अब लगभग चौदह साल की थी, दुबली-पतली, पतली हड्डियों वाली, चावल के कागज़ की तरह नाज़ुक। लेकिन उसका अंडाकार चेहरा बेहद खूबसूरत था; उसकी बड़ी-बड़ी बादाम जैसी भूरी आँखें, शहद जैसी मखमली त्वचा और सीधे सफेद दाँत थे। दूसरी गली की लड़कियाँ जो पैडेड ब्रा और स्टिलेटो हील्स पहनती थीं, वो कभी परवाह नहीं करती थीं। वो जानती थी कि कुछ मर्द जवान लड़कियों को पसंद करते हैं और यौवन आने से पहले ही वो अपनी उम्र के बारे में झूठ बोल रही थी। उसने अपने ग्राहकों को बताया कि वह बारह साल की है।
एक रात मिशेल चोलोन के एटी एट होटल के बगल वाली गली में उसका इंतज़ार कर रही थी। वह अपने एक नियमित ग्राहक, टेक्सास के एक छोटे कद के, उल्लू जैसी आँखों वाले खानपान ठेकेदार के साथ थी। मिशेल बेचैन थी। वह आदमी हमेशा नकदी के साथ-साथ अतिरिक्त उपहार भी लाता था, और वह यह देखने के लिए उत्सुक था कि उन्हें क्या मिला है।

एक घंटे बाद टाइगर आई भारी बेंत की टोकरी लिए गली से नीचे इठलाता हुआ आया।
मिशेल ने उसे उसके कंधे से छीन लिया। 'तुम्हें क्या मिला?'
‘वो पागल कमीना,’ उसने कहा। उसने उसके होंठ पर खून का एक धब्बा देखा। ‘उसने मुझे थप्पड़ मारे, फिर अपने अंडरवियर में फर्श पर रेंगने लगा और मुझसे माफी मांगने लगा। फिर उसने मुझे अमेरिका में अपने बच्चों की तस्वीरें दिखाईं। मैंने उससे कहा - बस बहुत हो गया। मुझे उसके जैसे दसवें नंबर के कमीने की ज़रूरत नहीं है।’
मिशेल सुन नहीं रहा था। उसने टोकरी का सारा सामान ज़मीन पर उलट दिया। उसमें एक दर्जन हर्शे बार, आधा दर्जन लकी स्ट्राइक सिगरेट के पैकेट, सेवन-अप की दो बोतलें और जैक डेनियल्स व्हिस्की की आधी बोतल थी।
‘उसने तुम्हें कितने पैसे दिए?’
टाइगर आई ने अपनी लंबी, सेना द्वारा जारी की गई खाकी टी-शर्ट को, जिसे उसने ड्रेस की तरह पहना हुआ था, ऊपर खींचा, अपने सफेद सूती पैंट के सामने हाथ डाला और नोटों का एक बंडल निकाला। उसने उन्हें मिशेल पर फेंक दिया।
‘यह सब देखो! किसी भी दिन सूजे हुए होंठ से बेहतर है।’
‘चलो वापस चलते हैं। मैं आज रात और कोई धंधा नहीं करना चाहता। कर्फ्यू का समय नजदीक आ रहा होगा।’
मिशेल ने टोकरी में सब कुछ वापस फेंकना शुरू कर दिया। 'यह कैसा है?'
'क्या?'
‘इन लोगों के साथ मजे करना। क्या तुम्हें अच्छा लगता है?’
‘पहले दर्द होता था। अब कुछ महसूस नहीं होता।’ उसने अपना सिर एक तरफ झुकाया। ‘क्या तुमने कभी ऐसा किया है, गोल आँखों वाले?’
मिशेल ने नज़रें फेर लीं। 'ज़रूर। हाँ।'
‘क्या तुम मेरे साथ ऐसा करना चाहते हो?’
उसका मुंह अचानक सूख गया।
‘क्या आप मेरी बहन के साथ संबंध बनाना चाहते हैं, श्रीमान?’ उसने उसकी नकल करते हुए कहा। ‘नंबर वन लड़की। एकदम साफ-सुथरी, कुंवारी।’ उसने उसके हाथ से टोकरी छीन ली और उसे ज़मीन पर गिरा दिया। उसने उसे घुमाया और अपनी पीठ दीवार से सटा ली। ‘अपनी पैंट उतारो।’

मिशेल को तू डो पर कारें और साइकिलें दिखाई दे रही थीं, और उसने सड़क के शोरगुल के बीच एक अमेरिकी की गूंजती हुई आवाज सुनी।
‘हमें कोई नहीं देख सकता,’ टाइगर आई ने उस पर फुफकारते हुए कहा। ‘क्या तुम डरे हुए हो?’
मिशेल ने अपनी शॉर्ट्स नीचे सरका लीं। टाइगर आई की उंगलियों ने उसके लिंग को जकड़ते ही वह सदमे से हांफ उठा।
'तुम कोमल हो।'
उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहे। उसे पता था कि उसे क्या करना चाहिए, लेकिन वह कर नहीं पा रहा था। वह उसे चूमने के लिए आगे बढ़ा, लेकिन टाइगर आई ने अपना चेहरा दूसरी तरफ कर लिया। उसने महसूस किया कि वह उसके लिंग को खींच रही है और मसल रही है। उसे दर्द हुआ।
उसने साइगॉन नदी पर नावों के हॉर्न की आवाज़ सुनी। उसे अचानक गली में कूड़े, केरोसिन और पेशाब की बदबू का एहसास हुआ।
उसने धीरे से अपना हाथ उसके सीने पर रखा, उसकी पसलियों से सटी हुई उसकी उभरी हुई निप्पल को महसूस किया। उसे अपने सीने में जकड़न और कमर में जलन वाला दर्द महसूस हुआ।
‘अब ठीक है,’ टाइगर आई ने फुसफुसाते हुए कहा। उसने अपनी पैंट नीचे सरका ली। ‘तुम्हें मुझे सहारा देना होगा।’
मिशेल ने अपने हाथ उसकी बगलों के नीचे डाले और उसे आसानी से उठा लिया। वह यह देखकर हैरान रह गया कि वह कितनी हल्की थी। टाइगर आई ने अपने पैर उसकी कमर के चारों ओर लपेट लिए और फिर अपने दाहिने हाथ से नीचे झुककर उसे अपने अंदर प्रवेश कराया।
‘धक्का दो। चलो, धक्का दो! धक्का दो!’
क्या यह ठीक है?
‘हां, हां,’ लड़की ने फुसफुसाते हुए कहा। ‘यह अच्छा और छोटा है। अमेरिकी बहुत बड़े हैं। वे मुझे चोट पहुंचाते हैं।’
तुलना से मिशेल को ठेस पहुंची। गुस्से में आकर उसने पूरी ताकत से उसे धक्का देना शुरू कर दिया। इन नई संवेदनाओं से वह हांफने लगा। यह अच्छा लग रहा था।
वह खुद को रू ले लोई के ऊपर एक छोटे से कमरे के बारे में सोचते हुए पाया, जिसमें

एक सख्त लकड़ी का पलंग और एक सिलाई की मेज थी, और खिड़की के नीचे कपड़े के लंबे-लंबे थान रखे थे। उसने अपने पिता की पीठ पर पसीने की गहरी चमक देखी, और अपनी माँ को भी देखा, जिसका चेहरा उसी सुख-दुख से विकृत था, और उसके होंठ एक खामोश चीख में कांप रहे थे।

एड्रिएन।

लेकिन जब उसने अपनी आँखें खोलीं तो वह वह लड़की नहीं थी। वहाँ एक दुबली-पतली वियतनामी लड़की थी, जिसकी आँखें एकाग्रता में आधी बंद थीं, और मिशेल के भीतर ऐसा क्रोध उमड़ उठा जैसा उसने अपने जीवन में कभी महसूस नहीं किया था।

♦ ♦ ♦

नो नेम बेहद खुश था। वह पूरी रात कैफे गिवराल के बाहर मौके की तलाश में घूमता रहा था। उसने एक मोटे अमेरिकी को ट्रॉपिकल सूट पहने एक मेज पर बैठकर मार्टेल ब्रांडी पीते हुए देखा, और हर बार जब वह अपना बटुआ निकालता, तो उसे उसमें अमेरिकी डॉलर और वियतनामी पियास्त्रों के मोटे-मोटे नोट दिखाई देते थे।

जब वह आदमी लड़खड़ाते हुए बाहर निकला तो उसे टक्कर का ज़रा भी एहसास नहीं हुआ क्योंकि नो नेम उससे टकरा गया था। जब वह अपनी टैक्सी की पिछली सीट पर बैठा तब उसे समझ आया कि क्या हुआ था और तब तक नो नेम दो ब्लॉक दूर जा चुका था।

नो नेम अपनी खुशकिस्मती बाँटने के लिए एटी एट होटल की ओर चल पड़ा। वहाँ उसने मिशेल को गली के अंत में टाइगर आई की बेंत की टोकरी कंधे पर रखे खड़ा पाया।

‘गोल आँख वाले! मुझसे पूछो कि मैंने आज रात कितने पैसे कमाए! हैं? पचास अमेरिकी डॉलर और पाँच हज़ार पियास्त्र! हैं?’

मिशेल ने उसकी बात सुनी ही नहीं। वह स्तब्ध सा लग रहा था।

‘हे राउंड आई! तुम ठीक हो? तुमने कुछ गांजा पिया है ना?’

'मैं ठीक हूँ।'

‘टाइगर आई कहाँ है? कहीं कोई चाल तो नहीं चल रही?’

‘टाइगर आई?’

‘तुम्हें क्या हुआ है? अरे, होश में आओ!’

उसे चोट लगी है।
‘चोट लगी? तुम क्या बात कर रहे हो? वो कहाँ है?’
मिशेल ने गली की ओर देखा। नो नेम ने उसे धक्का दिया और खुद उस ओर भाग गया।
‘हे भगवान!’
टाइगर आई दीवार के सहारे बेसुध पड़ा था। अंधेरा था और वह उसका चेहरा नहीं देख पा रहा था। वह झुका और उसे छूने के लिए हाथ बढ़ाया, लेकिन तुरंत ही अपना हाथ ऐसे हटा लिया जैसे उसे किसी ने काट लिया हो।
उसकी उंगलियों पर एक गर्म, चिपचिपा पदार्थ लगा हुआ था।
‘यह उसकी अमेरिकी चाल थी,’ मिशेल ने कहा। ‘वह उसके पीछे होटल से बाहर आया। उसने कहा कि उसने उसके पैसे चुरा लिए हैं। वह बिल्कुल आपा खो बैठा। मैं उसे रोक नहीं सका।’
‘साले नंबर दस गोल आंखों वाले कमीने!’
वह उसे लगातार पीटता रहा।
नो नेम ने उसकी नब्ज़ टटोली, फिर अपना कान उसकी पतली छाती पर रख दिया।
‘क्या हम उसे अस्पताल ले चलें?’ मिशेल ने कहा।
‘इसका क्या फायदा, भला? वो तो मर चुकी है।’
नो नेम खड़ा हो गया। 'तुमने चाकू का इस्तेमाल क्यों नहीं किया?'
मिशेल ने कोई जवाब नहीं दिया। नो नेम ने अपना सिर हिलाया। मिशेल जैसे बड़े बदमाश को अपने पास रखने का क्या फायदा, अगर वो जरूरत पड़ने पर उनकी रक्षा नहीं कर सकता? शायद वो सिर्फ दिखावा कर रहा था। शायद वो सच में कायर था।
‘ठीक है। चलो, उसे छोड़ दो,’ उसने कहा। ‘बाकी हम सबको फिर से हैंडबैग चुराने का काम करना पड़ेगा।’

अध्याय 13

सत्रह साल की उम्र तक आते-आते, दुबला-पतला युवक एक आकर्षक और सुंदर नौजवान बन चुका था। उसकी चाल-ढाल में कामुकता झलकती थी; वह लंबा और सुडौल था, और अच्छे कपड़े पहनता था। सड़क पर उसे देखकर कोई भी यह नहीं कह सकता था कि वह बुई डोई (चीनी मूल का) है। उसका शरीर और चेहरे के हाव-भाव

यूरोपीय थे; उसकी त्वचा और भूरी आँखें एशियाई थीं। गिरगिट की तरह वह आसानी से फ्रांसीसी इलाके के कैफे से लेकर चोलोन की चीनी झुग्गियों तक हर जगह घूम लेता था।

उसे इस बात का एहसास हुआ कि कुछ महिलाएं उसे किस तरह देखती हैं; एक सुबह कारवेल होटल के बाहर, उसने पाया कि उसके पास बैग छीनने और जेब काटने के अलावा भी अन्य प्रतिभाएं हैं।

♦ ♦ ♦

कारवेल नौ मंजिला इमारत थी जो कंक्रीट और कांच से बनी थी। पॉलिश किए हुए पत्थर की सीढ़ियाँ ऊपर एक ऐसे लॉबी तक जाती थीं जो नकली प्राच्य शैली के प्लास्टिक से सुसज्जित थी। यह होटल अमेरिकियों के बीच लोकप्रिय था, जो चौक के ठीक सामने स्थित कॉन्टिनेंटल होटल की पारंपरिक सुविधाओं की तुलना में इसके भव्य आकर्षण को अधिक पसंद करते थे।

उनकी मौजूदगी ने मिशेल और नो नेम को आकर्षित किया। एक दिन मिशेल सड़क के किनारे अपनी वेस्पा पर बैठा सिगरेट पी रहा था और पुलिस से बचने के लिए इधर-उधर देख रहा था, जबकि नो नेम बाहर सड़क पर अमेरिकी सैनिकों को मा थुय बेच रहा था।

उसने देखा कि एक लड़की छत पर अकेली बैठी कॉफी पी रही है। लड़की ने उसकी तरफ देखा और मिशेल ने भी मुस्कुराकर जवाब दिया।

वह शर्म से लाल हो गई और मुंह फेर लिया।

उसकी आंखें गोल थीं; मिशेल ने सोचा, अगर वो कारवेल होटल में ठहरी है, तो शायद वो अमेरिकी होगी। वो सुंदर तो नहीं थी, लेकिन दुबली-पतली थी और उसके घुंघराले काले बाल कमर तक लहरा रहे थे। उसने गुलाबी ब्लाउज और खाकी-हरे रंग की पैंट पहनी थी। मिशेल ने अंदाज़ा लगाया कि वो रिपोर्टर होगी। सभी अमेरिकी रिपोर्टर कम से कम सेना की वर्दी तो पहनते ही थे। यहां तक कि महिलाएं भी।

जैसे ही वह होटल से बाहर निकली, मिशेल ने उसे हाथ हिलाकर अभिवादन किया। 'हाय। क्या आपको लिफ्ट चाहिए?'

उसने उसकी बात अनसुनी कर दी और सड़क पर आगे बढ़ गई। मिशेल ने स्कूटर को स्टैंड पर ही छोड़ दिया और उसके पीछे-पीछे चल दिया।

अरे वाह, सेक्सी!
वह एकदम से मुड़ी, उसका चेहरा लाल हो गया था। 'मैं कुछ भी नहीं खरीदना चाहती।'
मैं नहीं बेच रहा हूँ।
'कृपया दूर जायें।'
‘आप साइगॉन में नए हैं, है ना?’
उसने अपने होंठ काट लिए। 'तो?'
‘कुछ नहीं। तुम डरे हुए लग रहे हो, बस इतना ही। ऐसा लग रहा है जैसे तुम्हें किसी की ज़रूरत है जो तुम्हें आसपास की जगहें दिखा दे।’
क्या तुम मुझे पटाने की कोशिश कर रहे हो?
'शायद।'
लड़की ने अपने चेहरे से बालों की एक लट हटाई। मिशेल ने सोचा, यह एक अच्छा संकेत है। उसने उससे पूछा, 'तुम्हारी उम्र कितनी है?'
‘उन्नीस,’ मिशेल ने झूठ बोला।
‘क्या आपको सेना में नहीं होना चाहिए?’
‘क्यों? मैं वियतनामी नहीं हूँ। मैं फ्रांसीसी हूँ।’
वह मुँह फेरकर बोली, 'मैं सड़क पर पुरुषों को मुझे उठाने नहीं देती।'
'आप कहाँ से पिकअप करवाना चाहते हैं? मैं आपसे वहीं मिलूंगा।'
‘तुम्हारे पास बहुत हिम्मत है।’
वह बस मुस्कुराया।
वह हिचकिचाई। फिर, उसे आश्चर्यचकित करते हुए, उसने कहा: 'कारावेल। ग्यारह बजे।'

♦ ♦ ♦

वह करीब एक घंटा देर से आई। मिशेल कोने में '33' बियर की बोतल लेकर उसका इंतज़ार कर रहा था। वह जाने ही वाला था कि वह अंदर आई, उसका चेहरा लाल था और ब्लाउज के पीछे गीले धब्बे थे।
उसे देखकर वह राहत भरी मुस्कान के साथ बोली, 'मुझे डर था कि तुम इंतजार नहीं करोगे।'
मैं एक खूबसूरत लड़की के लिए हमेशा इंतजार कर सकता हूँ।
उसने इस स्पष्ट धोखे को नजरअंदाज कर दिया। 'मैं अपनी मान्यता प्राप्त कर रही थी।

वे मुझसे कहते हैं कि दूतावास से MACV प्राप्त करने में और भी अधिक समय लगता है। हे भगवान, कितनी गर्मी है!'
मिशेल ने दो और बियर मंगवाईं।
उसने अपने बैग से लकी स्ट्राइक सिगरेट का एक पैकेट निकाला और एक सिगरेट जलाकर अपना सिर पीछे की ओर झुकाया और धुएं का एक लंबा गुबार छत की ओर उड़ा दिया। मिशेल उसे देखता रहा। वह उसकी सोच से थोड़ी बड़ी थी, शायद पच्चीस या छब्बीस साल की। उसकी नाक पर हल्के धब्बे थे और उसकी आंखें भूरी थीं। वह घबराई हुई लग रही थी।
वह दीवार के सहारे पीछे की ओर झुककर आराम से बैठ गया।
उसने कहा, 'मैं तुम्हारा नाम नहीं जानती।'
‘मिशेल।’
‘मेरा नाम सुसान है। सुसान हॉवर्ड।’ उसने उसे एक कसी हुई मुस्कान दी। ‘आपको कैसे पता चला कि मैं अभी-अभी यहाँ आई हूँ?’
मैंने तुमसे कहा था। तुम डरे हुए लग रहे थे। साइगॉन आने पर हर कोई डरा हुआ लगता है। कोई बात नहीं। तुम्हें इसकी आदत हो जाएगी।
'अगर आपको जानना ही है, तो यह मेरी पहली विदेश यात्रा है। मैं इससे पहले कभी अमेरिका से बाहर नहीं गया हूं।'
'कोई बात नहीं। मैं इससे पहले कभी साइगॉन से बाहर नहीं गया।'
‘तो आपका जन्म यहीं हुआ था?’
‘मेरे पिता फ्रांसीसी हैं,’ मिशेल ने झूठ बोला। ‘उनका यहाँ कारोबार है।’
बीयर आ गई।
सुसान ने अपने गिलास से एक लंबा घूंट लिया और अपनी जीभ से अपने ऊपरी होंठ पर जमे झाग को चाट लिया। 'मैं आमतौर पर सड़क पर लड़कों को मुझे उठाने नहीं देती। मुझे यह भी नहीं पता कि मैंने तुमसे बात क्यों की। शायद इसलिए कि मैं अपने घर से बहुत दूर हूँ।'
'शायद।'
इसका मतलब यह नहीं है कि मैं तुम्हें मेरे साथ सोने दूंगी।
'बिल्कुल नहीं। यह बात मेरे दिमाग में कभी आई ही नहीं।'
उसने सोचा, दो और बियर। दो और बियर और मैं उसे ज़मीन पर गिरा दूँगा।

♦ ♦ ♦

मिशेल नहाने के बाद भीगते हुए बाथरूम से बाहर निकला। कमर पर तौलिए के अलावा वह पूरी तरह नग्न था। यह उसका होटल के कमरे में पहला अनुभव था; उसने पहले कभी गर्म पानी वाला बाथरूम नहीं देखा था। वह इस आरामदेह माहौल से अभिभूत था, नंगे पैरों के नीचे मुलायम कालीन का एहसास उसे अद्भुत लगा, और एयर कंडीशनर वाले कमरों की ठंडक उसे अचंभित कर रही थी।

एक दिन, उसने खुद से वादा किया, एक दिन मैं हमेशा इसी तरह रहूंगा; मैं इसी तरह के बड़े होटलों में रहूंगा, नरम चादरों में सोऊंगा और जब चाहूं तब लंबे समय तक स्नान करूंगा और सड़कों पर रहने के बजाय उन पर नजर रखूंगा।

एक दिन।

सुसान पीठ के बल लेटी हुई थी, एक सूती चादर से ढकी हुई। वह बिल्ली की तरह अंगड़ाई ले रही थी। 'जल्दी करो,' उसने धीरे से कहा।

वह बिस्तर के किनारे बैठ गया और हाथ में दवा की बोतल उठाकर बोला, 'यह क्या है?'

'हे भगवान!' उसने उससे वह छीन लिया। 'क्या तुम अलमारी में कुछ ढूंढ रहे थे?'

'बस उत्सुक।'

'ये रंग है, ठीक है?'

'वह किसके लिए है?'

वह उसे घूर रही थी, उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह उसका मज़ाक उड़ा रहा है या नहीं। 'यह मेरे बालों के लिए है। मेरे बाल असल में इस रंग के नहीं हैं। ये नारंगी रंग के हैं और मुझे ये रंग बिल्कुल पसंद नहीं।' वह मुस्कुराई। 'लेकिन तुम ये तो पहले से ही जानते हो।' उसने बोतल को बेडसाइड टेबल पर रख दिया और चादर हट गई। मिशेल की नज़रें उसके शरीर पर टिक गईं।

'कोई बात नहीं,' उसने कहा। 'मैं वास्तव में उन्नीस साल का नहीं हूँ।'

उसने हाथ बढ़ाकर आलस से उसके स्तन को अपने हाथ में थाम लिया, उसका अंगूठा उसके निप्पल की आकृति को सहला रहा था। उसने तौलिया हटाया और आराम से उसके बगल में बिस्तर पर लेट गया।

सुसान सिहर उठी और तकिए पर लेट गई, अपना हाथ उसके हाथ पर रख दिया। 'मुझे

इसका पछतावा मत होने देना,' उसने फुसफुसाते हुए कहा।

♦ ♦ ♦

‘वह मर चुकी है, मिशेल! वह मर चुकी है!’

वे पेट्रस्की स्ट्रीट पर मुख्य बस स्टेशन के बाहर थे। मिशेल ने बाज़ार से एक तरबूज़ चुराया था और एक नीची दीवार पर बैठकर अपनी जेब में रखे चाकू से उसे ध्यान से काट रहा था। उसने एक टुकड़ा खाया और अपने हाथ के पिछले हिस्से से मुँह का रस पोंछा। 'कौन मर गया है?'

‘वो अमेरिकी पत्रकार! वही जिससे आप कल कारवेल के बाहर बात कर रहे थे! उन्होंने उसे उसके कमरे में पाया और—’

'धीमे बोलो। तुम क्या बात कर रहे हो?'

‘वह मर चुकी है, मिशेल! पूरे होटल में पुलिस का तांडव मचा हुआ है। हर कोई इसी बारे में बात कर रहा है। बिस्तर पर ही उसका गला घोंट दिया गया।’

मिशेल ने चाकू से तरबूज का एक और टुकड़ा काट लिया।

'इसलिए?'

‘तो वे तुम्हें ढूंढ रहे हैं, कमीने! साइगॉन में मौजूद हर अमेरिकी पत्रकार ने तुम्हें उसके साथ कारवेल में देखा था। तुम्हारी तो वाट लग गई, मिशेल!’

‘इतना खुश मत दिखो।’

‘तुम्हें उसकी हत्या करने की जरूरत नहीं थी, बेवकूफ!’

उसके पर्स में सौ डॉलर थे। और घड़ी और अंगूठियों की कीमत भी सौ डॉलर थी। मैं क्या करता?

‘बस इन्हें ले जाओ। तुम्हें उसे मारने की ज़रूरत नहीं थी, है ना?’

'मेरा उसे जान से मारने का इरादा नहीं था। वह छटपटा रही थी, इसलिए मैंने उसे शांत करने की कोशिश की।'

हां, उसने संघर्ष किया था, मिशेल को याद आया। उसके हाथों का गला जकड़ने से पहले ही उसने अंदाजा लगा लिया था कि वह क्या करने वाला है, और उसने मुक्कों और नाखूनों से उसका मुकाबला किया था। लेकिन वह उसके लिए बहुत ताकतवर था और अंत में सब कुछ बहुत आसान हो गया था।

उसे याद था कि उसकी गर्दन एक टहनी की तरह टूट गई थी।

उसे अब भी यकीन नहीं था कि उसने ऐसा क्यों किया, लेकिन उसे वो राहत का एहसास याद था। ये सेक्स से भी बेहतर था और इसका सुकून घंटों तक उसके साथ रहा, एक तरह की सम्मोहन जैसी शांति।
उस लड़की के साथ जो हुआ वह दुखद था, लेकिन आखिरकार वह एक चरित्रहीन लड़की ही थी।
'तुम किसी अमेरिकी महिला की उसके कमरे में हत्या करके बच नहीं सकते,' नो नेम ने कहा, 'वे तुम्हें ढूंढने के लिए पूरे शहर को उलट-पुलट कर देंगे।'
'शायद।'
मुझे हमेशा से पता था कि तुम एक खतरनाक इंसान हो। मैंने कभी नहीं सोचा था कि तुम बेवकूफ हो।
‘तुम किसी बूढ़ी औरत की तरह बड़बड़ा रहे हो।’
'अगर आप अपनी जान बचाना चाहते हैं तो बेहतर होगा कि आप साइगॉन से निकल जाएं।'
‘मैं कहीं नहीं जा रहा।’ मिशेल ने तरबूज का एक और टुकड़ा तोड़ लिया। ‘नाश्ता करना चाहोगे?’
नो नेम मुँह फेर लिया। खैर, उसने उसे चेतावनी दे दी थी। अगर वह बेवकूफ पुलिस के आने का इंतज़ार करने वाला था, तो यह उसकी समस्या थी। वह नहीं चाहता था कि पुलिस के आने पर वह वहाँ मौजूद रहे।

♦ ♦ ♦

उसी दोपहर बाद नो नेम ग्राहकों की तलाश में कारवेल के बाहर वापस आ गया। प्रवेश द्वार पर दो सिगरेट बेचने वाली लड़कियाँ आपस में झगड़ रही थीं, दोनों ही उस जगह को अपना बता रही थीं। उसने देखा कि एक छोटे बालों वाला अमेरिकी बाहर निकला, जो जूतों की पॉलिश करने वाले लड़कों, भिखारियों और कैपस्टन सिगरेट और जूसी फ्रूट बेचने वाले विकलांगों के बीच से रास्ता बनाते हुए आगे बढ़ रहा था।
वह उसके बगल में चलने लगा और नाटकीय अंदाज़ में फुसफुसाते हुए बोला, जैसा वह अपनी बात में ज़ोर डालने के लिए करता था। 'अरे, साहब... आप स्मैक खरीदना चाहते हैं, है ना? मेरी बहन के साथ संबंध बनाना चाहते हैं? आप क्या चाहते हैं, साहब?'
वह युवक चलता रहा।

‘अरे महोदय, आप क्या चाहते हैं?’
वह आदमी रुका और मुड़ गया। 'मैं चाहता हूं कि तुम मुझे देखो।'
नो नेम एक कदम पीछे हट गया। यह सब क्या था?
अमेरिकी ने अपना चश्मा उतारा और मुस्कुराया। 'क्या अब भी आपको लगता है कि मुझे साइगॉन से निकल जाना चाहिए?'
‘हे भगवान! गोल आँख!’
मिशेल ने अपने सिर पर उगी छोटी-छोटी दाढ़ी पर हाथ फेरा। 'क्या तुमने मुझे पहचाना नहीं?'
'तुमने कैसे किया ...?'
‘बाल कटवाने से क्या-क्या हो सकता है, ये देखकर मैं दंग रह गया। फिर मैंने धूप का चश्मा और एक कैज़ुअल सूट पहना और सामने वाले बार में जाकर एक बियर मंगवाई। उन बेवकूफों में से किसी ने भी मेरी तरफ देखा तक नहीं। और वे सब आपस में बातें कर रहे थे कि उस कमीने को कैसे पकड़ें जिसने उस लड़की का खून किया। और मैं ठीक उनके बगल में खड़ा था!’
नो नेम ने अपना सिर हिलाया। यह बदलाव अविश्वसनीय था; लेकिन यह सिर्फ बालों और धूप के चश्मे से कहीं बढ़कर था। मिशेल ने अपने शरीर की भाषा, अपने कंधों की बनावट, सिर रखने का तरीका, चलने का तरीका, सब कुछ बदल दिया था। उसने अपने एशियाई खून को ऐसे उतार फेंका था जैसे कोई सांप अपनी केंचुली उतारता है।
‘क्या तुम उसी बार में वापस गए थे?’
मैंने भी उन सबके साथ मिलकर उस कमीने हत्यारे को खूब कोसा। मैंने तो उनमें से एक मोटे बदमाश को ड्रिंक भी पिलाई! अंदाज़ा लगाओ किसके पैसे थे!
‘तुम सचमुच पागल हो।’
‘मैं पागल नहीं हूँ। मैं अदृश्य हूँ। यहाँ एशिया में मैं जो चाहूँ, पूरब हो या पश्चिम, जब चाहूँ, बन सकती हूँ। यह मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है।’
वह हँसा और चला गया, तू डो के किनारे भीड़ में गायब हो गया, सड़क पर भीख मांगने वालों को अनसुना करते हुए जो उसे धक्का दे रहे थे और उसकी कमीज़ खींच रहे थे। नो नेम सिहर उठा। उसे अमेरिकी लड़की की कोई परवाह नहीं थी, लेकिन हत्या एक खतरनाक खेल था। उसके गोल आँखों वाले दोस्त ने दांव बढ़ा दिया था। उसे यकीन नहीं था कि वह यह खेल खेलने का जोखिम उठा सकता है।

भाग तीन

जन्मसिद्ध अधिकार 1967-72

अध्याय 14

अगस्त 1967,

पेरिस
‘श्श्श!’ वैलेंटाइन ने फुसफुसाते हुए कहा और हंसते-हंसते लकड़ी की सीढ़ियों पर धड़ाम से गिर पड़ी।
‘हे भगवान! तुम्हारे पिता हमारी बात सुन लेंगे!’
लड़का नीचे झुका और उसे उठाकर खड़ा कर दिया। अचानक उसकी बाहें उसकी गर्दन में लिपट गईं और उसने अपने होंठों पर उसके गर्म, मीठे होंठों का स्पर्श महसूस किया। उस चुंबन ने उसे झकझोर दिया, और वह कराह उठा क्योंकि उसका पेट कस गया और वह अचानक उत्तेजित होकर उसके लिए तैयार हो गया।
उसने उसे दीवार से धक्का दिया, लेकिन वैलेंटाइना किसी तरह खुद को छुड़ाकर हंसते हुए चरमराती लकड़ी की सीढ़ियों से होते हुए सबसे ऊपरी मंजिल के अपार्टमेंट में चढ़ गई।

'प्रेमी!'

सीढ़ियों में से एक पर एक दरवाजा थोड़ा सा खुला और काले रंग की कमीज पहने एक अधेड़ उम्र की महिला ने बाहर झाँका। उबली हुई पत्तागोभी और सस्ते इत्र की गंध से उसने नाक सिकोड़ी। वह वैलेंटाइन के पीछे-पीछे सीढ़ियों से ऊपर चढ़ गया। स्कूल के मैदान में पी गई साधारण शराब ने उसकी गति धीमी कर दी थी। जब तक वह उसके पास पहुँचा, तब तक वह पहले ही सबसे ऊपरी मंजिल की सीढ़ियों पर पहुँच चुकी थी और अपनी चाबी ढूँढ़ रही थी। उसने वह चाबी उसी दोपहर अपनी माँ के पर्स से चुराई थी।

'प्रेमी!'।

वह मुस्कुराते हुए ऊपर देखने लगी, और वह वहीं खड़ा रहा, उसकी आँखें उससे विनती कर रही थीं, अनाड़ी और हताश, और मुश्किल से सोलह साल का।

वैलेंटाइन ने उसके कंधों पर हाथ रखा और उसे फिर से चूमा। 'मैं तुमसे प्यार करता हूँ,' उसने फुसफुसाते हुए कहा, यह जानते हुए कि उसकी आवाज़ पूरी तरह से मूर्खतापूर्ण लग रही थी।

उसके अपार्टमेंट का दरवाजा खुल गया, जिससे रोशनी सीढ़ियों पर फैल गई। वह चौंककर पीछे हट गया। छल का अड्डा! उसने सोचा।

वैलेंटाइना घूमी और पैर पटकते हुए बोली, 'पिताजी!' उसने उन्हें धक्का देकर सीढ़ियों की ओर धकेल दिया। 'जाओ!' वह फुफकारते हुए बोली, 'चलो!'

वह एक पल के लिए झिझका, फिर भाग निकला। उसने दूसरी मंजिल की सीढ़ियों से एक बार पीछे मुड़कर देखा, लेकिन तब तक वैलेंटाइन और उसके पिता जा चुके थे। उसने अपार्टमेंट का दरवाजा ज़ोर से बंद होने की आवाज़ सुनी।

♦ ♦ ♦

'अभी समय क्या हो रहा है?'

मुझे माफ कर दीजिए, पापा।

‘माफ़ कीजिए!’ उसने नाक सिकोड़ते हुए कहा। ‘तुमने शराब पी रखी है!’

'हाँ।'

जी? बस इतना ही? वह चाहता था - नहीं, उसे उम्मीद थी - कि वह पश्चाताप दिखाएगी। जीन-क्लाउड पिछले दो घंटे से अपार्टमेंट में बेचैनी से इधर-उधर घूम रहा

था। लेकिन उसके चेहरे पर न तो पछतावा था और न ही अपराधबोध। 'वह लड़का कौन था?'
वह मेरे स्कूल में मेरी ही कक्षा में पढ़ता है।
'तुम एक वेश्या की तरह व्यवहार कर रही हो!'
मुझे कभी उस नाम से मत बुलाना!
'यह सच है! आपको क्या लगता है आप क्या कर रहे थे?'
'हम बस किस कर रहे थे! बस इतना ही!'
'तुम तो सिर्फ पंद्रह साल के हो!'
'तो?' उसने चुनौती भरे अंदाज़ में अपनी ठुड्डी ऊपर उठाई। कई मायनों में वह अपनी माँ जैसी थी; वह दिखने में भी वैसी ही थी - या जैसी वह तब दिखती थी जब वह उससे पहली बार मिला था - और अब उसका व्यवहार भी उसकी माँ जैसा ही था।
'तुम मेरी बेटी हो! मैं तुमसे एक सभ्य महिला की तरह व्यवहार करने की उम्मीद करती हूँ!'
यह सब शोर किस बात का है?
जीन-क्लाउड मुड़ा। एड्रिएन अपने बेडरूम के दरवाज़े पर खड़ी थी, उसकी परछाईं बेडसाइड लैंप की रोशनी में धुंधली सी दिख रही थी। नींद से उसके बाल बिखरे हुए थे। वह सौ साल की लग रही थी। 'कुछ नहीं हुआ है। वापस बिस्तर पर जाओ।'
तुम चिल्ला रहे थे।
'बस वापस बिस्तर पर जाओ!'
एड्रिएन ने फिर से शराब पी रखी थी। उसे उसकी गंध आ रही थी। घर में दो शराबी मौजूद थे।
'कोई बात नहीं, माँ,' वैलेंटाइन ने कहा। उसने अपनी माँ का हाथ पकड़ा और उन्हें वापस बेडरूम में ले गई। जीन-क्लाउड ने दरवाजा बंद होते देखा और फिर खिड़की के पास एक ऊँची पीठ वाली कुर्सी पर बैठ गया।
मेरे जीवन को क्या हो गया है? उसने खुद से पूछा। कभी खूबसूरत रही उसकी पत्नी अपना पूरा जीवन शराब की बोतल के साथ अपने कमरे में बंद होकर बिता रही थी, और मोटी और बदसूरत होती जा रही थी। उसे लगता था कि उन्होंने पिछले सात साल का अधिकांश समय क्लीनिक और अस्पतालों में बिताया है, एक के बाद एक डॉक्टर को दिखाते हुए, किसी ऐसे व्यक्ति की तलाश में जो उसके अंदर के बुरे विचारों को दूर

कर सके। लेकिन किसी ने भी कोई फायदा नहीं पहुंचाया।
और जल्द ही उसकी नन्ही परी भी उससे दूर हो जाएगी। अब उसके कई बॉयफ्रेंड बन चुके थे। और वह सिर्फ पंद्रह साल की थी! उसकी बढ़ती कामुकता और उसकी समझदार हरी आँखें उसे डरा देती थीं।
उसकी हर प्यारी चीज़ कड़वी हो गई थी। उसकी शराबी पत्नी अब उससे बेपरवाह थी, और वैलेंटाइना... वैलेंटाइना, उसकी नन्ही परी, उसका सहारा, उसका खजाना, जल्द ही उससे दूर हो जाएगी। वह उसका दिल किसी लड़के के हाथों खो देगा।
वैलेंटाइन बेडरूम से बाहर आई और धीरे से दरवाजा बंद कर दिया। 'पापा? क्या बात है? चिंता मत कीजिए। मुझे माफ़ कर दीजिए। मैं दोबारा ऐसा नहीं करूंगी।' वह उनकी कुर्सी के पास घुटनों के बल बैठ गई।
उसने उसकी ओर हाथ बढ़ाया। वैलेंटाइन उसकी गोद में बैठ गई, और उसकी उंगलियों ने उसके माथे पर झड़ते बालों को सहलाया।
'कोई बात नहीं, पापा। सब ठीक हो जाएगा।'
'तुम एक अच्छी बच्ची हो, वैलेंटाइन,' उसने फुसफुसाते हुए कहा, लेकिन जैसे ही उसने अपनी बेटी की आँखों में देखा – दो गहरे तालाबों जैसी, जिनके बीच हल्की हरी रंगत थी – वह काँप उठा। वह एड्रिएन की बेटी थी, इसमें कोई शक नहीं था। उसकी माँ के जुनून और इच्छाएँ अब उसकी विरासत थीं।
उसने उसके गाल से बालों की एक लट को सहलाया और सोचने लगा कि उसकी सारी प्यारी चीजें कब तक उससे दूर हो जाएंगी।

अध्याय 15

Saigon
मिशेल अपनी होंडा मोटर स्कूटर के हैंडलबार पर झुककर फुटपाथ पर उमड़ी भीड़ पर नज़र गड़ाए खड़ा था। दोपहर का समय था और सड़कें सफेद और नीली वर्दी पहने स्कूली बच्चों, युवा और तरोताज़ा चेहरे वाले एआरवीएन सैनिकों और काले पजामे और शंकु के आकार के भूसे से बने ननला पहने वियतनामी महिलाओं से भरी हुई थीं, जो टोकरियों में आम और अनानास लेकर बाजार जा रही थीं।
मिशेल ने इंजन को तेज किया और इंतजार किया।

नो नेम पीछे वाली सीट पर आगे की ओर झुक गया। 'वहाँ,' उसने फुसफुसाते हुए कहा। मिशेल ने उसकी ओर देखा। एक अधेड़ उम्र की, गोल-मटोल वियतनामी महिला, जो एक लंबी आओ-दाई पहने हुए थी, सड़क के किनारे बने गलियारे में चल रही थी। उसके हाथ पर एक भारी चमड़े का हैंडबैग उछल रहा था।

मिशेल ने अपनी दाहिनी कलाई को झटके से घुमाकर इंजन की रफ्तार बढ़ा दी। फिर वह मोटरसाइकिलों और टैक्सियों के तेज हॉर्नों की परवाह किए बिना, यातायात की भीड़ के बीच से तेजी से निकल गया।

उसने स्कूटर को फुटपाथ के किनारे रोका, उसकी निगाहें उस महिला पर टिकी हुई थीं।

जैसे ही वे तेज़ी से आगे बढ़े, नो नेम ने अपना हाथ आगे बढ़ाया, उसकी उंगलियाँ बैग के पट्टियों को कसकर पकड़े हुए थीं और उसने बैग को महिला के हाथ से छीन लिया। वह चीखी, बैग वापस पकड़ने की कोशिश की, फिर आगे की ओर घुटनों के बल गिर पड़ी।

'जाओ!' नो नेम चिल्लाया। मिशेल ने होंडा को पूरी रफ्तार से दौड़ाया और टैक्सियों और बाइकों की भीड़ के बीच से निकल गया।

मिशेल ने पीछे मुड़कर देखा और गाली दी, तभी उसने देखा कि एक हरे और सफेद रंग की पुलिस जीप एक गली से निकली और एक पुलिसकर्मी बाहर निकला, जिसने अपनी कमर पर लगे होल्स्टर से अपनी सर्विस रिवॉल्वर निकाली।

'धत् तेरे की!'

उसने ट्रैफिक की लाइन को पार करते हुए, एक खराब हालत वाली लैम्बरेटा के ठीक सामने से गाड़ी निकाली, जिससे सवार, उसकी पत्नी और तीन बच्चे सड़क पर गिर गए।

पहले दो गोलियों की आवाज हॉर्न की तेज आवाज में दब गई।

उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि पुलिसवाला भीड़ भरी सड़क पर गोली चला देगा। उसने सोचा, इन लोगों को अब किसी की परवाह नहीं है। कुछ ही दूरी पर फुटपाथ पर एक छोटा लड़का ज़मीन पर गिर पड़ा। एक वियतनामी महिला, शायद उसकी माँ, चीखती हुई दौड़ी और उसकी ओर भागी।

मिशेल गली में इधर-उधर भटकता हुआ जा रहा था, किसी सुरक्षित जगह की तलाश में। तभी उसे एक और गोली चलने की आवाज़ सुनाई दी और उसने महसूस किया कि

नो नेम आगे की ओर झुककर पीछे की सीट से फिसल गया। स्कूटर उसके नीचे असंतुलित हो गया, हैंडल घूम गए। मिशेल ने स्कूटर छोड़ दिया और खुद को उससे दूर फेंक दिया। होंडा स्कूटर एक खाने की दुकान से टकरा गया, जिससे उबलता हुआ सूप और बारबेक्यू की हुई बत्तखें फुटपाथ पर बिखर गईं।

अराजकता।

मिशेल उछलकर खड़ा हुआ और चीखती-चिल्लाती भीड़ के बीच से दौड़ने लगा, अपने बाएं पैर पर ज़ोर देते हुए, अपने मुड़े हुए टखने के दर्द को नज़रअंदाज़ करते हुए।

उसने एक बार पीछे मुड़कर देखा। नो नेम सड़क के बीचोंबीच औंधे मुंह पड़ा था। उसकी सफेद टी-शर्ट के पीछे एक बड़ा लाल धब्बा था।

बहुत बुरा हुआ, मिशेल ने सोचा। लेकिन अच्छा हुआ कि तुम मेरे मुकाबले बच गए।

उसने पुलिस सायरन की आवाज़ सुनी।

वह लंगड़ाते हुए एक गली में घुस गया, घबराए और सहमे चेहरों को अनदेखा करते हुए, और सचिवों, स्कूली बच्चों, भिखारियों, फेरीवालों और व्यापारियों की भीड़ में गुम होने की कोशिश करने लगा। वह तब तक दौड़ता रहा जब तक उसकी सांसें फूलने लगीं और उसकी आंखों के सामने काले धब्बे दिखने लगे। जल्द ही वह साइगॉन के एक ऐसे हिस्से में पहुँच गया जिसे वह खुद भी नहीं जानता था।

लेकिन पुलिस की सीटियां अभी भी बहुत करीब थीं।

उसने ऊपर देखा। उसके सिर के ऊपर हाथ से पेंट किया हुआ एक मोटा-मोटा बोर्ड सुनहरे अक्षरों में लिखा था: द साइगॉन एंड बॉम्बे टेलरिंग कंपनी

मिशेल लड़खड़ाते हुए अंदर घुस गया।

अंदर सन्नाटा था, ठंडक थी और हल्की रोशनी थी। ऊपर एक भारी पीतल का पंखा धीरे-धीरे चल रहा था। दीवार पर एक रेलिंग पर जैकेट और सूट के रैक टंगे थे, जो मोटे लाल मखमली पर्दे के पीछे आंशिक रूप से छिपे हुए थे। काउंटर के पीछे, तेज निगाहों और डेनिम जींस पहने एक आकर्षक युवक चुपचाप आश्चर्य से उसे घूर रहा था। वह चौंक गया, फिर उसे एहसास हुआ कि यह उसकी अपनी परछाई है।

अचानक दुकान के पीछे का पर्दा हटा और एक मोटा, गंजा भारतीय प्रकट हुआ। एक पल के लिए दोनों आदमी एक-दूसरे को घूरते रहे। ग्राहक की उम्मीद में जोगिंदर ने चेहरे पर एक चिकनी मुस्कान ला दी थी। दुकान में इस गुंडे को देखकर उसकी मुस्कान गायब हो गई। उसने कहा, 'क्या चाहिए?'

मिशेल को यह बात पहले ही समझ आ चुकी थी। उसके बहुत सारे बाल झड़ गए थे और वह गुब्बारे की तरह फूल गया था, लेकिन जब कोई नीच आदमी तुम्हारी माँ का तुम्हारे सामने बलात्कार करता है, जब वह तुम्हें सड़क पर छोड़ देता है, तो उसके बारे में कुछ ऐसा होता है जिसे तुम कभी नहीं भूल सकते, वह उसकी आँखों में, उसकी आवाज़ में, उसकी गंध में होता है।

जोगिंदर ने दोहराया, 'तुम क्या चाहते हो? तुम कौन हो?'

मिशेल को पुलिस की सीटियों की आवाज़ दूर होती सुनाई दी। अब सुरक्षित था। वह नहर पार करके वापस जा सकता था और चोलोन शहर की गलियों में गायब हो सकता था।

वह दरवाजे की ओर मुड़ा।

जोगिंदर ने दोहराया, 'मैंने पूछा, तुम क्या चाहते हो? तुम यहाँ क्या कर रहे हो?'

मिशेल ने उसकी ओर मुस्कुराया। उसकी मुस्कान ने दर्जी को अंदर तक झकझोर दिया। उसने उसे व्यंग्यपूर्ण सलाम किया और चला गया। जोगिंदर को लगा कि उसने कुछ ऐसा कहा होगा: 'मैं वापस आऊंगा'। लेकिन वह निश्चित नहीं था।

♦ ♦ ♦

जोगिंदर कृष्णन को खुश होना चाहिए था। उन्होंने अभी-अभी कारवेल में एक अमेरिकी कर्नल को नया सूट पहुंचाया था। कर्नल एक महत्वपूर्ण व्यक्ति थे जिन्होंने अपने सहयोगियों और साथियों को जोगिंदर की सिफारिश करने का वादा किया था। किसी और दिन होता तो वे अपनी इस खुशकिस्मती का जश्न मना रहे होते।

इसके बजाय, जब वह अंधेरी होती साइगॉन की सड़कों से होते हुए अपनी दुकान की ओर वापस जा रहा था, तो उसका मांसल चेहरा चिंता से सिकुड़ा हुआ था।

उसने भिखारियों की फैली हथेलियों को अनसुना कर दिया। वह आमतौर पर अच्छे कर्मों के लिए उन्हें कुछ सिक्के दे देता था। वह सिर झुकाए, पसीने से भीगी अपनी सफेद रेशमी कमीज को समेटे हुए, जल्दी-जल्दी चलता रहा। आज रात उसे पैगोडा से आती जलती हुई अगरबत्ती की सुगंध उतनी अच्छी नहीं लग रही थी जितनी आमतौर पर लगती थी, न ही सड़क किनारे की दुकानों से आती लहसुन और सौंफ की तीखी गंध उसे लुभा रही थी।

हर दिन के अंत में, जैसा कि वह करना पसंद करते थे, उन्होंने अपने जीवन का

जायजा लिया; अब उनके पास तीन दुकानें थीं, दो बॉम्बे में और एक साइगॉन में, न्गो ड्यू के नदी किनारे। उनकी दुकान के ऊपर एक बड़ा छह कमरों का फ्लैट था जिसमें चार नौकर काम करते थे। उनकी वियतनामी पत्नी ने उन्हें चार बेटे दिए थे, और वह अपने दो बड़े बेटों को अपना कारोबार संभालने और जल्दी सेवानिवृत्ति के बाद अपना भरण-पोषण करने के लिए तैयार कर रहे थे।

खाते के डेबिट पक्ष में, बॉम्बे में रहने वाली उनकी दूसरी पत्नी एक झगड़ालू औरत थी, जिसके होंठ पान से सने थे और शरीर दुबला-पतला था। लेकिन उन्होंने अपने मामलों को इस तरह संभाला था कि अब उन्हें हर कुछ वर्षों में एक या दो महीने से ज़्यादा उसके साथ नहीं रहना पड़ता था। उनके पास खाना बनाने और घर की सफाई के लिए एक वियतनामी रखैल थी; वह एक कुशल दर्जी भी साबित हुई थी। वह उनके दो बेटों की देखभाल करती थी और उन तीन वियतनामी नौकरानियों की देखरेख करती थी जिन्हें उन्होंने अब कनिष्ठ दर्जी के रूप में काम पर रखा था।

जब उसका मन उससे ऊब जाता था, तो उसके पास चोलोन की खूबसूरत चीनी वेश्याओं की सेवा लेने के लिए पर्याप्त धन होता था, हालांकि हाल ही में उसकी कामुक इच्छाएं कम हो गई थीं। उसे लगभग हमेशा ही अच्छी भेल पूरी पसंद होती थी। हां, जोगिंदर कृष्णन को खुश होना चाहिए था।

दो दिन पहले उस दोपहर तक तो सब ठीक ही था। लेकिन दुकान में उस हताश दिखने वाले युवक को देखकर उसकी शांति भंग हो गई। उसने खुद को समझाने की कोशिश की कि यह सिर्फ उसकी कल्पना है, लेकिन उस चेहरे में कुछ जाना-पहचाना सा था। मानो वह बीस साल पहले के अपने चेहरे को देख रहा हो।

जर्मनों के पास इसके लिए एक शब्द था। वह क्या था? डोपेलगैंगर। बस यही। लेकिन इस घटना में कुछ भी अलौकिक नहीं था। यह वही हो सकता है। यह वही होना चाहिए।

उसने बहुत समय से इसके बारे में नहीं सोचा था। उसे वह फ्रांसीसी वेश्या एड्रिएन और उसका वह बिगड़ैल बच्चा याद आया, जिसे साई तब ले गया था जब वह अभी भी रू ले लोई के उस तंग घर में रह रहा था। उसे तो बहुत पहले ही मर जाना चाहिए था। वह कैसे बच सकता था? इससे भी ज़्यादा बेतुकी बात क्या थी - अगर वह मुझे पहचान लेता?

वह अपनी दुकान के बगल वाली गली में मुड़ गया। "चिंता करना बंद करो, बूढ़े मूर्ख,"

उसने खुद से कहा। "ज़ाहिर है उसने तुम्हें पहचाना नहीं होगा। भला कैसे पहचान सकता है?"
जब आपने उसे आखिरी बार देखा था तब वह चार साल का था।
चिंता करना बंद करो।
पीछे से किसी ने उसका मुंह अपने हाथ से ढक लिया और उसे ज़मीन पर गिरा दिया। उसे लगा जैसे उसका पेट गीला हो गया हो। उसने गले पर पड़ी बांह से बचने के लिए कमज़ोर कोशिश की, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। जो भी था, वह बहुत ताकतवर था।
अंधेरे में एक तेज धार वाला चाकू चमक उठा। जोगिंदर को अपने ही पेशाब की गर्म धार अपने पैर पर बहती हुई महसूस हुई।
मैं मरने जा रहा हूँ।
हे भगवान, मैं मरने वाला हूँ!
मुझे अभी तुम्हारा गला काट देना चाहिए।
जोगिंदर ने कुछ कहने की कोशिश की, अपने हमलावर से विनती करने की कोशिश की, लेकिन उस हाथ ने उसके जबड़े को कसकर बंद कर दिया।
‘संघर्ष मत करो, इससे तुम्हें कोई लाभ नहीं होगा,’ आवाज ने कहा। ‘हे भगवान, तुम तो चर्बी से भरे बोरे की तरह हो। ऐसा करना मानो किसी व्हेल को खोलना हो।’
उसने अपना हाथ हटा लिया, लेकिन फिर उसकी बांह उसके गले पर लिपट गई और इतनी जोर से दबाई कि उसे लगा जैसे उसकी आंखें बाहर निकल आएंगी। 'कृपया, मुझे चोट मत पहुँचाओ! तुम्हें क्या चाहिए? पैसा? मेरे पास पैसा है! लेकिन कृपया, मुझे मत मारो!'
‘तुम घिनौने हो,’ उस आदमी ने कहा और उसे धक्का देकर मुंह के बल गिरा दिया।
जोगिंदर लुढ़क गया। चाकू की धार उसके चेहरे से कुछ इंच की दूरी पर चमक रही थी।
'मेरी तरफ देखो।'
उसके होठों से थूक की एक बूंद गिरी और उसकी ठुड्डी पर बह गई।
वह उसका हमशक्ल था।
'हां। आप मुझे पहचानते हैं, है ना? आप जानते हैं कि मैं कौन हूं।'
‘आपको जरूर गलतफहमी हुई होगी, मैं किसी को नहीं जानता—’
मिशेल के जूते का अगला हिस्सा उसकी ठुड्डी के ठीक नीचे लगा, जिससे उसकी गर्दन

पीछे की ओर मुड़ गई। जोगिंदर दर्द से कराह उठा और उसके मुंह से खून निकल आया। मिशेल ने बड़ी कुशलता से अपनी जेबें खाली कीं। उसने नोटों का एक मोटा बंडल अपनी जेब में रखा और जोगिंदर का बटुआ वापस गली में फेंक दिया।
मिशेल नीचे झुका। 'पापा, आपकी मदद के लिए धन्यवाद। मैं वापस आऊंगा।'
जोगिंदर को इस बात पर जरा भी संदेह नहीं था।

नवंबर 1967

पेरिस
दरवाजे पर दो सिगरेटें सुलग रही थीं। शाम ढल चुकी थी और स्ट्रीट लैंप जल रहे थे, जिनसे सोडियम लाइट की किरणें फुटपाथ पर पड़ रही थीं। अपार्टमेंट बिल्डिंग के दरवाजे पर दुबकी हुई दोनों लड़कियां उस रोशनी से मानो सिकुड़ रही थीं।
'बैचलर ऑफ राइट्स की पढ़ाई पूरी करने के बाद आप क्या करेंगे?' वैलेंटाइन ने पूछा।
मैडलीन ने धुएं का छल्ला उड़ाया। 'मैं मॉडल बनना चाहती हूं।'
'एक मॉडल? सचमुच?'
मुझे पता है आप क्या सोच रहे हैं। मुझे लगता है आप सही हैं। मेरे पास इसका आंकड़ा नहीं है।
मैं ऐसा नहीं सोच रहा था।
'हम सब तुम्हारी तरह नहीं बन सकते, वैलेंटाइन। तुम एक फिल्म स्टार बन सकते हो।'
'बेवकूफ मत बनो।'
'यह सच है। लड़के तुम्हारे पीछे पागल हो जाते हैं। तो स्कूल के बाद तुम क्या करोगी?'
मुझे नहीं पता, मैंने इसके बारे में सोचा ही नहीं है।
हर कोई इसके बारे में सोचता है। अगर आप कुछ भी कर सकें, जहां चाहें वहां जा सकें तो कैसा होगा?
वैलेंटाइन कांप रहा था। रात हो रही थी। दूर से एफिल टॉवर की चोटी पर लगी बत्तियाँ रात के अंधेरे में लाल रंग से जगमगा रही थीं।
मैं यात्रा करना चाहता हूँ। सिर्फ यूरोप में ही नहीं। भारत और सियाम जैसी विदेशी

जगहों पर भी।'
मैडलीन हंस पड़ी। 'ओह, तुम हिप्पी बनना चाहती हो। अपने बालों में फूल लगाओ।'
नहीं, उस तरह की यात्रा नहीं। मैं बड़े होटलों में ठहरना चाहता हूँ और बड़ी-बड़ी लिमोजिन कारों में घूमना चाहता हूँ।
'पुरुषों के बारे में क्या? क्या आप बहुत सारे प्रेमी रखेंगी?'
वैलेंटाइन ने माथे पर शिकन डाली। 'मुझे बस एक ही आदमी चाहिए। कोई लंबा, सांवला और थोड़ा मनमौजी। कोई खतरनाक और रोमांटिक। बस यही चाहिए।' उसने पत्थर की सीढ़ी पर सिगरेट बुझा दी। 'लेकिन ये तो बस बेतुके सपने हैं। क्या मुझे एक और सिगरेट मिल सकती है?'
उन्होंने कुछ देर चुपचाप धूम्रपान किया, और धुएं के कड़वे स्वाद की तुलना में इस अवैध कृत्य का अधिक आनंद लिया।
'घर पर सब कैसा चल रहा है?' मैडलीन ने पूछा।
'खराब।'
'तुम्हारी माँ?'
वैलेंटाइन ने सिर हिलाया।
ठीक उसी समय, उन्हें सबसे ऊपरी मंजिल के अपार्टमेंट से एक महिला के चीखने की आवाज सुनाई दी।
'फिर से नहीं,' उसने आह भरी। उसकी सिगरेट की नारंगी रोशनी सड़क पर बिखर गई।
'प्रेमी ...'
वह खड़ी हो गई। 'मुझे जाना होगा। कल मिलते हैं। स्कूल में।'

♦ ♦ ♦

एड्रिएन के सारे राक्षस एक जैसे दिखते थे; उनकी आँखें अजीब तरह से बेमेल थीं, और उनकी त्वचा कॉफी के रंग की थी; वे उसके कमरे के कोने में खड़े होकर उसे गालियाँ देते थे, उस पर उन अपराधों का आरोप लगाते थे जिन्हें करने से वह इनकार करती थी। 'तुमने मुझे छोड़ दिया!'
नहीं, मेरा ऐसा करने का इरादा नहीं था!
मैं सड़क पर कुत्ते की तरह भूखा मरता रहा!

मुझे वो नहीं चाहिए था!
‘मैं धीरे-धीरे मरता गया क्योंकि तुम सिर्फ अपने बारे में सोचते थे!’
मुझे लगा कि यही सबसे अच्छा फैसला था!
एड्रिएन ने अपने चेहरे को नोंचते हुए, अपने दिमाग में गूंज रही उस निराकार आवाज को नोंचकर बाहर निकालने की कोशिश की। 'प्लीज... ऐसा मत करो! मुझे अकेला छोड़ दो...'
‘मैं तुम्हें श्राप देता हूँ! मैं तुम्हें कभी चैन से नहीं बैठने दूँगा!’
जब वैलेंटाइन अंदर आया, तो एड्रिएन फर्श पर लेटी हुई थी और फिर से काल्पनिक चीजों पर चिल्ला रही थी। बिस्तर के पास वाली मेज पर शराब की एक खाली बोतल पड़ी थी। कमरे में शराब और बासी इत्र की बदबू फैली हुई थी।
‘मैं ऐसा नहीं चाहता था!’
जीन-क्लाउड उसके बगल में घुटनों के बल बैठ गया और उसे नीचे दबाए रखा। वह लात मारती, छटपटाती और कराहती रही। उसके होंठों पर झाग था।
मुझे वो नहीं चाहिए था!
‘क्या नहीं चाहती थी? तुम क्या नहीं चाहती थी?’ जीन-क्लाउड ने उससे कहा।
एड्रिएन अपने पति को ऐसे घूर रही थी मानो वह कोई अजनबी हो। उसने अपने कूल्हों को झटका दिया और करवट बदलते हुए खुद को उससे छुड़ा लिया। वह किसी जानवर की तरह पेट के बल रेंगते हुए वैलेंटाइन के पास पहुँची। वैलेंटाइन एक कदम पीछे हट गया।
‘कृपया मुझे अकेला छोड़ दो!’ एड्रिएन चिल्लाई।
जीन-क्लाउड ने उसे दोबारा पकड़ने की कोशिश की।
‘पापा, वो क्या कर रही है?’ वैलेंटाइन ने कहा।
जीन-क्लाउड ने मानो उसे पहली बार देखा हो। उसने मुस्कुराने की कोशिश की। ऐसा लग रहा था जैसे वह शर्मिंदा हो। 'सब ठीक है, जान। मैं तुम्हारी माँ का ख्याल रखूँगा। बस एक और बुरा सपना था, बस इतना ही।'
एड्रिएन ने अपने नाखूनों से अपने गालों से मांस के टुकड़े नोच लिए थे। वैलेंटाइन घुटनों के बल बैठ गई और अपनी माँ की कलाई पकड़ ली ताकि वह दोबारा ऐसा न कर सके।
'नहीं, वे चूस रहे हैं!'

जीन-क्लाउड कांपने लगा। फिर भी उसका चेहरा भावहीन था, आधा उदास, आधा मुस्कुराता हुआ। 'वह ठीक है,' उसने कहा। 'चिंता की कोई बात नहीं। वह बिल्कुल ठीक है।'
एड्रिएन ने अपनी पीठ झुकाई और चीख पड़ी, 'कृपया... ऐसा मत करो!'
‘मम्मी? क्या हुआ? क्या परेशानी है? क्या आपको दर्द हो रहा है?’
नहीं! कृपया! कृपया!
‘ममन!’

♦ ♦ ♦

वैलेंटाइन ने मेंटलपीस पर रखी ओरमोलू घड़ी की ओर देखा। लगभग आधी रात हो चुकी थी। जीन-क्लाउड बेडरूम से बाहर आया। उसने कहा, 'सब ठीक है। वह अब सो रही है। डॉक्टर ने उसे जो नींद की दवा दी है, वह असर कर रही है।'
वह एक कुर्सी पर धंस गया। उसका शरीर हार मानकर ढीला पड़ गया।
'उसे क्या समस्या है?'
‘मुझे नहीं पता।’ उसने अपना चेहरा अपने हाथों में छिपा लिया।
हालात और बिगड़ते जा रहे हैं।
वैलेंटाइन उठी और उसकी कुर्सी के आर्मरेस्ट पर बैठ गई, उसने उसे बाहों में भर लिया। वह बहुत दुबला-पतला और नाज़ुक लग रहा था। उसे उस पर तरस आ रहा था। काश वह थोड़ा और मज़बूत होता।
उन्होंने कहा, 'वह ठीक हो जाएगी।'
क्या उसे दोबारा अस्पताल जाना पड़ेगा?
उसने सिर हिलाया। 'मैंने डॉक्टर से कहा कि मैं यहीं उसकी देखभाल कर सकता हूँ।'
वैलेंटाइन गैस की जलती हुई आग की नारंगी रोशनी को निहार रहा था। हवा सरसरा रही थी, खिड़की के शीशे के ढीले टुकड़े खड़खड़ा रहे थे। जीन-क्लाउड ने अपनी आँखें बंद कर लीं और अपना सिर अपनी बेटी की बांह पर टिका दिया।

अध्याय 16

Saigon

लगभग बीस वर्षों तक चले उस युद्ध ने, जो देश के लिए जंगल की तरह ही एक अभिन्न अंग बन गया था, जोगिंदर कृष्णन के जीवन को बहुत कम प्रभावित किया था। वीसी कर चुकाने के बावजूद - साइगॉन के हर व्यापारी को स्थानीय वियत कांग कैडरों को रिश्वत देनी पड़ती थी - उनके कार्यालय के कोने में स्थित तिजोरी में बीस मिलियन पियास्त्र रखे थे। पिछले तीन वर्षों से उन्होंने बॉम्बे पैसे भेजना बंद कर दिया था। उन्हें शक था कि उनका बहनोई उन्हें धोखा दे रहा है, और इसके अलावा, इतनी बड़ी रकम के मामले में उन पर उन्हें भरोसा भी नहीं था। अगली बार जब वे भारत लौटेंगे, तो ये पैसे उनके साथ ही जाएंगे, ताकि वे बैक बे के ऊपर स्थित उस विला को खरीद सकें जिसका उन्होंने हमेशा खुद से वादा किया था।

वह बिस्तर के किनारे नग्न बैठा अपने सपने के बारे में सोच रहा था और पसीने की एक बूँद को अपनी छाती से रिसकर अपने पेट की मोटी सिलवटों में जाते हुए देख रहा था। छोटे से कमरे में उमस भरी गर्मी थी। उसके बगल में लेटी लड़की ने जम्हाई रोकी और उठ बैठी। "बेबी, क्या तुम अब मुझसे सेक्स करना चाहते हो?" उसने टेक्सास के लहजे में कहा। "तुम बामिलम! तुम नंबर पैंतीस!" पैंतीस वियतनामी भाषा में पौरुष का प्रतीक था।

जोगिंदर ने उसे धक्का देकर दूर कर दिया। 'मुझे अकेला छोड़ दो!'

उसने कंधे उचकाए और चरमराती हुई बेडसाइड टेबल से नेल फाइल उठाई। उसने अपने नाखूनों को संवारना शुरू किया।

पतली दीवार के दूसरी ओर एक पलंग चरमरा रहा था, और जोगिंदर सातवीं अमेरिकी घुड़सवार सेना के एक कप्तान की सेवा कर रही किसी अन्य लड़की की नाटकीय आहें सुन रहा था। एक छोटी सी सफेद ठुड्डी वाली छिपकली छत के खुले, खुरदुरे बीमों पर चौकस निगाहों से इधर-उधर दौड़ रही थी।

उसकी नपुंसकता का सारा दोष उस लड़की का था, ज़ाहिर है। आजकल तो वो सचमुच खूबसूरत लड़कियों को अमेरिकियों के लिए बचाकर रखती थीं। अब तो वो लड़कियां च्युइंग गम चबाती थीं, चटख गुलाबी रंग की स्कर्ट पहनती थीं और खूब मेकअप करती थीं। उसे अफ़सोस था कि काश वो कैफे चला गया होता और अखबार पढ़ लिया होता।

वह एड्रिएन के बारे में सोचने लगा। उस समय उसे इरेक्शन में कोई दिक्कत नहीं होती थी। उसने सोचा कि शायद उसे उसके प्रति थोड़ा और दयालु होना चाहिए था। लेकिन

इसका क्या फायदा? अब तक तो वह भी उसकी पत्नी की तरह बूढ़ी और मोटी हो गई होती। इसके अलावा, वह बहुत ज़्यादा अपेक्षाएँ रखती थी। वह उसके साथ एक मज़दूर जैसा व्यवहार करती थी।

खैर, आखिरकार उसने अपना बदला ले ही लिया। उसने सोचा था कि मिशेल द्वारा उसका बटुआ चुराने के बाद वह शायद संतुष्ट हो जाएगा, लेकिन एक रात, जब वह अपने पसंदीदा रेस्तरां में बैठा था, मिशेल फिर से वहाँ आ गया। उसने बड़े आराम से एक कुर्सी खींची और बैठ गया, मानो वह उसका मेहमान हो।

‘हेलो, पिताजी।’ उन्होंने रिफ्लेक्टर वाले धूप के चश्मे और सफेद टी-शर्ट पहनी हुई थी। उन्हें मानना पड़ा कि वे एक आकर्षक युवक थे; जैसा कि वे कभी हुआ करते थे। उन्होंने देखा कि खूबसूरत वियतनामी कैशियर उन्हें कैसे देख रही थी। मैनेजर ने उसे देखा और कान के पीछे हल्के से थप्पड़ मार दिया।

'ऐसा लगता है कि आप मुझे देखकर खुश नहीं हैं,' मिशेल ने कहा।

'मुझ से दूर हो जाओ।'

मिशेल अपनी कुर्सी पर आराम से बैठा था। 'हमारी पिछली मुलाकात के लिए मुझे खेद है, पिताजी। कभी-कभी मेरी भावनाएं मुझ पर हावी हो जाती हैं।'

‘मुझे उस नाम से मत पुकारो! मैं तुम्हारा बाप नहीं हूँ। मैं तुम्हें गिरफ्तार करवा दूँगा!’

मुस्कान पल भर में गायब हो गई और मिशेल मेज के उस पार झुककर, अपनी आवाज को फुसफुसाते हुए बोला, 'मेरी बात सुनो। मैं जानता हूँ कि तुम कौन हो। हम खून के रिश्ते से जुड़े हैं, तुम और मैं। तुम मेरे कर्जदार हो। ओह, तुम मेरे बहुत कर्जदार हो।'

मुझे नहीं पता कि आप किस बारे में बात कर रहे हैं।

'एक लाख पियास्त्र! मेरे लिए तैयार रखो। एक लाख पियास्त्र और तुम मुझे फिर कभी नहीं देख पाओगे।'

मेरे पास उतना पैसा नहीं है—

‘एक लाख पियास्त्र,’ मिशेल ने कहा और जाने के लिए उठ खड़ा हुआ।

जोगिंदर ने कहा, 'मैं एक गरीब आदमी हूँ।' इतनी बड़ी रकम दान करने के ख्याल से ही उन्हें शारीरिक रूप से कमजोरी महसूस होने लगी।

‘बस पैसे तैयार रखना,’ मिशेल ने कहा। ‘मैं तुम्हें एक हफ्ता दूंगा।’ वह चला गया और सड़क पर गायब हो गया, कुछ ही पलों में वह गुयेन वान थिएउ के किनारे एआरवीएन

और अमेरिकी सैनिकों की भीड़ में गुम हो गया।

♦ ♦ ♦

एक हफ्ता बीत गया, कुछ नहीं हुआ। एक महीने बाद उसे उम्मीद होने लगी कि शायद वह उसे भूल चुका है।

फिर एक दिन अचानक मिशेल उसके बगल में 'तू डो' ट्रेन में आ गया। जोगिंदर को लगा जैसे किसी ने उसके कंधों पर हाथ रखा हो। 'क्या तुम्हें मेरी विरासत मिली है?' जोगिंदर मिशेल को तुरंत पहचान नहीं पाया, क्योंकि उसने अपने बाल सुनहरे रंग में रंगवा लिए थे। वह किसी फ्रांसीसी या जर्मन जैसा लग रहा था। वह लड़का गिरगिट की तरह रंग बदल लेता था।

जोगिंदर ने अपनी जेब में हाथ डाला और लगभग दो सप्ताह से अपने साथ हर जगह ले जा रहा मोटा सा लिफाफा निकाला। उसने कहा, 'लो, इसे ले लो और मुझे अकेला छोड़ दो।'

'बस इतना ही? इतना सब कुछ सहने के बाद भी?'

'भगवान के लिए, बस चले जाओ!'

मिशेल ने लिफाफा अपनी लिनेन जैकेट में ठूंस दिया। फिर वह तुरंत गायब हो गया, जितनी जल्दी आया था उतनी ही जल्दी ओझल हो गया। जोगिंदर को बस इस बात की खुशी थी कि आखिरकार सब कुछ खत्म हो गया।

लेकिन यह तो अभी शुरुआत ही थी।

मिशेल बार-बार लौटकर आता और उसका पीछा करता, वह जहाँ भी जाता। उसे हमेशा और ज़्यादा पैसे चाहिए होते थे। जोगिंदर ने पुलिस के पास जाने का सोचा, लेकिन वह जानता था कि पुलिस कुछ नहीं कर सकती - और न ही करेगी। उन्हें बस चोलोन में वियत कांग के कार्यकर्ताओं को ढूंढने की फ़िक्र थी।

फिर भी, मिशेल सतर्क रहता था। वह कभी भी एक ही जगह पर दोबारा नहीं आता था। कभी-कभी जोगिंदर उसे तीन दिन तक नहीं देखता था, कभी-कभी तीन सप्ताह तक। लेकिन वह हमेशा वापस आता था।

वे हमेशा और अधिक पैसे मांगते रहते हैं।

♦ ♦ ♦

जोगिंदर उठ खड़ा हुआ और कपड़े पहनने लगा। उसने उस लड़की को देखा जो अपने

लाल रंग से रंगे नाखूनों को संवारने और उन पर ध्यान देने में मशगूल थी। औरतें। ये तो बस मुसीबत ही होती हैं। एड्रिएन अपनी इस नखरीली बच्ची की देखभाल एक असली माँ की तरह क्यों नहीं कर सकती थी?

खैर, जो हो गया सो हो गया। बीते कल को कुरेदने का कोई फायदा नहीं था। कोई न कोई हल निकालना ही पड़ेगा। वरना मिशेल जल्द ही उससे गोद लेने के कागजात दाखिल करने को कह सकती है।

हाँ, उसने सोचा। बस यही है!

अचानक उसे समझ आ गया कि उसे क्या करना है। यह इतना आसान था कि वह अपनी कमीज़ के बटन लगाते-लगाते बीच में ही रुक गया और ज़ोर से हंस पड़ा। लड़की घबराकर ऊपर देखने लगी।

जोगिंदर को लगा कि उसका अवसाद दूर हो रहा है। उसने ताली बजाई और अपनी कमीज़ के बटन खोलने लगा। उसने पहले ऐसा क्यों नहीं सोचा?

वह चारों हाथों-पैरों के बल बिस्तर पर रेंगता हुआ आगे बढ़ा, उसका विशाल पेट उसके नीचे झूल रहा था। उसका कम से कम एक हिस्सा तो सख्त हो चुका था। 'ठीक है, कुत्ते जैसे चेहरे वाली छोटी चीनी वेश्या,' उसने हिंदी में गालियाँ देते हुए हँसते हुए कहा, 'रत्न ने एक बार फिर अपनी चमक बिखेर दी है।'

♦ ♦ ♦

कुछ देर बाद, जब जोगिंदर दोपहर की तेज धूप में बाहर निकला, तो मिशेल एक साइक्लोपुसे (मोटरसाइकिल टैक्सी) के पीछे उसका इंतजार कर रहा था।

‘क्या मैं आपको लिफ्ट दे सकता हूँ, पिताजी?’

जोगिंदर चौंककर गहरी सांस लेने लगा। 'वाह, शैतान का नाम लिया और शैतान हाज़िर...'

‘क्या आपकी दोपहर सुखद रही?’

जोगिंदर ने मिशेल के बगल में फटी हुई चमड़े की सीट पर अपना भारी-भरकम शरीर आराम से बिठाया। दुबले-पतले वियतनामी ड्राइवर ने पैडल पर पैर रखा और अपने भारी-भरकम सामान को ट्रैफिक के जाम में धकेल दिया।

‘पिताजी, आप मुझे देखकर प्रसन्न नहीं लग रहे हैं।’

‘तुम्हें बस पैसा चाहिए। तुम मुझे कभी बात करने का मौका ही नहीं देते।’

उसकी फीकी मुस्कान गायब हो गई। 'पिता जैसी बातचीत के लिए अब बहुत देर हो चुकी है, है ना?'
मैंने आपके साथ अन्याय किया है। मैं इसे स्वीकार करता हूँ। शायद, अगर आप मुझे एक मौका दें, तो मैं इसकी भरपाई कर सकता हूँ।
मिशेल इतनी ज़ोर से आगे की ओर झुकी कि ड्राइवर को उन्हें फुटपाथ से टकराने से बचाने के लिए हैंडल को बाईं ओर झटका देना पड़ा। 'इसकी भरपाई करो! चार साल के बच्चे को सड़क पर फेंकने की भरपाई करो?'
'यह बहुत पहले की बात है। हर कोई बदलता है। जैसा कि मैंने कहा, मैं इस बात से इनकार नहीं करता कि मैंने आपके साथ गलत किया है।'
बस, वही था; उसकी आँखों में आशा की एक झलक। जोगिंदर ने सोचा, तुम सब झूठे हो।
'तो फिर आप एक लाख पियास्त्रों से शुरुआत कर सकते हैं। शायद इससे आपका अपराधबोध कुछ कम हो जाएगा।'
वे साइगॉन नदी के किनारे फैले यातायात के जाल में फंस गए थे। मोटे पेट वाले बच्चे और दुबली-पतली पसली वाले कुत्ते लकड़ी की झोपड़ियों के बीच कीचड़ भरी गलियों में आपस में लड़ रहे थे। मिशेल ने इशारा करते हुए कहा, 'देखो, यही वो चीज़ है जिसके लिए तुमने मुझे सज़ा दी थी! जब तुम मुर्गे की चर्बी खाकर मोटे हो रहे थे, मैं चोलोन में खाने के टुकड़ों के लिए आवारा कुत्तों से लड़ रहा था! अब तुम्हारी बारी है हिसाब चुकाने की।' मिशेल सड़क पर उतर आया।
जोगिंदर ने उसकी कलाई पकड़ ली। 'रुको! मुझे कुछ कहना है।'
इससे वह थोड़ा हैरान हुआ। उसने कंधे उचकाए और वापस चढ़ गया।
'देखो, मिशेल, जवानी में हर इंसान से गलतियां होती हैं। हममें से कुछ ही लोगों को उन्हें सुधारने का मौका मिलता है। मैं तुमसे माफी नहीं मांग रहा। मैं बस इतना चाहता हूं कि मुझे अपनी गलती का प्रायश्चित करने का मौका मिले।'
'तुम किस बारे में बात कर रहे हो?'
'मैं आपको कुछ हजार पियास्त्र देने से कहीं अधिक कर सकता हूँ। मैं आपको एक नया जीवन दे सकता हूँ।'
'कैसे?'
जोगिंदर ने अपने होंठ चाटे। 'जल्द ही मैं साइगॉन छोड़ रहा हूँ। यहाँ हालात बहुत

खराब हैं। वियत कांग ने सबका जीवन दयनीय बना दिया है। मैं दुकान बंद करके भारत वापस चला जाऊँगा। मेरी बॉम्बे में दो और दुकानें हैं और मेरा परिवार वहीं है, मेरी पत्नी और चार बेटे हैं।' उसने गहरी साँस ली। 'मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे साथ चलो।'

'क्यों?'

मुझे दुकानों को चलाने में मदद करने के लिए एक अतिरिक्त व्यक्ति की ज़रूरत है। तुम जवान हो। मैं तुम्हें सिखा सकता हूँ। मैं हमेशा काम नहीं करना चाहता। तुम मेरे गोद लिए हुए बेटे बनोगे। आखिरकार तुम्हें एक परिवार मिलेगा, एक ऐसी जगह जहाँ तुम रह सको।'

मिशेल ने जर्जर हो चुकी दुकानों, बारों और सड़क किनारे लगे स्टालों, जूते पॉलिश करने वालों और युद्ध में अपंग हो चुके भिखारियों, और हर जगह ARVN और अमेरिकी सैनिकों की हरी वर्दी पर नज़र डाली। एक पल के लिए उसे लगा कि वह बहादुर आदमी रोने वाला है।

'क्या तुम यहाँ से जाना नहीं चाहते, मिशेल?'

मैं तुम पर कैसे भरोसा कर सकता हूँ?

मुझे एक और मौका दीजिए। कृपया।

मिशेल ने साइक्लोपुसे (एक प्रकार की साइकिल) के पीछे से छलांग लगाई, जिससे वह लगभग पलट ही गई। वह सीधे एक वेस्पा के रास्ते में आ गया, जिससे वेस्पा एक टैक्सी से टकरा गई। वेस्पा सवार ने साइकिल को नाले में गिरा दिया और फिर उठकर साइक्लोपुसे चालक और जोगिंदर को गालियां देने लगा।

जब भारतीय दर्जी ने मिशेल को चारों ओर ढूंढा, तो वह वहां से जा चुका था।

खैर, उसने अपनी तरफ से पूरी कोशिश की थी।

अब उसे बस इंतजार करना होगा।

♦ ♦ ♦

लगभग एक सप्ताह बाद एक रात, जोगिंदर अपनी कार्यशाला में बैठा था, तेल का दीपक सुलग रहा था और एक समुद्री अधिकारी के लिए तैयार की जा रही जैकेट की सिलाई कर रहा था। उसने अपने चश्मे को नाक पर ठीक किया और पुरानी सिंगर फुट-पेडल मशीन की बॉबिन को समायोजित किया। तभी दरवाजे पर हल्की सी

दस्तक हुई।
जोगिंदर अपनी मुट्ठियों से अपनी आँखें मलते हुए उठा। 'कौन है?'
कोई जवाब नहीं आया। उसने सोचा, यह वही है। उसने खुद को संभालने के लिए कुछ पल लिए और दरवाजा खोल दिया।
'मिशेल!'
'नमस्ते पिता।'
'तुम्हें पैसे चाहिए?'
नहीं। मैं बॉम्बे जाना चाहता हूँ।
जोगिंदर मुस्कुराया और अपनी बाहें फैला दीं। उसने कहा, 'घर में स्वागत है,' और उसे गले लगा लिया।

♦ ♦ ♦

मैं यहाँ क्यों नहीं रह सकता?
क्योंकि सैनिक तुम्हें ढूंढ लेंगे और तुम्हें सेना में भर्ती कर लिया जाएगा। तुम सड़कों पर उनसे बच सकते हो, लेकिन वे यहाँ कम से कम सप्ताह में एक बार भर्ती से बचने वालों की तलाश में आते हैं।
तो फिर आपका क्या? आप भारत कब लौटेंगे?
'मुझे नहीं पता। एक दिन ज़रूर। लेकिन जब तक अमेरिकी यहाँ हैं, तब तक खूब पैसा कमाया जा सकता है। युद्ध मेरे जैसे लोगों के लिए अच्छा होता है। लेकिन जब यह खत्म हो जाएगा, तो मैं बॉम्बे वापस जाकर रिटायर हो जाऊँगा। मैं अपने परिवार को अपना कारोबार संभालने दूँगा।' उन्होंने आगे बढ़कर मिशेल के हाथ पर थपथपाया। 'देखो, आख़िरकार तुम्हारी भी एक विरासत है।'
वे न्गो ड्यू के पर स्थित दर्जी की दुकान के ऊपर बने ठंडे और बंद दफ्तर में बैठे थे। दफ्तर के सामने एक चीनी सिनेमाघर था। आधे खुले शटर से मिशेल एक हाथ से बने पोस्टर को घूर रहा था, जिसमें बादाम जैसी आंखों वाला एक चीनी व्यक्ति स्टैट्सन टोपी पहने AK-47 से रेड इंडियंस का नरसंहार कर रहा था। पोस्टर के भड़कीले लाल और हरे रंग उसकी आंखों को चुभ रहे थे। उसने वापस जोगिंदर की ओर देखा, जो दो छोटे और टैनिन से सने चीनी मिट्टी के प्यालों में काली चाय डाल रहा था।
जोगिंदर कह रहा था, 'तुम्हारी कोई पहचान नहीं है, कोई कागजात नहीं हैं। कागजात के बिना तुम्हारा इस दुनिया में कोई अस्तित्व नहीं है।'

‘मैं आपका बेटा हूँ। आप मुझे भारतीय पासपोर्ट दिलवा सकते हैं।’
'यह इतना आसान नहीं है। अस्पताल में रिकॉर्ड नहीं रखे जाते। मैं भारतीय दूतावास गया था और उन्होंने जोर देकर कहा कि नागरिकता देने से पहले आपको बारह महीने भारत में बिताने होंगे और एक भाषा सीखनी होगी।'
मुझे समझ नहीं आ रहा। तो मैं बॉम्बे कैसे पहुँचूँगा?
‘चिंता मत करो। मैंने सब कुछ तैयार कर लिया है।’ जोगिंदर ने दराज में हाथ डाला और कुछ कागज़ मेज पर फेंक दिए। ‘मैंने वियतनाम से भारत के लिए सुरक्षित यात्रा का दस्तावेज़ तैयार कर लिया है। आप एसएस सियाम जहाज से यात्रा करें।’
'और तब?'
‘बंबई में एक साल बिताने के बाद तुम्हें अपने कागजात मिल जाएंगे। तुम मेरी तरह भारत के नागरिक बन जाओगे। फिर शायद तुम मेरे साथ यहाँ आकर काम कर सको और जब तक मैं सेवानिवृत्त न हो जाऊं, तब तक कारोबार सीख सको। सबसे ज़रूरी बात यह है कि तुम्हारी एक पहचान होगी।’ जोगिंदर ने पश्चाताप के भाव से अपना हाथ सीने पर रखा। ‘और मैं फिर से चैन से सो पाऊंगा।’
मिशेल ने सोचा, तुम्हें मार डालना कितना आसान होता। उस रात गली में उसने दर्जी का गला काटने की योजना बनाई थी। किसी चीज़ ने उसे रोक लिया था। दया नहीं थी; वह बस उसे और ज़्यादा तड़पाना चाहता था।
बाद में उसे पता चला कि दर्जी अमीर था, उसकी कल्पना से कहीं अधिक अमीर। उसने जोगिंदर के पैसों का इस्तेमाल मुर्गे की लड़ाई और सु वान हान के घुड़दौड़ मैदान में जुआ खेलने की अपनी आदत को पूरा करने के लिए किया था। उसे अब धोखाधड़ी या चोरी करने की ज़रूरत नहीं थी।
उसने सोचा, एक दिन मैं तुम्हारे साथ हमेशा के लिए बस जाऊंगा। फिलहाल तुम मेरे लिए उपयोगी हो।
‘मैं तुमसे बहुत नफरत करता था,’ मिशेल ने कहा।
मैं यह बात समझता हूं, और मैं आपसे अतीत को भूलने के लिए नहीं कह रहा हूं। बस भविष्य के संदर्भ में उसका मूल्यांकन करने के लिए कह रहा हूं।'
‘ठीक है। मैं कब निकलूँ?’
जोगिंदर ने कहा, 'परसों से। उसी दिन से आप अपना नया जीवन शुरू करेंगे।'

गेज रोड, बॉम्बे

मिशेल गंदे, दूधिया चॉकलेट जैसे पानी को घूर रहा था। जैसे-जैसे वे मुख्य भूमि के करीब पहुँच रहे थे, हवा में विशाल शहर की गंध घुलने लगी थी, सड़न और प्रदूषण की दुर्गंध समुद्री हवा के साथ बह रही थी। बॉम्बे नीले क्षितिज के ठीक पार था। सुबह तक उनका जंग लगा मालवाहक जहाज गेटवे की दीवार और तटवर्ती इलाके की जर्जर गॉथिक और औपनिवेशिक इमारतों के नज़ारे के सामने लंगर डाल देगा।

साइगॉन के बंदरगाह से रवाना हुए लगभग दो सप्ताह बीत चुके थे। उस आखिरी शाम वह रेलिंग पर खड़ा था और उसने अपने पिता को भावभीनी विदाई दी थी। सब कुछ अवास्तविक लग रहा था, मानो कोई सपना सच हो गया हो।

जोगिंदर ने उससे कहा, 'मेरा भाई बंबई में तुमसे मिलने आएगा। मैंने उसे पत्र लिखकर तुम्हारे बारे में सब कुछ बता दिया है। वह तुम्हारा अच्छे से ख्याल रखेगा।' दर्जी ने अपनी जेब से एक लिफाफा निकाला और उसे देते हुए कहा, 'ये लो, थोड़े पैसे, ताकि तुम्हारा काम चल जाए।'

अंदर दो हजार पियास्त्र थे।

'मुझे उम्मीद है कि आपके बारे में अच्छी खबरें सुनने को मिलेंगी।' उसने अपना हाथ आगे बढ़ाया।

मिशेल ने उसे ले लिया। वह कोमल था, जैसे किसी स्त्री का। 'मैं तुमसे दोबारा कब मिलूंगा?'

मुझे कितनी बार बताना पड़ेगा? जैसे ही आपको नागरिकता के कागजात मिल जाएंगे, आप जब चाहें तब वापस आ सकते हैं। मुझे उस दिन का बेसब्री से इंतजार है।

'अगर मैं ऐसा नहीं कर पाई... अगर कुछ हो गया तो। मैं चाहती हूं कि तुम मुझे उसका नाम बताओ।'

'किसका नाम?'

'मेरी मां का।'

जोगिंदर की मुस्कान गायब हो गई। 'तुम यह क्यों जानना चाहते हो?'

'बस मुझे बताओ।'

'क्या तुम उस सब को भूल नहीं सकते? बहुत समय हो गया। बस कल के बारे में सोचो।'

मुझे उसका नाम बताओ।

जोगिंदर ने आह भरी: 'एड्रिएन। एड्रिएन क्रिश्चियन।'
'वो किसके जैसी थी?'
जोगिंदर का चेहरा पसीने से चमक रहा था। उसने एक बड़े सफेद रुमाल से पसीना पोंछा। 'मुझे वह याद नहीं आ रही। बीस साल से भी ज्यादा हो गए हैं। उसके लंबे काले बाल थे और वह बहुत सुंदर थी।'
'क्या आपने उससे प्रेम किया?'
‘वह एक शैतान थी। सभी औरतें शैतान होती हैं।’
लेकिन तुमने उससे कभी न कभी प्यार जरूर किया होगा।
'मैं इस बारे में बात नहीं करना चाहता।'
मुझे जानना ही होगा। मैं उसके बारे में सब कुछ जानना चाहता हूँ।
“क्यों? अब इससे आपको क्या फर्क पड़ता है?”
'अतीत ही सब कुछ है। यह हमेशा हमारे साथ रहता है।'
जोगिंदर ने कहा, 'मैं तो सब कुछ भूल ही गया था। मुझे अब जाना चाहिए। नाव जल्द ही रवाना होने वाली है।'
मिशेल ने अपना हाथ अपनी बांह पर रखा। 'वह अब कहाँ है?'
मुझे कैसे पता चलेगा? मैंने उसे फिर कभी नहीं देखा।
आपने कुछ तो सुना ही होगा।
मुझे बस इतना पता है कि वह कुछ महीनों बाद साइगॉन छोड़कर चली गई... जब उसने तुम्हें छोड़ दिया था। अब इसके बारे में भूल जाओ। इससे कोई फायदा नहीं है।
क्या उसने दोबारा शादी कर ली?
मुझे नहीं पता। मुझे ऐसा लगता है।
एक दिन मैं उसे फिर से ढूंढ लूंगा।
'असंभव।'
नहीं, यह असंभव नहीं है। और अगर कोई रास्ता है, तो मैं उसे ढूंढ लूंगा।
और क्या करें?
‘वह मेरी ऋणी है। और वह इसे चुकाएगी, जैसे आप अपना ऋणी मुझे चुका रहे हैं।’
अचानक मिशेल ने अपने पिता के कंधों पर हाथ रखकर उन्हें गले लगा लिया। उसके होंठ बुजुर्ग व्यक्ति के गालों को छू गए। ‘धन्यवाद, पिताजी। आपने मुझे बचा लिया है। आपने मुझे फिर से घर दे दिया है।’

जोगिंदर अचानक दिखाए गए स्नेह से स्तब्ध रह गया। उसने अपनी कमीज का कॉलर ढीला किया। 'मैं वही कर रहा हूँ जो मुझे बहुत पहले कर देना चाहिए था। अलविदा, मिशेल।'

'अलविदा,' मिशेल ने कहा।

एक घंटे बाद एसएस सियाम दक्षिण चीन सागर में निकल गया, और उसकी रोशनी गहरी होती रात में गायब हो गई।

♦ ♦ ♦

मिशेल उनके आने से कुछ ही पल पहले जाग गया। सड़क पर रहते हुए उसने एक ऐसी सहज बुद्धि विकसित कर ली थी जो उसे खतरे, यहाँ तक कि हल्की सी भी आवाज़ से सचेत कर देती थी। वह अपने पलंग पर सीधा बैठ गया और चारों ओर देखने लगा। केबिन में अँधेरा था। छोटी सी खिड़की से उत्तरी तारा चमकीली सफेद रोशनी में एक बारीक बिंदु की तरह दिखाई दे रहा था। मिशेल समझ गया कि कुछ गड़बड़ है। उसने अपने पैर पलंग से नीचे लटकाए और अपने कपड़े ढूँढ़ने लगा। लेकिन इससे पहले कि वह कपड़े पहन पाता, दरवाजा ज़ोर से खुला और उसने महसूस किया कि किसी ने उसका गला पकड़ लिया है। मिशेल ने पीछे से कोहनी मारी, फिर एड़ी से वार किया। अंधेरे में एक आदमी चीख उठा।

लेकिन वे और भी थे, कितने थे यह वह बता नहीं सकता था। उसे ज़मीन पर पटक दिया गया। मिशेल एक जंगली जानवर की तरह बेताब होकर जूझ रहा था, अपने अनदेखे हमलावरों को काट रहा था, नोच रहा था और लात मार रहा था। एक मुक्का उसके चेहरे पर पड़ा, जिससे वह स्तब्ध रह गया।

फिर एक घुटने ने उसके कमर पर ज़ोरदार प्रहार किया और वह चीख उठा। आगे के वारों से बचने के लिए वह केबिन के फर्श पर सिकुड़कर गेंद की तरह लेट गया। हमलावरों में से एक उसकी पीठ पर घुटने टेककर बैठ गया और उसके हाथों को पीछे की ओर खींच लिया, जिससे उसे अपनी कलाई पर एक पतली रस्सी चुभती हुई महसूस हुई। किसी दूसरे ने उसके बालों का एक गुच्छा पकड़ा और उसके सिर को धातु के डेक पर बार-बार तब तक पटका जब तक वह बेहोश नहीं हो गया।

जब उसने अपनी आँखें खोलीं तो खुद को गोदाम में पड़ा पाया, जो इतना छोटा था कि पैर फैलाना भी मुश्किल था। एक दीवार जहाज के ढांचे की तरह घुमावदार थी, और फर्श पर गंदा तेल लगा पानी फैला हुआ था। वहाँ कोई खिड़की नहीं थी, इसलिए

उसने अनुमान लगाया कि वह पानी की सतह के नीचे कहीं था।
उसके हाथ पीछे बंधे हुए थे, और ज़रा सी भी हरकत से उसके कंधों और कलाई में तेज़ दर्द होने लगता था। मिशेल ने जहाज़ के निचले हिस्से में खांसकर बैठने की कोशिश की। वह ऐसा नहीं कर सका। उसने अपने शरीर को जंग लगे पानी में डूबने दिया।
उसने सोचने की कोशिश की, इस बुरे सपने को समझने की कोशिश की।
आखिर हुआ क्या था? उसके पास वैध टिकट था। कप्तान ज़रूर इसमें शामिल होगा। लेकिन वह क्या चाहता था? वह मिशेल के बैग में मौजूद दो हज़ार पियास्त्रों के लिए ऐसा नहीं करेगा।
फिलहाल वह कुछ नहीं कर सकता था। उसने अपनी शक्ति बचाई और इंतजार किया।

♦ ♦ ♦

भारत में जनवरी शुष्क मौसम का महीना होता है। मुंबई के आसपास मध्य मानसून की तुलना में मौसम थोड़ा ही ठंडा होता है, तापमान दिन-प्रतिदिन 80 डिग्री के आसपास बना रहता है। दोपहर ढलते-ढलते सूरज की गर्मी से हवा में मौजूद सारी ऑक्सीजन खत्म हो जाती है। ऐसा लगता है मानो आप किसी प्रेशर कुकर के अंदर रह रहे हों।
जब आखिरकार वे मिशेल को गोदाम से बाहर खींच लाए, तो डेक के नीचे का तापमान लगभग एक सौ दस डिग्री तक पहुँच चुका था। वह पहले से ही पानी की कमी से जूझ रहा था, और उसकी जीभ मुंह में एक कुचले हुए बेर की तरह सूज गई थी। उन्होंने उसे कप्तान के केबिन में फर्श पर फेंक दिया और एक तरफ खड़े हो गए।
कैप्टन परवित चरनकोर्न ने उस युवक को गौर से देखा और अपने मन में उठ रहे पछतावे को दबा लिया। वह साइगॉन और बॉम्बे के बीच इस खस्ताहाल जहाज को चलाने के लिए महीने में तीस डॉलर कमाता था और बैंकॉक में उसकी पत्नी और नौ बच्चे थे। जब भारतीय दर्जी ने उसके सामने मुट्ठी भर रुपये लहराए, तो वह मना कैसे कर सकता था?
फिर भी, वह स्वभाव से क्रूर व्यक्ति नहीं था, और उसे किसी दूसरे को कष्ट में देखकर खुशी नहीं होती थी। उसने मिशेल को जहाज के निचले हिस्से से ऊपर खींचने वाले एक नाविक की ओर मुड़कर कहा, 'इसे थोड़ा पानी दो।'

वह आदमी बाहर गया और कुछ देर बाद एक धातु का प्याला लेकर लौटा। उसने मिशेल का सिर पीछे की ओर पकड़ा और पानी उसके मुंह में डाल दिया। पानी गले से नीचे उतरते ही उसे खांसी और छींक आई, लेकिन इससे उसे थोड़ी राहत मिली।

♦ ♦ ♦

मिशेल ने कैप्टन परविट के भावहीन चेहरे की ओर देखा। ऐसा लग रहा था मानो वह चेहरा उसके सिर के ऊपर हवा में तैर रहा हो, गोल सेब जैसे गाल चमकीले कांसे के रंग के थे। मिशेल ने बोलने की कोशिश की, लेकिन शब्द उसके मुंह से नहीं निकले।
'तुम छिपकर यात्रा कर रहे हो,' कैप्टन परविट ने टूटी-फूटी अंग्रेजी में धीरे-धीरे कहा।
मिशेल ने हताशा में अपना सिर हिलाया। उसने उन तीनों नाविकों को पहचान लिया था जिन्होंने उसके साथ ऐसा किया था। उसने उन्हें यात्रा के हर दिन देखा था। उसने कप्तान को शायद केवल दो बार देखा था, लेकिन कप्तान ने उसे निश्चित रूप से देखा था। वे जानते थे कि वह छिपकर यात्रा करने वाला यात्री नहीं था।
शायद उसे बुखार हो गया था। पल भर में वह जाग जाएगा और यह भयानक सपना खत्म हो जाएगा।
'तुम छिपकर यात्रा कर रहे हो,' कैप्टन परविट ने दोहराया।
'नहीं,' मिशेल ने लड़खड़ाती आवाज़ में कहा। 'मेरे... मेरे पिता। उन्होंने... साइगॉन में... मेरे टिकटों का भुगतान किया था।'
'आपके पिता का नाम क्या है?'
'कृष्णन... जोगिंदर कृष्णन,' मिशेल ने कहा। उसका सिर दर्द कर रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे वह फट रहा हो।
'मैं इस नाम के किसी व्यक्ति को नहीं जानता। आपके कागजात कहाँ हैं?'
'मेरे केबिन में...'
'तुम्हारे पास केबिन नहीं है। तुम छिपकर यात्रा कर रहे हो।'
'लेकिन मेरे पिता...' मिशेल ने कहना शुरू किया और रुक गया। उस पल उसे सब कुछ एकदम स्पष्ट रूप से दिखाई दिया।
'तुम छिपकर यात्रा कर रहे हो,' कैप्टन परवित ने दोहराया। 'मुझे तुम्हें बंबई के अधिकारियों के हवाले करना होगा। क्या तुम समझते हो?'
'मेरे पिता ने आपको कितना भुगतान किया?'
'मुझे नहीं पता कि आप किस बारे में बात कर रहे हैं। उसे ऊपर ले जाओ। पुलिस की

गाड़ी किसी भी क्षण निकलने वाली है।'
मिशेल उसकी ओर दौड़ा, या दौड़ाता अगर उसके शरीर में अभी भी ताकत होती। लेकिन उसके सामने वह थाई कप्तान नहीं था जिसकी उसने कल्पना की थी, बल्कि वह दर्जी था। वह अपने दांतों से उसका गला नोच लेना चाहता था। लेकिन इससे पहले कि वह कप्तान तक पहुँच पाता, नाविकों ने उसे आसानी से पकड़ लिया और तब तक लात मारी जब तक वह बेसुध होकर गिर नहीं गया।
चेहरा पीला पड़ चुका और कांपता हुआ कैप्टन परवित अपने पैरों पर खड़ा हुआ। उसने कहा, 'इसे ले जाओ। जल्दी। यह पागल है।'

♦ ♦ ♦

मिशेल ने बॉम्बे बंदरगाह की जेल को पहली बार देखने से बहुत पहले ही उसकी गंध महसूस कर ली थी।
उसे तीन अन्य भारतीयों के साथ हथकड़ी लगाकर जेल वैन के पीछे बिठा दिया गया था। पीछे की खिड़की की जाली से वह वाहनों की भीड़ को देख रहा था जो हॉर्न बजाते और धक्का-मुक्की करते हुए आगे बढ़ रहे थे; बैलगाड़ियाँ, बसें, साइकिल सवार, ट्रक और खस्ताहाल हाथगाड़ियाँ गुब्बारे बेचने वालों की चीखों और साधुओं के मंत्रों के बीच प्रतिस्पर्धा कर रही थीं।
इन सबके ऊपर सड़न और बासी पेशाब की दुर्गंध छाई हुई थी।
उसके बगल में खड़े आदमी ने उसे कोहनी मारी। 'यही तो जेल है,' उसने मुस्कुराते हुए कहा, और अपने दांतों के बचे हुए भूरे ठूंठ दिखाई दिए।
'हाय भगवान्।'
'आपने क्या किया?'
‘कुछ नहीं,’ मिशेल ने कहा। ‘मेरे पिता...’ वह रुक गया, विश्वासघात की कहानी सुनाने के लिए अभी भी बहुत दुखी था। ‘मेरे पास कोई कागजात नहीं हैं।’
भारतीय ने नोट गिनने के हावभाव में अपनी उंगलियों को आपस में रगड़ा। 'तुम्हारे पास पैसे हैं?'
मेरे पास दो हजार पियास्त्र हैं।
‘पियास्त्र? ये क्या होते हैं?’
‘यह वियतनामी मुद्रा है।’
दूसरे आदमी ने हंसते हुए बाकी लोगों की ओर रुख किया और हिंदी में कुछ कहा। वे

भी हंस पड़े।
'बहुत ही हास्यास्पद है?'
‘पैसे रख लो। ये बहुत काम आएंगे। शायद आग जलाने के लिए!’ वह फिर हँसा; उसकी बातों से मिशेल चिढ़ने लगा था। ‘अगर तुम्हारे पास रुपये या अमेरिकी मुद्रा नहीं है, तो समझो तुम्हारे पास कुछ भी नहीं है।’
गुस्से में आकर मिशेल ने वैन के किनारे पर लात मारी। 'वह कमीना! जब मैं उसे पकड़ूंगा, तो उसका जिगर निकाल कर उसके गले में ठूंस दूंगा!'
‘अगर तुम बाहर निकल जाओ, मेरे दोस्त,’ उस आदमी ने धीमी आवाज़ में कहा।
‘अगर का क्या मतलब है? मैं तो बस एक छिपकर यात्रा करने वाला यात्री हूँ। वे मुझे वापस वियतनाम भेज देंगे, है ना?’
'पहले आपको मुकदमे के लिए पेश किया जाना चाहिए।'
'क्या?'
उसने कहा, 'तुम्हें किसी का खून कर देना चाहिए था। जैसा मैंने किया। तुम्हारे लिए यह आसान होता।'
'तुम किस बारे में बात कर रहे हो?'
'दोस्त, दुनिया पर आखिरी नजर डाल लो।'
‘वे मुझे कितना समय देंगे?’
'छह महीने। लेकिन समस्या यह नहीं है। जैसा कि मैंने कहा, पहले आपको अदालत तक पहुंचना होगा।'
'इसलिए?'
‘तुम्हें समझ नहीं आ रहा। अदालत तक पहुँचने के लिए वकील की ज़रूरत होती है। वकीलों को पैसे देने पड़ते हैं। भारत में बिना वकील के न्याय के लिए बहुत लंबा इंतज़ार करना पड़ सकता है। शायद तुम जेल में ही सड़ कर मर जाओ। बहुत से लोग मरते हैं। भला किसे परवाह होगी?’
वह सही था। भला किसे परवाह होगी? किसी को नहीं।
किसी को भी नहीं।

अध्याय 17

बॉम्बे बंदरगाह जेल

सरसों के रंग की मिट्टी की दीवारें, घिनौनी दुर्भावना से बैठे गिद्ध, अपने चिकने काले पंखों को संवारते हुए और सूअर के मांस जैसे गुलाबी रंग की गर्दनें नीचे लड़खड़ाते और दयनीय इंसानों को घूरते हुए। झुलसी हुई हवा में धूल का गुबार छाया हुआ था। औरतें मध्ययुगीन लकड़ी के फाटकों के आसपास जमा थीं, करी, उबले चावल और सूखे मेवों से भरे बर्तन पकड़े हुए, जबकि पहरेदार, अपनी मैली-कुचैली भूरी वर्दी में, चुपचाप, दाढ़ी वाले, भावहीन होकर देख रहे थे।

एंड्रयू रोसेन पश्चिमी भाग में मिट्टी की झोपड़ी के बाहर छाया में बैठा दीवार पर पहरेदार के कदमों की आहट सुन रहा था। उसके कंधे पर सुनहरे, पतले बाल लहरा रहे थे, और उसकी छोटी दाढ़ी उसकी जवानी को छुपाने के बजाय और भी निखार रही थी। वह पीला और दुबला-पतला था; उसने जो गंदी, कढ़ाईदार कमीज़ पहनी थी, वह काबुल के किसी बाज़ार से खरीदी गई थी।

उसे बॉम्बे की जेल में सात महीने हो चुके थे, जब उसे सड़क पर एक पुलिस मुखबिर, टेढ़े-मेढ़े दांतों वाले भारतीय लड़के से हशीश खरीदते हुए गिरफ्तार किया गया था। उसने सैन फ्रांसिस्को में अपने पिता को एक ज़रूरी टेलीग्राम भेजा था।

इस बार उसके पिता ने उसे जमानत पर छुड़ाने से इनकार कर दिया था।

जैक रोसेन चाहते थे कि उनका बेटा पारिवारिक व्यवसाय संभाले और रोसेन मरीन की तीसरी पीढ़ी बने। लेकिन एंडी ने अपने बाल बढ़ा लिए, हाई स्कूल छोड़ दिया और दिन-रात रोलिंग स्टोन्स और बीटल्स के गाने सुनता रहता था। एक रात, सीनियर रोसेन ने अपने आलसी बेटे को घर से बाहर जाने को कहा। शायद उनका इरादा ऐसा नहीं था, लेकिन दो दिन बाद युवा एंडी घर से गायब हो गया। बहुत लंबे समय बाद यह पहली बार था जब उसने अपने पिता के किसी आदेश का पालन किया था।

जैक को अपने बेटे से तब तक कोई खबर नहीं मिली जब तक उसे पार्थेनन की तस्वीर वाला एक पोस्टकार्ड नहीं मिला। पोस्टकार्ड के पीछे एक शब्द लिखा हुआ था: 'एथेंस'।

दो सप्ताह बाद एंडी ने फिर लिखा। वह इस्तांबुल की जेल में था। उसे पैसों की जरूरत थी।

तेहरान और काबुल में, रोसेन ने दो बार अपने बिगड़े हुए बेटे को मुसीबत से बचाया था। हर बार उसने एंडी से लिखित वादा लिया था कि वह बाकी पैसे से अमेरिका

वापस जाने के लिए हवाई टिकट खरीदेगा। लेकिन एंडी एशिया भर में गांजे की तस्करी के रास्ते पर आगे बढ़ता रहा।
इस बार उसने अपने बेटे को सबक सिखाने का फैसला कर लिया था।
एंडी ने शांति से अपनी सजा स्वीकार कर ली थी। वह जानता था कि अंततः, जब उसके पिता को लगेगा कि उसने उचित प्रायश्चित कर लिया है, तो वे उसे रिहा कर देंगे।
वह हमेशा ऐसा ही करता था।
अब वह उत्सुकता से देख रहा था कि खाकी वर्दी पहने दो सैनिकों की सुरक्षा में नए कैदी को परिसर के पार ले जाया जा रहा है। वह लंबा था, उसके कंधे तक सुनहरे बाल थे - हालांकि जड़ों में काले रंग के - और उसकी भूरी आँखें थीं जो बालों से मेल नहीं खाती थीं। उसके कपड़े - एक पश्चिमी शैली की टी-शर्ट और नीली डेनिम जींस - फटे-पुराने और गंदे थे, लेकिन उन्हें पहने हुए व्यक्ति में एक पैंथर जैसी शान थी। उसने अपने नए परिवेश को घमंडी शांति से देखा।
जब दोनों गार्डों ने उसे तवे जैसी सख्त ज़मीन पर पटक दिया, तब भी वह अविचलित प्रतीत हुआ। वह फुर्ती से उठा और अपने गंदे और पसीने से लथपथ कपड़ों को ऐसे झाड़ा जैसे अपने टक्सीडो से थोड़ी धूल झाड़ रहा हो।
'बॉम्बे हिल्टन में आपका स्वागत है,' एंडी ने कहा।
'धन्यवाद। मैं ज्यादा देर नहीं रुकूंगा।'
उस युवक ने हंसते हुए कहा, 'एंडी रोसेन।' उसने अपना पीला, दुबला-पतला हाथ आगे बढ़ाया।
‘मिशेल।’ मिशेल ने पहली बार उस उपनाम का इस्तेमाल किया जिसे उसने महज दो हफ्ते पहले खोजा था। ‘मिशेल क्रिश्चियन।’
‘क्या आप फ्रांसीसी हैं?’
‘मेरी माँ थी।’ मिशेल ने पट्टियों में लिपटे सिख गार्ड की ओर देखा, जो उनके ऊपर पाँच मीटर ऊँची दीवार पर गश्त लगा रहा था, उसके कंधे पर एक पुरानी एनफील्ड कार्बाइन टंगी हुई थी। ‘यहाँ से निकलने का सबसे अच्छा रास्ता क्या है?’
एंडी ने उसकी निगाह का पीछा करते हुए दीवार पर देखा। 'क्या तुम्हें लगता है कि तुम इतनी ऊंची छलांग लगा सकते हो?'
‘और भी तरीके हैं,’ मिशेल ने कहा।

'ज़रूर। तुम पैसे देकर बच सकते हो। या मर सकते हो। आखिर इसमें तुम्हारा क्या कसूर है?'
वे कहते हैं कि मैं छिपकर यात्रा कर रहा हूँ।
‘यह तो बुरा नहीं है। तुम्हारे पास पैसे हैं?’
'पर्याप्त नहीं।'
‘तो फिर तुम्हें कुछ तो लाना ही होगा। तुम्हारा परिवार कहाँ है?’
मेरा कोई परिवार नहीं है।
‘कोई न कोई तो होगा ही। हर किसी का परिवार होता है।’
नहीं। मेरा कोई नहीं है।
‘तो फिर तो तुम मरे हुए आदमी हो, दोस्त।’
मिशेल मानो सुन ही नहीं रहा था। वह झोपड़ी और जेल की दीवार के बीच की दूरी नाप रहा था। उसे ठीक दूसरी तरफ बाजार में व्यापारियों के मोलभाव करने की आवाज सुनाई दे रही थी।
दीवार कितनी दूर है?
'किसे पड़ी है?'
'यह बीस मीटर से अधिक नहीं हो सकता।'
‘उस दीवार के पास कहीं भी जाओगे तो वे तुम्हें कुत्ते की तरह गोली मार देंगे।’
'नहीं, वे नहीं देखेंगे, क्योंकि वे मुझे नहीं देखेंगे।'
‘क्यों? क्या तुम खुद को अदृश्य करने जा रहे हो?’
‘नहीं,’ मिशेल ने कहा। ‘मैं एक सुरंग खोदने जा रहा हूँ।’

♦ ♦ ♦

उस झोपड़ी में दो कैदी एक साथ रहते थे; एक अमेरिकी और एक फ्रांसीसी-कनाडाई। जब बीटल्स ने अमेरिकी बिलबोर्ड चार्ट पर पहले पांच स्थान हासिल किए और अमेरिकी कांग्रेस ने गल्फ ऑफ टोनकिन प्रस्ताव पारित किया, तब फ्रीक यूसीएलए में प्रथम वर्ष का छात्र था। इसके तुरंत बाद, उसने एसिड और रोलिंग स्टोन्स का सेवन शुरू किया, अपने बाल बढ़ाए, कॉलेज छोड़ दिया और हाइट-ऐशबरी में रहने चला गया। 1965 में उसे अमेरिकी सेना में भर्ती कर लिया गया। 1966 में दा नांग के ठीक उत्तर में उसकी दाहिनी कोहनी के नीचे का हाथ कट गया।

उसे तेज़ अफ़ग़ान हशीश की लत लग गई थी, जिसे वह गार्डों को रिश्वत देकर अपनी कोठरी में मंगवाता था। ज़्यादातर दिन वह एक अजीब से नशे में डूबा रहता था और अपनी दाढ़ी में अस्पष्ट बड़बड़ाता रहता था।

फ्रांसीसी-कनाडाई मूल के इस शख्स को बेलमोंडो के नाम से जाना जाता था। उनका असली नाम सर्ज डुवाल था, लेकिन फ्रांसीसी अभिनेता से मिलती-जुलती शक्ल के कारण उन्हें यह उपनाम मिला था। उनका दावा था कि क्यूबेक में उनका एक दो मंजिला मकान है और वे किसी तरह अपने पहनावे में शालीनता का दिखावा करते थे। हालांकि, यह दिखावटी व्यक्तित्व का भ्रम था, क्योंकि उनकी रेशमी कमीज दोनों बाजूओं के नीचे से फटी हुई थी और उनकी क्रीम रंग की सूती पैंट पर धूल के धब्बे लगे थे और जगह-जगह से पैबंद लगे थे।

उन्हें धोखाधड़ी के आरोप में भारतीय पुलिस ने गिरफ्तार किया था। बॉम्बे हवाई अड्डे पर जब पुलिस ने उनका सामान खोला तो उसमें तेईस पासपोर्ट मिले।

जब मिशेल ने उसे अपनी योजना के बारे में बताया तो वह तिरस्कारपूर्ण लहजे में बोला, 'बेवकूफ!' उसने फ्रेंच में कहा, 'यहाँ की ज़मीन... देखो! यह तो एकदम सख्त हो गई है!' उसने अपनी बात पर ज़ोर देने के लिए ज़मीन पर हाथ पटका। 'तुम तो मानो अपने नाखूनों से ठोस चट्टान खोदने की कोशिश कर रहे हो!'

‘मैंने आपसे यह नहीं पूछा कि क्या आपको लगता है कि यह संभव है,’ मिशेल ने शांत भाव से कहा। ‘मैंने सिर्फ यह पूछा कि क्या आप मदद करना चाहते हैं।’

'नहीं! मैंने यहां से निकलने के लिए एक वकील को रिश्वत दी है। इस तरह की पागलपन भरी बात पर सब कुछ दांव पर क्यों लगाना?'

मिशेल ने फ्रीक की ओर देखा, जो कोने में धीरे-धीरे अपनी एड़ियों पर झूल रहा था। मिशेल ने अंग्रेजी में कहा: 'मैं झोपड़ी के कोने से दीवार के नीचे से होते हुए बाजार तक एक सुरंग खोदने जा रहा हूँ। क्या तुम समझते हो?'

फ्रीक खिलखिलाकर हँसा और अपनी बांह का कटा हुआ हिस्सा उसकी ओर लहराया। 'सचमुच।'

'क्या तुम मदद करना चाहते हो?'

फ्रीक लगातार आगे-पीछे, आगे-पीछे हिलता रहा। एंडी ने मिशेल की आस्तीन खींची। 'आज रात उससे कुछ भी समझ में नहीं आएगा। हम उससे सुबह बात करेंगे।'

मिशेल ने कंधे उचकाए। 'ठीक है।' उसने अपना हाथ आगे बढ़ाया। 'मुझे अपना चम्मच

दो।'
‘मेरा चम्मच?’
मुझे खोदने के लिए किसी चीज की जरूरत है।
बेलमोंडो ने अपना सिर दीवार से टिकाया और ठहाका लगाया। 'एक चम्मच! शानदार! जब तक तुम दीवार तक पहुँचोगे, तब तक तुम्हें व्हीलचेयर में गड्ढे से बाहर निकालना पड़ेगा!'
मिशेल ने उसकी बात अनसुनी कर दी। 'चम्मच।'
एंडी ने अपने सामान का हल्का-फुल्का बंडल खोला और मिशेल को अपना धातु का चम्मच पकड़ा दिया। उसने बाज़ार में एक गार्ड को रिश्वत देकर यह चम्मच खरीदा था। वह इसे अपने से अलग नहीं करना चाहता था, लेकिन उसे मना करने का कोई कारण भी नहीं सूझ रहा था।
मिशेल झोपड़ी के दूर वाले कोने में गया और मिट्टी को खुरचने लगा।
बेलमोंडो ने एंडी से कहा, 'उसे एक घंटा दो, उसका मन भर जाएगा। फिर सुरंगों के बारे में हमारी काफी बातचीत हो जाएगी। बेवकूफ!'
लेकिन बेलमोंडो ने अपने आदमी को कम आंका था। खुदाई करते हुए मिशेल को जोगिंदर और एड्रिएन की याद आ रही थी। ईंट जैसी सख्त मिट्टी को हर बार खुरचते हुए वह मन ही मन उनसे वादा कर रहा था कि उन्हें अपने किए पर पछतावा होगा। यही विचार था जिसने उसे शक्ति प्रदान की।
वह पूरी रात खुदाई करता रहा, पहरेदार के कदमों की आहट का इंतज़ार करता रहा, और जैसे ही पहरेदार की लगातार आहट दीवार पर सुनाई देती, वह फिर से काम शुरू कर देता। वह सुबह होने तक काम करता रहा।
जब बेलमोंडो और एंडी जागे, तो उन्होंने देखा कि मिशेल ने लगभग तीन फीट नीचे तक खुदाई कर ली थी। 'चार दिन,' उसने विजयी भाव से कहा। 'चार दिन और हम यहाँ से निकल जाएंगे।'
‘अगर गार्ड्स को वो छेद मिल गया तो हम सब बर्बाद हो जाएंगे!’ बेलमोंडो ने मुंह खुला रखकर छेद को घूरते हुए कहा। ‘वो मेरा सब कुछ बर्बाद कर देगा!’
मिशेल ने बेलमोंडो की ओर खुले मन से मुस्कुराते हुए देखा। 'वे इसे नहीं ढूंढ पाएंगे। हम इसे अपनी चटाइयों से ढक देंगे।'
‘उस गंदगी का क्या? तुम क्या करोगे? उसे झोपड़ी के बाहर ढेर में छोड़ दोगे और

उम्मीद करोगे कि कोई उसे देखेगा नहीं?'
'नहीं,' मिशेल ने मधुरता और समझदारी भरे लहजे में जवाब दिया। 'हम इसे झोपड़ी के फर्श पर फैला देंगे। हम बड़े-बड़े पत्थरों को अपनी कमीजों के अंदर छिपाकर शौचालय तक ले जा सकते हैं और वहाँ उन्हें खाली कर सकते हैं।'
एंडी मुस्कुराया। उसे लगा कि मिशेल की योजना शायद काम कर जाए।
बेलमोंडो ने मिशेल को खींचकर खड़ा किया। 'बस करो! तुम अपनी इस बेवकूफी भरी सुरंग से मुझे खतरे में नहीं डालोगे!'
'मुझे लगता है कि तुम्हें मुझे छोड़ देना चाहिए,' मिशेल ने कहा।
'अगर मैं ऐसा नहीं करता तो क्या होगा, तुम दुबले-पतले छोटे से गोक?'
मिशेल का घुटना बेलमोंडो के कमर पर ज़ोर से लगा और उसके हाथ इतनी तेज़ी से चले कि एंडी को वार दिखाई भी नहीं दिए। अचानक बेलमोंडो पीठ के बल ज़मीन पर गिर पड़ा, उसकी नाक और दांतों से गाढ़ा खून बह रहा था।
बेलमोंडो ने अपना हाथ मुंह पर रखा और पाया कि उसका एक सामने का दांत उसकी हथेली में है। 'बकवास... तुमने क्या किया?'
'मुझे फिर कभी मत छूना,' मिशेल ने कहा। वह नीचे झुका, उसकी आवाज़ धीमी और ठंडी थी। 'मैं यहाँ से जा रहा हूँ। और कोई मुझे रोक नहीं सकता।'

♦ ♦ ♦

फ्रीक झोपड़ी के दरवाजे के बाहर बैठा था और अंदर चल रही खुदाई के शोर को दबाने के लिए अपने बोंगो ड्रम बजा रहा था। एंडी चिपचिपे चावल से भरी एक कड़ाही और अधपकी चपाती लेकर अंदर गया। मिशेल के पैर छेद से थोड़ा बाहर निकले हुए थे।
एंडी घुटनों के बल बैठ गया और उसने मिशेल के टखने पर थपथपाया। 'मिशेल, लो, तुम्हें खाना पड़ेगा।'
उसने मिशेल को गड्ढे से बाहर निकलने में मदद की। मिशेल ने लगभग अठारह घंटे बिना आराम किए कड़ी मेहनत की थी।
मिशेल ने उससे चावल छीन लिए और झटपट खा गया। 'क्या तुम मेरे साथ आ रहे हो?'
अगर मैं ऐसा नहीं करूंगा, तो गार्ड हम बाकी लोगों की जमकर पिटाई करेंगे। हाँ, क्यों नहीं?
'बाकी दो के बारे में क्या?'

‘हिप्पी अंदर आना चाहता है। लेकिन मैंने आज सुबह से तुम्हारे दोस्त बेलमोंडो को नहीं देखा है।’
'कहाँ है वह?'
‘मुझे नहीं पता। शायद अभी भी रूठ गया होगा क्योंकि तुमने उसके सुंदर चेहरे पर चोट पहुँचा दी। तुमने इस तरह लड़ना कहाँ से सीखा?’
'स्कूल में।'
'स्कूल में?'
मिशेल ने अपने हाथ के पिछले हिस्से से अपना मुंह पोंछा। 'मैं एक बहुत ही कठिन स्कूल में पढ़ता था। वह एक शहर जितना बड़ा था और वहां हर कोई शिक्षक था। उसका नाम चोलोन था।'
एंडी ने गड्ढे को देखा। उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि वह कितना बड़ा होता जा रहा है। मिशेल के दृढ़ संकल्प ने उसे चकित कर दिया। 'तुम इससे बाहर निकलना बहुत बुरी तरह से चाहते हो।'
'ओह, हाँ, मैं बहुत बुरी तरह से बाहर निकलना चाहती हूँ। मुझे किसी से दोबारा मिलना है। हर दिन की दूरी बहुत लंबी लगती है।'
‘एक लड़की?’
नहीं। मेरे पिता।
‘तुम्हारा बूढ़ा आदमी?’
'हां, मेरे पिताजी। वो अभी साइगॉन में हैं, अपनी गोरी वेश्याओं के साथ अय्याशी कर रहे हैं, अपना पैसा गिन रहे हैं और मुझे धोखा देने पर हंस रहे हैं। उन्होंने मुझे एक नाव पर बिठाया और कप्तान को रिश्वत देकर मुझे छिपकर यात्रा करने वाले के रूप में पुलिस के हवाले करवा दिया। उन्हें लगता है कि उन्होंने मुझसे छुटकारा पा लिया है।'
‘हे भगवान! ये तो मजाक है, है ना?’
'हां, यह एक तरह का मजाक है। मेरे साथ। लेकिन जब मैं यहां से निकल जाऊंगा तो यह मजाक इतना मजेदार नहीं रहेगा। क्योंकि मैं उसे मार डालूंगा।'
ढोलों की थाप-थाप की आवाज़ अचानक बंद हो गई। यह उनका चेतावनी संकेत था। फ्रीक ने एक गार्ड को उनकी ओर आते हुए देख लिया था।
‘धत् तेरे की,’ एंडी ने बुदबुदाया।
मिशेल पलक झपकते ही खड़ा हो गया और उसने अपनी बांस की चटाई फर्श में बने

छेद पर बिछा दी। एंडी दरवाजे की ओर बढ़ा, यह सोचकर कि किसी तरह गार्ड को रोके। वह मुश्किल से दो कदम ही चल पाया था कि मुख्य वार्डन और दो गार्ड अंदर घुस आए और उनमें से एक गार्ड ने राइफल के बट से एंडी को धक्का देकर गिरा दिया।

मिशेल पहले से ही चटाई पर उकड़ू बैठा था, उसकी गोद में पतीली और चम्मच रखी थी। उसने एक चम्मच चावल उठाया, वार्डन की ओर देखा और उसे एक प्रसन्नतापूर्ण मुस्कान दी।

'यह कहाँ है?' वार्डन ने अंग्रेजी में गुर्राते हुए पूछा।

'मुझे समझ नहीं आ रहा,' मिशेल ने कहा।

वार्डन ने बांस की चटाई पर नज़र डाली और मिशेल को उस पर से धक्का देकर हटा दिया। फिर वह झुका और कलाई के एक झटके से उसे दूर फेंक दिया। गड्ढे का अंधेरा मुँह उसके सामने खुला रह गया।

मिशेल ने अपने गले से कफ निकाला और फर्श पर थूका। 'बेलमोंडो।'

'हे भगवान!' एंडी ने फुसफुसाते हुए कहा और फिर पहला लात उसके पेट पर पड़ी।

♦ ♦ ♦

मुख्य वार्डन एक लंबा, एकदम सीधा खड़ा सिख था। उसने भारतीय सेना में मेजर की वर्दी पहनी हुई थी। उसकी घनी और सुंदर दाढ़ी थी, और उसमें एक ऐसे पेशेवर अधिकारी का सारा घमंड था जिसे एक अपमानजनक पद पर निर्वासित कर दिया गया हो। उसे इस बात पर गर्व था कि उसके वार्डन रहते हुए कभी कोई जेल से नहीं भागा था, और सुरंग का पता चलने से वह बेहद क्रोधित था।

उन्हें इस बात से बेहद ठेस पहुंची कि ये आधे-गोरे और उसके दोस्त उन्हें इस तरह अपमानित करने की सोच भी सकते हैं। उन्होंने गार्डों को आदेश देकर उन तीनों को अपने दफ्तर में घसीटकर ले आए।

'अपने कपड़े उतारो,' उसने गुर्राते हुए कहा।

'इन दोनों आदमियों का सुरंग से कोई लेना-देना नहीं था,' मिशेल ने कहा। 'यह मेरा विचार था। मैंने ही सब कुछ किया।'

वार्डन ने मिशेल के पेट में मुक्का मारा, लेकिन युवक की मजबूत मांसपेशियों ने वार को सह लिया, जिससे वह निराश हुआ। मिशेल हांफते हुए झुक गया, लेकिन गिरा

नहीं।
‘उन्हें जाने दो...’ वह कराह उठा।
मैंने कहा: “अपने कपड़े उतारो।”
तीनों आदमियों के कपड़े उतारने तक वह इंतज़ार करता रहा। वह मुस्कुराया। अमेरिकी हिप्पी लड़की की तरह कांप रहा था। उसके शरीर से पेशाब की पीली धार निकली। उसके घुटने लड़खड़ा गए और वह गिरने लगा। एक गार्ड आगे बढ़ा और उसे बालों से पकड़कर ऊपर उठाया।
‘ओह, बकवास...’ फ्रीक बुदबुदाया। ‘हे भगवान...’
जेलर ने अपनी कमर पर बंधी मोटी चमड़े की बेल्ट उतारी और उसे अपनी मुट्ठी पर लपेट लिया, भारी बकल को उंगलियों के जोड़ों पर टिकाए रखा। 'अब मैं तुम्हें सबक सिखाने जा रहा हूँ। मैं तुम्हें दिखाऊंगा कि मेरी जेल से भागने की कोशिश करने पर क्या होता है। मैं तुम्हें तुम्हारी माँ को कोसने पर मजबूर करूँगा कि उन्होंने तुम्हें इस दुनिया में क्यों लाया।'

♦ ♦ ♦

जब एंडी को होश आया, तो वह अस्पताल के बिस्तर पर लेटा हुआ था। एक जेल गार्ड - उन्हीं लोगों में से एक जिसने उसे पीटा था - दरवाजे के पास बैठा चाय की चुस्की ले रहा था, उसकी राइफल उसके घुटनों पर टिकी हुई थी।
एंडी ने अपने हाथ हिलाने की कोशिश की और पाया कि उसकी बाईं कलाई खाट की लोहे की रेलिंग से जंजीर से बंधी हुई थी।
उसकी आँखों के पीछे तीव्र लयबद्ध दर्द हो रहा था और जब उसने उठने की कोशिश की तो उसके पेट के निचले हिस्से में तेज दर्द हुआ और उसने कोशिश छोड़ दी। उसे मुख्य वार्डन और बेल्ट बकल याद आ गई।
उसने फिर कराहते हुए अपनी आंखें बंद कर लीं।
बाद में एक डॉक्टर ने उसकी जांच की और टूटी-फूटी अंग्रेजी में कहा: 'तुम्हें सिर में चोट लगी है और हर्निया फट गया है। किसी ने तुम्हारे साथ बहुत बुरा बर्ताव किया है।'
एंडी ने उस आदमी की गहरी भूरी आँखों और चेहरे पर चिंता की लकीरों को देखा।
उसने वादा किया, 'मैं उन्हें हथकड़ी हटाने के लिए मनाने की कोशिश करूंगा।'
अपने वचन के अनुसार, उसी रात हथकड़ियां हटा दी गईं।

एंडी तीन सप्ताह तक अस्पताल में रहा। जब उसे वापस जेल ले जाया गया, तो मिशेल उसका इंतज़ार कर रहा था। उसकी एक आँख का सफेद भाग अब भी पके हुए बेर की तरह लाल था, और उसके होंठों और दाहिनी आँख के ऊपर के घाव संक्रमित हो चुके थे। उसका वज़न लगभग दस पाउंड कम हो गया था। वह बेहद कमज़ोर दिख रहा था।

गार्ड एंडी को झोपड़ी के दरवाजे पर छोड़कर चले गए।

मिशेल किसी तरह उठ खड़ा हुआ और उसे गले लगा लिया। फिर उसने अपना मुँह उसके कान से लगाया। फुसफुसाते हुए बोला, 'मैंने एक और सुरंग खोदनी शुरू कर दी है। हम दीवार तक आधे रास्ते पहुँच चुके हैं! हम यहाँ से निकलेंगे!'

अध्याय 18

फ्रीक कोने में उकड़ू बैठा था, उसकी आँखों से आँसू बहकर दाढ़ी में गिर रहे थे। उसने अपने घुटनों को बाहों में जकड़ रखा था। वह किसी बदसूरत और मुरझाए हुए बौने जैसा दिख रहा था। वह सिसक रहा था और खुद से कुछ बुदबुदा रहा था। उनमें से कोई भी समझ नहीं पा रहा था कि वह क्या कह रहा है।

‘उसे क्या हुआ है?’ एंडी ने फुसफुसाते हुए कहा।

मिशेल ने कंधे उचकाते हुए कहा, 'जब से पहली सुरंग मिली है, तब से वह ऐसा ही है। वह वार्डन से डरता है।'

'हम क्या करने जा रहे हैं?'

‘वह बहुत ज्यादा नशा करता है। और वह कमजोर है। यह हमारी समस्या नहीं है।’

'हमें कुछ करना है।'

‘क्यों?’ मिशेल दरवाजे पर बैठा था और चम्मच से थोड़ा पतला लोप्सी (आटे और नमक से बना दलिया) खा रहा था - जो उसका नाश्ते का हिस्सा था।

क्योंकि हम यहाँ बैठकर उसे मरते हुए नहीं देख सकते!

मिशेल ने कोई जवाब नहीं दिया। एंडी को चम्मच से पतीले के तले पर रगड़ने की आवाज़ सुनाई दी।

‘तुम्हें तो कोई परवाह ही नहीं है, है ना?’

‘दुनिया में दो तरह के लोग होते हैं,’ मिशेल ने कहा। ‘एक कमजोर और एक ताकतवर। कमजोर लोग मुश्किलों का सामना करने पर हार मान लेते हैं और मर जाते

हैं। ताकतवर लोग जीवन पर विजय प्राप्त करते हैं और जीवित रहते हैं। तुम्हारा अमेरिकी दोस्त कमजोर है। हम कुछ भी कर लें, वह बच नहीं पाएगा।'
फ्रीक ने कुछ बुदबुदाया और हंसने लगा। उसने अपनी दूधिया सफेद ठूंठ को उनकी ओर लहराया। एंडी को याद आया कि पिटाई के दौरान एक गार्ड ने उस पर अपना जूता पटक दिया था।
उसे डर है कि अगर गार्डों को यह नई सुरंग मिल गई तो क्या होगा।
'क्या आप नहीं हैं?'
'तो वे हमें फिर हरा देंगे। यह महत्वपूर्ण नहीं है। महत्वपूर्ण यह है कि हम यहां से निकल जाएं।'
'हे भगवान, आपका मतलब यही है, है ना?'
'अगर आप चाहें तो यहीं रुक सकते हैं। या शायद आप बेलमोंडो की तरह सुरंग की सूचना वार्डन को देने की सोच रहे हैं?'
'तुम्हें पता है मैं ऐसा नहीं करूँगा।' असल में उसने कई बार इसके बारे में सोचा था।
'वैसे, बेलमोंडो कहाँ है?' एंडी ने पूछा। 'क्या उसके वकील ने उसे छुड़ा लिया?'
बेलमोंडो की मौत हो गई है।
'मृत?'
'शौचालय में वह गिर गया। उसका सिर कंक्रीट की नाली से टकराकर फूट गया।'
'यीशु मसीह।'
मिशेल ने प्याला नीचे रखा, खड़ा हुआ और झोपड़ी के दूर कोने तक चला गया। उसने अपनी बांस की चटाई हटाई। एंडी नए छेद को घूरता रहा।
'वापस काम पर जाने का समय।'
'मिशेल... ये तुम तो नहीं थे ना?'
'आपका क्या मतलब है?'
'मेरा मतलब है... ऐसा नहीं था... तुमने बेलमोंडो को नहीं मारा, है ना?'
'मैंने तुमसे कहा था, वह गिर गया।' मिशेल हँसा, उसकी हँसी कांच टूटने जैसी कर्कश थी। 'क्या मैं तुम्हें हत्यारा लगता हूँ?'

♦ ♦ ♦

फ्रीक मर चुका था।

वह झोपड़ी के अंदर भ्रूण की मुद्रा में लेटा हुआ था, उसकी दाहिनी बांह का ठूंठ उसके नीचे दबा हुआ था। एंडी उसके बगल में बैठ गया और फ्रीक की उंगलियों से कांच की दवा की बोतल निकाल ली। 'हे भगवान!'

'ये क्या हैं?' मिशेल ने पूछा।

'मैंड्रैक्स। नींद की गोलियां। इनमें से दो गोलियां आपको रात भर सुला देंगी। लगता है उसने आधी बोतल निगल ली है।'

मिशेल ने गोलियां ले लीं। वह अपने पैरों के पास पड़े शव से ज्यादा गोलियों में दिलचस्पी रखता हुआ प्रतीत हुआ। 'उसे ये गोलियां कहां से मिलीं?'

'शायद किसी गार्ड को रिश्वत दी होगी। वैसे भी, हम यहाँ सब कुछ इसी तरह हासिल करते हैं।'

मिशेल ने बची हुई गोलियों को अपने हाथ में निकाला और उन्हें अपनी जींस की जेब में रख लिया।

'तुम क्या कर रहे हो?' एंडी ने कहा।

उन्हें अब इनकी जरूरत नहीं होगी।

आपको इनकी जरूरत किसलिए है?

'कोई ऐसी चीज़ जिससे लोगों को नींद आ जाए, हमारे लिए बहुत उपयोगी हो सकती है।' मिशेल ने फ्रीक के पैर पकड़े और उसे झोपड़ी से बाहर घसीटना शुरू कर दिया। 'उसे यहाँ से बाहर निकालो, इससे पहले कि वह बदबू करने लगे।'

♦ ♦ ♦

सुरंग नौ फीट गहरी और पंद्रह फीट लंबी थी। गड्ढे से निकले मलबे के कारण झोपड़ी का फर्श चार इंच ऊपर उठ गया था, जिससे मिशेल और एंडी को अंदर जाने के लिए ऊपर चढ़ना पड़ता था। लेकिन मुख्य वार्डन ने यह सोचकर कि उसने दोनों पश्चिमी लोगों को सबक सिखा दिया है, उनसे मिलने जाना बंद कर दिया।

हर सुबह और शाम मिशेल व्यायाम के मैदान में दौड़ लगाता, अपनी मांसपेशियों की अकड़न दूर करता। जब वह परिसर के चक्कर पूरे करता, तो बाकी कैदियों के हैरान चेहरे उसे देखते रहते; कभी-कभी कोई गार्ड उसे हिंदी में कुछ कहता और उसके साथी बेजान हंसी हंसते।

मिशेल ने उन पर कोई ध्यान नहीं दिया। उसके लिए उनका कोई अस्तित्व ही नहीं था। एक शाम, अस्पताल से लौटने के कुछ ही समय बाद, एंडी ने अपने थके हुए शरीर के

लिए थेरेपी के तौर पर उसके साथ जाने का फैसला किया। उसे उसके साथ कदम मिलाकर चलना मुश्किल लग रहा था।
‘आज रात,’ मिशेल ने फुसफुसाते हुए कहा।
‘यह... पूरा हो गया?’
'हां। क्या तुम आ रहे हो?'
‘मिशेल...’ एंडी हांफते हुए बोला। ‘क्या तुम कुछ दिन इंतजार कर सकते हो?’
मिशेल रुक गया। एंडी भी रुक गया, हांफते हुए अपने हाथ घुटनों पर रख लिए। पिटाई और अस्पताल में बिताए तीन हफ्तों ने उसे उसकी सोच से कहीं ज़्यादा कमज़ोर कर दिया था।
‘आप मुझे इंतजार क्यों करवाना चाहते हैं?’
‘आज मुझे अपने पिताजी का पत्र मिला। वो मेरे लिए ज़मानत का इंतज़ाम कर रहे हैं। मैं कुछ दिनों में यहाँ से निकल जाऊँगा। वैसे भी, एक हफ्ते से ज़्यादा नहीं।’ एंडी ने अपने नए दोस्त की ओर गिड़गिड़ाते हुए देखा। ‘मिशेल, मैं जोखिम नहीं उठा सकता। अभी नहीं।’
‘ठीक है, तो फिर। यहीं रहो।’
‘तुम इंतज़ार करोगे?’
नहीं। मैं पहले ही बहुत देर तक इंतजार कर चुका हूँ।
'कृपया ...'
मिशेल ने उसका हाथ पकड़ लिया। ‘बीता हुआ हर घंटा बहुत लंबा लग रहा है! क्या पता कोई पहरेदार पेशाब करने के लिए झोपड़ी के पीछे चला जाए और उस गंदे छेद में गिर जाए! नहीं। मैं आज रात ही जाऊंगा!’ उसने दीवार की तरफ देखा। पहरेदार मीनार में बैठा एक पहरेदार उन्हें घूर रहा था। ‘भागते रहो।’
वह फिर से चल पड़ा। एंडी उसके पीछे-पीछे उदास मन से दौड़ता हुआ गया। 'मैं डरा हुआ हूँ, मिशेल।'
‘तो मैं तुम्हें बताता हूँ क्या करना है। मैं तुम्हें मैंड्रैक्स की दो गोलियाँ दूँगा। जब तुम सो जाओगे, मैं गार्ड को बुला लूँगा। उन्हें लगेगा कि तुम्हारी हालत बिगड़ गई है और वे तुम्हें वापस अस्पताल भेज देंगे। इसलिए जब मैं भागूँगा, तब तुम यहाँ रहोगे भी नहीं।’
एंडी कृतज्ञता से भर गया। 'धन्यवाद मिशेल।'
वे झोपड़ी तक पहुँच गए। मिशेल ने दीवार पर खड़े पहरेदारों को खुशी से हाथ

हिलाया। उनमें से एक ने अपनी सिगरेट का टुकड़ा उसकी ओर फेंका और गुस्से से मुँह फेर लिया।
मिशेल ने आकाश की ओर देखा। शाम के नीले पानी जैसे आकाश में चाँद की एक पतली सी पतली सी किरण तैर रही थी। उसने कहा, 'अगली बार जब तुम चाँद देखोगे, मैं यहाँ से बहुत दूर होऊंगा। मुझे फिर कभी कोई पिंजरे में नहीं डालेगा।'

♦ ♦ ♦

मिशेल कठोर मिट्टी खोदकर बनाई गई संकरी सुरंग में पेट के बल रेंगता हुआ आगे बढ़ा। उसने अंदाज़ा लगाया था कि यह बीस फीट लंबी है, पर उसने सोचा कि यह बीस मील जितनी ही लंबी क्यों न हो। उसने सुरंग के ढह जाने के बारे में न सोचने की कोशिश की। चार फीट मोटी पकी हुई मिट्टी के नीचे दम घुटकर मरने से बेहतर मौत के और भी तरीके हो सकते थे।
सुरंग की पूरी लंबाई को पार करने में उसे दो मिनट से भी कम समय लगा, यह यात्रा उसने पिछले कुछ हफ्तों में अनगिनत बार की थी। आखिरकार वह दूसरे छोर पर ऊपर की ओर मुड़े हुए हिस्से तक पहुंचा और मिट्टी की आखिरी कुछ इंच परत को हथौड़े से तोड़ना शुरू कर दिया।
मिट्टी उसके सिर पर गिरी, उसकी आँखों, मुँह और नाक में चली गई। उसने उसे थूक दिया। जब उसने पीछे मुड़कर देखा तो रात के तारों की जगमगाहट उसका स्वागत कर रही थी। वह मुस्कुराया और गड्ढे से बाहर निकलने लगा।
उसने पास ही किसी के माचिस जलाने की आवाज़ सुनी। उसने ऊपर देखा तो दीवार के बाहर गश्त लगा रहे पगड़ीधारी सिख का चेहरा सदमे से भरा हुआ था। एक पल के लिए दोनों एक-दूसरे को हैरानी से देखते रहे, फिर सिख ने माचिस ज़मीन पर गिरा दी और अपनी राइफल ढूंढने लगा। उसने गोली चलाई, गोली मिशेल के सिर के ठीक ऊपर से गुज़र गई, जिससे कोई नुकसान नहीं हुआ। मिशेल जानता था कि गोली खाए बिना वह दीवार से बाहर नहीं निकल सकता।
कोई चारा नहीं था। उसने खुद को वापस गड्ढे में धकेल दिया और पैरों के बल ऊपर चढ़ने लगा। जैसे ही गार्ड ने राइफल के बट से गड्ढे को धंसाया, उसके सिर पर मिट्टी की बौछार होने लगी।
वह सुरंग में धीरे-धीरे पीछे हटता गया, इस उम्मीद में कि दीवार के इस तरफ तैनात

पहरेदारों को पता न चले कि क्या हो रहा है और वे पूरी सुरंग को उस पर गिराने की कोशिश न करें। उसने मन ही मन अपने अंदर के अंधकारमय देवताओं से प्रार्थना की और आगे बढ़ता रहा।

♦ ♦ ♦

जब एंडी ने मैंड्रैक्स लेने के बाद अगली सुबह अस्पताल में होश संभाला, तो हर कोई मिशेल के भागने की कोशिश के बारे में बात कर रहा था। एक महीने के अंदर दो बार भागने की कोशिश! यह अभूतपूर्व था। लेकिन किसी को भी यह पता नहीं था कि मिशेल ज़िंदा है या मर गया है।

जब वह वापस जेल पहुँचा तो एक गार्ड ने उसे बताया कि मिशेल 'अधिकतम सुरक्षा' में है, जो कि जेल की मुख्य इमारत के नीचे स्थित एक अंधेरी कोठरी के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला एक नरम शब्द था। एंडी ने एक गार्ड को रिश्वत देकर उससे मिलने की अनुमति प्राप्त कर ली।

मिशेल तीन फुट चौड़े और चार फुट लंबे मिट्टी के पिंजरे में लेटा हुआ था, जो किसी आदमी के बैठने के लिए भी मुश्किल से ही काफी बड़ा था। अंधेरे में कुछ हिला। वह एक मकड़ी थी। उसका आकार सूप की प्लेट जितना था।

‘एंडी,’ मिशेल ने धीरे से कहा।

उसकी आंखें झपकीं, लेकिन वह हिला नहीं। उसकी कमीज पर गहरे धब्बे थे और उसकी वाणी लड़खड़ा रही थी, मानो वह नशे में हो।

जैसे-जैसे एंडी की आँखें अंधेरे की आदी होती गईं, उसे पेट में अजीब सी बेचैनी महसूस होने लगी। 'हे भगवान, मिशेल! इन्होंने तुम्हारे साथ क्या किया है?'

‘सब ठीक है,’ मिशेल ने लड़खड़ाती आवाज़ में कहा। ‘कुछ टूटा नहीं है।’ मिशेल ने सलाखों के बीच से हाथ बढ़ाकर एंडी की कलाई पकड़ ली। उसके हाथ में अभी भी ज़बरदस्त ताकत थी। ‘एंडी,’ उसने फुसफुसाते हुए कहा, ‘मुझे यहाँ से निकलना होगा।’

‘अरे यार, तुम मजाक कर रहे हो क्या!’

मैं चाहता हूं कि तुम मेरे लिए कुछ लाओ।

‘क्या तुमने सुना मैंने क्या कहा?’

मिशेल ने उसकी बात अनसुनी कर दी। 'क्या तुम ऐसा कर सकते हो? क्या तुम फिर से यहाँ आ सकते हो?'

एंडी ने अपने होंठ चाटे। वह बहुत डरा हुआ था। 'तुम्हें अपनी ताकत वापस पानी होगी।'
नहीं, आपको इसे अभी करना होगा!
एंडी ने अपना सिर हिलाया। यह संभव ही नहीं लग रहा था। वह आदमी इंसान नहीं था। 'तुम क्या चाहते हो?'

♦ ♦ ♦

मुख्य वार्डन ने झुंझलाहट से ऊपर देखा, जब एक गार्ड ने उसके कार्यालय का दरवाजा खोल दिया। उस बदतमीज़ बदमाश ने दरवाजा खटखटाना भूल गया था।
'यह क्या है?'
उस आदमी ने लापरवाही से सलामी दी। 'यह अधिकतम सुरक्षा वाली जेल में बंद कैदी है, महोदय। यह मर रहा है।'
वार्डन ने गुस्से में अपना पेन मेज पर पटक दिया। वह मंत्री को पत्र लिखने में व्यस्त था, जिसमें वह दो बार भागने की कोशिशों को नाकाम करने पर खुद को बधाई दे रहा था। उसे व्यवधान बिल्कुल पसंद नहीं था। 'इसे क्या हो गया है?'
‘हर जगह खून ही खून है, महोदय। क्या आपको उसकी चीखें सुनाई नहीं दे रही हैं?’
वार्डन ने ध्यान से सुना। अब जब उसने इस बारे में बताया है, तो उसे कुछ सुनाई दे रहा है। धिक्कार है! शायद वह कुछ ज़्यादा ही बोल गया था।
उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि उन्हें चिंतित होना चाहिए या नहीं। कैदी का नाम फ्रांसीसी था, हालांकि वह देखने में यूनानी या स्पेनिश लग रहा था और उसे वियतनामी बंदरगाह से थाईलैंड जा रहे एक मालवाहक जहाज पर गिरफ्तार किया गया था। उसकी राष्ट्रीयता क्या थी? उसकी फाइल में इसका कोई जिक्र नहीं था। अगर यह पता चला कि मिशेल वास्तव में एक यूरोपीय था - और ऐसे नाम के साथ वह यूरोपीय कैसे नहीं हो सकता? - तो उसकी मौत के गंभीर परिणाम हो सकते थे। कुछ ही दिन पहले उसकी कोठरी में एक अमेरिकी की मौत हुई थी, और बॉम्बे में अमेरिकी वाणिज्य दूतावास पहले से ही हंगामा मचा रहा था।
फिर एक कनाडाई नागरिक था जो शौचालय में गिर गया और उसकी खोपड़ी टूट गई। कुछ ही हफ्तों के भीतर दो मौतें हो चुकी थीं। एक और मौत उसके रिकॉर्ड में दर्ज होना अच्छा नहीं होगा।

उसने मन बना लिया। 'ठीक है,' उसने कहा, 'मुझे लगता है कि मुझे एक बार देख लेना चाहिए।'

वह तहखाने की ओर जाने वाली पत्थर की सीढ़ियों से नीचे उतरा। अब उसे चीखें और भी स्पष्ट सुनाई दे रही थीं। उसे इस विडंबना पर हल्की सी मुस्कान आई। दो रात पहले उसने उस चालाक बदमाश को पीट-पीटकर बेहोश कर दिया था, और उसने एक शब्द भी नहीं बोला था। शायद अगर उसने बोला होता, तो उसे इतनी जोर से मारने का मन नहीं करता। उस आदमी की हठधर्मिता ही उसकी प्रेरणा थी।

अब वह कमीना जोर-जोर से चिल्ला रहा था।

वह भारी धातु के दरवाजे के सामने रुक गया जो अत्यधिक सुरक्षा वाले इलाके में जाता था और गार्ड के चाबियों से खोलने की कोशिश करने तक इंतजार करता रहा। यहाँ नीचे काफी ठंडक और अंधेरा था, और सड़न की दुर्गंध से उसकी नाक कांप उठी। पहरेदार ने दरवाजा खोला और वह अंदर चला गया, कुछ पल अंधेरे में आंखों को अभ्यस्त होने का समय दिया। संकरे रास्ते के दोनों ओर तीन-तीन पिंजरे थे, कुल मिलाकर छह पिंजरे थे।

पंक्ति के अंत में दाहिनी ओर वाले पिंजरे में मिशेल अकेला था। वार्डन झुककर अंदर झाँका। उसने गार्ड से टॉर्च माँगी।

मिशेल की कमीज़ खून से लथपथ थी। उसके मुंह और नाक से चिपचिपी बूंदों के रूप में खून टपक रहा था, जिससे उसके दांत और होंठ खून से सन गए थे। मिट्टी के फर्श पर खून के बड़े-बड़े धब्बे थे।

मिशेल अभी भी चीख रही थी।

‘खून बह रहा है!’ वह फुफकारा। ‘इसे हथकड़ी पहनाओ और अस्पताल ले जाओ। जल्दी करो!’

♦ ♦ ♦

बॉम्बे अस्पताल के डॉक्टर ने स्ट्रेचर पर लेटे मरीज को देखा और उसे लाने वाले जेल गार्डों से अपनी घृणा छिपाने की कोई कोशिश नहीं की। 'एक और? आप लोग वहां क्या कर रहे हैं?' वह झुककर उस आदमी की जांच करने लगा। वह लगभग अर्धचेतन अवस्था में था। 'इसे क्या हुआ?'

‘गिर गया था,’ एक गार्ड ने उसे बताया।

'जेल के फर्श बहुत फिसलन भरे होंगे।'
गार्ड ने कंधे उचका दिए।
डॉक्टर ने कहा, 'उसके हथकड़ी हटा दो।'
लेकिन मेजर ने कहा...
डॉक्टर गुस्से से लाल होकर उसकी ओर मुड़ा। 'इन्हें उतारो! इसे देखो! यह आदमी इस हालत में कहीं नहीं दौड़ पाएगा! इन्हें उतारो!'
गार्ड ने विनम्रतापूर्वक आदेश का पालन किया।

♦ ♦ ♦

मिशेल ने एक आँख खोली और चारों ओर देखा। कमरा किसी जूते के डिब्बे जैसा छोटा था। भला कौन इतना बड़ा बिस्तर लगवा सकता है? दरवाजे के पास एक कुर्सी पर एक गार्ड बैठा था, ठुड्डी हाथों पर टिकी हुई थी। उसकी .303 राइफल घुटनों के बीच दबी हुई थी। वह लगभग दो घंटे से वहीं बैठा था। उसे बार-बार नींद आ रही थी और वह खुद ही जाग रहा था।
निएंडरथल! मिशेल ने सोचा।
अब तक सब ठीक चल रहा था। लेकिन इस बार वह इतनी जल्दी अपनी आँखें खोलने की कोशिश नहीं करेगा। इस बार वह सोच-समझकर कदम उठाएगा।
एंडी ने अपना वादा निभाया था। अपनी पहली मुलाकात के अगले दिन ही वह मिचेल द्वारा माँगी गई टिन की प्याली और सिरिंज लेकर लौट आया था। उसने सिरिंज पाने के लिए एक गार्ड को रिश्वत दी थी; उसे एंडी का अनुरोध असामान्य नहीं लगा था। जेल में ड्रग्स और उनसे जुड़ी चीज़ों की खूब मांग थी। टिन की प्याली कभी फ्रीक की थी।
‘तुम क्या करने वाले हो?’ एंडी ने उससे पूछा था।
मुझे यह ख्याल आया कि जब मैं अपनी सुरंग में रेंग रहा था, तब तुम पहले ही जेल की दीवारों के बाहर निकल चुके थे।
‘अस्पताल?’
'ऐसा लगता है कि किसी भी जेल से बाहर निकलने का सबसे अच्छा तरीका यही है कि आप गार्डों को खुद आपको बाहर ले जाने दें।'
'आख़िर कैसे ...'
‘इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि कैसे। आप इसके बारे में जितना कम जानते हैं,

उतना ही बेहतर है।'
एंडी जाने के लिए मुड़ा। 'अगर मेरे पिता मुझे बाहर नहीं निकालते हैं, तो मुझे कुछ पैसे भेज देना, ठीक है?'
'सभी अधिकार है।'
'मुझसे वादा करें?'
'हाँ मैं वादा करता हूं।'
ठीक है। शुभकामनाएँ, दोस्त।
उसके जाने के बाद, मिशेल ने आधा घंटा इंतजार किया, फिर अपनी बाईं बांह की नस में सुई चुभाई। उसने एक सिरिंज भर अपना खून निकाला और उसे कप में डाल दिया। उसने ऐसा तब तक बार-बार किया जब तक कि कप भर नहीं गया।
फिर उसने प्याला अपने होठों तक उठाया और अपना सिर पीछे की ओर झुकाया, खुद को खून में डुबोकर दम घोंटने की कोशिश की, जिससे खून हर जगह फैल गया, दीवार पर छलक गया, उसकी कमीज पर गिर गया और उसकी नाक से अंदर चला गया।
फिर वह चीखने लगा।
मिशेल को यह देखकर मुस्कान आ गई कि यह कितना आसान था। चम्मच से उस सुरंग को खुरचने से कहीं ज्यादा आसान।

♦ ♦ ♦

रात का समय था। दिनभर के हंगामे के बाद अस्पताल के गलियारे शांत थे। दिन भर अस्पताल धोती और हाथ से बुनी साड़ियों में धँसे हताश लोगों की भीड़ से भरा हुआ था, जिनमें से कुछ ने अपनी बाहों में बेजान शिशुओं को उठाया हुआ था। उनकी अंतहीन कतारें लगी हुई थीं, हर कोई सफेद कोट पहने परेशान डॉक्टरों से गुहार लगा रहा था।
बाहर से जानी-पहचानी खड़खड़ाहट सुनाई दी। गार्ड ने उम्मीद भरी नजरों से ऊपर देखा। यह नाइट बॉय था। गार्ड ने मिशेल की ओर देखा, जो सोने का नाटक कर रहा था। वह उठा और चाय का बर्तन लेने के लिए गलियारे में चला गया।
कमरे से निकलते ही मिशेल ने बिस्तर के बगल में रखे लकड़ी के लॉकर का दरवाज़ा खोल दिया। उसकी टी-शर्ट और जींस अंदर पड़ी थीं। मिशेल ने अपनी जींस की जेब में हाथ डाला और मुट्ठी भर गोलियां निकालीं; ये मैंड्रैक्स थीं।
वह अपनी दाहिनी मुट्ठी में गोलियां पकड़े हुए बिस्तर पर लेट गया। उसने अपनी पलकें

थोड़ी-थोड़ी खुली रखकर देखा कि पहरेदार चायदानी को कमरे में वापस लाया और उसे उसके पैरों के पास फर्श पर रख दिया।
मिशेल कराह उठा।
गार्ड चौंककर ऊपर देखने लगा। मिशेल करवट लेकर एक बार फिर दर्द से कराह उठा। गार्ड राइफल पकड़े हुए उसके पास आया, उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करे। मिशेल दर्द से चीख उठा और चौंककर एक कदम पीछे हट गया। वह एक पल रुका और फिर नर्स को बुलाने के लिए गलियारे में वापस चला गया।
मिशेल बिस्तर से झुका और चायदानी लेने के लिए हाथ बढ़ाया। वह बस उसकी पहुँच में ही थी। जैसे ही उसने उसे अपनी ओर खींचा, उसे लगा कि हथकड़ियाँ उसके टखनों की त्वचा में चुभ रही हैं। उसने मंड्रैक्स की कुछ बूँदें उस भूरे, दूधिया रंग के तरल में डाल दीं। फिर उसने उसे वापस गार्ड की कुर्सी की ओर धकेल दिया।
जब गार्ड और नर्स दौड़कर कमरे में वापस आए तो मिशेल अपनी पीठ के बल लेटा हुआ था और ऐसा लग रहा था कि वह शांति से सो रहा है।
‘आपने कहा था कि वह चिल्ला रहा था,’ नर्स ने गार्ड को हिंदी में डांटते हुए कहा।
‘हाँ, वो था,’ गार्ड ने अचंभित होकर उत्तर दिया। ‘वो बिल्कुल पीला पड़ गया था।’
नर्स ने मिशेल की कलाई पकड़ी और उसकी नब्ज़ जाँची, साथ ही अपना दूसरा हाथ उसके माथे पर रखा। 'नब्ज़ और तापमान दोनों सामान्य हैं। शायद वह नींद में चिल्ला रहा था।'
‘शायद,’ गार्ड ने सहमति जताई।
नर्स ने झुंझलाहट से भौंहें चढ़ाईं। उसने कहा, 'उसे कुछ भी नहीं हुआ है,' और कमरे से बाहर चली गई।
गार्ड ने कंधे उचकाए, बैठ गया और चाय का बर्तन उठाया। उसने थोड़ी सी चाय टिन के कप में डाली। उसने एक घूंट पी और अपनी पुरानी स्थिति में लौट आया: ठुड्डी हाथों पर टिकाए, राइफल घुटनों के बीच में। उसने जम्हाई ली।
यह एक लंबी रात होने वाली थी।
दस मिनट बाद वह कुर्सी से लड़खड़ाकर नीचे गिर पड़ा, उसका चेहरा ज़मीन पर ज़ोर से धंस गया और उसकी राइफल उसके बगल में टाइल वाले फर्श पर गिर पड़ी।
मिशेल बिस्तर से उठा, गार्ड की बेल्ट से बंधी चाबी के गुच्छे को पकड़ा और उसे घुमाकर खोल दिया। उसने प्रार्थना की कि नर्स अगले कुछ मिनटों में अपने राउंड पर

वापस न आए। उसने अपने टखनों में बंधी हथकड़ियों को खोला, बिस्तर से नीचे उतरा और बिस्तर के बगल वाली अलमारी से जींस और खून से सनी टी-शर्ट निकाली। कुछ मिनट बाद वह अस्पताल के मुख्य द्वार से बाहर निकला। उसकी गिरफ्तारी को पूरे छह सप्ताह हो चुके थे। वह एक बार फिर अपने पिता के साथ अपने रिश्ते को फिर से शुरू करने के लिए स्वतंत्र था।

अध्याय 19

बंबई

बंबई शहर अरब सागर में निकले एक संकरे प्रायद्वीप पर बसा था। नरीमन प्वाइंट की ऊंची-ऊंची इमारतों के चमकदार शीशों के नीचे भीड़भाड़ वाले बाज़ार और जर्जर, बदहाल झुग्गियां बसी हुई थीं। सड़कों पर जाम लगे वाहनों के हॉर्नों की गूंज से हवा गूंज रही थी और फुटपाथ सड़े हुए कचरे से भरे थे। पवित्र गायें गंदे भिखारियों, लहराती साड़ियों में सजी महिलाओं और पश्चिमी सूट पहने व्यापारियों के साथ जगह के लिए धक्का-मुक्की कर रही थीं, जो अपनी नियुक्तियों के लिए भाग-दौड़ कर रहे थे।

विशाल झुग्गी-झोपड़ियाँ और फुटपाथ पर बनी झोपड़ियाँ उस बढ़ती हुई आबादी की गवाही दे रही थीं जो अपने सपनों को साकार करने के लिए बंबई आई थी, लेकिन उसे केवल बीमारी और भीड़भाड़ ही मिली। फिर भी, आसपास के ग्रामीण इलाकों से प्रतिदिन छह हजार नए परिवार आकर बसते रहे।

गणेश जी की भव्य, मालाओं से सजी मूर्तियाँ हर जगह दिखाई देती थीं, हाथी के सिर वाले गोल-मटोल और शिशु जैसे अंगों वाले देवता। यह मुंबई का प्रतीक था, धन, सौभाग्य और समृद्धि के हिंदू देवता। मुंबई भारत का न्यूयॉर्क था।

यहां की आबादी बहुसांस्कृतिक थी, जिसमें भारत की हर नस्ल के लोग शामिल थे; बाजारों में लोग हिंदी, मराठी, गुजराती, तमिल, तेलुगु, सिंधी, कन्नड़ और अंग्रेजी बोलते थे; यहां हिंदू, मुस्लिम, कैथोलिक, बौद्ध, जैन, पारसी, सिख और यहूदियों के लिए चर्च और तीर्थस्थल थे। विदेशी भी हर जगह से आते थे: खाड़ी देशों के धनी अरब, सैन फ्रांसिस्को के हिप्पी, मध्य-पश्चिम के धनी और तंदुरुस्त पर्यटक, फ्रांस और जर्मनी के सुरुचिपूर्ण ढंग से सजे-धजे व्यापारी।

मानवता के ऐसे विविध संगम में, मिशेल क्रिश्चियन पल भर में अदृश्य हो गए।

♦ ♦ ♦

वह धीरे-धीरे गेट से बाहर निकला और रात की गलियों में करीब एक घंटे तक चलता रहा, अस्पताल से दूरी बनाता हुआ। फिर वह कंबल ओढ़े हुए लोगों की लंबी कतार के आखिर में फुटपाथ पर लेट गया। उसे तुरंत नींद आ गई।

वह धुंधली और चिपचिपी सुबह में जागा। बिखरे-पुराने कपड़ों में लिपटे छोटे बच्चे, भोली-भाली आँखों वाले और गंभीर, अपने सोए हुए माता-पिता के बगल में गली में खेल रहे थे। चादरों की धुंधली कतारों से शरीर भूतों की तरह उठे और पानी के पंप के चारों ओर जमा लोगों की लंबी कतार में शामिल हो गए, जो कटोरे और खाली केरोसिन के डिब्बों में दिन भर के लिए पानी भर रहे थे। भारतीय दुकानदार भी फुटपाथ पर उनके साथ शामिल हो गए, नालियों में पेशाब कर रहे थे और सफेद मंकी पाउडर से अपनी उंगलियाँ साफ कर रहे थे।

मिशन के कार्यकर्ताओं ने रात भर में मारे गए लोगों के शवों को इकट्ठा किया और उन्हें टैक्सी स्टैंड के बाहर फेंक दिया, जबकि नीले रंग की पोशाक पहने एक कमजोर नन कतार के साथ-साथ चलती रही और उनमें से प्रत्येक के ऊपर क्रॉस का चिन्ह बनाती रही।

मिशेल ने सोचा, हार मानना कितना आसान है। लेकिन मैं बच जाऊंगा।

जोगिंदर की खातिर।

एड्रिएन की खातिर।

जैसे ही सूरज निकला, उसने पानी के पंप के नीचे अपना चेहरा धोया और शहर की ओर वापस चल दिया। एक घंटे के भीतर ही सोता हुआ शहर हॉर्न बजाते, मंत्रोच्चार करते धूल, धूप, यातायात, लोगों और धुएं के एक रंगीन दृश्य में बदल गया।

मिशेल किसी तरह बॉम्बे के केंद्रीय रेलवे स्टेशन, विक्टोरिया टर्मिनस तक पहुँच गया, जो एक गंदा विक्टोरियन गोथिक भवन था, जो अविश्वसनीय रूप से अलंकृत था, और चारों ओर भिखारियों और काले और पीले रंग की टैक्सियों की भीड़ से घिरा हुआ था। वह अफरा-तफरी के बीच से रास्ता बनाते हुए अंदर घुस गया। टर्मिनल यात्रियों से खचाखच भरा हुआ था, अमीर और गरीब सभी अपने सामान के साथ भीड़ में से जूझ रहे थे, या जहां भी जगह मिली वहीं लेट या बैठ गए थे, देरी और भीड़ से थक चुके थे। कुछ ही मिनटों में उसने बड़ी तेज़ी और कुशलता से सो रहे एक कनाडाई छात्र के बैग

को खाली कर दिया। टर्मिनल से निकलते ही उसके पास सौ कनाडाई डॉलर के ट्रैवलर्स चेक और एक सस्ता इंस्टामैटिक कैमरा था। उसने एक घंटे बाद उन्हें सड़क पर बेच दिया और अपने लिए कुछ नए कपड़े खरीदे - जींस, सैंडल और कढ़ाई वाली सफेद सूती कमीज़ - और फिर टर्मिनल के सामने एक रेस्तरां में झींगा करी और पाव भाजी की तीन प्लेटें चट कर लीं।
अब वह शुरू करने के लिए तैयार था।

♦ ♦ ♦

चार मिलियन लोगों के शहर में मिशेल जानता था कि वह केवल नाम के दम पर अपने पिता को कभी नहीं ढूंढ पाएगा, लेकिन उसे संदेह था कि साइगॉन और बॉम्बे टेलरिंग कंपनी जैसी कोई दूसरी कंपनी जरूर होगी।
दरअसल, दो थे। दोनों उसके पिता के थे। उसे उन्हें ढूंढने में दो दिन लगे, लेकिन आखिरकार उसने उन्हें ढूंढ लिया।

♦ ♦ ♦

सफेद सूती कमीज और नीली धोती पहने, चेचक के दाग वाले हिंदू युवक ने उसे संदेह भरी निगाहों से देखा। उसने साफ-सुथरी, ऑक्सफोर्ड जैसी अंग्रेजी में कहा, 'मेरे पिता यहां नहीं हैं। आप कौन हैं?'
मिशेल ने लड़के के कंधे के ऊपर से दर्जी की दुकान की धुंधली, ठंडी छाया में देखा। उसने एक छोटी, गोल-मटोल भारतीय महिला को देखा, जिसकी बाईं नाक से दो छोटे माणिक चमक रहे थे, और कुछ सिलाई करने वाली महिलाएं अपने काम में झुकी हुई थीं।
मिशेल ने सवाल को नजरअंदाज कर दिया। 'वह कहाँ है?'
‘वह दो दिन पहले साइगॉन वापस चला गया।’
‘साइगॉन?’ तो, वह यहाँ आया था। उसने अपनी निराशा को झटक दिया। उनकी आनंदमय मुलाकात में थोड़ी देरी होगी, बस इतना ही।
‘तुम कौन हो?’ युवक ने दोहराया।
'कोई नहीं,' मिशेल ने उत्तर दिया, और उसे खोखले व्यंग्य के साथ एहसास हुआ कि यह सच था।
लेकिन यह सब बदल जाएगा।

♦ ♦ ♦

उस दोपहर मिशेल बैक बे के दक्षिणी छोर पर स्थित कोलाबा के सस्ते होटलों और रेस्तरांओं के भूलभुलैया से होते हुए आगे बढ़ा। यह शहर का यात्रियों का इलाका था, जहाँ चमकीले पैटर्न वाले कपड़े, हेडबैंड, मोतियों और कंगन पहने हिप्पियों की बस्ती बसी हुई थी। मिशेल उनसे बेहद प्रभावित था।

उसने आज तक जितने भी पश्चिमी लोगों को देखा था, वे सब धनी, आत्मविश्वासी और घमंडी थे। ये नौजवान उनसे अलग थे। उनमें से कुछ युवा और मासूम चेहरे वाले थे, जबकि कुछ नशे और जीवन के उतार-चढ़ाव से थके-हारे और कठोर दिख रहे थे। वे किसी मंझे हुए जेबकतरे के लिए आसान शिकार हो सकते थे, लेकिन उसने उन्हें अपनी मौजूदा समस्या का समाधान मानने से इनकार कर दिया।

अब बात सिर्फ जिंदा रहने की नहीं थी। वह बंबई में नहीं रुक सकता था। पुलिस उसे ढूंढ रही होगी, और अगर उसे वापस जेल भेज दिया गया तो वह जिंदा नहीं निकल पाएगा। इस बार नहीं। उसे पैसों की जरूरत थी, और बहुत सारे पैसों की।

♦ ♦ ♦

लाल गुंबद वाला ताज होटल गेटवे ऑफ इंडिया के सामने स्थित था; यह मुंबई का प्रतिष्ठित होटल था। उत्सव के रंग में सजी पगड़ी पहने कुली दिन-रात होटल के प्रांगण में खड़ी मर्सिडीज और बीएमडब्ल्यू कारों की देखभाल में मशगूल रहते थे। रेशमी सूट पहने तेल-समृद्ध अरब और पश्चिमी व्यापारी लॉबी में टहलते थे। यह स्थान धन-दौलत से भरपूर था।

मिशेल ने अपने हाथ जेब में डाले और हार्बर बार तक जाने वाली विशाल ग्रेनाइट की सीढ़ियों पर चढ़ गया। वह बैठ गया, गोल्डन ईगल बियर मंगवाई और इंतज़ार करने लगा। खिड़कियों से एलिफेंटा द्वीप और बंदरगाह पर लंगर डाले जंग खा रहे जहाजों का मनोरम दृश्य दिखाई दे रहा था। उसने सोचा कि क्या एसएस सियाम भी उनमें से एक था।

उसने आत्मनिरीक्षण किया: दुनिया में उसके पास केवल मैंड्रैक्स के चूर-चूर अवशेष और साइगॉन की गलियों में सीखी गई अनूठी प्रतिभाएँ ही बची थीं। उसने सोचा कि ये पर्याप्त से भी अधिक होंगी।

उसने कमरे के उस पार देखा। कोने में एक लड़की बैठी उसे देख रही थी। जैसे ही उसने उसे देखा, वह मुँह फेरकर दूसरी तरफ देखने लगी, लेकिन अब तक वह इतना समझ चुका था कि उस नज़र का क्या मतलब था। वह उठा और उसके पास गया।

♦ ♦ ♦

एलाना रेगन पारंपरिक रूप से सुंदर लड़की नहीं थी। उसकी नाक शायद थोड़ी चौड़ी थी और उसके भूरे बाल काले रंग में रंगे हुए थे। लेकिन प्रकृति ने अन्य तरीकों से इसकी भरपाई कर दी थी; उसकी कमर पतली थी और स्तन बहुत सुडौल थे। उसने बहुत तंग सफेद टी-शर्ट पहनकर उनके प्रभाव को और भी उभारना सीख लिया था। इस स्पष्ट बेबाकी के बावजूद, बैटन रूज में एक विधवा महिला की इकलौती बेटी के रूप में अलाना रेगन की गुप्त परवरिश के कारण वह पुरुषों के आसपास कुछ हद तक शर्मीली हो सकती थी। उसने अपनी माँ के नक्शेकदम पर चलते हुए स्थानीय अस्पताल में नर्स का पेशा अपनाया था।

लेकिन जब अलाना तेईस साल की हुई, तो उसने ओमान में एक अरब तेल शेख की निजी नर्स के पद के लिए आवेदन किया और उसे स्वीकार कर लिया गया। उसकी माँ को यह जानकर बहुत दुख हुआ। उनकी आपत्तियों के बावजूद, वह बैटन रूज छोड़कर अगले बारह महीने मध्य पूर्व में बिताने चली गई। उसे वहाँ का हर पल बहुत अच्छा लगा। अरब पुरुषों ने उसे किसी फिल्म स्टार जैसा महसूस कराया।

जब उसका अनुबंध समाप्त हुआ, तो उसने लुइसियाना लौटने से पहले दुनिया को थोड़ा और देखने का फैसला किया। बेरूत में उसे एक राजनयिक के बेटे से थोड़े समय के लिए, लेकिन बेहद जोशीला प्यार हो गया था। वह एक आकर्षक स्पेनिश युवक था, जिसकी आवाज़ भारी थी, त्वचा मीठी खुशबू वाली थी और पलकें मोहक थीं। वह उन सभी पुरुषों से अलग था जिन्हें वह जानती थी। या कम से कम उसे ऐसा ही लगा। लेकिन घर के उन अनाड़ी और शराब के नशे में चूर लड़कों की तरह, उसने भी उसे एक इस्तेमाल किए हुए टिशू पेपर की तरह फेंक दिया। उसके जीवन का प्यार सिर्फ तीन सप्ताह तक चला।

क्या मैं कभी नहीं सीख पाऊंगी? उसने खुद से पूछा। अगर कमरे में कोई उपयोगकर्ता था, तो वह उसी पर निशाना साधती हुई प्रतीत हुई।

वह ताजमहल देखने के लिए भारत आई थी। फिर वह धीरे-धीरे दक्षिण की ओर चली

गई, लुइसियाना में अपने नियमित जीवन में लौटने को टालती रही। जब वह बॉम्बे पहुँची, तो उसने मशहूर ताज होटल में एक रात रुकने का फैसला किया, हालाँकि उसने सुना था कि वहाँ एक रात का किराया एक भारतीय मज़दूर की साल भर की कमाई से भी ज़्यादा होता है। लेकिन वह इसे वहन कर सकती थी। उसने ओमान में खूब पैसा कमाया था।

अपने कमरे में चेक-इन करने के बाद, वह कुछ देर अपोलो बंडर के आसपास घूमी, लेकिन आखिरकार, इतनी थकी हुई और इतनी गर्मी से परेशान होकर कि हर कदम पर उसका पीछा करने वाले फेरीवालों और भिखारियों से तंग आकर, वह एक ठंडे पेय के लिए हार्बर बार में वापस चली गई।

उसने नीली जींस पहने उस युवक को देखते ही पहचान लिया। भला कौन नहीं पहचानता? एक तो वह बेहद आकर्षक था, उसकी त्वचा सांवली, घने काले बाल और सम्मोहक भूरी आँखें थीं। लेकिन वह कोई साधारण लड़का भी नहीं था; ऐसा लग रहा था जैसे कुछ समय पहले ही उसकी किसी लड़ाई हुई हो और उसका चेहरा अभी पूरी तरह से ठीक नहीं हुआ था। इसी वजह से वह खतरनाक दिख रहा था।

यह एक ऐसा संयोजन था जिसका विरोध करना उसके लिए हमेशा से कठिन रहा था। वह बार में अकेले बीयर की बोतल लिए बैठा था और अलाना सोच रही थी कि वह कौन है, या क्या है। वह यूनानी हो सकता था, लेकिन उसकी आँखें बहुत छोटी थीं। वह जापानी भी हो सकता था, लेकिन वह बहुत लंबा था। वह भारतीय भी हो सकता था, शायद कोई फिल्म स्टार, उन फिल्मी सितारों की तरह जो मालाबार हिल के उन सफेद महलों में रहते थे। लेकिन फिल्मी सितारों के चेहरे पर ऐसे निशान नहीं पड़ते। अचानक उसने पीछे मुड़कर उसे देखा और मुस्कुराया। सहज ही उसने नज़रें फेर लीं। कोई बात नहीं, वह फिर भी उसके पास आ गया।

‘हैलो,’ उसने कहा, उसकी आवाज में फ्रेंच का स्पष्ट लहजा था, ‘क्या आप अकेले हैं?’

उसने सिर हिलाया।

वह बैठ गया, उसके सामने मेज पर रखा स्टुवेसेंट सिगरेट का पैकेट उठाया और बिना पूछे ही उसमें से एक सिगरेट निकाली। उसने होटल के कमरे से लाई हुई माचिस की गत्ते वाली माचिस से उसे जलाया।

‘मिशेल,’ उसने कहा।

उसका गला अचानक बहुत सूख गया। 'अलाना।'

उसने उसे एक बेहद खूबसूरत मुस्कान दी और उसकी ओर झुक गया। 'बताओ, अलाना,' उसने धीरे से कहा, 'क्या तुम भाग्य में विश्वास करती हो?'

♦ ♦ ♦

'कमरा नंबर 210,' मिशेल ने नींद में डूबी आवाज में फोन पर कहा। 'दो वेस्टर्न स्टाइल के नाश्ते और एक बड़ा बर्तन कॉफी भेज देना।'

उसने फोन नीचे रखा और नग्न अवस्था में बाथरूम की ओर चला गया। उसने गर्म पानी से लंबे समय तक स्नान किया, अपना सिर चिकनी टाइलों पर टिकाया और आँखें कसकर बंद कर लीं।

दरवाजे पर दस्तक हुई। मिशेल ने अपनी कमर पर एक तौलिया लपेटा और, अभी भी पसीने से भीगा हुआ, एक सफेद वर्दी पहने एक बुजुर्ग भारतीय से नाश्ते की थाली ले ली।

'एक पल रुको,' मिशेल ने कहा। वह अलाना के पर्स के पास गया, दो छोटे सिक्के निकाले और उसकी तरफ उछाले। उसने एक सिक्का पकड़ लिया, दूसरा कालीन पर गिर गया। मिशेल को उसे सिक्के उठाने के लिए भागते हुए देखकर मज़ा आ रहा था। उसने दरवाजा बंद किया और कमरे के कोने में रखी मेज के पास गया। उसने टाइम्स ऑफ इंडिया की एक नई प्रति खोली। सुबह का समय था और ससून बंदरगाह पर मछुआरे अपनी लाल और सफेद पाल वाली नावों से अपना पकड़ा हुआ माल उतार रहे थे।

मिशेल ने अखबार खोला और साइगॉन से खबरें ढूंढने लगा। वियतनाम में टेट पर्व था। इस साल युद्धविराम सिर्फ छत्तीस घंटे के लिए हुआ था। वह उसी सुबह खत्म हो गया था। खबरों में दोनों पक्षों की ओर से युद्धविराम तोड़ने के वही पुराने आरोप-प्रत्यारोप थे।

मिशेल पढ़ते हुए, अपने नाश्ते में परोसे गए दो तरह के ब्रेड, अंडे, बेकन और अनाज को धीरे-धीरे खा रहा था। उसने चांदी के अलंकृत बर्तन से अपने लिए एक और कप कॉफी डाली और बिस्तर के पास जाकर खड़ा हो गया।

लड़की मृत थी। वह पेट के बल लेटी हुई थी, उसका एक हाथ बिस्तर के किनारे से लटका हुआ था। उसके होंठों पर नीलेपन के निशान को छोड़कर, ऐसा लग रहा था मानो वह सो रही हो।

मिशेल ने कंधे उचका दिए। यह तो अफसोस की बात थी।
उसे लगा कि उसने उसकी शराब में शायद ज़रूरत से ज़्यादा मैंड्रैक्स मिला दिया था। ज़ाहिर है, वह शराब फ्रांसीसी थी और बेहद महंगी थी, लेकिन उसने उसे खरीदने पर ज़ोर दिया था। अंत में उसे उम्मीद से कहीं ज़्यादा कीमत चुकानी पड़ी।
उसने आराम से कपड़े पहने, फिर ड्रेसिंग टेबल पर गया और उसके चमड़े के कंधे वाले बैग को खंगाला, और उसका सारा सामान पॉलिश की हुई सतह पर बिखेर दिया।
उसने ट्रैवलर्स चेक और चार सौ रुपये नकद अपनी जेब में रख लिए।
यहां तक कि दुनिया भर की यात्रा का हवाई टिकट भी था। एकदम सही।
फिर, उसे असली खजाना मिल गया; उसने पासपोर्ट के चिकने हरे कवर को एक प्रेमी की तरह कोमलता से सहलाया और उसे अपनी जींस की पिछली जेब में रख लिया।
'धन्यवाद, अलाना,' उसने ज़ोर से कहा। 'बहुत ही आनंददायक शाम रही।'
पता नहीं क्यों, उसे अपनी माँ की याद आ गई। वह दुबली-पतली, सांवली और बेहद खूबसूरत थी। यह लड़की इनमें से किसी भी गुण की नहीं थी।
फिर भी, उसे किसी न किसी तरह इस बात की खुशी थी कि वह मर गई थी।

♦ ♦ ♦

अगली सुबह तड़के, पैन एम का एक 747 विमान साइगॉन के टैन सोन न्हुत हवाई अड्डे पर उतरा, और अलाना रेगन नाम की एक अमेरिकी नागरिक तपती हुई रनवे पर उतरी। टर्मिनल के अंदर, पासपोर्ट नियंत्रण पर वर्दीधारी वियतनामी अधिकारी ने काउंटर के दूसरी तरफ खड़े लंबे, काले बालों वाले व्यक्ति से यह नहीं पूछा कि उसके पासपोर्ट में लड़की का नाम क्यों है।
विदेशी नाम उसके लिए समझ से परे थे।
कुछ मिनट बाद, मिशेल अपने पिता के साथ एक आनंदमय पुनर्मिलन की उम्मीद में टैन सोन न्हुत के बाहर एक टैक्सी में चढ़ गया।

अध्याय 20

Saigon
टेट, चंद्र नव वर्ष। वियतनामी लोगों के लिए यह साल का सबसे बड़ा त्योहार था,

क्रिसमस और ईस्टर दोनों को चार दिनों में समेटे हुए। वियतनामी लोग व्यक्तिगत जन्मदिन नहीं मनाते थे; टेट के दौरान, हर कोई एक साल बड़ा हो जाता था।
कोई काम पर नहीं गया, बाजार बंद थे। घर फूलों से भरे हुए थे और सभी ने नए कपड़े पहने थे। यहां तक कि सड़क पर रहने वाले बच्चे भीख मांगकर या चोरी-छिपे नई कमीज या नई पैंट पाने की कोशिश कर रहे थे।
चारों ओर पटाखों की तेज़ आवाज़ गूंज रही थी, जो बुरी आत्माओं को भगाने के लिए जलाए जाते थे। व्यापारी अपनी दुकानों के बाहर पटाखों की लंबी-लंबी लड़ियाँ टांगने में बड़ी रकम खर्च कर रहे थे, इस विश्वास के साथ कि जितने ज़्यादा पटाखे होंगे, आने वाले साल में उनका कारोबार उतना ही बढ़ेगा।
टेट: यह उत्सव मनाने और दावत करने का समय था। अपने परिवार से मिलने और पुराने सभी कर्ज चुकाने का समय। अपने पूर्वजों का सम्मान करने का समय।

♦ ♦ ♦

वह एक तपती, सुनसान दोपहर थी। फूलों की गली, गुयेन ह्यू स्ट्रीट, रंगों से सराबोर थी। बम के गड्ढों, पत्तों से रहित जंगलों के विशाल विस्तार और कांटेदार तारों से घिरे धान के खेतों से भरे इस देश में हर साल इन फूलों का खिलना किसी चमत्कार से कम नहीं था।
मिशेल ने कॉन्टिनेंटल होटल में एक सुइट बुक किया। उस शाम जब वह सोने गया तो उसे दूर से गोले बरसने की हल्की-हल्की आवाज़ सुनाई दे रही थी, लेकिन छत के पंखे की धीमी आवाज़ में वह लगभग दब गई थी। युद्ध एक बुरी आदत की तरह था, और ऐसा लग रहा था जैसे बहुत दूर चला गया हो। अब उसे इसकी आदत हो चुकी थी। सब इसे साइगॉन नाइट म्यूजिक कहते थे।
उसने वीसी द्वारा साइगॉन पर होने वाले संभावित हमले की अफवाहें सुनी थीं, लेकिन उसने उन्हें नजरअंदाज कर दिया था।
उन्हें समझ नहीं आ रहा था कि यह कैसे संभव है।

♦ ♦ ♦

वह सुबह करीब दो बजे बाहर गली से आ रही तेज, चाबुक जैसी आवाज़ों से जाग उठा। पहले तो उसे लगा कि ये पटाखे हैं, लेकिन फिर एक और ज़ोरदार धमाका हुआ

और उसके बेडरूम की खिड़की सफेद होकर टूट गई, जिससे कांच के टुकड़े बिस्तर पर बिखर गए। मिशेल बिस्तर से लुढ़ककर ज़मीन पर लेट गया।
चौक पर एक और धमाका हुआ और दूसरे धमाके में पर्दे लहरा उठे।
नीचे झुककर, मिशेल बालकनी में गया और सड़क पर नीचे झाँका। उसने देखा कि काले पजामे पहने और एके-47 राइफल लिए हुए आधा दर्जन वियतनामी एक मैनहोल के ढक्कन से ऐसे बाहर निकल रहे थे जैसे चींटियाँ टूटे हुए घोंसले से निकलती हैं।
वे अमेरिकी दूतावास की दिशा में भाग गए।
वियत कांग! तो इस बार अफवाहें सच निकलीं।
उसने सड़क के उस पार से गोलियों की आवाज़ सुनी, और एक वियत कांग सैनिक को लड़खड़ाकर गिरते देखा। चौक में एक ग्रेनेड फटा, और उसका एक छर्रा उसके सिर से कुछ ही फीट ऊपर होटल की दीवार में जा लगा।
मिशेल रेंगते हुए अंदर लौटा और अंधेरे में अपने कपड़े ढूंढने लगा। उसे लगा कि आज रात शहर के ज़्यादातर लोग सड़कों पर हो रही घटनाओं से डरे हुए होंगे; लेकिन वह आम लोगों जैसा नहीं था। यहाँ मौका था। ऐसी रात में, जब हर तरफ़ गोलियां और धमाके हो रहे हों, कोई भी हत्या करके बच सकता है।

♦ ♦ ♦

भोर होते ही साइगॉन की सड़कें एकदम सुनसान हो गईं। हॉर्न, साइकिल की घंटियों और फेरीवालों के शोरगुल की जगह अब छोटे हथियारों की गोलियों की आवाज और मोर्टार व रॉकेटों के अचानक, कान फाड़ देने वाले धमाकों ने ले ली थी। जोगिंदर ने एक पलटी हुई जीप के पीछे दुबके मरीन सैनिकों के एक दस्ते को देखा। काले पजामे पहने कुछ धुंधली आकृतियाँ सड़क पर आगे जाकर एक संकरी गली में घुस गईं।
जोगिंदर गलियारे में इधर-उधर भागा, उसके दाहिने हाथ में एक बड़ा सा सफेद रुमाल फड़फड़ा रहा था। हमले के समय वह पाँच ब्लॉक दूर स्थित अपने पसंदीदा वेश्यालय में सो रहा था। अगर ज़रूरत पड़ती तो वह पूरे सप्ताह वहीं दुबका रहता, लेकिन उसे अपनी दुकान को बिना किसी की निगरानी के छोड़ने का डर था।
ऊपर स्थित छोटे लोहे के तिजोरी में बीस मिलियन पियास्त्र थे।
एक सिट्रोएन कार सड़क के बीचोंबीच तिरछी खड़ी थी, उसकी बॉडी गोलियों से छलनी हो चुकी थी। जोगिंदर फुटपाथ पर पड़े तीन वीसी सैनिकों के शवों के ऊपर से

गुजरा। मक्खियों का एक झुंड हवा में उड़ उठा और इस व्यवधान से गुस्से में भिनभिनाने लगा। जोगिंदर ने देखा कि उन्होंने सफेद सूती कमीज पहनी हुई थी और काले पजामे के नीचे गहने भी। वे जरूर कैडर रहे होंगे, आम साइगॉनवासी जो लड़ने के मौके का इंतजार कर रहे थे।

उसने एक आदमी के गले में सोने की चेन की चमक देखी और झुककर उसे खींचकर उतार दिया, फिर जल्दी से आगे बढ़ गया।

अमेरिकी दूतावास की दिशा से गोलीबारी हो रही थी। उसे मुख्य सड़क से हटना होगा। घर पहुँचने में उसे ज़्यादा समय लगेगा, लेकिन शायद यह ज़्यादा सुरक्षित होगा। तू-दो नदी पर वह वियत कांग के स्नाइपरों और साथ ही घबराए हुए मरीन सैनिकों के लिए एक आसान निशाना था।

मुझे घर पहुंचा दो, उसने मन ही मन प्रार्थना की। हे गणेश, मुझे घर पहुंचा दो और मैं आपकी महिमा में एक महान बलिदान दूंगा!

जब वह आखिरकार अपनी दुकान पर पहुँचा तो उसने सड़क के प्रवेश द्वार से अंदर जाने का जोखिम नहीं उठाया। इसके बजाय वह बगल के छोटे से आंगन में खुलने वाले लकड़ी के गेट की ओर गया। उसने मुट्ठियों से उस पर प्रहार किया। 'साई, मैं जोगिंदर हूँ! मुझे अंदर आने दो!'

अंदर से कोई जवाब नहीं आया। उसने हैंडल को आज़माया और हैरानी से देखा कि वह खुल गया। वह डर के मारे लगभग बेहोश हो गया। उसे पूरा यकीन था कि पिछली शाम बाहर जाते समय उसने दरवाजा बंद कर दिया था।

जबरदस्ती घुसकर तोड़फोड़ की गई थी। रात के समय कोई जबरदस्ती अंदर घुस गया था।

वियत कांग!

उसकी पहली प्रतिक्रिया भागने की थी। लेकिन कहाँ भागे?

और तिजोरी का क्या होगा?

उसने पैर से दरवाजा धीरे से खोला। वह आधा खुला और रुक गया। कोई चीज़ उसे पूरी तरह खुलने से रोक रही थी। उसने अंदर झाँका। साईं का एक बेटा, उसका सबसे बड़ा बेटा, ज़मीन पर औंधा पड़ा था।

हर जगह खून ही खून था।

जोगिंदर ने अपना रुमाल मुंह पर रखा और उल्टी करने लगा।

‘जोगिंदर! ऊपर आओ!’
वह हैरानी से पीछे हट गया। यह साई थी। वह ऊपर थी।
‘क्या हो रहा है?’ वह चिल्लाया।
कुलपति यहाँ थे! जल्दी!
‘क्या वे चले गए?’
'हां, अब सुरक्षित है। जल्दी करो!'
वह पीछे की सीढ़ियों से ऊपर भागा और एक और शव से टकराकर गिर पड़ा। भय से कांपते हुए उसने अपने हाथों पर लगे खून के धब्बे को देखा।
बर्बर लोग। उन्होंने दोनों बच्चों की हत्या कर दी थी।
‘साई?’
‘जोगी, मेरी मदद करो!’
शायद उन्होंने उसे बांध दिया हो, उसने सोचा। क्या उन्होंने उसे यातना दी और उससे जबरदस्ती पैसे का पता पूछा?
उसने अपने रूमाल से खून पोंछा और लड़खड़ाते हुए सीढ़ियों से चढ़कर अपने कार्यालय तक पहुंचा।
साईं अपनी डेस्क के पीछे बैठी थी, उसका चेहरा पीला पड़ गया था, चेहरे पर अजीब सा भाव था। 'क्या हुआ?' उसने पूछा।
उसने उसे कोई जवाब नहीं दिया।
उसने उसकी बात अनसुनी कर दी और तेज़ी से कमरे के उस पार तिजोरी की ओर भागा। तिजोरी अभी भी मज़बूती से बंद थी। उसने राहत की सांस ली। उसे डर था कि कहीं वीसी ने उसे धमाके से खोलने की कोशिश न की हो।
उसे अपने सिर के निचले हिस्से में बने छोटे से गड्ढे में कुछ सख्त चीज के धंसने का एहसास हुआ। तभी उसे अपने कान के बिल्कुल पास एक जानी-पहचानी आवाज सुनाई दी। 'पिताजी, आपको फिर से देखकर बहुत अच्छा लगा।'

♦ ♦ ♦

‘उस कुर्सी पर बैठ जाओ।’
‘मिशेल?’
‘क्या मुझे देखकर आपको आश्चर्य हुआ?’

जोगिंदर को लगा कि उसका पेट खराब होने वाला है। लेकिन ऐसा होना नामुमकिन था; मिशेल बंबई बंदरगाह की जेल में था। वहाँ से कोई कभी बाहर नहीं निकल पाता था।

‘बैठ जाओ,’ मिशेल ने दोहराया।

उसके पैर जवाब दे रहे थे, इसलिए वह रेंगने लगा। 'रास्ते से हट जाओ!' मिशेल ने कहा, और साई ने वैसा ही किया जैसा उसे कहा गया था, कमरे के एक कोने में पीछे हट गई, राहत महसूस करते हुए कि अब वह वह नहीं थी जिस पर वह पागल आदमी अपनी बंदूक ताने हुए था। मिशेल ने जोगिंदर को कॉलर से पकड़ा और उसे कुर्सी पर पटक दिया।

उसके हाथ में वह सर्विस रिवॉल्वर थी जो उसने तू डो स्ट्रीट पर एक मृत एआरवीएन सैनिक के होल्स्टर से निकाली थी। उसने रिवॉल्वर का हैमर पीछे खींचा और बैरल को अपने पिता की आंखों के बीच में घुसा दिया।

'नहीं!' जोगिंदर चिल्लाया। 'कृपया!'

उसकी पतलून के जांघ वाले हिस्से पर एक दाग फैल गया और उसकी कुर्सी के नीचे पानी का एक छोटा सा गड्ढा बन गया।

मैं कुछ भी करूँगा। क्या आपको पैसे चाहिए? मैं आपको दे दूँगा...

‘चुप रहो।’ मिशेल ने साई की ओर देखा। ‘इधर आओ,’ उसने कहा। उसने दुकान में कपड़े के रोल में से एक तार का टुकड़ा निकालकर साई की ओर फेंका। ‘इसके कलाइयों को पीछे की ओर बांध दो। ध्यान रखना कि यह कसकर बंधा हो। अगर इसकी उंगलियां सफेद नहीं पड़ीं, तो मैं तुम्हारी एक उंगली में गोली मार दूंगा।’

साई ने वैसा ही किया जैसा उसे कहा गया था। दर्जी दर्द से चीख उठा। 'तुम मुझे चोट पहुँचा रही हो, कमीनी!'

मिशेल ने साई को एक कसी हुई, भावहीन मुस्कान दी। 'मुझे नहीं लगता कि तुम उसे मुझसे ज़्यादा पसंद करते हो, है ना? अब दीवार के सहारे पीछे हट जाओ।'

वह पीछे हट गई, उसकी निगाहें बंदूक से हटी ही नहीं। उसने इस दरिंदे को अपने बेटों को मारते हुए देखा था। वह जानती थी कि वह उसके साथ भी ऐसा करने से नहीं हिचकिचाएगा।

मिशेल डेस्क के कोने पर बैठ गया।

‘कृपया... मिशेल...’

‘चुप रहो।’ मिशेल ने अपनी बात मनवाने के लिए उसे बंदूक की नली से मारा। उसके सिर से खून बहने लगा। जोगिंदर धीरे-धीरे रोने लगा।
मैंने अक्सर खुद से पूछा है कि तुमने ऐसा क्यों किया। अब मुझे पता चल गया है। ऐसे पिता बहुत कम होते हैं जिन्हें अपने बच्चों को दो बार छोड़ने का मौका मिलता है।
‘मेरे पास पैसा है। तुम्हें कितना चाहिए? मुझे मारकर तुम्हें कुछ नहीं मिलेगा। क्या तुम्हें समझ नहीं आ रहा?’
'शायद।'
'बिल्कुल सही। मैं यह नहीं मानता कि आपको मुझसे नफरत करने का कोई कारण नहीं है, लेकिन पैसों के बारे में सोचिए। आपको कितने पैसे चाहिए? बस अपनी कीमत बता दीजिए।'
‘तिजोरी में कितने पैसे हैं?’ मिशेल ने पूछा।
जोगिंदर ने बड़ी मुश्किल से अपनी बात कही। बीस मिलियन पियास्त्र! बेशक, उसकी जान उससे कहीं ज़्यादा कीमती थी, लेकिन उसे उसे टालने की कोशिश करनी ही थी।
'तुम्हें क्या चाहिए?'
‘तुम्हारे पास जो कुछ भी है।’
मेरा पैसा! मैं उसे इतना सारा पैसा नहीं लेने दे सकता! यह मेरा है!
मिशेल मुस्कुराया और बंदूक की नली को जोगिंदर के गुप्तांग पर रख दिया।
तिजोरी खोलो!
साई स्टील के बक्से के पास घुटनों के बल बैठ गई, और जोगिंदर ने उसे संख्याएँ सुनाईं। उसकी आवाज़ कांप रही थी। बीस मिलियन पियास्त्र!
‘सातवें-तीन - दाईं ओर। पचानवे - दाईं ओर। तिरसठ - बाईं ओर। अब वापस। अस्सी-आठ।’
उसने दरवाज़े के पुर्ज़ों के खटकने और गिरने की आवाज़ सुनी। दरवाज़ा खुल गया।
'सब कुछ खुलकर सामने रखो,' मिशेल ने कहा।
साई ने बात मान ली और नोटों के बंडलों को ईंटों की तरह मेज पर ढेर कर दिया।
सारा पैसा, सारी मेहनत, सब बेकार हो गया। इतने सालों बाद उस कमीनी फ्रांसीसी वेश्या ने उससे सब कुछ छीन लिया था।
मिशेल ने साई की ओर एक एयरलाइन बैग फेंका। उसने उससे कहा, 'इसे उसमें डाल दो। उसका पासपोर्ट भी।'

‘प्लीज, यह सब नहीं,’ जोगिंदर ने सिसकते हुए कहा।
‘उसकी अंगूठियां उतार दो,’ मिशेल ने कहा।
इस निर्दयी कमीने से विनती करना व्यर्थ था। लेकिन अगर वह उसे जिंदा रहने दे तो ठीक है।
साई ने अपने बाएं हाथ की छोटी उंगली से मोटा पन्ना-तराशा हुआ माणिक और दूसरे हाथ की तीसरी उंगली से माणिक की अंगूठी निकाली।
अगर आप इन्हें लेकर चले जाएंगे तो मैं वादा करता हूँ कि मैं—’
‘यह कोई कर्ज नहीं है। क्या आपको सच में ऐसा लगा? यह मेरी विरासत है, बस इतना ही।’
‘कृपया, मिशेल…’
‘आपने मुझे नरक में भेज दिया, फादर। अगर ननें न होतीं तो मैं भूखा मर जाता। मैंने अपना अधिकांश जीवन बम से तबाह इमारतों में चूहों के बीच सोते हुए बिताया, जो मेरे पैर कुतरते थे। फिर भी, यह भारतीय जेल से बेहतर था। क्या आप जानते हैं कि उन्होंने मेरे साथ क्या किया, फादर? जेलर ने मुझे नग्न अवस्था में एक मेज पर फैलाकर दो घंटे तक रबर की नली और पीतल के बेल्ट बकल से पीटा।’
मिशेल के हाथ में बंदूक कांप रही थी।
'नहीं,' जोगिंदर ने कहा, और उसके निचले होंठ से लार की एक धार निकली और उसकी ठुड्डी पर टपक गई।
साई ने कागजी नोटों के मोटे बंडलों को एयरलाइन बैग में पैक करना समाप्त किया।
मिशेल ने उससे बैग छीन लिया और बंदूक जोगिंदर के सिर पर ताने रखी। 'किस तरह का आदमी अपने ही बेटे के साथ ऐसा कर सकता है?'
जोगिंदर ने बोलने की कोशिश की, लेकिन उसके मुंह से बस एक हल्की सी चीख निकली। उसे लगा, मुझे उसे रोकना ही होगा। उसके मन में एक अस्पष्ट योजना बनी, जिसमें वह अपनी कुर्सी से उछलकर कमरे के उस पार छलांग लगाएगा और बंदूक छीन लेगा। लेकिन उसके पैर उसका साथ नहीं दे रहे थे। वह जैसे लकवाग्रस्त हो गया था।
‘पिताजी, कितनी ही रातें मैं जागते हुए इस पल का सपना देखती रही।’
उन्होंने आँखें मूँद लीं।
एक जोरदार धमाका हुआ और जोगिंदर दर्द के इंतजार में चीख उठा।

कुछ नहीं।
उसने अपनी आँखें खोलीं। मिशेल हंस रहा था। 'बस एक ग्रेनेड था, पिताजी। पश्चिमी क्रॉस वालों की अपनी लड़ाई है। मेरी अपनी।'
उसने साई की ओर देखा, रिवाल्वर का निशाना साधा और लापरवाही से उसके सिर में गोली मार दी।
जोगिंदर ने फर्श पर उसकी एड़ियों की खड़खड़ाहट सुनी और उसे एक भयानक दुर्गंध का एहसास हुआ। उसे समझ आ गया कि उसने खुद को गंदा कर लिया है।
सड़क पर एक ग्रेनेड फटा। मिशेल ने कहा, 'इसे सुनो। वीसी पूरे शहर पर कब्ज़ा कर रहे हैं। हर जगह मुर्दे और घायल पड़े हैं। ऐसा लगता है कि मैं ही अकेला हूँ जो इस उत्सव को गंभीरता से लेता हूँ, पूरे साइगॉन में मैं ही अकेला हूँ जो अमेरिकियों के साथ युद्ध को भूलकर अपने पूर्वजों को उनका सम्मान देना चाहता है।'
मिशेल ने बंदूक को कमर के पास नीचे की ओर रखा। उसने जोगिंदर के दाहिने घुटने में एक गोली मारी और फिर, जब वह ज़मीन पर दर्द से कराह रहा था, तो उसने लापरवाही से दूसरे घुटने में एक और गोली मार दी।
मिशेल ने एयरलाइन बैग उठाया और युद्धग्रस्त सड़कों पर सीढ़ियों से नीचे उतर गया।

♦ ♦ ♦

लगभग एक सप्ताह बाद ही टैन सोन न्हुत से नागरिक विमानों को दोबारा उड़ान भरने की अनुमति मिली। इस दौरान मिशेल ने कॉन्टिनेंटल होटल में शरण ली। शहर के दूसरे हिस्से में जोगिंदर कृष्णन अस्पताल के बिस्तर पर पड़े थे, उन्हें भारी मात्रा में बेहोशी की दवा दी गई थी। जब भी उन्हें होश आता, वे डॉक्टरों और नर्सों को उस आदमी के बारे में बताते, जिसने उनके परिवार की हत्या कर दी थी और फिर उन्हें बांधकर यातनाएं दीं। किसी ने भी उनकी बात पर ध्यान नहीं दिया। चिकित्सा कर्मचारियों का मानना था कि यह तेज़ नशीली दवाओं का दुष्प्रभाव था। खैर, पुलिस और सेना वियत कांग के बचे हुए गुटों का पता लगाने में पूरी तरह से व्यस्त थे।
और इस तरह अलाना रेगन बिना किसी परेशानी के साइगॉन से निकलकर कैथे पैसिफिक की फ्लाइट से हांगकांग के लिए रवाना हो गईं। कौलून पहुँचकर मिशेल ने पेनिनसुला होटल के एक आलीशान सुइट में कमरा बुक किया और अपनी अगली चाल के बारे में सोचते हुए बढ़िया फ्रेंच शैम्पेन के साथ अपनी विरासत का जश्न मनाया।

उन्होंने खुद से दो वादे किए:
वह फिर कभी गरीब नहीं होगा, कभी नहीं।
उसने दूसरा वादा यह किया कि वह अपनी माँ को ढूंढ निकालेगा। चाहे वह दुनिया में कहीं भी हो, वह उसे खोज निकालेगा। चाहे इसके लिए कितनी भी कीमत चुकानी पड़े।

भाग चार

पुनर्मिलन 1972

अध्याय 21

पेरिस
कुछ लोग सोचते हैं कि इंटरपोल एक अंतरराष्ट्रीय पुलिस बल है, जिसका कार्यक्षेत्र राष्ट्रीय सीमाओं से परे है। सच्चाई इससे कोसों दूर है। इसे अधिक सटीक रूप से एक अंतरराष्ट्रीय समन्वय संस्था के रूप में वर्णित किया जा सकता है, जो पुलिस कार्य के लिए समर्पित है।
हालांकि, इसके एजेंट गिरफ्तारियां करने या संदिग्धों से पूछताछ करने में भी असमर्थ हैं; वे केवल अन्य देशों की पुलिस बलों के सलाहकार और मध्यस्थ के रूप में कार्य करते हैं।
इसका मुख्यालय सेंट क्लाउड में है, जो पेरिस का एक उपनगर है और एफिल टॉवर से लगभग तीन किलोमीटर दूर है। यह लॉन्गचैम्प्स रेसकोर्स के पास एक साधारण से दिखने वाले ग्रे रंग के ऑफिस ब्लॉक में स्थित है। पास की पटरियों पर कभी-कभार गुजरने वाली कम्यूटर ट्रेन की हल्की गड़गड़ाहट ही इस शांत, हरे-भरे वातावरण को भंग करती है। इमारत में एकमात्र थोड़ी असामान्य बात इसकी छत पर लगे रेडियो एंटेना और ट्रांसमीटरों की भरमार है।
अंदर से, कार्यालय दुनिया भर के पुलिस स्टेशनों की तरह सादगीपूर्ण और गुमनाम दिखता है: कागजों से लदे धातु के डेस्क, प्लास्टिक की कुर्सियाँ और तंग छोटे कमरे।

इस संगठन के तीन विभाग हैं: सामान्य प्रशासन, अनुसंधान एवं अध्ययन, और अंतर्राष्ट्रीय पुलिस सहयोग। यह अंतिम विभाग आगे पाँच समूहों में विभाजित है: अंतर्राष्ट्रीय धोखाधड़ी; नकली मुद्रा बनाना; बैंक धोखाधड़ी और जालसाजी; मादक पदार्थों की तस्करी; और हत्या एवं चोरी।

प्रत्येक समूह में कुछ संपर्क अधिकारी होते हैं जो विशिष्ट वैश्विक क्षेत्रों में पुलिस प्रयासों के समन्वय के लिए जिम्मेदार होते हैं। मार्च की उस ठंडी दोपहर को दक्षिण-पूर्व एशिया के लिए संपर्क अधिकारी कैप्टन रेने बुडजिंस्की थे।

बुडजिंस्की ने छठे जिले में सत्रह साल तक हत्या के मामलों के विभाग में काम किया था। उससे पहले, वह इंडोचाइना में फ्रांसीसी एसडीईसीई के सदस्य थे। उनकी उंगलियों पर निकोटीन के धब्बे थे और चेहरा पुराने मुहांसों के गड्ढों से भरा हुआ था। उन्होंने एक सिकुड़ा हुआ सीप-भूरे रंग का सूट पहना हुआ था, जिसकी सीट और कोहनी घिसने से चमक रही थीं; उनका कॉलर खुला था और टाई नीचे खींची हुई थी। सड़क पर उन्हें देखने वाला कोई भी व्यक्ति उन्हें कम वेतन पाने वाला बीमा क्लर्क समझ सकता था।

लेकिन इंटरपोल ने बुडजिंस्की को उनके पहनावे के लिए भुगतान नहीं किया था। उनकी प्रतिभा तो बुलडॉग जैसी दृढ़ता के साथ जानकारी जुटाने और फिर ढेर सारी जानकारियों को छानकर कुछ महत्वपूर्ण और सार्थक तथ्यों तक सीमित करने की थी। उस दोपहर वह अपनी अस्त-व्यस्त और राख से भरी मेज पर बैठा था और सिंगापुर से एक घंटे पहले प्राप्त हुए एक तार को घूर रहा था।

वह अपनी कुर्सी पर पीछे झुक गया और एक और गॉलोइस सिगरेट जलाई। अपने आप में इसका कोई महत्व नहीं था, यह एक हताश जासूस की हताशा का कार्य था जिसके पास कोई सुराग नहीं था। सेंट क्लाउड में हर हफ्ते सैकड़ों ऐसे ही तार आते थे:

28/12/71

प्रति: आईपी पेरिस

हम आपको 28/12/71 को मैंडरिन होटल में हुई एक डकैती के बारे में सूचित करना चाहते हैं। यह डकैती अज्ञात व्यक्ति या व्यक्तियों द्वारा की गई थी। आर्केड ज्वैलरी स्टोर के मालिक को बहला-फुसलाकर कमरे में ले जाया गया और बेहोश कर दिया गया। कमरे में मौजूद व्यक्ति की हत्या कर दी गई। अब मृतक की पहचान

ह्यूस्टन, टेक्सास की अमेरिकी पर्यटक सुसान कॉनर्स के रूप में हुई है।
हम अभी भी इस अपराध में संलिप्तता के संदिग्ध एक व्यक्ति से पूछताछ करना चाहते हैं। यह व्यक्ति संभवत: विदेशी नागरिक है, जिसकी उम्र 20-25 वर्ष है, लैटिन मूल का है, छह फुट लंबा है, काले बाल हैं और वह एलन रेगन नाम का इस्तेमाल करता है।
इस व्यक्ति का पता लगाने में तत्काल सहायता का अनुरोध है। यदि हिरासत में लिया गया हो तो प्रत्यर्पण का अनुरोध किया जाएगा।
एंड आईपी सिंगापुर
हस्ताक्षर: रोलैंड टैन (मुख्य अधीक्षक)
सिंगापुर पुलिस (इंटरपोल डिवीजन)
बुडजिंस्की ने तारीख दोबारा जाँची; 28 दिसंबर, लगभग तीन महीने पहले। किसी चूक या नौकरशाही की गड़बड़ी के कारण एक और रिपोर्ट में देरी हुई। वैसे इससे कोई खास फर्क नहीं पड़ा।
वह सभी स्टेशनों पर अलर्ट जारी करता और फिर केबल को ऊपर रिकॉर्ड्स विभाग में भेज देता।
उसने केबल को एक तरफ रख दिया, अपनी गाउलोइस सिगरेट बुझाई और अगले संदेश की ओर बढ़ गया।

♦ ♦ ♦

सर्ज रेनार्ड ने सेंट लाज़ारे स्ट्रीट पर संकरी सीढ़ियों की दो मंजिलों के ऊपर एक छोटा सा दफ्तर किराए पर लिया था। वह गठीले कद-काठी के ब्रेटन थे, जिनके सिर के पास से कटे हुए घने काले बाल थे। वह अपनी मेज पर बैठे थे और हाथों में एक पतली सी मैनीला फाइल थाम रहे थे। चार साल बीत गए और बस यही उनके पास दिखाने के लिए था। वह सोच रहे थे कि उनका मुवक्किल कब तक उन्हें फीस देता रहेगा।
उन्हें वह दिन याद था जब वह आदमी पहली बार उनके दफ्तर आया था। यह साफ था कि पैसों की कोई कमी नहीं होगी; उसने हीरे जड़ी हुई पाटेक फिलिप घड़ी पहनी हुई थी - उनके हिसाब से कम से कम दो हजार डॉलर की - पियरे कार्डिन का सूट, मिस्र के सूती कपड़े की कमीज और हल्के भूरे रंग की सुल्का टाई। इतने पैसे होने के बावजूद वह बहुत जवान लग रहा था। उन्होंने अंदाज़ा लगाया कि उसका बाप कहीं

अमीर होगा।
उस व्यक्ति की राष्ट्रीयता का अनुमान लगाना कठिन था। वह फ्रेंच भाषा में तो निपुण था, लेकिन उसका सांवला रंग और उसकी सम्मोहक भूरी आँखें मिश्रित नस्ल का संकेत दे रही थीं। उसने तुरंत समझ लिया कि यह मामला ईर्ष्यालु पतियों या संदेह करने वाले नियोक्ताओं के सामान्य मामलों से अलग होगा।
उसने पूछा था, 'मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ?'
मुझे किसी को ढूंढना होगा।
'क्यों?'
'यह मेरा काम है।'
'जैसी आपकी इच्छा,' रेनार्ड ने असहमति जताते हुए कहा।
उनका मायके का नाम एड्रिएन क्रिश्चियन है। उनके पिता 1940 के दशक के उत्तरार्ध में साइगॉन में सर्विस पब्लिका में एक अधिकारी थे। उन्होंने 1951 या 1952 में नौकरी छोड़ दी।
रेनार्ड ने एक पैड पर कुछ नोट्स लिखे। 'और फिर?'
'मुझे बस इतना ही मालूम है।'
'माफ़ करें?'
मेरे पास बस यही है।
'महामहिम, क्षमा कीजिए, लेकिन यह जानकारी पर्याप्त नहीं है।' उन्होंने अपना पेन मेज पर रख दिया। 'आपने इस महिला को आखिरी बार कब देखा था?'
क्या यह प्रासंगिक है?
तो क्या मैं कम से कम यह पूछ सकती हूँ कि उनका आपसे क्या रिश्ता है?
क्या इससे आपको उसे ढूंढने में मदद मिलेगी?
'यह हो सकता है।'
'कैसे?'
रेनार्ड ने अपनी पेंसिल पैड पर फेंक दी। 'क्या वह शादीशुदा है?'
'जब उसने साइगॉन छोड़ा तब उसकी उम्र केवल 23 या 24 वर्ष थी। मुझे तो ऐसा ही लगता है।'
और क्या आप उस व्यक्ति का नाम नहीं जानते जिससे उसने शादी की थी?
अगर मैंने ऐसा किया होता, तो मैं तुम्हें बता देता।

क्या यह महिला फ्रांस में रहती है?
'शायद।'
रेनार्ड पीछे की ओर झुक गया, उसकी तर्जनी उंगली कुर्सी के आर्मरेस्ट पर बने टैटू पर थपथपा रही थी। 'साइगॉन में मेरे कुछ जान-पहचान वाले हैं जो शायद मेरे लिए जन्म और विवाह के रिकॉर्ड देख सकते हैं। अगर वे मौजूद हों तो। विभाजन के बाद कई रिकॉर्ड खो गए। अगर हमें उसका नया नाम मिल जाए, तो मैं आपके लिए कुछ कर सकता हूँ। लेकिन यह महंगा पड़ेगा।'
उस युवक ने अपने बटुए में हाथ डाला और नोटों का एक मोटा बंडल निकाला। उसने उन्हें मेज पर फेंक दिया। 'मुझे परवाह नहीं कि कितना खर्च आएगा। उसे ढूंढो।'
रेनार्ड ने वहां मौजूद सामान की गिनती की और अपनी भौंहें ऊपर उठाईं। 'आप इस महिला को ढूंढने के लिए बहुत बेताब होंगे।'
'आपको इसका अंदाजा भी नहीं है, महोदय,' उसने कहा और बाहर चला गया।

♦ ♦ ♦

यह चार साल पहले की बात है। जैसा कि रेनार्ड ने भविष्यवाणी की थी, 1954 में जब फ्रांसीसियों ने साइगॉन से वापसी की, उस दौरान मची अफरा-तफरी में जन्म और विवाह दोनों के रिकॉर्ड खो गए या नष्ट हो गए थे। कई हफ्तों की व्यर्थ खोज के बाद उन्होंने सार्वजनिक सेवा अभिलेखों के माध्यम से इमैनुअल क्रिश्चियन का पता लगाया। वह व्यक्ति औपनिवेशिक प्रशासन में एक पदाधिकारी था और 1951 में वहीं एक बमबारी में मारा गया था।
उसके बाद कुछ नहीं मिला। तीन साल तक उसे झूठे सुरागों के सिवा कुछ नहीं मिला। रेनार्ड सोच रहा था कि इस निरर्थक जांच से उसे कितना फायदा हुआ होगा। यकीनन लाखों फ्रैंक। इस महिला में ऐसा क्या खास था कि यह आदमी एक निजी जासूस को इतनी बड़ी रकम देता रहा?
हर महीने उनके दफ्तर में एक लिफाफा आता था जिस पर एशियाई डाक टिकट लगा होता था, और उसके अंदर उनकी फीस का चेक होता था। उनका रहस्यमय ग्राहक अपना पता नहीं देता था। लेकिन कुछ महीनों में एक बार रेनार्ड को उससे लंबी दूरी का फोन आता था; कभी-कभी वह बिना बताए उनके रिसेप्शन में आ जाता था और उनके काम के बारे में पूछता था।

रेनार्ड ने फाइल को एक दराज में रख दिया और अपने दूसरे काम में लग गया।
यह एक बेहद दिलचस्प मामला था, और निश्चित रूप से उनका सबसे कठिन मामला। कुछ मायनों में, वह इसे खत्म करके खुश भी होते। लेकिन उन्हें पैसों की कमी खलती।

अध्याय 22

नई दिल्ली
नोएल गिरेसे अशोका होटल के अपने सुइट की खिड़की पर खड़ी होकर पुराने शहर के ऊपर चांद को उगते हुए देख रही थीं। लाल किले के ऊपर चांद नीचा लटका हुआ था, जिसका रंग खून जैसा था। हवा में फूलों और धूल की खुशबू फैली हुई थी।
अशोक मंदिर का निर्माण नेहरू ने करवाया था, जो नए राष्ट्र के जन्म का जश्न मनाने के लिए एक भव्य आयोजन था। इसका उद्देश्य भारत में आए विश्व नेताओं को प्रभावित करना था, जो नई व्यवस्था को स्वीकारने के लिए आए थे। नोएल को इसकी पुरानी फीकी सी खूबसूरती बहुत पसंद थी। ऐसा लगता था मानो वह राज के दिनों में लौट आई हो।
यह शुष्क मौसम की शुरुआत थी, जब सूरज की तेज़ गर्मी से सूखी, तवे पर तवे जैसी सख्त ज़मीन चूर-चूर होकर बिखर जाती थी। भारत घूमने के लिए यह सबसे अच्छा समय नहीं था। फिर भी, पालम अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर 747 विमान से उतरते ही नोएल को ऐसा लगा जैसे वह घर आ रही हो।
लगभग सत्रह साल पहले वह आखिरी बार यहाँ आई थी। सैंतीस साल की उम्र में भी वह लोगों का ध्यान अपनी ओर खींचती थी, सुनहरे बालों और कोमल भूरी आँखों के साथ दुबली-पतली और आकर्षक। जवानी में उसे खूबसूरत कहा जाता था; अब, उसे शक था कि शायद उसे 'आकर्षक' कहा जाएगा। एक आकर्षक फ्रांसीसी तलाकशुदा महिला।
बालकनी की अंधेरी छाया में उसकी सिगरेट चमक रही थी।
तलाक की प्रक्रिया बेहद कड़वी और लंबी चली थी। ज़ाहिर है, जब उसने कार्यवाही शुरू की थी, तब उसे इस बात का कोई भ्रम नहीं था कि यह कैसी होगी। सोलह साल की उम्र में उसने अपने माता-पिता को आपस में लड़ते-झगड़ते देखा था। उसे उम्मीद नहीं थी कि उसका अपना अलगाव इससे अलग होगा।

उसकी मुलाकात जैक्स से पेरिस में हुई थी। वह उस समय एक मॉडल थी और जैक्स सोरबोन विश्वविद्यालय में बिजनेस की पढ़ाई कर रहा था। वह लंबे ऊनी स्कार्फ और सींग के फ्रेम वाला चश्मा पहनता था, जिससे वह उल्लू जैसा दिखता था। उसने बड़ी बेढंगी तरह से उससे प्रेम निवेदन किया, लेकिन वह इतना गंभीर और सच्चा लग रहा था कि उसने उसकी बातों को नज़रअंदाज़ कर दिया। बहुत बाद में उसे पता चला कि जैक्स को लगता था कि वह उस पर एहसान जता रहा है।

विश्वविद्यालय की पढ़ाई पूरी करने के बाद ही वे प्रेमी बने। तब तक जैक्स फ्रांसीसी स्टॉक एक्सचेंज, बोर्स डेस वैलर्स में सूचीबद्ध एक फर्म में स्टॉकब्रोकर बन चुके थे और उन्होंने स्कार्फ और चश्मे की जगह थ्री-पीस सूट और कॉन्टैक्ट लेंस पहनना शुरू कर दिया था।

जब उन्होंने शादी करने का फैसला किया तो दोनों के माता-पिता ने इस रिश्ते का विरोध किया। उनके पिता ने जैक्स से कहा कि वह अपने वर्ग से नीचे की लड़की से शादी कर रहा है। लड़की के पिता थोड़े अधिक स्पष्ट थे। उन्होंने लड़की से कहा कि जैक्स स्वार्थी, जिद्दी और आत्ममुग्ध है।

उस समय उसने सोचा, तुम्हें पता होना चाहिए।

फिर भी उन्होंने शादी कर ली। एक रात जब वे एवेन्यू डे ल'ओपेरा पर हाथ में हाथ डालकर चल रहे थे, तब उसने जैक्स से कहा, 'हम उन्हें दिखाएंगे कि प्यार किसी भी चीज पर विजय प्राप्त कर सकता है।'

शायद। लेकिन इससे बांझपन दूर नहीं हुआ। उसके पति पारंपरिक मूल्यों में विश्वास रखते थे; उन्हें एक आकर्षक पत्नी चाहिए थी जो सामाजिक समारोहों में उनकी शोभा बढ़ा सके और उन्हें एक पुत्र उत्तराधिकारी चाहिए था। उनके लिए प्रेम का यही अर्थ था।

जब सब कुछ खत्म हो गया, तो उसके पिता ने खुशी मनाने की इच्छा को दबा लिया। आखिरकार, शादी उनकी उम्मीद से कहीं ज्यादा समय तक चली थी। उन्होंने जैक्स के वकीलों से निपटने में उसकी मदद की, उसे रहने के लिए जगह दी और दुख बांटने के लिए सहारा भी दिया।

इस सब से एक अच्छी बात यह हुई कि उसके और उसके पिता के बीच संबंध फिर से सुधर गए। वह हमेशा से ही बहुत रूखे लगते थे, लेकिन जब उसे उनकी ज़रूरत पड़ी, तो उन्होंने हमेशा उसका साथ दिया।

एशिया वापस आने का विचार कुछ हद तक उनका ही था; एक महत्वपूर्ण समझौता हो चुका था और उन्होंने सुझाव दिया कि अब जब यह समझौता समाप्त हो गया है, तो उन्हें लंबी छुट्टी लेनी चाहिए। उन्हें भारत से हमेशा प्यार था; उनके पिता राजनयिक सेवा में रहते हुए कई वर्षों तक नई दिल्ली स्थित दूतावास से जुड़े रहे थे।
मिशेल एक अप्रत्याशित उलझन बन गया था। उसने उसे लॉबी में कई बार देखा था। उसे नज़रअंदाज़ करना नामुमकिन था। फिर पिछली दोपहर वह छायादार बगीचे में बैठी जिन और टॉनिक पी रही थी, तभी उसे अपने कंधे के पास किसी के खड़े होने का एहसास हुआ। उसने सोचा कि वह वेटर होगा। उसने अपना गिलास खाली किया और अपने हाथ में पकड़े पत्र से नज़रें उठाए बिना उसे आगे बढ़ा दिया।
'हां, मैं एक और लूंगी,' उसने अंग्रेजी में कहा।
‘मोन प्लेज़र,’ एक आवाज़ ने फ्रेंच में जवाब दिया। वह असमंजस में ऊपर देखने लगी। वह आदमी लंबा, सांवला और बेहद आकर्षक था।
‘ओह... मुझे माफ़ करना... मुझे लगा...’
मिशेल अंदर चला गया। नोएल ने उसे बार में जाकर अपने लिए एक और ड्रिंक ऑर्डर करते देखा। उसे क्या करना चाहिए? वह अपने कमरे में वापस जा सकती थी, ताकि आगे की संभावित छेड़छाड़ को टाल सके। लेकिन यह बहुत असभ्य होता। जब वह वापस आता, तो वह उसे ड्रिंक के लिए धन्यवाद देती, कुछ शिष्टाचारपूर्ण बातचीत करती और चली जाती। इससे ज़्यादा कुछ करने की ज़रूरत नहीं थी।
जब तक कि वह ऐसा न चाहे।
उसने पत्र नीचे रख दिया और अपने हाथों से अपनी पोशाक को ठीक किया। उसे अचानक घबराहट महसूस हुई, मानो वह फिर से एक स्कूली छात्रा बन गई हो। यह तो हास्यास्पद था।
‘एक जिन और टॉनिक।’ मिशेल ने गिलास उसके सामने रखा और उसके सामने बेंत की कुर्सी पर आराम से बैठ गया। उसने खुली गर्दन वाली सफेद रेशमी कार्डिन शर्ट और गिवेंची जींस पहनी हुई थी। उसके पैरों में मुलायम ग्रे रंग के गुच्ची लोफर्स थे और उसकी छोटी उंगली में एक मोटा पन्ना जड़ा हुआ रूबी था। वह किसी फिल्म स्टार जैसा लग रहा था। उसकी कलाई पर एक बेहद महंगी घड़ी थी। ऐसा लग रहा था मानो वह हीरों से जड़ी हो।
'बताओ, क्या मैं ड्रिंक्स वेटर जैसा दिखता हूँ? क्या यह सफेद शर्ट की वजह से है?'

नहीं, मैंने आपको नहीं देखा, मैं बस... मेरा मतलब है, मैंने ऊपर नहीं देखा। आप बस वहीं खड़े थे। मुझे माफ़ करना।
मैं आपकी प्रशंसा कर रहा था।
उसने सोचा, "तुम मुझे अपनी आँखों से निर्वस्त्र कर रहे थे।" उसने अपना जिन और टॉनिक उठाया, फिर जब उसे एहसास हुआ कि उसके हाथ काँप रहे हैं, तो उसने उसे झट से मेज पर वापस रख दिया। बहुत समय हो गया था जब उसने किसी पुरुष को उसे बहकाने दिया था। उसने खुद को संभालने की कोशिश की। 'क्या मुझे खुश होना चाहिए?' उसने अपने हैंडबैग में सिगरेट ढूँढी।
‘तुम हो ना?’ उसने अपनी जेब में हाथ डाला और एक सोने का डुपोंट लाइटर निकाला। उसने उसकी सिगरेट जलाई। ‘तुम्हारा नाम नोएल गिरेसे है। तुम पेरिस में रहती हो, और तुम बहुत खूबसूरत हो।’
'आप उसे कैसे जानते हैं?'
मैंने डेस्क क्लर्क से पूछा था। वैसे, तुम्हारा नाम तो पूछा ही था। बाकी... खैर, बाकी तो स्पष्ट है। मैं तुम्हें देख रहा था। और तुम मुझे देख रहे थे।
नोएल ने उसे घूरकर देखा। 'बकवास,' उसने कहा। उसमें आत्मविश्वास की कोई कमी नहीं थी। वह जवान था, शायद उससे दस साल छोटा। यह स्पष्ट था कि वह क्या चाहता था। शायद मैं भी यही चाहती हूँ, उसने सोचा। खासकर उन सभी वर्षों में जब मैं जैक्स के प्रति वफादार रही, तब भी जब उसने अपनी रखैलें मेरे सामने खुलेआम दिखाई थीं।
आपने मुझे अपना नाम नहीं बताया।
‘मिशेल।’
‘ये तो फ्रेंच है, है ना? तुम तो फ्रेंच नहीं दिखते।’
‘मैं विश्व का नागरिक हूँ।’ वह आगे झुका और उसकी आँखें मानो उसकी आँखों में गहराई से गड़ी हुई थीं। ‘मैं वह सब कुछ बन सकता हूँ जो तुम मुझे बनाना चाहो।’
मुझे यकीन है कि मैं नहीं समझ पा रहा हूँ कि आपका क्या मतलब है।
मिशेल ने मेज पर रखे पत्र पर नज़र डाली। 'क्या आप चाहेंगे कि मैं चला जाऊं? शायद आप अपनी चिट्ठियाँ पढ़ना खत्म करना पसंद करेंगे।'
'शायद।'
‘यह आपके पति की ओर से है?’

'नहीं, मेरे पिता। मेरा और मेरे पति का तलाक पिछले महीने हो गया।'
'मुझे माफ़ करें।'
'ऐसा मत सोचो। वह एक हरामखोर था।'
'अरे। तो मुझे इसके लिए खेद है।'
मुझे आपको ये सब नहीं बताना चाहिए।
तो फिर आप यहाँ क्यों हैं?
नोएल ने आखिरकार फैसला किया कि उसे यह आदमी पसंद नहीं आया। वह बहुत ही उद्दंड और सीधा था। उसे उसके सवाल पसंद नहीं आए। 'मुझे नहीं पता। आखिर कोई कुछ करता क्यों है?'
अविश्वसनीय रूप से वह उसकी ओर झुका और उसका एक हाथ अपने हाथ में ले लिया। 'बताओ, नोएल, क्या तुम भाग्य में विश्वास करती हो?'

♦ ♦ ♦

नोएल ने अपनी सिगरेट बुझाई और बालकनी से मुंह फेर लिया। अगर वह उसे इतनी बुरी तरह नापसंद करती थी, तो उसके बारे में सोचना क्यों नहीं बंद कर पा रही थी?
दरवाजे पर दस्तक हुई। उसने बिस्तर के पास वाला लैंप जलाया और शीशे में अपना चेहरा देखा। 'कौन है?'
'मिशेल।'
मिशेल? वह बिस्तर के किनारे पर बैठ गई। उसे उत्तेजना और घबराहट का एक अजीब सा एहसास हुआ। अगर तुम नहीं चाहती थी कि वह तुम्हारे कमरे में आए, नोएल, तो तुम्हें उसे अपना कमरा नंबर नहीं देना चाहिए था।
वह अपने ड्रेसिंग गाउन के कॉलर से खेलने लगी।
उसकी आवाज फिर से, अब और अधिक बेचैन। 'नोएल?'
वह उठी, और किवाड़ खोले।
वह दरवाजे के चौखट पर टिका हुआ था। उसने उसे व्यंग्यात्मक मुस्कान दी। 'क्या मैंने तुम्हें जगा दिया?'
मुझे नींद नहीं आ रही थी।
मैं भी नहीं कर सकता था।
वह उसके पास से गुजरकर कमरे में चला गया और नोएल ने दरवाजा बंद कर दिया।

वह कमरे के बीचोंबीच खड़ा था, हाथ जेबों में डाले हुए, चारों ओर देख रहा था। उसने अपनी कमीज़ के बटन खोलने शुरू किए। 'लाइट बंद करो।'
इसे चालू ही रहने देते हैं।
'इसे बंद करें।'
नोएल ने कंधे उचकाए और लैंप बंद कर दिया। उसने उसके कपड़ों के फर्श पर गिरने की सरसराहट सुनी। अब चाँद आकाश में और ऊपर चढ़ चुका था, उसका लाल रंग गुलाबी हो गया था, जो फ्रेंच खिड़कियों से दिखाई दे रहा था।
वह उसे बेडरूम में ले गया और उसके बगल में बिस्तर पर बैठ गया, पहले उसे छूने दिया। उसकी त्वचा ठंडी और चिकनी थी, मांसपेशियां कसी हुई और सख्त थीं। उसे यह अच्छा लगा। उसका पति तो मांसल और कोमल था। उसने उसके पेट की सपाट आकृति को उसकी जांघ तक छुआ और उसकी उंगलियां उसके लिंग से टकरा गईं। वह पहले से ही उत्तेजित था। वह उसे बहुत बुरी तरह चाहता होगा; एक ऐसा अनुभव जो उसने बहुत लंबे समय से नहीं किया था।
मिशेल ने ड्रेसिंग गाउन की डोरी खोली। उसने रेशमी गाउन को उसके कंधों पर से धीरे से हटाया और फिर अपने मजबूत हाथों से उसकी कलाइयों को बिस्तर पर जकड़ लिया। उसने महसूस किया कि उसके होंठ उसके गले और स्तनों को छू रहे हैं। उसकी जीभ उसके पेट की गोलाई पर फिर रही थी। जैक्स को यह करना कभी पसंद नहीं था; उसे तो बस यही अच्छा लगता था कि वह उसके साथ ऐसा करे। वह ज़ोर से हांफ उठी। ओह, वह कितना अच्छा था। वह बहुत-बहुत अच्छा था। जवान, मज़बूत और उसकी जीभ बिस्तर पर और बिस्तर के बाहर, दोनों जगह बहुत फुर्तीली थी। उसकी एक सहेली सालों से उससे कहती आ रही थी कि उसे एक ज़बरदस्त सेक्स की ज़रूरत है। ऐसा लग रहा था जैसे उसे वह मिल गया हो।
उसने अपनी आंखें बंद कर लीं और आत्मसमर्पण कर दिया।

♦ ♦ ♦

जब वह उठी तो बिस्तर खाली था। उसने उसकी ओर हाथ बढ़ाया और जब उसे एहसास हुआ कि वह वहां नहीं है तो उसे निराशा और राहत दोनों महसूस हुई। खिड़कियों पर पर्दे लगे हुए थे। पर्दों के बीच से सूरज की रोशनी दिख रही थी। काफी रात हो चुकी होगी। उसे ठंड लग रही थी। जाने से पहले उसने खिड़की बंद कर दी थी

और एयर कंडीशनर चला दिया था। उसने अंगड़ाई ली, जम्हाई ली और पिछली रात की घटनाओं को याद करने लगी।
उसे ऐसा महसूस हुआ जैसे उसने दूसरी बार अपनी कौमार्यता खो दी हो। उसे इस बात का कोई भ्रम नहीं था कि यह किसी महान प्रेम प्रसंग की शुरुआत है। यह तो किसी पेशेवर द्वारा किए गए यौन संबंध जैसा था। इस विचार से उसके चेहरे पर मुस्कान आ गई। ऐसा उसके जीवन में बहुत कम ही हुआ था।
वह करवट बदल कर लेट गई। अचानक उसे एहसास हुआ कि वह अपने कमरे में वापस नहीं गया था। वह बिस्तर के बगल वाली कुर्सी पर पूरी तरह कपड़े पहने बैठा था और उसे घूर रहा था।
'मिशेल?'
'शुभ प्रभात।'
'हे भगवान...' उसके हाथ में बंदूक थी और वह उसके चेहरे पर तनी हुई थी। 'तुम क्या कर रहे हो?'
'अच्छी बच्ची बनो, नोएल। शोर मत मचाओ, तुम्हें चोट नहीं लगेगी।'
अब उसे समझ में आ गया कि उसने अंधेरे में कपड़े उतारने पर जोर क्यों दिया था। वह नहीं चाहता था कि वह पिस्तौल देखे।
'आप क्या चाहते हैं?'
मिशेल मुस्कुराया। 'मैं बस यही चाहता हूं कि तुम ठीक वही करो जो मैं तुमसे कहूं। अगर तुमने ऐसा नहीं किया तो मैं इसका इस्तेमाल करने में जरा भी संकोच नहीं करूंगा।'
नोएल ने उन असीम, अद्वितीय आँखों में देखा। उसे उस पर विश्वास हो गया।

अध्याय 23

जयपुर एम्पोरियम दिल्ली के बेहतरीन आभूषण स्टोरों में से एक था। अशोका होटल के प्रबंधन ने ग्राहकों की सुविधा के लिए अपने परिसर में स्थित लगभग एक दर्जन दुकानों को चुनिंदा व्यापारियों को ही पट्टे पर दिया था। जयपुर एम्पोरियम भी उन्हीं चुनिंदा दुकानों में से एक था। इसके मालिक रमेश पटेल थे।
उस सुबह दस बजे के कुछ देर बाद, उन्हें एक मेहमान का फोन आया। 'जयपुर एम्पोरियम। मैं आपकी किस प्रकार सहायता कर सकता हूँ?'

'मैं मैडम गिरेसे हूँ। कमरा नंबर 289। मैं आपसे कुछ गहने खरीदना चाहती हूँ।'
‘जी हां, महोदया। हमारे एम्पोरियम में बेहतरीन वस्तुओं का संग्रह है—’
'नहीं, मुझे माफ करना। मैं अपने कमरे से बाहर नहीं निकल सकती। मेरी तबीयत ठीक नहीं है।'
‘अस्वस्थ?’
‘मैंने कुछ खा लिया है। मैं अपने सुइट से बाहर नहीं निकल सकता।’
यह बेहद दुर्भाग्यपूर्ण है।
'हां, ऐसा ही है। इसलिए आपको मेरे पास आना होगा।'
'बिल्कुल।'
मुझे घटिया गुणवत्ता की कोई चीज देखने की उम्मीद नहीं है।
पटेल भड़क उठे। ये लोग खुद को क्या समझते हैं? 'ज़रूर, महोदया। मैं अभी किसी को आपके कमरे में भेजता हूँ।'
'तुरंत।'
'बिल्कुल।'
कमरा नंबर 289।
जी जी, महोदया। मुझे पूरा यकीन है कि आप पूरी तरह संतुष्ट होंगी।
उसने फोन नीचे रखा और अपने एक सहायक की ओर मुड़ा। 'सांजी, इन तीनों ट्रे को एक केस में रखो और इन्हें कमरा नंबर 289 में ले जाओ। मैडम गिरेसे के यहाँ।'
सांजी ने सिर हिलाया और जैसा कहा गया वैसा ही किया। वह जाने के लिए मुड़ा।
“ओह, और संजी... मोलभाव मत करना। अगर वो खुद को भारत की रानी समझती है तो वो सबसे ज़्यादा कीमत चुका सकती है। ठीक है?”

♦ ♦ ♦

नोएल के हाथ इतने बुरी तरह कांप रहे थे कि वह फोन को उसके स्टैंड पर वापस नहीं रख पा रही थी। मिशेल को उसके लिए यह काम करना पड़ा।
‘शाबाश,’ उसने फुसफुसाते हुए कहा। ‘शानदार प्रदर्शन।’
नोएल को बंदूक की नली की गर्म धातु अपनी गर्दन पर महसूस हुई। उसने कहा, 'कृपया मुझे चोट मत पहुँचाओ।'
'जब तक आप मेरी बात मानते रहेंगे, किसी को चोट लगने की कोई जरूरत नहीं है।'

'आप क्या करने जा रहे हैं?'
‘मेरी चिंता मत करो। बस यह सुनिश्चित करो कि तुम अपना काम ठीक से करो, जैसा मैं तुम्हें बताता हूँ। अब तुम्हें कपड़े पहनने होंगे। उठो।’
नोएल मुश्किल से खड़ी हो पा रही थी; उसके घुटने कांप रहे थे। वह इतनी डरी हुई पहले कभी नहीं थी। वह सोच नहीं पा रही थी, और उसका गला इतना सूख गया था कि वह मुश्किल से बोल पा रही थी।
मैं चाहती हूं कि तुम अपनी सबसे अच्छी ड्रेस ढूंढो और उसे पहन लो।
‘कृपया मिशेल, मैं—’
'इसे करें!'
उसने मुट्ठी भर कपड़े उठाए और उन्हें बिस्तर पर फेंक दिया। फिर उसने उसका हाथ पकड़ा और उसे कपड़ों की ओर धकेल दिया। 'तुम मुझे चोट पहुँचा रही हो!'
‘एक ड्रेस चुनो। इसे पहनो। ये लो, ये वाली।’
लेकिन यह एक शाम का गाउन है।
'इसे करें।'
उसने अपने कंधों से ड्रेसिंग गाउन उतारकर ज़मीन पर गिरा दिया। उसने दराजों में अपने अंडरवियर ढूँढ़ने के लिए हाथ-पैर मारे। वह उसे भावहीन निगाहों से देखता रहा, उसके दाहिने हाथ में पिस्तौल थी। अचानक वह हँस पड़ा।
'यह क्या है?'
तुम कुंवारी लड़की की तरह शरमा रही हो।
मेरी तरफ मत देखो।
अगर मैं तुम्हारी तरफ नहीं देखूंगी, तो तुम चीखोगे और दरवाजे की तरफ भागोगे।
उसने अपनी पैंट पहनी और ब्रा की पट्टी को कसने लगी। मानो पिछली रात कुछ हुआ ही न हो। वह सोच रही थी कि आखिर कैसा आदमी किसी औरत से प्रेम करने के बाद उसे इस तरह बेइज्जत कर सकता है। यह एक बुरा सपना था।
वह अब भी उसे घूर रहा था।
उन्होंने कहा, 'तुम बहुत खूबसूरत हो।'
'कृपया मुझे जाने दीजिए।'
‘अभी नहीं।’ उसने बिस्तर से शाम का गाउन उठाया और उसे उसकी ओर फेंक दिया। ‘इसे पहन लो।’

उसने वैसा ही किया जैसा उसने कहा था।
मिशेल ने अपने बाएं हाथ की छोटी उंगली से पन्ना-तराशा हुआ माणिक निकाला और उसे उसकी ओर फेंक दिया। 'लो, इसे पहन लो।'
'क्यों?'
'यह नीचे रहने वाले हमारे दोस्तों को प्रभावित करने के लिए बनाया गया एक कामचलाऊ सामान है।'
'मैं नहीं समझता।'
‘ऐसा करना ज़रूरी नहीं है। लेकिन अगर तुम अपना अगला रोल भी पहले वाले की तरह ही अच्छे से निभाओगी, तो शायद मैं तुम्हें वो रोल रखने दूँगी। अब, जूते पहन लो। तुम बहुत गंदी लग रही हो। बेहतर होगा कि तुम बाथरूम में जाओ और कुछ कर लो। इस हालत में तुम दरवाज़ा नहीं खोल सकती।’ उसने बाथरूम का दरवाज़ा धक्का देकर खोला, लेकिन इससे पहले कि वो उसे बंद कर पाती, वो उसके पीछे अंदर चला गया।
लेकिन मुझे पेशाब करना है।
‘तो मैं देख लूंगी। लेकिन जल्दी करो। हमारे दोस्त के आने से पहले तुम्हें अपने बाल ठीक करने होंगे और थोड़ा मेकअप करना होगा।’

♦ ♦ ♦

संजी ने सिर झुकाया, उसका चमकीला भूरा सिर उसके कंधों पर हिल रहा था। 'शुभ प्रभात, महोदया। मैं जयपुर एम्पोरियम से हूँ।'
नोएल ने उसे ऊपर से नीचे तक ऐसे देखा मानो वह कोई घटिया वस्तु हो, जैसा कि मिशेल ने उसे करने को कहा था। मानो वह कोई ऐसी चीज हो जो जूते के तले पर पड़ी मिली हो। 'तुम्हें घमंडी होना पड़ेगा। नहीं तो वे सोचेंगे कि तुम्हारे पास पैसे नहीं हैं।'
‘अंदर आओ,’ नोएल ने कहा। वह सोच रही थी कि क्या कोई ऐसा तरीका है जिससे वह उस आदमी को आने वाली घटना के बारे में चेतावनी दे सके। उसे पता था कि मिशेल बाथरूम के दरवाजे की दरार से देख रही थी, और उसकी बेरेटा बंदूक उसके सिर के पीछे तनी हुई थी।
श्री पटेल क्षमा मांगते हैं। मैं संजी विश्वनाथ हूं।

मिशेल ने उसे पहले ही चेतावनी दी थी कि ऐसा हो सकता है। वह मुड़ी और शान से कमरे में वापस चली गई। संजी उसके पीछे-पीछे गया, उसके हाथ में वह लकड़ी का बक्सा था जिसमें पटेल द्वारा चुने गए रत्नों की तीन ट्रे रखी थीं।
नोएल बाथरूम के दरवाजे के सामने वाली कुर्सी पर बैठ गई, ठीक वैसे ही जैसे मिशेल ने उसे निर्देश दिया था। वहाँ से वह देख सकती थी कि साइलेंसर लगी पिस्तौल की काली आँख उसके दिल की ओर तनी हुई है।
नोएल ने विश्वनाथ से कहा, 'बैठ जाओ।' उसने दूसरी कुर्सी की ओर इशारा किया।
'धन्यवाद, महोदया।' अगर वह सोच रहा था कि पर्दे क्यों लगे हैं और कमरा अर्ध-अंधेरा क्यों है, तो उसने यह ज़ाहिर नहीं किया। उसने रोज़वुड का बक्सा उन दोनों के बीच रखी कॉफ़ी टेबल पर रखा और ताला खोला। 'मुझे लगता है आप सहमत होंगी कि मेरे पास यहाँ दिल्ली की कुछ बेहतरीन कृतियाँ हैं।'
नोएल ने बॉक्स में हाथ डाला और एक हीरे की अंगूठी निकाली। उसने मेज पर लगे लैंप की रोशनी में उसे अपने अंगूठे और तर्जनी के बीच घुमाया।
सांजी उत्सुकता से आगे झुका। उसने कहा, 'यह एक अत्यंत उत्कृष्ट कृति है।'
नोएल ने जानबूझकर बेपरवाही दिखाते हुए उसे ट्रे में वापस रख दिया। उसने सेल्समैन के चेहरे की ओर देखा। वह उस पर चिल्लाना चाहती थी: भगवान के लिए, क्या तुम्हें पता नहीं चल रहा कि क्या हो रहा है? क्या तुम अंधे हो? मुझे देखो, देखो मेरे हाथ कैसे कांप रहे हैं! क्या तुम्हें लगता है कि यह मेरे खाने की वजह से है?
सांजी ने भौंहें चढ़ाईं। 'क्या कुछ गड़बड़ है?'
नोएल ने जल्दी से बाथरूम की ओर देखा। 'मुझे थोड़ी सी अस्वस्थता महसूस हो रही है, बस इतना ही। आपको मुझे और क्या दिखाना है?'
सांजी ने एक पन्ना का हार उठाया और उसे आगे बढ़ाते हुए कहा, 'यह एक बेहद खूबसूरत हार है। यकीनन पूरे एशिया के सबसे बेहतरीन हारों में से एक।'
नोएल ने उससे वह ले लिया। उसे गहनों के बारे में कुछ नहीं पता था, लेकिन मिशेल ने उससे कहा था कि इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। उनके पहले गहने ज़्यादा से ज़्यादा साधारण ही होंगे। जब तुम उन्हें ये गहने वापस उनके मुंह पर फेंक दोगी, तब वे तुम्हारा सम्मान करेंगे और फिर तुम्हारे लिए तिजोरी खोल देंगे।
नोएल ने उसे लापरवाही से हरे मखमली गद्दे पर रख दिया। वह कुर्सी पर पीछे झुक गई और अपनी उंगली पर जड़े माणिक से खेलने लगी। 'क्या आपको लगता है कि

मुझे इन गहनों में कोई दिलचस्पी होगी?'
सांजी ने अंगूठी को देखा। वह प्रभावित लग रहा था। 'लेकिन, महोदया, मैं—'
कृपया अपने नियोक्ता को बता दें कि मैं बहुत निराश हूं।
मैं आपको आश्वस्त करता हूँ, महोदया, मैं...
नोएल ने नज़रें हटा लीं और साइलेंसर की नली के भयंकर मुँह की ओर देखने लगी। मौत बस कुछ ही मीटर दूर थी। क्या बचने का कोई रास्ता था? क्या वह मिशेल को बिना बताए इस आदमी को इस बारे में चेतावनी दे सकती थी? उसे महसूस हो रहा था कि मिशेल बाथरूम से उसे देख रहा है, और उसने फैसला किया कि वह जोखिम लेने की हिम्मत नहीं करेगी।
'महोदया?'
‘श्री पटेल से कह देना कि अगर वो इससे बेहतर नहीं कर सकते, तो मैं अपना कारोबार कहीं और ले जाऊंगी।’ उसने मेज पर एक प्लैटिनम अमेरिकन एक्सप्रेस कार्ड रख दिया। मिशेल ने उसे ये कार्ड दिया था। उसे हैरानी हुई कि ये कार्ड उसे कहाँ से मिला और वो सिहर उठी। ‘मेरे पति ने मुझे अपना क्रेडिट कार्ड दिया है,’ उसने कहा।
सांजी ने अपने होंठ चाटे। ‘हमारे पास नीचे कुछ ऐसी चीज़ें हैं जो हम अपने सबसे खास ग्राहकों के लिए रखते हैं। अगर आप मुझे दुकान में वापस जाने की अनुमति दें...’
नोएल ने हाथ हिलाकर बात टाल दी। 'जी हाँ, जी हाँ। आगे बढ़ो।' उसे अचानक चक्कर आने लगा। मिशेल ने उससे यही करने को कहा था।
सांजी ने अपना सामान समेटा, झुककर अभिवादन किया और दरवाजे की ओर चल दिया। नोएल ने उसके पीछे दरवाजा धीरे से बंद होने की आवाज सुनी। उसने अपना चेहरा हाथों में छिपा लिया और फूट-फूटकर रोने लगी।

♦ ♦ ♦

संजी उस बक्से को वापस दफ्तर में ले आया और उसे मेज पर रख दिया। पटेल ने उसे खोला और उसमें रखी वस्तुओं को गिना। 'उसने कुछ नहीं खरीदा?'
'श्री पटेल, महोदय, वह कहती हैं कि उन्हें यहां कुछ भी पसंद नहीं है।'
'क्यों?'
उसने कहा कि वे उसकी उम्मीदों पर खरे नहीं उतरे।

वह क्या उम्मीद कर रही थी?
‘कुछ और... खास।’ पटेल ने अपनी भौंहें उठाईं। शायद उन्होंने फ्रांसीसी महिला को गलत समझा था। जो भी उन्हें अमीर बनाना चाहता था, उसके बारे में उनका नजरिया बदलने को तैयार था। ‘उसने मुझसे कहा कि वह इतनी बीमार है कि नीचे नहीं आ सकती।’
'खिड़कियों के पर्दे लगे हुए हैं, और वह बहुत पीली पड़ गई है और कांप रही है, मानो उसे बुखार हो।'
लेकिन आपको लगता है कि उसके पास साधन हैं?
उसके पास प्लैटिनम का क्रेडिट कार्ड है। और उसने एक अंगूठी पहन रखी थी, बर्मा की रूबी, सफेद सोने पर पन्ना-कट वाली। सबसे महंगी।'
‘बहुत खूब। हम देखते हैं कि क्या हम उन्हें जगह दे सकते हैं। आप मेरी दुकान का ध्यान रखिए। मैं मैडम गिरेसे का काम देख लेता हूँ।’ संजी एक ग्राहक को सेवा देने के लिए बाहर चला गया। पटेल कोने में रखी तिजोरी के पास गया और उसे खोला।

♦ ♦ ♦

मिशेल ने सिगरेट जलाई। पिस्तौल उसकी गोद में रखी थी। उसने कहा, 'तुम एक बेहतरीन अभिनेत्री बन सकती थीं।'
नोएल ने अपना चेहरा हाथों में छिपा लिया। वह सोचने लगी कि एक समय में उसे यह आदमी इतना आकर्षक कैसे लग सकता था। 'अब क्या?'
अब हम श्री पटेल का इंतजार करेंगे।
‘इसके लिए आपको मेरी जरूरत क्यों है?’
‘इस तरह से दुकानदार मुझे नहीं देख पाएगा।’
‘लेकिन निश्चित रूप से...’ वह रुक गई। अचानक उसे सब कुछ स्पष्ट हो गया। चाहे कुछ भी हो जाए, वह उसे मार डालेगा। वही एकमात्र ज़रिया थी जिससे कोई उसे अपराध से जोड़ सकता था।
'अगर तुम मेरी बात मानोगे तो तुम्हें कुछ नहीं होगा। शायद तुम मेरे साथ आ सकते हो।'
‘क्या मैं तुम्हारे साथ आऊं?’
‘तुम मेरे साथी बन सकते हो।’

वह जानती थी कि यह झूठ है। उसने उसकी आँखों में देखा। वहाँ कुछ भी नहीं था, केवल धूर्तता। उसने सोचा, हम सब कितनी आसानी से आकर्षण के जाल में फंस जाते हैं। कोई व्यक्ति मजाकिया, आकर्षक या सभ्य होता है तो हम मान लेते हैं कि वह अच्छा इंसान है, जबकि सच्चाई यह है कि शैतान हमेशा मुस्कुराता है और हमेशा हमें अपने जाल में फंसा लेता है। यही सबसे अच्छा भेस है।

'कृपया मुझे जाने दीजिए,' उसने कहा।

'बेशक। एक बार जब मुझे वह मिल जाएगा जो मैं चाहता हूं।'

'मैं नहीं कर सकती... मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर सकती...' उसकी आँखें ऊपर की ओर घूम गईं। वह कालीन पर आगे की ओर गिरने लगी।

'धत् तेरे की,' मिशेल ने कहा।

सहज ही उसने बंदूक नीचे रख दी और उसे पकड़ने के लिए हाथ बढ़ाया। लेकिन नोएल बेहोश नहीं हुई। इसके बजाय उसने उसे धक्का देकर दूर कर दिया और बंदूक उठा ली। वह घुटनों के बल घूमी, पिस्तौल का निशाना साधा और ट्रिगर दबा दिया।

♦ ♦ ♦

पटेल कमरा नंबर 289 के बाहर खड़े थे। उन्होंने अपना गला साफ किया और अपनी टाई ठीक की। उन्होंने दरवाजे पर दो बार दस्तक दी।

एक आदमी ने दरवाजा खोला। पटेल ने भौंहें चढ़ाईं।

मुझे खेद है। मैं मैडम गिरेसे को ढूंढ रहा था।

'मैं उसका पति हूँ। अंदर आइए।' वह एक तरफ हट गया।

पटेल सोच रहा था कि संजी ने उसे अपने पति के बारे में क्यों नहीं बताया। वह झिझका। कमरा अर्ध-अंधेरा था, जैसा कि संजी ने कहा था। उसने देखा कि मैडम गिरेसे एक कुर्सी पर बैठी हैं, उनका चेहरा उसकी ओर नहीं है। वह मुड़ीं। उनके मुंह में कपड़ा ठूंसा हुआ था। उनके हाथ पीछे बंधे थे और उनके पैर फटी हुई चादर के टुकड़ों से कुर्सी के पैरों से बंधे थे। उनके बालों में खून लगा था।

इससे पहले कि वह कुछ प्रतिक्रिया कर पाता, मिशेल ने उसे कॉलर से पकड़कर कमरे में घसीट लिया। दरवाजा उसके पीछे ज़ोर से बंद हो गया और उसने देखा कि वह आदमी उसके सिर पर कुछ वार कर रहा है। उसके पैर लड़खड़ा गए और सब कुछ अंधेरा हो गया।

♦ ♦ ♦

मिशेल पटेल को घसीटकर बाथरूम में ले गया। कुछ देर बाद वह तौलिए से हाथ पोंछते हुए बाहर आया। नोएल की निगाहें कमरे में उसका पीछा करती रहीं। वह सिर्फ एक आंख से देख पा रही थी; दूसरी आंख उसके माथे पर लगे घाव से रिस रहे चिपचिपे खून से धुंधली हो गई थी, जहां मिशेल ने उसे ऐशट्रे से मारा था।

वह नीचे झुका और पटेल का रोज़वुड का बक्सा उठाया। उसने ताला खोला और उसमें से एक चीज़ निकाली - हाथी के आकार का जेड का ब्रोच जिस पर माणिक जड़े हुए थे। 'देखो, नोएल। यह तुम्हारा भी हो सकता था।' उसने एक कुर्सी खींची और उसके बगल में बैठ गया। 'तुम मुझे मारना चाहती थी, नोएल। मैंने तुम्हें दौलत का लालच दिया और बदले में तुमने मुझे धोखा देने की कोशिश की। तुम सब औरतें एक जैसी हो। तुम मर्द को प्यार देती हो और फिर उसे बर्बाद करने की कोशिश करती हो।' उसने अपना हाथ बढ़ाकर उसकी गर्दन सहलाने की कोशिश की। नोएल ने अपने पैर ज़मीन पर जमा लिए और कुर्सी को पीछे फेंकने की कोशिश की। मिशेल ने एक हाथ से कुर्सी को थामे रखा जबकि उसकी उंगलियाँ नोएल के गले पर कस गईं। 'नोएल, तुम्हें किसी ने भी उतना प्यार नहीं किया जितना मैंने किया, है ना? मैंने तुम्हें तुम्हारी ज़िंदगी की सबसे बेहतरीन रात दी। बदले में मैंने बस थोड़ी सी मदद माँगी थी। इसके बदले में तुमने मुझे लगभग मार ही डाला। तुमने लगभग सब कुछ बर्बाद कर दिया। अब मैं तुम्हारे साथ क्या करूँ?'

नोएल मुंह पर पट्टी बंधी होने के बावजूद म्याऊं-म्याऊं जैसी हल्की आवाजें निकाल रही थी। मिशेल उसे देख रहा था, उसके चेहरे पर घृणा के भाव साफ झलक रहे थे।

औरत।

आप उनमें से किसी पर भी भरोसा नहीं कर सकते थे।

अध्याय 24

मोंटमार्ट्रे, पेरिस

‘ठीक है, वैलेंटाइन, इधर आओ, मेरी तरफ चलो। अपनी स्कर्ट हिलाओ, बस इतना ही। बस इतना ही।’

क्लिक-व्हिर।

‘अब दीवार के पास। दूर देखो, दूर देखो। सुंदर।’
क्लिक-व्हिर्र।
आर्मंड पोलेस्की उत्साहित थे। कभी-कभी उन्हें पता चल जाता था कि वे जो तस्वीरें खींच रहे हैं वे खास हैं, तस्वीरों को विकसित करने से पहले ही। यह उन्हीं में से एक था। उनके रोंगटे खड़े हो गए थे, लेकिन दोपहर की ठंड से उन्हें कंपकंपी नहीं हो रही थी।
हां, ये बहुत अच्छे थे।
पृष्ठभूमि में, कुछ बूढ़े लोग एक मेज पर बैठे थे, उनके दांतों के बीच गाउलोइस सिगरेट दबी हुई थी और वे आपस में हंसते हुए देख रहे थे। सफेद जैकेट पहने दुकानदार अपनी ही एक मेज पर बैठा था, उसकी निगाहें वैलेंटाइन के पैरों पर टिकी हुई थीं।
आर्मंड ने सोचा, "यह एक शानदार तस्वीर बनेगी," और उसने उस आदमी के चेहरे को पूरी तरह से फ्रेम में ला दिया।
क्लिक-व्हिर्र।
‘डेनिएल, इसाबेला, इधर आओ।’ बाकी दोनों मॉडल्स ने अपनी ड्रेस बदल ली थी; एक ने डायोर का मिडिफ टॉप और तीन लेयर वाली काली स्कर्ट पहनी थी, और दूसरी ने गिवेंची की कॉटन जर्सी ड्रेस। वे वैन से बाहर निकलीं और एक ड्रेसर ने उनके फर कोट उनके कंधों पर डाल दिए। ‘दीवार के पास इधर आओ।’
कुछ क्षणों के लिए भूरे रंग के धब्बेदार क्यूमुलस बादलों के बीच से सूरज निकला और मोंटमार्ट्रे पर स्थित सैक्रे-कोउर बेसिलिका के गुंबद पर चमक उठा।
‘डेनिएल, अपना कोट उतारो।’
“लगभग बर्फ गिर रही है,” लड़की ने शिकायत करते हुए कहा।
‘देखो, प्यारी, ये स्प्रिंग कलेक्शन है। कोट उतार दो।’
मैं ठंड से जम जाऊंगी।
अगर ये गिर गए तो मैं सबसे पहले इन्हें पकड़ लूंगी। अब ये कोट उतार दो, शाबाश!
लड़की ने मुंह बनाया लेकिन जैसा कहा गया वैसा ही किया। कुछ युवक सड़क पार करके देखने लगे। उन्होंने सीटी बजाई और तालियां बजाईं।
आर्मंड ने कैमरे में फिल्म का एक नया रोल लगाया। 'ठीक है, अब सेक्सी दिखो।'
‘इस भयानक मौसम में मैं सेक्सी कैसे दिख सकती हूँ?’
आर्मंड थोड़ा सहम गया। जब तक उसने बोलना शुरू नहीं किया था, तब तक वह

लड़की बेहद खूबसूरत थी। लेकिन उसके मुंह खोलने पर उसका गाढ़ा ब्रेटन लहजा उसे खलल डालने लगा। वैलेंटाइन से बिलकुल अलग। उसमें वाकई कुछ शालीनता थी।
'टेबल पर बैठ जाओ। ठीक है, अच्छा। अब मेरी तरफ देखो। नहीं, ऐसे नहीं, बेवकूफ कुतिया। भगवान के लिए, सेक्सी दिखो। उस आखिरी शानदार सेक्स के बारे में सोचो जो तुमने किया था।'
'खैर, ये तुम नहीं थे, मेरे प्यारे।'
'तो फिर एलेन डेलॉन के साथ संबंध बनाने के बारे में सोचो।'
'मैं वॉरेन बीट्टी के साथ संबंध बनाना ज्यादा पसंद करूंगी।'
'तो उसके बारे में सोचो।'
'जब मेरी योनि में बर्फ की तरह ठंडक जमी हो तो मैं सेक्स के बारे में कैसे सोच सकती हूँ?'
छोटी कॉनर! वो लड़की तो पेशेवर होनी चाहिए थी! उसने सोचा, जैसा कि उसने पहले भी अनगिनत बार सोचा था, कि अपनी ही मॉडल्स के साथ संबंध बनाना कितना सही है। इससे वे बेकाबू हो जाती हैं। 'इसाबेला, इधर आओ...'
जैसे ही वह दूसरी लड़की को ढूंढने के लिए मुड़ा, उसने देखा कि वैलेंटाइना सड़क के उस पार चली गई थी और दोपहर की कड़ाके की ठंड में भी बाहर खड़े एक स्ट्रीट एंटरटेनर को देख रही थी। अरमांड ने अपने हाथ कमर पर रख लिए। हे भगवान, ये एजेंसियां इन मॉडल्स को कहाँ से लाती हैं? 'वैलेंटाइना!'
उस आदमी के चारों ओर एक छोटी सी भीड़ जमा हो गई थी। वह आग खाने वाला था और सभी ने उसे जगह देने के लिए पीछे हट गए। अरमांड को संभावनाओं का एहसास हुआ। उसने अपना कैमरा उठाया और सड़क पार करके भागा, एक सिट्रोएन ड्राइवर की गालियों को अनसुना करते हुए, जिसे उससे बचने के लिए अचानक गाड़ी मोड़नी पड़ी।
वैलेंटाइन ने सहजता से उसके लिए एक विशेष मुद्रा बना ली, उसके हाथ कमर पर थे, होंठ खुले हुए थे और आँखें चौड़ी थीं। उसके पीछे अग्नि-भक्षक ने हवा में आग का एक मशरूमनुमा गोला फेंका।
क्लिक-व्हिर्र।
बेहतर एंगल पाने के लिए आर्मंड नीचे झुक गया। शानदार।
'अपने हाथों को अपने बालों में डालो, अपना सिर पीछे की ओर झुकाओ। बस इतना

ही, बस इतना ही।' उसने एक के बाद एक कई फ्रेम शूट किए।
क्लिक-व्हिर्र। क्लिक-व्हिर्र।
वैलेंटाइन ने अपना एक हाथ उसकी जांघ पर फेरा और दूसरा हाथ उसके सिर के पीछे रख दिया। वह लड़की जन्मजात प्रतिभाशाली थी।
क्लिक-व्हिर्र।
सड़क पर मनोरंजन करने वाला व्यक्ति दौड़कर आया। उसे पहले भी फोटोग्राफरों ने धोखा दिया था। उसने हाथ बढ़ाकर पैसे मांगे। आर्मंड ने अपनी जींस की जेब में हाथ डाला और बिना गिने मुट्ठी भर नोट फुटपाथ पर फेंक दिए। 'जल्दी करो!' उसने चिल्लाकर कहा।
सड़क पर गाने वाले ने एक और घूंट तरल पदार्थ पिया और अपना सिर पीछे की ओर झुकाया, बोतल उसके बाएं हाथ में फैली हुई थी और दूसरे हाथ में जलती हुई मशाल। आग की एक और लपट उठी।
आर्मंड लगातार एक के बाद एक शॉट लेता रहा जब तक कि पूरी रील खत्म नहीं हो गई। यह लड़की कमाल की थी। वह सोच रहा था कि डेनियल के साथ कोई बड़ा हंगामा किए बिना वह उसे अपने साथ बिस्तर पर कैसे ले जाए।
'सुंदर,' वह मुस्कुराया। 'भव्य!'

♦ ♦ ♦

आर्मंड पोलेस्की अपने मोंटमार्ट्रे स्टूडियो के डार्करूम में खड़े होकर केमिकल ट्रे पर कपड़ों की तरह सूख रही चमकदार प्रिंटों को घूर रहे थे। 'अविश्वसनीय,' उन्होंने धीरे से कहा।
उसने अभी भी गीली तस्वीरों में से एक को इन्फ्रारेड लाइट के नीचे रखा। उसने सोचा, संपादक को ये बहुत पसंद आएंगी। वैलेंटाइन की लाल रंग की झालरदार पोशाक और सड़क पर प्रदर्शन कर रही कलाकार के मुंह से निकलती हुई लपटें दर्शकों के फीके चेहरों और धूसर आसमान के साथ नाटकीय विरोधाभास पैदा कर रही थीं। आग के गोले ने कैफे की मेजों पर बैठे पुरुषों के चेहरों को एक शैतानी रंग दे दिया था।
हालांकि, वैलेंटाइन किसी देवदूत जैसी लग रही थी; पीली और सदमे में।
आर्मंड मुस्कुराया। दुनिया में अब भी कुछ ऐसे आदिम लोग हैं जो मानते हैं कि तस्वीर में आत्मा को कैद किया जा सकता है। शायद वे सही हैं, उसने सोचा। कभी-कभी कैमरे के लेंस के माध्यम से सचमुच मन के सार को निकाला जा सकता है।

वह लड़की अभी नौसिखिया ही थी, लेकिन उसने उसकी प्रतिभा को पहचान लिया। उसमें कुछ ऐसा था जो बनावटीपन से परे था। उसे पूरा यकीन था कि वोग पत्रिका उसकी तस्वीर को मुखपृष्ठ पर छापेगी। जल्द ही उसकी खूब मांग होने लगेगी। अफसोस की बात थी कि वह उसके साथ बिस्तर पर नहीं गई। वह उसे कुछ बातें सिखा सकता था।

वह बाहर निकला और हल्की रोशनी वाले अपार्टमेंट में दबे पांव फोन तक गया। न्यूयॉर्क की एक मॉडलिंग एजेंसी के साथ उसका लंबे समय से समझौता था कि वह असाधारण प्रतिभाओं की खोज करेगा। उसे एक उचित अग्रिम राशि और एक अच्छी कमीशन मिलती थी जब उसे कोई ऐसी लड़की मिल जाती थी जिसका वे उपयोग कर सकें।

लंबी दूरी के फोन का इंतजार करते हुए, वह अपने हाथ में मौजूद तस्वीर को घूर रहा था। असाधारण।

♦ ♦ ♦

पार्टी कॉस्मोपॉलिटन की एक फैशन एडिटर के सेंट जर्मेन स्थित अपार्टमेंट में थी। जब आर्मंड और वैलेंटाइन नौ बजे के ठीक बाद पहुंचे, तो कमरा गुलजार था। वहां मौजूद सभी लोग मैगज़ीन और फैशन जगत से जुड़े थे; संपादक, एजेंट, डिज़ाइनर, फोटोग्राफर और मॉडल।

आर्मंड ने वेलेंटाइन का परिचय एक युवा और उभरते हुए डिज़ाइनर से कराया, जो दुबला-पतला युवक था और उसने एकदम फिट शर्ट पहनी हुई थी। उसने वेलेंटाइन को वहीं भीड़ के बीच छोड़कर चला गया। वेलेंटाइन को आर्मंड का इतनी जल्दी उसे अकेला छोड़ देना बहुत बुरा लगा।

डिजाइनर कमरे के दूसरी तरफ खड़े एक लंबे, सुनहरे बालों वाले आदमी को घूरते हुए बेमतलब की बातें कर रहा था। दोनों ही भागने का बहाना ढूंढ रहे थे।

वैलेंटाइन को फैशन पार्टियां बिल्कुल पसंद नहीं थीं, उन्हें वहां की खोखली बातें और ईर्ष्या व दबी हुई नाराजगी की गहरी भावनाएं बिल्कुल नापसंद थीं। वह आना नहीं चाहती थी, लेकिन आर्मंड ने ज़िद की थी।

मुझे यहाँ से निकलना होगा, उसने सोचा। यह एक गलती थी।

लेकिन तभी आर्मंड फिर से प्रकट हुआ। 'वैलेंटाइन,' उसने कहा। 'मैं चाहता हूँ कि तुम किसी से मिलो।'

उसके बगल में नेवी ब्लू डबल-ब्रेस्टेड सूट पहने एक लंबा, सुरुचिपूर्ण ढंग से कपड़े पहना हुआ आदमी खड़ा था। आर्मंड कह रहा था, 'यह जॉन कैसवेत्स हैं। जॉन, यह वही लड़की है जिसके बारे में मैंने तुम्हें बताया था। वैलेंटाइन ब्रेटन।'
'एनचांटे,' उसने कहा। उसने अपना हाथ आगे बढ़ाया।
वैलेंटाइन ने उसके बारे में सुना था। उसने अपनी मॉडलिंग एजेंसी, फैशन इनकॉर्पोरेटेड को शून्य से खड़ा करके महज छह साल में न्यूयॉर्क की दूसरी सबसे बड़ी एजेंसी बना दिया था।
'अरमांड सही था। तुम असाधारण रूप से सुंदर हो,' उसने कहा।
'धन्यवाद,' वैलेंटाइन ने कहा। वह यह बात अक्सर सुनती थी। इसका कोई मतलब नहीं था। खूबसूरत होना एक खूबसूरत पोशाक पहनने जैसा था। जब आप उसे पहनकर बाहर जाते, तो लोग आपको नोटिस करना बंद कर देते। वे आपको नहीं, बल्कि उस पोशाक के लेबल को देख रहे होते थे।
आर्मंड ने मुझसे कहा कि मुझे तुम्हारा पोर्टफोलियो देखना चाहिए। उसने यह भी बताया कि वोग पत्रिका तुम्हें अगले महीने की कवर गर्ल बना रही है। मैं हमेशा प्रतिभाशाली युवा महिलाओं की तलाश में रहती हूं।
'मेरा जिक्र करने के लिए उनका बहुत-बहुत धन्यवाद। मैं बहुत सम्मानित महसूस कर रही हूं। लेकिन मुझे नहीं लगता कि मुझे इसमें दिलचस्पी होगी।'
'नहीं?'
'ऐसा नहीं है कि मैं आपके लिए काम करना पसंद नहीं करूंगी। बस मैं पेरिस छोड़ना नहीं चाहती।'
आप फ्रांस में कितना कमाते हैं?
मुझे पूरा यकीन है कि मैं अमेरिका में कहीं ज्यादा कमा सकता हूँ। लेकिन मैं नहीं—'
'मेरी बेटियाँ दुनिया में सबसे बेहतरीन हैं, वैलेंटाइन। वोग और कॉस्मोपॉलिटन के मुखपृष्ठों पर भी उनकी तस्वीरें छपती हैं। अमेरिकी संस्करणों में। वे एक दिन में हज़ार डॉलर कमा सकती हैं। क्या आप इसे मना कर सकते हैं?'
'जीवन में कुछ चीजें ऐसी होती हैं जो पैसे से भी ज्यादा महत्वपूर्ण होती हैं, महाशय कैसावेट्स।'
उसने बनावटी हैरानी से आर्मंड की ओर देखा। 'सचमुच?'
'प्रस्ताव के लिए धन्यवाद। आपका भी धन्यवाद, आर्मंड।'

कैसावेट्स ने कंधे उचकाए और उसे अपना कार्ड देते हुए कहा, 'अगर कभी तुम्हारा मन बदल जाए तो।' उसने उसके हाथ को चूमा और चला गया।
आर्मंड ने अपना सिर हिलाया। 'तुम पागल हो गए होगे, वैलेंटाइन।'
'शायद।'
'ज्यादातर लड़कियां उस प्रस्ताव के लिए अपना दायां हाथ भी दे देतीं जिसे तुमने अभी ठुकरा दिया।'
'एक हाथ से वे अच्छे मॉडल नहीं बन सकते। खैर, यह कोई प्रस्ताव नहीं था। वह बस मेरा पोर्टफोलियो देखना चाहता था।'
'उसने इसे देखा है। वह विनम्रता दिखा रहा था।'
वैलेंटाइन ने उसका हाथ छुआ। 'मुझे नहीं पता तुमने यह कैसे किया, लेकिन फिर भी धन्यवाद।'
'मुझे धन्यवाद मत कहो। तुमने मुझे एक बड़ा कमीशन गंवा दिया।' उसने अपना शैम्पेन का गिलास खाली किया और पास से गुजर रही ट्रे से दूसरा गिलास उठा लिया। 'वैसे, तुमने मना क्यों किया? अगर तुम्हें पैसे में दिलचस्पी नहीं है, तो तुम्हें क्या चाहिए?'
'मैं बस खुश रहना चाहती हूँ, जैसे बाकी सब। देखो, मुझे जाना होगा। मेरा पार्टी करने का मूड नहीं है।' उसके होंठ उसके गाल को छू गए और फिर वह भीड़ में गायब हो गई, उसे विस्मित होकर उसे पीछे देखते हुए छोड़कर।

तेहरान
एशियाई रंगत और बेहद आकर्षक ब्लीच किए हुए बालों वाला एक लंबा, सुंदर युवक अंतरराष्ट्रीय टर्मिनल पर न्यूज़स्टैंड पर अखबारों को देख रहा था, क्योंकि वह सिंगापुर जाने वाली अपनी कनेक्टिंग फ्लाइट का इंतजार कर रहा था। उसने एक पत्रिका उठाई और उसके कवर को घूरने लगा।
'एड्रीएन,' उसने कहा।
किसी सम्मोहन में डूबे व्यक्ति की तरह हरकत करते हुए, उसने पत्रिका के पैसे चुकाए और उसे मोड़कर अपने ब्रीफकेस में रख लिया। फिर वह पास के फोन की ओर भागा और पेरिस में बैठे सर्ज रेनार्ड को लंबी दूरी का फोन किया।

अध्याय 25

पेरिस

ओरली हवाई अड्डे पर 747 विमान गर्जना करते हुए रनवे पर दौड़ा। इंजन गरज उठे और रिवर्स थ्रस्ट के बल पर विशाल मशीन रुक गई। आखिरकार वह उसे मिल गया था। उसने मन ही मन इस दृश्य की कई बार कल्पना की थी; कभी यह कल्पना आँसुओं से भरे मिलन में समाप्त होती थी; कभी हिंसा में। उसने क्रोध, आरोप-प्रत्यारोप, दुःख, राहत, खुशी और मृत्यु की कल्पना की थी। वह सोच रहा था कि अंत में क्या होगा।

♦ ♦ ♦

वसंत ऋतु में पेरिस; यह गीतों जैसा नहीं है, रेनार्ड ने अपने कार्यालय की खिड़की से ओस पोंछते हुए और सड़क की ओर देखते हुए सोचा। बारिश की धूसर चादर और सड़कों पर गाड़ियों का जाम लगा हुआ था। उसने एक आदमी को हवा में टूटी छतरी से जूझते हुए देखा।

उसने अपनी रिसेप्शनिस्ट मोनिका को अंदर आते सुना। वह समय से पहले आ गई थी। उसने कहा, 'तुम अपने साथ कोई अच्छा मौसम तो नहीं लाई हो।'

‘मैं यहाँ मौसम पर चर्चा करने नहीं आया हूँ।’ मिशेल ने अपना चमड़े का अटैची केस खोला और वोग पत्रिका की एक प्रति निकाली। उसने उसे मेज पर फेंक दिया। ‘यही है वो।’

रेनार्ड उसे हैरानी से देखता रहा। 'तुम अंदर कैसे आए?'

'दरवाज़ा खुला था।'

‘तुमने मुझे चौंका दिया।’

'आपको इस जगह पर अपनी सुरक्षा के बारे में कुछ करना चाहिए। आप एक जासूस हैं।'

मेरे अधिकांश ग्राहक अपॉइंटमेंट लेते हैं।

‘मैं तुम्हें पैसे दे रहा हूँ। मैं तुमसे जब चाहूँगा तब मिलूँगा।’ उसने पत्रिका के मुखपृष्ठ की ओर इशारा किया। ‘अंततः मैंने उसे खुद ही ढूँढा। मुझे लगता है मैंने अपने पैसे बर्बाद कर दिए।’

रेनार्ड ने पत्रिका उठाई। 'लेकिन यह लड़की तो बहुत छोटी है। जिस महिला की हम

तलाश कर रहे हैं, वह चालीस साल की उम्र की है।'
‘यही है वो,’ मिशेल ने चमकदार कवर पर छपी तस्वीर पर हाथ मारते हुए कहा। ‘उसे ढूंढो। पता लगाओ कि वो कौन है।’ उसने ब्रीफकेस बंद किया और दरवाजे की ओर चल पड़ा। ‘मैं तुम्हें तीन दिन का समय देता हूँ।’
उसके पीछे दरवाजा बंद हो गया।

♦ ♦ ♦

‘आप सही थे,’ रेनार्ड ने कहा। उन्होंने अपनी दराज से एक मैनीला फोल्डर निकाला। ‘उसका नाम वैलेंटाइन ब्रेटन है। उसकी माँ का नाम एड्रिएन है, मायके का नाम... क्रिश्चियन। कमाल है!’ उन्होंने फोल्डर को डेस्क पर सरका दिया। ‘सब कुछ इसमें है। उसका नाम, पता, हाल का पारिवारिक इतिहास।’
मिशेल ने रिपोर्ट के पन्ने पलटे। 'ब्रेटन। रू सेंट ल्यूक। हे भगवान, यह तो यहाँ से बस कुछ ही ब्लॉक दूर है!'
‘मुझे यह पता नहीं चल सकता था। मैं एक निजी जासूस हूँ, कोई ज्योतिषी नहीं।’ उसने सिगरेट जलाई। ‘क्या आप मुझे बता सकते हैं कि यह सब क्या है?’
'अगर आपमें जरा भी जासूस बनने की क्षमता होती, तो आप खुद ही इसका पता लगा लेते।'
रेनार्ड ने मन ही मन सोचा, "अहंकारी कहीं का।" चलो देखते हैं, अगली खबर तुम्हें कैसी लगती है। रेनार्ड ने कहा, "मुझे लगता है कि अब यह सब कुछ बेमानी हो गया है।"
'आपका क्या मतलब है?'
‘अंतिम संकेतन को देखें।’
मिशेल ने आखिरी पन्ना पलटा और उसे पढ़ा। फोल्डर उसके हाथों से फिसल गया और उसका सारा सामान फर्श पर बिखर गया।
‘उन्होंने उसे पेरे लाचाइज़ में उसके पिता के बगल में दफना दिया।’
मिशेल ने अपना सिर हिलाया। 'यह ज़रूर कोई गलती होगी।'
मैं गलतियाँ नहीं करता।
‘वह मर नहीं सकती!’
हम सब मरते हैं। क्षमा करें महोदय। मैंने अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास किया। आपने मुझे उसे

आपके लिए ढूंढने के लिए कहा था। मैंने उसे ढूंढ लिया है।
आगे जो होने वाला था, उसके लिए रेनार्ड बिल्कुल तैयार नहीं था। मिशेल उछलकर खड़ा हुआ, उसका कॉलर पकड़ा और उसे कुर्सी से पीछे की ओर धकेल दिया। रेनार्ड अचानक पीठ के बल ज़मीन पर गिर पड़ा, मिशेल के बाएं हाथ की मुट्ठियाँ उसकी गर्दन पर थीं और घुटना उसकी छाती पर। मिशेल ने उसके बालों का एक गुच्छा पकड़ लिया। 'तुमने मुझे इतने समय तक इधर-उधर भटकाया और वह लगभग तुम्हारे पिछवाड़े में ही रह रही थी!' रेनार्ड को पता नहीं चला कि चाकू कहाँ से आया। अचानक वह उसके हाथ में था, नोक उसकी आँखों से कुछ ही इंच दूर। रेनार्ड ने चीखने की कोशिश की लेकिन मिशेल की मुट्ठियों ने उसका गला घोंट दिया। उसने अपनी आँखें बंद कर लीं और प्रार्थना की।
अगर मैं अभी हिल गया तो मेरी खैर नहीं। ये कमीना पागल है।
जब मिशेल को लगा कि वह बेहोश हो जाएगा, तभी वह खड़ा हो गया। रेनार्ड वहीं पड़ा साँस लेने के लिए तड़प रहा था। मिशेल उसके ऊपर खड़ा था, उसका सुंदर चेहरा एक भयानक बंदर जैसी पीड़ा से सिकुड़ा हुआ था। 'मर गई! चार साल हो गए और अब तुम मुझे बता रहे हो कि वह मर गई!' एक झटके में उसने रेनार्ड की मेज पर हाथ फेरा और सब कुछ ज़मीन पर बिखेर दिया। एक कांच की ऐशट्रे फाइलिंग कैबिनेट से टकराकर टूट गई। 'मर गई!'
मिशेल ने रेनार्ड की कुर्सी उठाई और उसे कमरे में दूर फेंक दिया। वह दरवाजे से टकराई और उसका एक पैर टूटकर अलग हो गया।
एक चीख सुनाई दी। मोनिका दरवाजे पर खड़ी थी, आँखें फाड़कर उस दृश्य को देख रही थी। रेनार्ड ने उसे वहाँ से हटने का इशारा किया। तभी मिशेल ने टेलीफोन को दीवार से उखाड़कर उसके सिर पर फेंक दिया, जिससे मोनिका फिर से चीख उठी। मिशेल घुटनों के बल बैठ गया। उसने अपना सिर हाथों में रख लिया और एक छोटे बच्चे की तरह रोने लगा।
रेनार्ड धीरे-धीरे उठे, अपनी टाई ठीक की और अपने ऑफिस से निकलकर रिसेप्शन की ओर चले गए। मोनिका फोन पर बात कर रही थी।
‘तुम क्या कर रहे हो?’ उसने गुस्से से कहा।
मैं पुलिस को फोन कर रहा हूँ।
उसने झूले पर मुक्का मारा। 'बेवकूफी मत करो। मैं नहीं चाहता कि ये पुलिसवाले यहाँ

ताक-झांक करें! बस एक कप कॉफ़ी बना दो। कड़क और काली। वो नाराज़ है, बस। वैसे भी, उसे अभी भी मेरी फ़ीस का बकाया देना है।'

♦ ♦ ♦

वाइपर की हल्की थपथपाहट से विंडस्क्रीन पर जमी बारिश की बूँदें हट गईं। मिशेल ने किराए की मर्सिडीज में हीटर को पूरी तरह चालू कर दिया। उसे याद नहीं था कि उसने अपनी पूरी जिंदगी में कभी इतनी ठंड महसूस की हो।

उसे यकीन नहीं हो रहा था कि उसकी माँ ने उसे फिर से छोड़ दिया है। उसने कभी सोचा भी नहीं था कि वह उसे दोबारा नहीं देख पाएगा। उसने ऐसा क्यों किया? अब अतीत को सुधारना नामुमकिन था। सब कुछ अधूरा था। घाव कभी नहीं भर सकते थे। उसने गाड़ी खड़ी की और बाहर निकला, बारिश की बूँदें उसके चेहरे पर चुभ रही थीं। सामने एक ऊँची सफेद दीवार में बना एक भव्य चौकोर फाटक था और कुछ पर्यटक खड़े थे। उसे यकीन नहीं हो रहा था कि ऐसे दिन में भी कोई घूमने-फिरने क्यों आना चाहेगा।

वह पथरीले रास्तों पर बेतरतीब ढंग से लड़खड़ाता हुआ चल रहा था, पुरानी मूर्तियों, नमी से भरे तहखानों और कंकालनुमा पेड़ों के पास से गुज़र रहा था। एक महिला इमैनुअल प्रॉस्ट की कब्र की तस्वीर ले रही थी। वह एक काई से ढकी कब्र के पास से गुज़रा जिस पर एक पट्टिका लगी थी जिस पर लिखा था: खेद।

यह मृतकों का एक विशाल, फैला हुआ महानगर था। बिना नक्शे के वह उसे यहाँ कभी नहीं ढूंढ पाएगा और दोपहर धीरे-धीरे धुंधली होती जा रही थी।

वह वापस कार में गया और रेनार्ड द्वारा दी गई फाइल निकाली। उसने रेनार्ड को गलत समझा था; वह बहुत ही बारीकी से काम करता था। उसने आखिरी पन्ने पर कब्र संख्या और उसका स्थान अंकित कर दिया था।

जब उसने उसे पाया तब लगभग अंधेरा हो चुका था। कब्र साधारण थी, लेकिन उसके पति के परिवार की कई पीढ़ियों की सेवा कर चुकी थी। उसका नाम सबसे आखिरी में जोड़ा गया था, और फूलदान में ताजे फूल रखे थे।

एड्रिएन ब्रेटन

1928-71

एक अद्भुत माँ और एक स्नेही पत्नी।

हम आपको हमेशा याद करेंगे।

ईश्वर तुम्हें स्वर्गदूतों के बीच स्थान देगा।
मिशेल उसे काफी देर तक देखता रहा। फिर उसने अपना सिर पीछे की ओर झुकाया और हंस पड़ा।
'देवदूतों का स्थान!'
उसने अपना चेहरा आकाश की ओर कर लिया और बारिश की बूँदों को अपने गालों पर पड़ने दिया। अब वह उससे कभी मुक्त नहीं हो सकता था। अपनी मृत्यु तक भी नहीं।

अध्याय 26

मिशेल ने सड़क पर गाड़ी खड़ी कर दी।
यह अपार्टमेंट बुलेवार्ड डेस इनवैलिड्स और एफिल टॉवर के बीच रू अमाली के पास एक सदी पुरानी इमारत में था। एक तरफ मांस की दुकान थी और दूसरी तरफ प्राचीन वस्तुओं का विक्रेता था।
मिशेल ने केबिन की लाइट जलाई और रेनार्ड का फोल्डर चेक किया। ब्रेटन का अपार्टमेंट छठी मंजिल पर था।
कार के अंदर ठंड बढ़ गई। मिशेल कांप उठा। उत्तर दिशा से आती हवा के कारण स्ट्रीट लैंप की सोडियम लाइटों से रोशन होती बारिश तिरछी पड़ रही थी।
उसने फोल्डर की ओर देखा।
विषय की एक बेटी थी, वैलेंटाइन मिशेल, जिसका जन्म हुआ था।
23/7/52. कोई अन्य ज्ञात संतान नहीं।
उसने फोल्डर बंद किया और केबिन की लाइट बंद कर दी।
उसने अपनी घड़ी देखी। ढलती शाम में घड़ी का डायल चमक रहा था। छह बज चुके थे। खैर, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। अगर ज़रूरत पड़ी तो वह पूरी रात इंतज़ार कर लेगा।

♦ ♦ ♦

एक घंटे बाद उसने गली में कदमों की आहट सुनी, एक महिला की ऊँची एड़ी की तेज क्लिक-क्लिक की आवाज। इससे उसे बहुत समय पहले लकड़ी की सीढ़ियों पर अपनी माँ के कदमों की आहट याद आ गई।
वह कार से कुछ ही फीट की दूरी से गुजरी और जल्दी से सड़क पार करके अपार्टमेंट

बिल्डिंग में चली गई। उसने अपनी छतरी से बारिश की बूँदें झाड़ने के लिए सीढ़ियों पर एक पल के लिए रुक गई। वह लगभग छाया में थी, लेकिन वह जानता था कि यह वही है। उसके चलने का तरीका ही ऐसा था; बिल्कुल उसकी माँ की तरह।
उनकी माँ।
फिर वह लॉबी के अंदर गायब हो गई।
आखिरकार एड्रिएन मरी नहीं थी। उसका एक अंश अभी भी जीवित था।
यह अभी खत्म नहीं हुआ था।
यह तो बस शुरुआत थी।

♦ ♦ ♦

'शुभ संध्या, पापा!' वैलेंटाइन ने अपना कोट और स्कार्फ उतारकर दरवाजे के पीछे टांग दिया। वह जल्दी से आग की ओर चली गई। 'शुभ रात्रि!'
जीन-क्लाउड आग के पास एक कुर्सी पर दुबका बैठा था। उसने वही गाउन पहना हुआ था जो उसने उस सुबह पहना था जब वह गई थी। वह मुरझाया हुआ और कमजोर लग रहा था। उसकी माँ की मृत्यु के बाद से वह बीस साल बूढ़ा हो गया था।
वैलेंटाइन कुर्सी के आर्मरेस्ट पर बैठ गया और उसने उसके कंधे पर हाथ रख दिया।
'तुम्हारा दिन कैसा रहा?'
मुझे बहुत थकान महसूस हो रही है। मैंने आज दोपहर थोड़ी देर पढ़ी।
हमें कुछ समय के लिए कहीं घूमने जाना चाहिए। छुट्टी पर। हम नीम्स में चाचा से मिलने जा सकते हैं।
'शायद जल्द ही। अभी मेरी हालत ठीक नहीं है।'
'तुम्हें इस अपार्टमेंट से बाहर निकलना होगा। तुम हर दिन ऐसे ही यहाँ नहीं बैठ सकते।'
'मैं ठीक हूँ।'
'हम जा रहे हैं, और यह अंतिम निर्णय है! मैं आज रात उसे पत्र लिखूंगी और सब कुछ व्यवस्थित कर लूंगी।' उसने उसके सिर के ऊपर चुंबन किया। 'मैं हम सबके लिए रात का खाना बनाऊंगी।'
उसने उसे रसोई में जाते हुए देखा। वह उसे उस उम्र में उसकी माँ की बहुत याद दिलाती थी। शुक्र है कि वह बाकी मामलों में अपनी माँ जैसी नहीं थी। जहाँ एड्रिएन

क्रूर थी, वहीं वैलेंटाइन दयालु थी; जहाँ एड्रिएन सज़ा देती थी, वहीं वैलेंटाइन माफ़ कर देती थी।
वह इस बात का कारण थी कि उसे उस दुखद शादी पर कभी पछतावा नहीं हुआ।
लेकिन वह यहाँ हमेशा के लिए नहीं रह सकती थी। अब वह मशहूर हो चुकी थी, और उसने देखा कि सड़क पर लोग उसे किस तरह देखते थे। जल्द ही वह चली जाएगी। कोई न कोई उसे अपने साथ ले जाएगा।
उसने बस यही प्रार्थना की कि वह सही आदमी हो।
और अभी नहीं।
कृपया, अभी नहीं।

♦ ♦ ♦

अगली सुबह वैलेंटाइना सवा आठ बजे काम पर निकलीं। वह गैरे डेस इनवैलिड्स स्थित मेट्रो स्टेशन तक दो ब्लॉक पैदल चलकर गईं। वह एल'ओपेरा स्टेशन पर उतरीं और रू डे ला पैक्स स्थित एक इमारत में चली गईं।
मिशेल पूरे रास्ते उसके पीछे-पीछे चलता रहा। लॉबी के अंदर दीवार पर एक निर्देशिका लगी हुई थी। दूसरी और तीसरी मंजिलें एलीट मॉडलिंग एजेंसी की थीं।
उसने बोर्ड को काफी देर तक देखा, फिर मुड़ा और मेट्रो की ओर वापस चल दिया।

♦ ♦ ♦

यह शाम का वह धुंधला समय था जिसे पेरिसवासी 'l'heure bleu' कहते हैं।
लाउडस्पीकर से आती हुई एक धातु जैसी आवाज ने आने वाली ट्रेन की घोषणा की।
वैलेंटाइन को सुरंग के काले मुहाने से ठंडी हवा का झोंका महसूस हुआ और मंच उसके पैरों के नीचे भूकंप के पहले झटके की तरह कांप उठा।
'माफ़ कीजिए, महोदया। क्या आपके पास माचिस है?'
वैलेंटाइन ने पीछे मुड़कर देखा। उसकी पलकें झपकीं; वह आदमी देखने में बेहद आकर्षक था। उसके सुनहरे बाल उसके एशियाई रंग से बिल्कुल मेल नहीं खा रहे थे; उसकी गहरी भूरी आँखें सीधी और बेचैन कर देने वाली थीं। दोनों का मेल बिल्कुल नहीं बैठ रहा था।
'महोदय?'
'प्रदीप्त करना?'

मुझे माफ करना। मैं धूम्रपान नहीं करता। मैंने इसे छोड़ दिया है।
कोई बात नहीं। धन्यवाद।
ट्रेन स्टेशन में गड़गड़ाती हुई पहुंची, ब्रेक की इतनी तेज़ आवाज़ हुई कि उसके दांत किटकिटाने लगे। उसने ठंडी हवा के झोंके से बचने के लिए अपना सिर झुका लिया। दरवाजे खुले और डिब्बों से भीड़ उमड़ पड़ी, जिससे उसे धक्का लगा। डिब्बे में चढ़ते ही उसने पीछे मुड़कर देखा कि क्या वह आदमी अभी भी वहीं है, लेकिन वह गायब हो चुका था।
आधे घंटे बाद जब वह गैरे डेस इनवैलिड्स पहुंची तो भी वह उसी के बारे में सोच रही थी। यह एक बहुत ही बेमन से किया गया प्रयास था, अगर इसे प्रयास कहा जा सकता है। उसने अपने हाथ कोट में और अंदर डाले और थोड़ा तेज़ चलने लगी। फिर से बारिश हो रही थी और शाम के धुंधलके में सड़क किसी सांप की त्वचा की तरह चमक रही थी। गीले डामर पर टायरों की सरसराहट सुनाई दे रही थी। उसने रू अमाली से मुड़कर अपना सिर छाते के नीचे झुका लिया, ताकि तेज़ बारिश से बच सके।
एक बार उसे लगा कि कोई उसके पीछे दौड़ रहा है और वह घबराकर पीछे मुड़ी। लेकिन सड़क खाली थी।
प्लेटफ़ॉर्म पर वह अजनबी। उसमें ऐसा क्या था जो उसे इतना जाना-पहचाना सा लगा? शायद सिर्फ़ उसकी शक्ल ही उसे चौंका गई थी। वह तेज़ी से आगे बढ़ी, और अपना अपार्टमेंट देखकर लगभग दौड़ने ही लगी।
जैसे ही वह दरवाजे के अंदर पहुंची, बारिश शुरू हो गई। वह लॉबी में खड़ी रही और सड़क की ओर पीछे मुड़कर देखा। क्या वह मेट्रो वाला आदमी था? नहीं, बस उसकी कल्पना थी। वहां कोई नहीं था। उसने लिफ्ट का बटन दबाया और सब कुछ भूल गई।

♦ ♦ ♦

डेस्क पर सिगरेट की राख बिखरी हुई थी। बुडजिंस्की ने उस गंदगी को ऐसे देखा मानो किसी और ने फैलाई हो। उसने ऐशट्रे की राख कूड़ेदान में खाली की और एक और गाउलोइस सिगरेट जलाई।
उन्होंने एक घंटे पहले अभिलेख विभाग से टेलेक्स प्राप्त किया था। उन्होंने उसे उठाया और दोबारा पढ़ा।
28/12/71

प्रति: आईपी पेरिस
हम आपको 28/12/71 को मैंडरिन होटल में हुई एक डकैती के बारे में सूचित करना चाहते हैं। यह डकैती अज्ञात व्यक्ति या व्यक्तियों द्वारा की गई थी। आर्केड ज्वैलरी स्टोर के मालिक को बहला-फुसलाकर कमरे में ले जाया गया और बेहोश कर दिया गया। कमरे में मौजूद व्यक्ति की हत्या कर दी गई। अब मृतक की पहचान ह्यूस्टन, टेक्सास की अमेरिकी पर्यटक सुसान कॉनर्स के रूप में हुई है।
हम अभी भी इस अपराध में संलिप्तता के संदिग्ध एक व्यक्ति से पूछताछ करना चाहते हैं। यह व्यक्ति संभवत: विदेशी नागरिक है, जिसकी उम्र 20-25 वर्ष है, लैटिन मूल का है, छह फुट लंबा है, काले बाल हैं और वह एलन रेगन नाम का इस्तेमाल करता है।
इस व्यक्ति का पता लगाने में तत्काल सहायता का अनुरोध है। यदि हिरासत में लिया गया हो तो प्रत्यर्पण का अनुरोध किया जाएगा।
एंड आईपी सिंगापुर
हस्ताक्षर: रोलैंड टैन (मुख्य अधीक्षक)
सिंगापुर पुलिस (इंटरपोल डिवीजन)
वह अपनी खिड़की से लॉन्गचैम्प्स रेसकोर्स की ओर देख रहा था। आज रेस का दिन था, और जहाँ वह बैठा था वहाँ से उसे ग्रैंडस्टैंड और दूर से रंगीन रेशम की झलक दिखाई दे रही थी, जब घुड़सवार ट्रैक पर आ रहे थे।
लेकिन उसकी निगाहें भीतर की ओर, सेंट क्लाउड से बहुत दूर के स्थानों पर टिकी थीं। उसने इस बारे में सोचा; एक आदमी एक महिला की मदद से गहनों की दुकान लूटता है; पहले सिंगापुर, फिर नई दिल्ली।
क्या यह वही व्यक्ति था: 'एलन रेगन'?
यह होना था।
क्या दुनिया भर में पुलिस की फाइलों में इसी तरह के अन्य अनसुलझे अपराध धूल फांक रहे थे? वह जल्द ही इसका पता लगा सकता था। उसने एक नोटपैड अपनी ओर खींचा, एक और सिगरेट जलाई और काम में जुट गया।

♦ ♦ ♦

इंटरपोल मुख्यालय की सबसे ऊपरी मंजिल पर स्थित रेडियो कक्ष कभी शांत नहीं रहता था। दोहरे कांच के विभाजन से टेलेक्स, टेलीटाइप और रेडियो टेलीग्राफ मशीनों

की लगातार होने वाली धातु की खड़खड़ाहट दब जाती थी। प्रतिदिन प्राप्त होने वाले हजारों संदेशों में से कई अभी भी मोर्स कोड में आते थे क्योंकि संगठन के गरीब सदस्य देश अधिक महंगे उपकरण खरीदने में असमर्थ थे।
दूसरे कमरे में, चार उच्च प्रशिक्षित ऑपरेटर इंटरपोल कोड बनाने वाले पांच अक्षरों के संयोजन को अंग्रेजी, स्पेनिश, फ्रेंच या अरबी में प्रसारित कर रहे थे।
मोटे चश्मे पहने एक दुबला-पतला, पीला सा दिखने वाला आदमी शॉर्ट-वेव रेडियो के सामने बैठ गया और अपनी तर्जनी उंगली मोर्स कोड की कुंजी पर रख दी। उसका हाथ लगातार, सहज गति से घूमता रहा और औसतन 35 शब्द प्रति मिनट टाइप करता रहा।
ये संदेश ऊपर छत पर लगे एक एंटीना से प्रसारित किए गए, और वहाँ से दक्षिण में अस्सी किलोमीटर दूर स्थित सेंट मार्टिन डी'एबैट गाँव के बाहर एक चारागाह तक पहुँचे। वहाँ से, एक विशाल ट्रांसमीटर ने बुडजिंस्की की चेतावनी को स्विट्जरलैंड से लेकर फिलीपींस तक, दुनिया भर की पुलिस बलों तक पहुँचाया।
अब उसे बस इंतजार करना था।

अध्याय 27

एक चमकदार, साफ दिन। शायद आखिरकार वसंत आ ही गया, वैलेंटाइन ने सोचा। ठंडी हवा से कारों के विंडस्क्रीन वाइपर के नीचे लटकते पर्दे फड़फड़ा रहे थे, और सड़क के किनारे लगे कैफे के चमकीले छाते लहरा रहे थे।
वैलेंटाइन दोपहर की हल्की धूप में खुद को गर्म कर रही थी और उसने कैफे औ लेट और क्रोक मॉन्सियर का ऑर्डर दिया। हंसते-खेलते किशोरों का एक समूह मोपेड पर सवार होकर फुटपाथ की ओर तेजी से बढ़ा।
वेटर उसका दोपहर का खाना लेकर आया। वह धीरे-धीरे खा रही थी और साथ ही बांसुरी बजाते एक गायक को आते-जाते पर्यटकों से कुछ पैसे मांगने की कोशिश करते हुए देख रही थी। उसने अभी अपनी कॉफ़ी खत्म ही की थी कि अचानक किसी चीज़ ने उसे पीछे मुड़ने पर मजबूर कर दिया और उसने देखा कि वह उसके पीछे, बस दो टेबल की दूरी पर बैठा है।
वो मेट्रो का आदमी था। उसने ऊपर देखा और मुस्कुराया।
उसने अखबार को मोड़कर पास आकर कहा, 'क्या मैं बैठ सकता हूँ?' और उसने

उसके जवाब का इंतजार नहीं किया।
‘क्या मैं आपको जानता हूँ, महाशय?’ वैलेंटाइन ने कहा।
'मुझे लगा कि मैंने आपको कहीं देखा है। शायद मैं गलत हूं।'
'मुझे लगता है कि तुम हो।'
'क्या पिछली रात जब आप अपनी ट्रेन का इंतजार कर रहे थे, तब हमारी थोड़ी देर बात नहीं हुई थी? मुझे अपनी सिगरेट जलाने के लिए माचिस की जरूरत थी।'
'मुझे खेद है, महोदय, मुझे याद नहीं है।'
'कृपया मुझे 'महाशय' कहना बंद करें। मेरा नाम मिशेल है। आपका नाम क्या है?'
‘आप बहुत सीधे-सादे हैं, महोदय।’
वह मुस्कुराया। 'हां, मैं हूं, लेकिन मुझे अफसोस है कि मैं बहुत अनाड़ी भी हूं। आपको मुझे माफ करना होगा।'
वैलेंटाइन ने सोचा, 'मैं लोमड़ी की तरह चालाक हूँ। मेरा नाम वैलेंटाइन है।'
‘यह तो बहुत ही सुंदर नाम है।’
'धन्यवाद।'
क्या आप यहीं आस-पास काम करते हैं?
वैलेंटाइन ने उठकर चले जाने के बारे में सोचा। वह अक्सर खुद को इस तरह से आकर्षित नहीं होने देती थी। उसने उसे गौर से देखा; एक असाधारण दिखने वाला आदमी। उसके कपड़े महंगे थे और उसकी घड़ी भी। उसने रंगीन ब्रोंज़िनी धूप का चश्मा पहना हुआ था, और उसकी छोटी उंगली की अंगूठी में एक विशाल पन्ना-कट रूबी जड़ा हुआ था। 'मैं फैशन व्यवसाय में काम करता हूँ।'
'आप इसे पसंद करते हैं?'
‘हाँ। क्यों?’
'तुम्हारे जैसी लड़की बेहतरीन जीवन की हकदार है।'
'मैं अपने जीवन से पूरी तरह संतुष्ट हूं, धन्यवाद, महोदय।'
वह अपनी कुर्सी पर पीछे झुककर बैठ गया और उसकी ओर मुस्कुराया। वह पूरी तरह से शांत दिख रहा था। उसका व्यवहार एक साथ आक्रामक और आकर्षक था। उसकी आँखों की तरह ही, इससे उसे थोड़ा असहज महसूस हुआ।
'और आप क्या करते हैं, महोदय, जब आप कैफे में बेशर्मी से महिलाओं को पटाने की कोशिश नहीं कर रहे होते हैं?'

'मैं एक पर्यटक हूं।'
और जब आप पर्यटक नहीं होते हैं?
'मैं यात्रा करता हूं।'
‘आप बहुत रहस्यमय व्यवहार कर रहे हैं।’
‘ऐसा इसलिए है क्योंकि सच्चाई बहुत ही सामान्य है।’ वह उसकी ओर झुका। ‘जानती हो, तुम बहुत खूबसूरत महिला हो।’
वैलेंटाइन ने अपनी घड़ी देखी। उसे दो बजे एक फोटोग्राफी स्टूडियो में काम पर जाना था। 'आपको इससे थोड़ा ज़्यादा मौलिक होना पड़ेगा।' वह जाने के लिए उठी।
'अलविदा, महोदय।'
अगले दिन एजेंसी में रिसेप्शन डेस्क पर उसके लिए दो दर्जन लाल गुलाब रखे हुए थे। वैलेंटाइन ने कार्ड फाड़कर खोला, उसे महसूस हुआ जैसे रिसेप्शनिस्ट की निगाहें उसकी गर्दन पर चुभ रही हों।
‘एक खूबसूरत महिला के लिए। महोदय की ओर से। क्षमा करें, मैं इससे अधिक मौलिक नहीं हो सकी।’ वह डेस्क पर बैठी लड़की की ओर मुड़ी। ‘क्या वह इन्हें स्वयं लाए हैं?’
'कल दोपहर। वह बहुत ही आकर्षक थे।'
वैलेंटाइन ने कार्ड को दोबारा पढ़ा। आखिर यह आदमी खुद को क्या समझता है, जो सड़क पर यूं ही मिली एक महिला को फूल भेज रहा है?
रिसेप्शनिस्ट ने कहा, 'मुझे कभी किसी ने लंबे डंठल वाले गुलाब नहीं भेजे।'
‘तो फिर, वे तुम्हारे पास हैं,’ वैलेंटाइन ने कहा और चला गया। धिक्कार है उसे! उसे उम्मीद थी कि वह अमीर होने के कारण उसके पैरों पर गिर पड़ेगी। इस धंधे में उसे हर दिन ऐसे सैकड़ों आदमी मिलते थे।

♦ ♦ ♦

‘वैलेंटाइन, इधर आओ, मेरी तरफ चलो। अपनी स्कर्ट हिलाओ, बस इतना ही। बस इतना ही।’ क्लिक-व्हिर्र। ‘वहाँ चित्रकार के सामने खड़ी हो जाओ। नज़रें हटा लो, नज़रें हटा लो। सुंदर।’
मौसम बदल गया था और दोपहर ढलते समय असामान्य रूप से गर्मी थी। यह असाइनमेंट पैटू के नए ग्रीष्मकालीन संग्रह, कॉस्मो के लिए था, और आर्मंड का विचार था कि लेफ्ट बैंक पर चित्रकारों और पर्यटकों के रंग-बिरंगे वातावरण के बीच तस्वीरें

खींची जाएं, जिसमें पृष्ठभूमि में नोट्रे-डेम और इले डे ला सिटे दिखाई दें।
अपने हाथों को अपने बालों में डालो। अपना सिर पीछे की ओर झुकाओ। बस इतना ही, बस इतना ही।
वैलेंटाइन ने कैमरे से परे देखा और जम गया। यह वही था। एक काली मर्सिडीज फुटपाथ से सटाकर खड़ी थी और मिशेल बोनट पर बैठा मुस्कुरा रहा था।
उसने हाथ हिलाया।
'क्या बात है?' आर्मंड ने कहा। 'वैलेंटाइन!'
'माफ़ करना, आर्मंड।'
'क्या बात है? तुम क्या देख रहे हो?'
'कुछ नहीं।'
आर्मंड मुड़ा। 'वह कौन है?'
'परिचित व्यक्ति।'
'हम्म। अच्छा, अपनी आँखों से वह भोलापन वाला भाव हटाओ। हमें काम करना है।'
वैलेंटाइन ने ध्यान केंद्रित करने की कोशिश की। लेकिन अचानक उसे असहजता और आत्म-चेतना महसूस हुई। उसे महसूस हो रहा था कि वह उसे देख रहा है, धिक्कार है उसे!
जब उन्होंने थोड़ा आराम किया तो वह टहलते हुए उनके पास आया। 'हैलो, वैलेंटाइन।'
मेकअप आर्टिस्ट उसके आसपास घूम रही थी और थोड़ा और ब्लश लगा रही थी।
उसने शांत भाव से कहा, 'हैलो, महोदय। फूलों के लिए धन्यवाद।'
मिशेल ने कार की ओर इशारा करते हुए कहा, 'हमारी लिमोसिन। मैंने इसे बहुत खर्च करके किराए पर लिया है ताकि शूटिंग खत्म होने के बाद मैं आपको लंच पर ले जा सकूं।'
'तुम्हें कैसे पता चला कि मैं कहाँ मिलूँगा?'
'एजेंसी वाली लड़की। रिसेप्शन पर बैठी लड़की। उसे कोई परेशानी तो नहीं होगी, है ना?' उसकी आँखों में शरारत भरी चमक थी।
'तुमने उससे क्या कहा?'
मैंने उसे गर्म लोहे से प्रताड़ित किया। वह बहुत बहादुर थी। लेकिन जब मैंने उससे कहा कि उसकी आंखें बहुत सुंदर हैं, तो वह पूरी तरह पिघल गई।
मुझे यकीन है, वैलेंटाइन ने सोचा। 'उसे इस तरह की जानकारी नहीं देनी चाहिए।'

‘क्या तुम उससे नाराज़ हो? या मुझसे?’
उसने अनजाने में ही मुस्कुरा दिया।
मैं तुम दोनों से बहुत नाराज हूँ।
तो चलिए मैं इसकी भरपाई कर देता हूँ। मैंने टूर डी अर्जेंट में एक टेबल बुक कर ली है। क्या आपको लगता है कि आप लगभग आधे घंटे में अपना काम खत्म कर लेंगे?
‘टूर डी अर्जेंट? वो तो बहुत महंगा है। और मैंने ठीक से कपड़े भी नहीं पहने हैं...’ वह शूट के लिए जींस और काली टी-शर्ट पहनकर आई थी।
‘आप आलू की बोरी और स्नोशू पहनकर भी ट्रैफिक रोक सकते हैं।’
ठीक है। मेरा इंतज़ार करो। मैं जल्दी ही काम खत्म कर लूंगा। आलू की बोरी तैयार रखो। क्या तुम्हें यकीन है कि स्नोशूज़ मेरे नाप के हैं?

♦ ♦ ♦

मिशेल कार के पीछे आया और उसके लिए दरवाजा खोलकर खड़ा रहा। वैलेंटाइन अंदर बैठ गया। उसने विंडस्क्रीन से उल्लंघन का नोटिस हटाया, उसे मोड़कर नाली में फेंक दिया।
उसने इंजन स्टार्ट किया, फिर ग्लव बॉक्स में हाथ डालकर एक छोटी मखमली थैली निकाली। उसने थैली का सारा सामान अपनी हथेली पर निकाल लिया। उसमें एक हीरे का हार और मोतियों की दो बालियां थीं।
उन्होंने कहा, 'ये आपके लिए हैं।'
वैलेंटाइन अपनी हैरानी छिपा नहीं सकीं। उनकी कीमत हजारों फ्रैंक में होगी। 'क्या ये... असली हैं?' वह हकलाते हुए बोलीं।
'बिल्कुल।'
लेकिन... मैं इन्हें सहन नहीं कर सकता।
'क्यों नहीं?'
मुझे लगता है कि यह बात तो स्पष्ट है।
‘तो इसे कर्ज़ समझ लो।’ उसने सेंट एंटोइन स्ट्रीट और सेबस्टोपोल बुलेवार्ड के कोने पर लाल बत्ती पार करते हुए मर्सिडीज कार को तेज़ी से भगाया। ‘बाद में मुझे वापस कर देना।’
'लेकिन...'
‘आप बिना गहने पहने टूर डी अर्जेंट में नहीं जा सकते। इससे बेहतर है कि आप नंगे

ही जाएं।'
'ठीक है। लेकिन दोपहर का खाना खत्म होते ही तुम्हें ये वापस मिल जाएंगे।' उसने भारी हार पहन लिया। 'क्या तुम हमेशा अपनी कार में इतने गहने रखती हो?'
'यह मेरा व्यवसाय है।'
'आप रत्नों के व्यापारी हैं?'
'हां। मैं इनका निर्यात करता हूं। मुख्यतः एशिया से।'
तो फिर आप कहाँ रहते हैं?
'होटलों में।' वे क्वाई टूरनेल की ओर मुड़े। 'हम लगभग पहुँच गए हैं। मैं आपको दोपहर के भोजन पर इसके बारे में बताऊँगा।'
टूर डी'अर्जेंट पेरिस के सबसे प्रसिद्ध रेस्तरांओं में से एक था। मिशेल ने सीन नदी और इले डे ला सिटे के नज़ारे वाली खिड़की के पास एक सीट बुक की थी।
'तुम बेहद खूबसूरत लग रही हो,' मिशेल ने उससे कहा। 'जब हम अंदर आए तो कमरे में मौजूद लगभग हर आदमी तुम्हें ही घूर रहा था। क्या तुमने ध्यान नहीं दिया?'
वह मुस्कुराई। 'शायद दो-तीन लोग थे।'
सोमेलियर एक बोतल मोएट एट चैंडन लेकर आया, जो एकदम ताज़ी और बहुत ठंडी थी। 'फूलों के लिए फिर से धन्यवाद।'
मुझे बहुत खुशी हुई। मैं एक रोमांटिक इंसान हूँ।
'आपको कैसे पता चला कि मैं कहाँ काम करता हूँ?'
'आपने मुझसे कहा।'
क्या मैंने ऐसा किया?
'बिल्कुल।'
उसने गिलास के किनारे से उसे गौर से देखा। 'आप बिल्कुल सही फ्रेंच बोलते हैं। लेकिन मैं आपके लहजे को समझ नहीं पा रही हूँ। और आप फ्रेंच जैसे दिखते भी नहीं हैं। तो आप कौन हैं, श्रीमान मिशेल?'
'मेरी मां फ्रांसीसी थीं, मेरे पिता... थोड़े और अलग थे। वे अपरंपरागत लोग थे।'
और आप पेरिस में कितने दिन रुकेंगे?
जब तक मैं अपना काम पूरा नहीं कर लेता।
और फिर आप घर चले जाते हैं?
'मेरा कोई घर नहीं है। मैंने आपको बताया था, मैं होटलों में रहता हूँ। मेरा व्यवसाय

मुझे पूरी दुनिया में ले जाता है।'
'आप भाग्यशाली हैं।'
'कभी-कभी अकेलापन महसूस होता है। कई बार मेरा मन करता है कि काश कोई होता जिसके साथ मैं अपना जीवन साझा कर पाती।'
'अपका परिवार कहाँ है?'
'मेरा कोई परिवार नहीं है। मैं अपने पिता को कभी ठीक से जान ही नहीं पाया। और मेरी माँ... मेरी माँ का निधन तब हो गया जब मैं चार साल का था।'
'तुम अपने पिता को कभी नहीं जानते थे?'
'जब मैं काफी छोटी थी तब वह हमें छोड़कर चले गए।'
'यह तो बहुत बुरा है। मैं बिना परिवार के रहने की कल्पना भी नहीं कर सकती। आपका पालन-पोषण किसने किया?'
मैं साइगॉन के एक अनाथालय में पला-बढ़ा।
उसका चंचल स्वभाव गायब हो गया था, और उसने उसके बारे में अपनी पहली धारणाओं पर पुनर्विचार करना शुरू कर दिया। उसने सोचा था कि वह बस एक और बिगड़ा हुआ रंगीन मिजाज लड़का है; लेकिन इस दुख और अभाव की कहानी ने उसे और भी आकर्षक बना दिया।
'यह तो बहुत ही भयानक रहा होगा।' उसे एहसास हुआ कि यह बात उसे कितनी बेतुकी लगी होगी।
मैं बच गया। मैं अभी भी यहीं हूँ।
वेटर उनके लिए स्टार्टर लेकर आया - पैटे डे फोई ग्रास - और माहौल एकदम बदल गया। मिशेल का मिजाज अचानक बदल गया। वह मेज के उस पार झुका और उसका गिलास फिर से भर दिया। 'अभी इस बारे में बात न करें। मुझे अपने बारे में सब कुछ बताओ। मैं जानना चाहता हूँ कि तुम कहाँ पली-बढ़ीं, तुम्हारा परिवार कैसा था। परिवार मुझे बहुत आकर्षित करते हैं। शायद इसलिए क्योंकि मेरा अपना कोई परिवार नहीं था।'
तो वेलेंटाइन ने उसे डकार के बारे में बताया, उस खूबसूरत, विशाल सफेद विला में अपने बचपन के बारे में; सोलह कमरों वाले आलीशान घर से तंग दो कमरों वाले अपार्टमेंट में जाने के सदमे के बारे में; अपने पिता के बारे में, और कैसे उन्हें अस्वस्थता के कारण सार्वजनिक सेवा से छुट्टी दे दी गई थी।

जब उसने खाना खत्म किया तो उसे पता चला कि दोपहर का भोजन समाप्त हो चुका था और उसने जरूरत से ज्यादा शैंपेन पी ली थी।
मुझे माफ करना। तुम जरूर ऊब गए होगे। हमने अब तक सिर्फ मेरे बारे में ही बात की है।
'मैं ऊब नहीं रहा हूँ, मैं तो मोहित हूँ। मैं तुम्हारे बारे में सब कुछ जानना चाहता हूँ। सब कुछ।'
‘यह सब बहुत ही साधारण लग रहा होगा।’
'बिल्कुल नहीं। हालांकि एक बात है।'
‘यह क्या है?’
‘तुम इतनी देर तक बोलते रहे, लेकिन तुमने अपनी मां का जिक्र लगभग न के बराबर ही किया।’
बताने के लिए ज्यादा कुछ नहीं है।
उसने कंधे उचकाते हुए कहा, 'ठीक है। मुझे बस जिज्ञासा थी।'
‘मिशेल, मैं उसके बारे में ज़्यादा बात नहीं करती क्योंकि... मुझे याद है मेरी माँ हमेशा से शराबी थी। हम एक-दूसरे से बहुत कम बात करते थे। कुछ महीने पहले एक पागलखाने में उसकी मौत हो गई। वह मानसिक और शारीरिक रूप से बीमार थी। अगर मैंने तुम्हें चौंका दिया हो, तो मुझे माफ़ करना।’ उसने अपनी शैम्पेन खत्म की।
‘अब तुम्हें मुझे घर छोड़ देना चाहिए।’
शराब का नशा उस पर चढ़ गया था, लेकिन सड़क पर पहुंचते ही उसका नशा उतर गया। वे चुपचाप कार की ओर वापस चले गए।
मिशेल ने उसके लिए दरवाजा खोला। जैसे ही वह अंदर जाने लगी, उसने उसका हाथ पकड़ लिया। 'वैलेंटाइन।' उसने उसे अपनी ओर खींचा और उसके होंठों पर चुंबन किया। उसने भी उसे उसी जोश से चूमा, जिससे शायद दोनों ही हैरान रह गए।

♦ ♦ ♦

जब वे उसके होटल जा रहे थे, मिशेल उसे तिरछी निगाहों से देखता रहा। यह आश्चर्यजनक था। वह बिल्कुल वैसी ही दिख रही थी जैसी वह पिछली बार उसे देखने पर दिखी थी।
उसे वे बातें याद आने लगीं जिन्हें वह इतने लंबे समय से भूलने की बहुत कोशिश कर

रहा था।
एड्रिएन अपने बालों में कंघी कर रही है।
उन्होंने कहा: मुझे थोड़ी देर के लिए कहीं जाना होगा।
अनाथालय पर गिरने से पहले ओखली की कर्कश आवाज।
थिएन ने अपनी बेल्ट उतारते हुए कहा: अब मैं आपको दिखाऊंगा कि हम वैन ट्रांग में चोरों के साथ कैसा व्यवहार करते हैं।
बॉम्बे बंदरगाह के कारागार का मुख्य वार्डन: मैं तुम्हें तुम्हारी माताओं को जन्म देने के लिए श्राप देने पर मजबूर करूँगा।
और जैसे ही उसने उसकी ओर देखा, उसे अपने अंदर फिर से क्रोध उमड़ता हुआ महसूस हुआ।

अध्याय 28

मिशेल का ब्रिस्टल होटल में रुए डू फाउबर्ग सेंट होनोरे पर एक सुइट था।
शाम ढल रही थी और बेडरूम में लैंप जल रहे थे, जिससे उसका चेहरा अंधेरे में छिप गया था। वह खिड़की के पास खड़ा होकर एक पतली सी सिगार पी रहा था और उसे कपड़े उतारते हुए देख रहा था।
वैलेंटाइन ने अपनी टी-शर्ट सिर के ऊपर से उतार दी और जींस फेंक दी। उसके शरीर पर रेशमी रंग की पतली अंडरपैंट के अलावा और कुछ नहीं था। उसने उसे भी उतार दिया और कमरे के दूसरी ओर चली गई।
उसने उसकी उंगलियों से सिगरेट छीन ली और उसे भारी काले पत्थर की ऐशट्रे में बुझा दिया।
'तुम्हें लगता होगा कि तुम बहुत होशियार हो। इतनी आसानी से अपनी मनचाही चीज पा लेते हो।'
मुझे सिर्फ इतना ही नहीं चाहिए। मुझे तुम सब चाहिए।
उसने अपने हाथ उसकी गर्दन के चारों ओर लपेटे, उसका चेहरा अपनी ओर खींचा और उसके होंठों को अपने होंठों से कसकर दबा दिया। उसने उसे उठाया और बिस्तर पर ले गया।
उसने उसके होंठों, गालों और गर्दन को चूमा। फिर वह धीरे-धीरे उसके शरीर पर नीचे की ओर बढ़ा, उसकी जीभ तितली की तरह कोमल गति से उसके स्तनों और पेट पर

फिराई। उसने अपनी जीभ से उसे एक बार नहीं, बल्कि दो बार चरम सुख तक पहुँचाया।

फिर वह उसके जांघों के बीच घुटनों के बल बैठ गया और अपने कपड़े उतार दिए। उसका शरीर ब्रांडी के रंग जैसा लाल था। उसने उसकी कमर पकड़कर उसे अपनी ओर खींच लिया। वह इस बात से दंग रह गई कि उसने कितनी आसानी से उसके भीतर प्रवेश कर लिया।

वे एक धीमी और प्राचीन लय में कुंडली मारते और खुलते रहे। ऐसा लगता था मानो वह उसके शरीर के उन रहस्यों को जानता हो जो वह खुद भी नहीं जानती थी। उसने खामोश चीख के साथ अपना सिर पीछे की ओर झुकाया। 'हे भगवान, हाँ... हाँ... बिल्कुल ऐसे ही...'

और फिर वह रुक गया।

उसने अपनी आँखें खोलीं। वह उसे घूर रहा था, और उसके चेहरे पर एक ऐसा भाव था जो उसने पहले कभी नहीं देखा था। अचानक वह डर गई।

'क्या गलत?'

उसे महसूस हुआ कि उसकी उंगलियां उसकी गर्दन की बनावट को छू रही हैं।

‘मिशेल?’

उसकी उंगलियां उसके गले पर और कस गईं।

‘मिशेल?’

लेकिन फिर उसने उसे चूमा, और वह उसके नीचे कराह उठी। वह फिर से उसके अंदर हिलने लगा और उसे लगा जैसे उसने फुसफुसाते हुए कहा: 'मैं तुम्हें फिर कभी जाने नहीं दूंगा।'

इसका कोई मतलब नहीं था। लेकिन फिर उसे तीसरी बार चरम सुख का अनुभव हुआ और अब उसे कुछ भी मायने नहीं रखता था। उसके दिमाग में रंगों का विस्फोट हो गया और उसने अपने हाथ-पैर उसके कठोर, गर्म शरीर के चारों ओर लपेट लिए और उससे कहा कि वह उससे प्यार करती है, जो लगभग सच भी हो गया था। वह किसी भी ऐसे पुरुष से प्यार करने को तैयार थी जो उसे ऐसा एहसास दिला सके।

♦ ♦ ♦

वैलेंटाइन सो रही थी। वह एक करवट लेटी हुई थी, घुटने ऊपर की ओर मुड़े हुए थे और हाथ ठुड्डी के नीचे रखे हुए थे, जैसे कोई बच्चा सोता है। उसकी परछाईं उसके

चेहरे पर पड़ रही थी।
अंधेरे में यह कल्पना करना आसान था कि यह एड्रिएन है। वह उसकी जुड़वां बहन जैसी लग रही थी। उसे आश्चर्य हुआ कि एक छोटा लड़का इतना सब कुछ कैसे याद रख सकता है। शायद यह सब उसकी कल्पना थी। शायद वह सिर्फ वैसी एड्रिएन थी जिसे वह याद रखना चाहता था।
वह और करीब आया, उसके बालों की खुशबू को महसूस किया। अगर वह अपनी आँखें बंद कर लेता तो भी उसे वह मोतियों की मूठ वाले ब्रश से अपने बाल संवारती हुई दिखाई देती। हरे रंग की फ्रॉक पहनते हुए उसने कहा, 'मुझे थोड़ी देर के लिए बाहर जाना है।'
उसके होंठ उसके गालों को छू गए।
‘मुझे फिर से छोड़कर मत जाना,’ उसने फुसफुसाते हुए कहा।
उसके साथ कुछ ऐसा हुआ था, जैसा उसने पहले कभी महसूस नहीं किया था। उसने पहले कभी किसी स्त्री के साथ प्रेम संबंध बनाते समय क्रोध और घृणा से भर नहीं गया था। लेकिन वैलेंटाइन के साथ ऐसा नहीं था। वह उसे चोट नहीं पहुँचा सकता था, अभी नहीं। आख़िरकार, वह उसका इंतज़ार कर रही थी। उसे अतीत की परवाह नहीं थी, अब और नहीं। उसके लिए बस इतना ही मायने रखता था कि वह यहाँ है, अभी, और वह अब कभी दूर नहीं जाएगी।
वैलेंटाइन नींद में करवट बदली। उसकी आँखें झपकते ही खुल गईं। 'मिशेल?'
उसने उसे प्यार से चूमा।
'ये वक़्त क्या है?'
उसने बेडसाइड टेबल पर रखी अपनी घड़ी उठाई। 'आधी रात के ठीक बाद।'
मुझे घर जाना होगा।
उसने अपना हाथ चादर के नीचे सरकाया। 'अभी नहीं।'
ऐसा मत करो...
मैं नहीं चाहता कि तुम अभी घर जाओ।
‘कृपया, मिशेल...’
आप बाद में घर जा सकते हैं।
उसने उसके गले को चूमा।
‘मिशेल...’

‘मैं तुमसे प्यार करता हूँ, वैलेंटाइन। मैं शायद तुम्हें फिर कभी जाने न दूँ।’
और उसने फिर से उसके साथ प्रेम संबंध बनाना शुरू कर दिया।

♦ ♦ ♦

जब वैलेंटाइन अपार्टमेंट में वापस लौटी तो स्टडी रूम की बत्ती अभी भी जल रही थी। वह दबे पांव दरवाजे तक गई। जीन-क्लाउड अपनी बड़ी सी कुर्सी पर सो रहा था, उसकी गोद में एक किताब खुली पड़ी थी।
वह बेहद बूढ़ा लग रहा था। उसके सिर पर भूरे बालों की लटें कसकर खिंची हुई थीं और दीपक की पीली रोशनी में उसकी त्वचा कागज की तरह पतली दिख रही थी।
उसने उसके कंधे पर हाथ रखा। 'पापा।' वह चौंककर जाग गया। 'कोई बात नहीं पापा, मैं हूँ। वैलेंटाइन।'
‘आह, वैलेंटाइन…’
‘तुम जाग क्यों रहे हो? बहुत रात हो गई है। तुम्हें बिस्तर पर होना चाहिए।’
'ये वक़्त क्या है?' •
'देर।'
मैं आपसे यह नहीं पूछूंगा कि आप सुबह के इस समय तक क्या कर रहे थे।
‘पापा, मैं लगभग बीस साल की हो गई हूँ। अब आप मेरी ज़िंदगी को नियंत्रित नहीं कर सकते। वैसे भी, मैंने आपको बताया था कि मुझे देर हो जाएगी। क्या आपने अपने लिए खाना बना लिया है?’
‘मुझे भूख नहीं थी।’ उसने उसे उठने में मदद करने की कोशिश की, लेकिन उसने उसका हाथ झटक दिया। ‘मैं ठीक हूँ। मैं खुद संभाल लूँगा।’
'मुझे अपनी मदद करने दें।'
मैंने कहा, मैं ठीक हूँ। आपके जाने के बाद मुझे सब कुछ संभालना ही पड़ेगा, है ना?
‘चले जाने’ से तुम्हारा क्या मतलब है?’
'आप जानते हैं कि मेरा क्या मतलब है।'
‘पापा…’
'शुभ रात्रि, वैलेंटाइन।'
वह लड़खड़ाते हुए अपने बेडरूम में घुसा और अपने पीछे दरवाजा बंद कर लिया।
वैलेंटाइन ने लैंप बंद कर दिया।

‘मैं आपको छोड़कर नहीं जाऊंगी, पापा,’ उसने फुसफुसाते हुए कहा। ‘मैं आपसे वादा करती हूं। चाहे कुछ भी हो जाए, मैं आपको छोड़कर नहीं जाऊंगी।’

अध्याय 29

बुडजिंस्की ने छत पर लगी स्ट्रिप लाइट को घूरकर देखा। 'अविश्वसनीय,' उसने बुदबुदाया। उसने गहरी सांस ली और अपनी मेज पर रखे केबलों के ढेर को दोबारा पढ़ा। पिछले कुछ हफ्तों में सेंट क्लाउड में एशिया के विभिन्न हिस्सों से केबलों की बाढ़ आ गई थी; मनीला, कुआलालंपुर, कराची, तेहरान, बेरूत, कलकत्ता, जकार्ता, जोगजाकार्ता, टोक्यो और ओसाका। कुछ मामले तो 1968 तक पुराने थे।
जिन केबलों का पैटर्न उसकी खोज से मेल नहीं खाता था, उन्हें हटाने के बाद, केबल दो अलग-अलग समूहों में बंट गए। पहला समूह सिंगापुर और नई दिल्ली में हुई हत्याओं के तरीके से मिलता-जुलता प्रतीत होता था। जैसे कि मनीला से मिला यह मामला:
1114172
प्रति: आईपी पेरिस
आपके अनुरोध संख्या 514172 के जवाब में, हम आपको शेरेटन होटल में 23/10/70 को हुई एक अनसुलझी डकैती की फाइल के बारे में सूचित करना चाहते हैं। होटल के सुइट में एक पर्यटक और रत्न व्यापारी मृत पाए गए। पर्यटक की पहचान बाद में 23 वर्षीय अमेरिकी महिला जेनी मार्कोविट्ज़ के रूप में हुई। पांच लाख पेसो मूल्य के रत्न अभी भी लापता हैं।
संदिग्धों का पता लगाने और उन्हें हिरासत में लेने में सहायता का अनुरोध करें।
प्रत्यर्पण रोकने का अनुरोध किया जाएगा।
एंड आईपी मनीला
हस्ताक्षर: सर्जियो ओस्मेना (कर्नल)
फिलीपींस पुलिस विभाग (इंटरपोल डिवीजन)
लेकिन अनसुलझे अपराधों का एक दूसरा समूह भी था, जो देखने में तो काफी अलग था, लेकिन फिर भी उन्हें काफी दिलचस्प लगता था। इन सभी अपराधों में एक महिला शामिल होती थी, जो आमतौर पर युवा होती थी और लगभग हमेशा किसी आभूषण की दुकान की कर्मचारी होती थी। वह अपने मालिक को नशीली दवाओं से

बेहोश कर देती थी और फिर उसकी तिजोरी में रखी चीजें लेकर भाग जाती थी। जैसे हांगकांग से आया यह संदेश:

1214172

प्रति: आईपी पेरिस

आपके अनुरोध संख्या 514172 के जवाब में, हम आपको सूचित करना चाहते हैं कि 18/5/71 को एनजी फैट चाउ ट्रेडिंग प्राइवेट लिमिटेड, 732 नानकिंग रोड, कोवलून में एक डकैती की घटना दर्ज की गई है, जिसमें चार लाख डॉलर मूल्य के आभूषण और कीमती पत्थर चोरी हो गए हैं। यह घटना हांगकांग में हुई थी। डकैती एक कर्मचारी द्वारा की गई थी जिसने नियोक्ता को किसी अज्ञात पदार्थ से नशीला पदार्थ दिया था। संदिग्ध की पहचान 20 वर्षीय महिला रोज़ की के रूप में हुई है। माना जाता है कि वह हांगकांग से भाग गई है। संदिग्ध की तस्वीर और शारीरिक विवरण संलग्न है।

इस व्यक्ति का पता लगाने में तत्काल सहायता का अनुरोध है। यदि हिरासत में लिया गया हो तो प्रत्यर्पण का अनुरोध किया जाएगा।

हांगकांग में समाप्त

हस्ताक्षर: आर्थर ग्रीव्स (डिटेक्टिव इंस्पेक्टर)

रॉयल हांगकांग पुलिस (इंटरपोल डिवीजन)

ऐसे ही एक दर्जन तार थे। इनमें से केवल एक रिपोर्ट में एक अन्य व्यक्ति की उपस्थिति का उल्लेख था; सुनहरे बाल, दक्षिणी यूरोपीय, 20-25 वर्ष की आयु, छह फुट लंबा, जिसने रोमियो बेलिनी नाम का इस्तेमाल किया था। यह विवरण सिंगापुर पुलिस द्वारा वांछित एलन रेगन - 'लैटिन मूल का, छह फुट लंबा, काले बाल' - से मेल नहीं खाता था।

और अभी तक।

एक व्यक्ति अपना रूप बदल सकता था। उसके हाथ में मौजूद अधूरी जानकारियों से यह प्रतीत होता था कि इन सभी डकैतियों और हत्याओं की शैली और क्रियान्वयन में उल्लेखनीय समानताएं थीं।

उन सभी मामलों में महिलाएं शामिल थीं। उन सभी में गहनों की चोरी शामिल थी और सभी महिलाएं गायब हो गई थीं।

क्या होगा अगर ये लापता महिलाएं इन अपराधों के लिए जिम्मेदार न हों? क्या होगा

अगर उन्हें भी मार दिया गया हो और उनके शवों को ठिकाने लगा दिया गया हो? क्या होगा अगर ये सभी अपराध एक ही व्यक्ति का काम हों?
यह संभव था।
उसने अपनी ऐशट्रे में एक और गाउलोइस सिगरेट बुझा दी।
'मैंने तुम्हें पकड़ लिया, कमीने,' बुडजिंस्की ने कहा। उसने सारे केबल एक फाइल में समेटे और दरवाजे की ओर चल पड़ा।

♦ ♦ ♦

महासचिव ने बुडजिंस्की द्वारा उनकी मेज पर फेंके गए केबलों को देखते हुए तेवर चढ़ा लिए। 'यह सब अनिश्चित है। तुम सिर्फ अनुमान लगा रहे हो, बुडजिंस्की।'
बुडजिंस्की ने कहा, 'मैं अनुमान नहीं लगा रहा हूं। यह स्पष्ट है। यह हमारे सामने बिल्कुल साफ दिख रहा है!'
फिर भी, एशिया अभियान को जायज ठहराने के लिए यह पर्याप्त नहीं है। आपको इसके लिए वेतन नहीं मिलता।
'हो सकता है कि हमें यहाँ एक सामूहिक हत्यारे का पता चल गया हो! इनमें से पहला मामला फरवरी 1968 का है! चार साल से अधिक समय में और संभवतः सोलह हत्याएं!'
'हां, यह संभव है। लेकिन मुझे अब भी समझ नहीं आ रहा कि मैं आपके प्रस्तावित खर्च को कैसे उचित ठहरा सकता हूं। वह कहीं भी हो सकता है। हम सामान्य माध्यमों से ही काम करेंगे।'
'कृपया, महोदय, मैं—'
'रेने, तुम आजकल बहुत ज्यादा काम कर रहे हो। थोड़ा आराम करो। तुम्हें और समय लेना चाहिए था—'
मुझे और समय की जरूरत नहीं है!
'तुम काम पर बहुत जल्दी लौट आए। अगर मुझे लगता भी कि इस मामले में संपर्क साधने के लिए किसी अधिकारी को भेजना अच्छा विचार है - जो कि मुझे नहीं लगता - तो भी मैं तुम्हें सबसे आखिर में चुनता।'
मैं उसे पकड़ लूंगा, महोदय।
'अच्छा। अपराधियों को पकड़ने में मदद करना आपका काम है। लेकिन इसे सामान्य

तरीके से करें। सहायता करें और जानकारी दें, कैप्टन। आप अभी हत्या विभाग में नहीं हैं।'
'जी सर।' बुडजिंस्की ने फोल्डर उठाया और ऑफिस से बाहर निकल गए।
एलन रेगन। क्या यही तुम्हारा नाम है? तुम जो भी हो, अब तुम मेरे हो।

अध्याय 30

तो मैं तुम्हारे इस बॉयफ्रेंड से कब मिलूँगी?
जीन-क्लाउड बाथरूम के दरवाजे पर खड़ा होकर उसे अपने होंठों पर लिप ग्लॉस लगाते हुए देख रहा था। वैलेंटाइन शीशे में अपना प्रतिबिंब देख रही थी। 'जल्द ही। मैं वादा करती हूँ।'
'आप उसे एक दोपहर चाय के लिए यहाँ ला सकते हैं।'
शायद जब मैं उसे बेहतर तरीके से जान लूँगी।
'आप नहीं चाहते कि वह मुझसे मिले, है ना?'
'बिल्कुल, मुझे पता है। क्या आपने मेरा स्कार्फ देखा है? हर्मेस का।'
'यह हॉल स्टैंड पर वहीं है जहाँ आपने इसे कल रात छोड़ा था। मैं बस उससे एक बार मिलना चाहता हूँ। आपको मुझसे शर्मिंदा होने की ज़रूरत नहीं है, आप जानते हैं। मुझे पता है कैसे व्यवहार करना है। जब मैं सर्विस पब्लिक में था, तब मैंने शाही परिवार के साथ भोजन किया था।'
वैलेंटाइन दौड़कर हॉल स्टैंड पर गई और अपने बालों में स्कार्फ बांध लिया। 'बस बात ये है कि उसे दोपहर की चाय उतनी पसंद नहीं है, तुम्हें पता है ना।'
'इस युवक का शौक क्या है?'
उसे रेस्टोरेंट, नाइटक्लब और कैसीनो पसंद हैं।
'कैसिनो! और क्या उनसे यह उम्मीद करना बहुत ज्यादा है कि वे जुए में अपना पैसा उड़ाने से एक दोपहर का समय निकालकर हमारे साथ चाय पिएं?'
'मेरा बस्ता कहां है?'
'तुम्हारे कमरे में बिस्तर के नीचे।'
वैलेंटाइना दौड़कर अपने बेडरूम में गई, घुटनों के बल बैठ गई और बिस्तर के नीचे झाँका। जीन-क्लाउड को डकार में अपनी उस चुलबुली छोटी टॉमबॉय की याद आ गई। 'मैं बस उससे मिलना चाहती हूँ, बस इतना ही।'

तो फिर आप नीचे आकर उनसे मिल लीजिए। वह जल्द ही यहाँ आ जाएँगे।
‘वह यहाँ कभी क्यों नहीं आता?’
‘मुझे नहीं पता क्यों। शायद इसलिए क्योंकि मैंने कहा था कि मैं उससे नीचे मिलूंगी।’
वैलेंटाइन खड़ी हो गई। ‘मैं कैसी दिख रही हूँ?’
जीन-क्लाउड ने उसे गौर से देखा। पिछले कुछ हफ्तों में, जब से वह उस नए आदमी से मिल रही थी, उसमें एक बदलाव आ गया था। वह गुमसुम और खोई-खोई सी हो गई थी, और उसके गाल किसी अंदरूनी चमक से दमक रहे थे। अब, काले रंग की पैटू की उस ड्रेस में, जो उसके पैरों को उभार रही थी, और जूड़े में बंधे बालों के साथ, वह बेहद जवान और सुंदर लग रही थी।
उन्होंने कहा, 'तुम्हें ठंड लग जाएगी और तुम्हारी मौत हो जाएगी।'
उसने उसके गाल पर चुंबन किया। 'धन्यवाद, पापा।'
‘ये तो वाकई खास है, है ना?’
'आपका क्या मतलब है?'
‘तुमने उसे लगभग तीन हफ्तों से हर रोज देखा है। क्या तुम उससे प्यार करती हो?’
गली में एक हॉर्न बजा। 'ये रहा वो!' वैलेंटाइन चीखी और हंसते हुए दरवाजे की ओर भागी।
जीन-क्लाउड ने सड़क पर नीचे की ओर देखा। 'उसके पास दूसरी कार है।'
वह उन्हें काम पर रखता है।
‘क्या उन्हें काम पर रखता है?’
'जल्द ही फिर मिलेंगे!'
'प्रेमी!'
‘पापा?’
वह हिचकिचाया। 'मज़े करो।'
उसके पीछे दरवाजा जोर से बंद हो गया।
जीन-क्लाउड ने खिड़की से देखा कि वह सड़क पार करके दौड़ी और काली पोर्श कार में कूद गई। कार एक कर्कश गर्जना के साथ सड़क पर गायब हो गई।
उसने आह भरी और खिड़की से मुंह फेर लिया, मन में उठ रहे अनहोनी के डर को नजरअंदाज करने की कोशिश की। उसने खुद से कहा, बस एक बूढ़ा आदमी अपनी दूर जाती बेटी के लिए तड़प रहा है। बस इतना ही।

♦ ♦ ♦

गोधूलि बेला में पोंट डी'एलेक्जेंड्रे ट्रोइस की परछाईं आसमान में दिखाई दे रही थी। मिशेल और वैलेंटाइन हाथ में हाथ डाले, इन्वैलिड्स के जगमगाते गुंबद की ओर चल पड़े।

'मुझे जल्द ही छोड़ना पड़ेगा।'

‘कितनी जल्दी?’

'तीन और दिन।'

उसे पता था कि यह हमेशा के लिए नहीं हो सकता। उसे यह बात शुरू से ही पता थी।

'खैर, तीन दिन बहुत लंबा समय होता है।'

मुझे काम पर वापस जाना है।

कोई बात नहीं। मैं वादा करता हूँ कि मैं आपके लिए इसे मुश्किल नहीं बनाऊँगा।

उसने उसे अपनी ओर घुमाया। 'तुम जैसी हो, तुम्हें छोड़ना मेरे लिए और भी मुश्किल हो जाएगा। इसीलिए मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे साथ चलो।'

लेकिन, मैं ऐसा नहीं कर सकता।

'क्या?'

'मैं नहीं कर सकता।'

'क्यों नहीं?'

‘पेरिस मेरा घर है।’

‘यह कोई जवाब नहीं है।’

मुझे खेद है। मेरे पास यही एक जवाब है।

लेकिन तुम मुझसे प्यार करते हो!

वह उसकी प्रतिक्रिया देखकर स्तब्ध रह गई और उसे घूरने लगी। यह कहना अजीब था। 'मैं तुमसे प्यार करता हूँ' नहीं; 'तुम मुझसे प्यार करते हो'।

'हां, मुझे लगता है कि मैं करता हूं।'

तो फिर क्यों नहीं?

वह जानती थी कि वह समझ नहीं पाएगा। शायद जिस आदमी का कभी परिवार न रहा हो, वह कभी समझ ही नहीं सकता।

‘ये तुम्हारे पिता हैं, है ना?’

'अगर मैं चली गई तो वह मर जाएगा। मैं उसे यूं ही नहीं छोड़ सकती।'

'हमारे सामने पूरी जिंदगी पड़ी है! उसकी जिंदगी तो बीत चुकी है।'
‘मुझे खेद है। कृपया समझने की कोशिश करें।’ वह हार मानकर उससे मुंह फेर लिया। उसने धीरे से अपना एक हाथ उसके हाथ पर रखा। ‘हमारे पास अभी भी तीन दिन हैं।’
मुझे उससे ईर्ष्या होती है। काश कोई मुझे भी इतना प्यार करता।
'मैं करता हूं।'
नहीं, अभी नहीं।
वह अचानक एक छोटे बच्चे जैसा दिखने लगा। उसने अपना सिर उसके कंधे पर रख दिया और वह चौंक गई और अचानक उसके लिए डर गई, उसने उसके बालों को सहलाया। उसने सोचा, असल में सभी पुरुष छोटे बच्चे ही होते हैं। दुनिया के सामने जो चेहरा वे दिखाते हैं, उसके पीछे वे बस छोटे बच्चे ही होते हैं।

♦ ♦ ♦

'क्या बात क्या बात?'
‘कुछ नहीं, पापा।’
‘ज़रूर कुछ गड़बड़ है। आपकी कॉफ़ी ठंडी हो रही है और आपने अपने क्रोइसैन्ट को छुआ तक नहीं है।’
मुझे भूख नहीं है।
‘कल रात तुम रो रही थी। मैंने सुना। ये दीवारें बहुत पतली हैं, तुम्हें पता है।’
मैं रो नहीं रही थी।
‘मैं बेवकूफ नहीं हूँ, वैलेंटाइन। क्या तुमने आज सुबह खुद को देखा है? मैं बता सकता हूँ कि कोई महिला रोई है या नहीं। मैं ऐसा आदमी हूँ जिसे इसका बहुत अभ्यास है।’
वैलेंटाइन ने अपने हाथों से अपना चेहरा ढक लिया। 'वह जा रहा है। वह हांगकांग या सिंगापुर या कहीं और वापस जा रहा है।'
‘कौन? तुम्हारा वो बॉयफ्रेंड?’
वह तो सिर्फ व्यापार के सिलसिले में पेरिस गए थे। अब उन्हें वापस जाना होगा।
जीन-क्लाउड ने अपनी बाहें फैला दीं। वैलेंटाइन मेज के चारों ओर आया और बुरी तरह उसकी गोद में गिर पड़ा। 'मैंने तुम्हें इसके बारे में चेतावनी दी थी, है ना? तुम्हें मेरी बात मान लेनी चाहिए थी।'

‘मैं उनसे प्यार करती हूँ, पापा।’
‘लेकिन वो तुमसे प्यार नहीं करता, है ना?’ उसने महसूस किया कि वैलेंटाइन उसकी बाहों में अकड़ गई है। ‘क्या वो करता है?’
'दरअसल, मुझे लगता है कि वह ऐसा करता है।'
‘क्या आपको लगता है - या आपको पता है?’
वह चाहता है कि मैं उसके साथ चलूँ।
'और आपने क्या कहा?'
मैंने साफ मना कर दिया।
क्या तुम उसके साथ जाना चाहते थे?
वैलेंटाइन ने सिर हिलाया।
‘तो तुमने मेरी वजह से मना किया,’ जीन-क्लाउड ने कहा। ‘तुम स्वार्थी बूढ़े मूर्ख!’
उसने मन ही मन सोचा। ‘वह तुम्हारे लिए अपना करियर, अपने प्रिय पुरुष, अपना पूरा जीवन, सब कुछ छोड़ने को तैयार है।’
लेकिन क्या आप यही नहीं चाहते थे?
उसने कहा, 'मुझे काम पर जाने के लिए तैयार हो जाना चाहिए।'
‘वैलेंटाइन, उसे फोन करो। अगर तुम चाहो तो... उसे बता दो कि तुम जाओगी। प्लीज... मेरे बारे में चिंता मत करो।’
वैलेंटाइन ने उसके माथे पर चुंबन किया। 'मैं आज रात करीब छह बजे घर आ जाऊंगी। मैं तुम्हारे पसंदीदा व्यंजन, बोर्गुइग्नन बनाऊंगी।'
पंद्रह मिनट बाद, जब वह अपना कोट और स्कार्फ पहन रही थी, जीन-क्लाउड अभी भी नाश्ते की मेज पर बैठा दीवार को घूर रहा था। 'अलविदा पापा,' वैलेंटाइन ने पुकारा।
लेकिन उसने कोई जवाब नहीं दिया। वैलेंटाइन ने धीरे से दरवाजा बंद कर दिया।

♦ ♦ ♦

मिशेल ने सामने वाली बेकरी के दरवाज़े से उसे अपार्टमेंट से निकलते हुए देखा। कुछ मिनट इंतज़ार करने के बाद उसने अपनी जेब से काले चमड़े के दस्ताने निकाले और पहन लिए। वह तेज़ी से सड़क पार कर गया। उसने एक दोपहर वैलेंटाइना के सोते समय उसकी चाबी का निशान बना लिया था। वह अंदर गया और लिफ्ट के बजाय

सीढ़ियों से जाने का फैसला किया।
जीन-क्लाउड ने सामने का दरवाजा खुलते और बंद होते सुना। उसने सोचा कि उसकी बेटी होगी। 'वैलेंटाइन? तुम क्या भूल गई?' उसने अखबार से नज़रें उठाकर देखा तो उसके बैठक कक्ष के दरवाजे पर एक अजनबी खड़ा था। उस आदमी ने घुटनों तक लंबा काला चमड़े का कोट और महंगे जूते पहने हुए थे।
'हैलो जीन-क्लाउड। क्या मैं अंदर आ सकता हूँ?'
'आखिर आप हैं कौन?'
‘आप जानते हैं कि मैं कौन हूँ।’ वह अपने कोट की जेबों में हाथ डाले कमरे के बीचोंबीच खड़ा हो गया और चारों ओर देखने लगा, मानो वह उस जगह को खरीदने के बारे में सोच रहा हो। ‘क्या मैंने आपके नाश्ते में खलल डाला?’
जीन-क्लाउड ने क्रोइसैन्ट को अपनी प्लेट पर गिरा दिया। 'तुम यहाँ क्या कर रहे हो?'
मिशेल ने बूढ़े आदमी के ड्रेसिंग गाउन को मुट्ठी में कसकर पकड़ा और एक हाथ से उसे कुर्सी से उठा लिया। उसने उसे कमरे के उस पार घसीटा और एक आरामकुर्सी पर पटक दिया। जीन-क्लाउड चीखना चाहता था, लेकिन वह इतना भयभीत था कि बोल भी नहीं पा रहा था।
मिशेल ने अपने घुटनों के बीच कुर्सी पर एक जूता रखा और आगे झुक गया। 'शायद आप नहीं जानते कि मैं कौन हूँ।'
बस एक हल्की सी चीख सी निकली।
मिशेल ने अपना सिर हिलाया। उसने कमरे में शराब की अलमारी ढूंढी। उसे पास्टिस मिली, उसने एक गिलास में दो-चार घूंट डाली और उसे दे दी। 'चलो ना, मैं तुम्हें नुकसान नहीं पहुँचाऊँगा। मैं बस बात करना चाहता हूँ।'
जीन-क्लाउड इतना कांप रहा था कि वह गिलास को मुश्किल से पकड़ पा रहा था, पीने की तो बात ही दूर। उसने लगभग सारा पेय अपने पजामे पर गिरा दिया। अधीर होकर मिशेल ने गिलास छीना और बचा हुआ पेय उसके गले से नीचे उतार दिया। जीन-क्लाउड लगभग घुट ही गया, लेकिन खांसते-खांसते उसकी आवाज वापस आ गई थी।
'आप क्या चाहते हैं?'
क्या उसने कभी मेरे बारे में तुम्हें बताया था?
‘वेलेंटाइन ने कहा कि तुम...’

‘वेलेंटाइन नहीं! एड्रिएन!’
‘एड्रीएन? तुम्हें उसके बारे में कैसे पता चला...?’
‘उसने तुम्हें कभी बताया ही नहीं, है ना? नशे में भी नहीं? वह हमेशा बहुत भुलक्कड़ थी। लगता है जब मैं चार साल का था तब से वह मुझे पूरी तरह भूल गई थी।’
‘हे भगवान!’ जीन-क्लाउड ने कहा। अचानक उसे समझ आ गया कि किस चीज़ ने उसकी सुंदरता और बुद्धि को नष्ट कर दिया था। यही वह दानव था जिससे वह बचने की कोशिश कर रही थी।
‘अरे, अब समझ में आया ना? हाँ, मैं तुम्हारी पत्नी का छोटा सा राज़ हूँ।’ मिशेल उसकी ओर झुक गया, उसके दस्ताने पहने हाथ कुर्सी के दोनों बाजूबंदों पर टिके हुए थे। ‘मैं आने वाला नहीं था। लेकिन वैलेंटाइन ने मुझसे कई बार कहा है, ‘पापा तुमसे मिलने के लिए बेताब हैं’। इसलिए मैं यहाँ आ गया।’
जीन-क्लाउड को जब इस बात का पूरा मतलब समझ आया तो वह कराह उठा।
'वैलेंटाइन! लेकिन तुम और वो... नहीं! तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिए! उसे पता नहीं है! वो—'
मिशेल ने अपना हाथ अपने मुंह पर रख लिया। 'चुप रहो! उसे पता ही नहीं होगा! उसे कभी पता नहीं चलेगा। अब वो मेरी है। हमारे बीच बस एक ही चीज़ खड़ी है। क्या तुम जानते हो वो कौन है?'
जीन-क्लाउड सुन नहीं रहा था। उसे अब अपनी जान का डर नहीं था; उसे अपनी बेटी का डर था। उसे कुछ करना ही था। उसने लात मारी और कुर्सी से उठकर उस बीमार कमीने से दूर भागने की कोशिश की। लेकिन मिशेल उससे कहीं ज़्यादा ताकतवर था। उसने अपनी जेब में हाथ डाला और क्लोरोफॉर्म की बोतल और एक कपड़ा निकाला। उसने उसे जीन-क्लाउड के मुंह पर कसकर रख दिया और वहीं दबाए रखा। संघर्ष बहुत जल्दी खत्म हो गया। उसे ज़मीन पर लिटाते समय उसमें लगभग कोमलता झलक रही थी।
जीन-क्लाउड के अंतिम विचार अपनी बेटी के लिए थे। उन्होंने ईश्वर से प्रार्थना की कि किसी तरह कोई उसे इस राक्षस से बचा ले।

अध्याय 31

रिट्ज़ बॉलरूम में मैरी क्वांट के समर कलेक्शन का विमोचन हो रहा था। वेलेंटाइन

चेंजिंग रूम में एक लड़की को उसकी ड्रेस पहनाने में मदद कर रही थी, तभी एजेंसी का हेयरड्रेसर मार्को अंदर आया और उसे बताया कि बाहर दो आदमी उससे तुरंत बात करना चाहते हैं।
'मुझे लगता है कि ये सब नकली फिल्में हैं,' उसने डरते हुए फुसफुसाते हुए कहा।
चमकीले गाउनों की कतार के बीच सिकुड़े हुए सूट पहने दोनों पुरुष असहज लग रहे थे। 'मैडमोजेल ब्रेटन?'
वैलेंटाइन ने उनके चेहरों को देखा और जान गई। उसका दिल ज़ोर से धड़कने लगा।
'हाँ?'
मुझे आपको यह सूचित करते हुए खेद हो रहा है कि एक दुर्घटना हो गई है।
‘मेरे पिता?’
मुझे आशंका है कि ऐसा ही है।
‘वह मर चुका है, है ना?’
'मुझे खेद है।'
'क्या हुआ?'
'उसे आज सुबह करीब आठ बजे तहखाने के बाहर कंक्रीट पर पाया गया। किसी ने कुछ सुना या देखा नहीं। हमें लगता है कि वह बालकनी से गिर गया होगा।'
वह काफी शांत महसूस कर रही थी, हालांकि वह जानती थी कि यह शांति ज्यादा देर तक नहीं रहेगी। एक तरह से वह अपनी माँ की मृत्यु के बाद से ही इस पल का इंतजार कर रही थी। 'मैं अपना कोट ले आती हूँ।'
उसे दोनों जासूसों के साथ अस्पताल जाने की यात्रा का कुछ भी याद नहीं था। सब कुछ धुंधला सा था। अस्पताल पहुँचने पर ही समय फिर से धीमा होने लगा।
उसने उसका शव देखने पर जोर दिया।
सफेद कोट पहने एक अटेंडेंट मुर्दाघर की ओर आगे बढ़ा। दोनों पुलिसवाले तब तक इंतजार करते रहे जब तक उसने एक दराज खोलकर चादर नहीं हटा दी।
उसका रंग नीला-धूसर हो गया था। गिरने के प्रभाव से उसका दाहिना गाल धंस गया था और तेज रोशनी में उसकी नंगी सफेद हड्डी चमक रही थी। उसके होंठ खामोश चीख के साथ दांतों से पीछे हट गए थे, अकड़न के कारण क्षण भर के लिए जम गए थे।
‘क्या आप ठीक हैं, मैडम?’ परिचारक ने पूछा।

‘मैं ठीक हूँ,’ उसने उससे कहा।
और फिर वह बेहोश हो गई।

♦ ♦ ♦

वह अपने ही बिस्तर पर जाग उठी। भगवान का शुक्र है, उसने सोचा। यह सब बस एक बुरा सपना था।
लेकिन तभी उसने अपना सिर घुमाया और देखा कि परिवार का पुजारी बिस्तर के बगल में कुर्सी पर बैठा है। उसने उसका हाथ थपथपाया। 'सब ठीक है। बस आराम करो। तुम्हें बहुत बड़ा सदमा लगा है। डॉक्टर ने तुम्हें बेहोशी की दवा दी है। अब तुम्हें आराम करना चाहिए।'
अगली बार जब उसने आंखें खोलीं तो वहां एक और आदमी बैठा था, एक और पुलिसवाला। उसने उससे सवाल पूछना शुरू किया। क्या तुम्हारे पिता लंबे समय से अवसादग्रस्त थे? क्या उन्होंने कभी आत्महत्या करने की बात की थी?
ओह, नहीं। पापा। क्या आपने यही किया? क्या आपने ये मेरे लिए किया?
उसने सिर हिलाया। 'नहीं, उसने कभी आत्महत्या की बात नहीं की। लेकिन हाँ, मेरी माँ की मृत्यु के बाद से वह अवसादग्रस्त था। हो सकता है कि यह कोई दुर्घटना न हो।'
लेकिन उसने कोई नोट क्यों नहीं छोड़ा?
वह फिर सो गई और जब उसने दोबारा आंखें खोलीं तो शाम हो चुकी थी और मिशेल बिस्तर पर झुककर उसका हाथ पकड़े हुए था। 'ओह मेरी जान, मुझे बहुत अफ़सोस है। जब मैंने एजेंसी को अलविदा कहने के लिए फ़ोन किया तो उन्होंने बताया कि एक दुर्घटना हो गई है। मैंने फ्लाइट रद्द कर दी और जितनी जल्दी हो सके आ गया।'
‘धन्यवाद,’ वैलेंटाइन ने फुसफुसाते हुए कहा। ‘कृपया। मत जाओ। मुझे तुम्हारी यहाँ ज़रूरत है।’
मैं वादा करता हूँ कि मैं तुम्हें छोड़कर नहीं जाऊँगा। सब कुछ ठीक हो जाएगा। मैं अब यहीं हूँ। हमें फिर कभी अलग नहीं होना पड़ेगा।

♦ ♦ ♦

जिस दिन जीन-क्लाउड ब्रेटन को दफनाया गया, उस दिन बारिश हुई थी।
वैलेंटाइन को प्रार्थना सभा याद नहीं थी। वह मिशेल के सहारे खड़ी थी, उसकी मजबूत बाहों के घेरे में होने से उसे सुकून मिल रहा था। उसने सोचा, ज़मीन कितनी नम और ठंडी लग रही है। उसे ठंड बिल्कुल पसंद नहीं है।

वह उस अपार्टमेंट में वापस नहीं जाना चाहती थी। अभी नहीं। कभी नहीं। 'मुझे पेरिस से दूर ले चलो,' उसने फुसफुसाते हुए कहा। 'बस मुझे यहाँ से दूर ले जाओ।'
'मैं तुम्हारी हर इच्छा पूरी करूँगा,' मिशेल ने फुसफुसाते हुए कहा। 'मैं अब तुम्हारा ख्याल रखूँगा, वैलेंटाइन। मैं हमेशा तुम्हारा ख्याल रखूँगा।'

भाग पाँच

सर्प ने हमला किया

जून 1972

अध्याय 32

मिशेल उसे हर जगह ले जाता था।
एथेंस में उन्होंने प्रसिद्ध ग्रांडे ब्रिटान होटल के टेरात्ज़ा पर बैठकर लाल कैवियार और तारामसलाता का आनंद लिया, और नीचे सिंताग्मा के फव्वारों और संतरे के पेड़ों को देखते हुए डूबते सूरज की रोशनी में पार्थेनन शहद के रंग का हो गया।
वे कश्मीर की डल झील पर एक हाउसबोट में ठहरे, जहाँ पानी पर कमल के फूल हरे-भरे कालीन की तरह फैले हुए थे। वे डेक पर बैठे झील पर तैरती शिकाराओं को देख रहे थे, तभी एक सुरीली आवाज़ वाली महिला अखिल भारतीय समाचार पढ़ रही थी।
भारत में मिशेल ने उन्हें ओबेरॉय-इंटरकॉन्टिनेंटल होटल से आगरा में ताजमहल दिखाने के लिए एक लिमोसिन किराए पर ली। वैलेंटाइन मंत्रमुग्ध हो गए। एक व्यक्ति के असाधारण प्रेम और शक्ति का प्रतीक, यह स्मारक एक चट्टान के किनारे पर ऐसे खड़ा था मानो आकाश में बर्फ का महल तैर रहा हो।
'यह अविश्वसनीय है,' उसने धीमी आवाज़ में कहा, 'कि एक आदमी प्यार के लिए यह सब कर सकता है।'
'प्यार के लिए नहीं,' मिशेल ने उससे कहा था। 'शोक के लिए। शाहजहाँ ने इसे उसके जीवित रहते उसके लिए नहीं बनवाया था। उसे खोने के बाद ही उन्हें एहसास हुआ कि वह उनके लिए कितनी मायने रखती थी। शोक प्यार से ज़्यादा शक्तिशाली होता है।

शोक के लिए इंसान कुछ भी कर सकता है।'
नेपाल में वे शेरपा रास्तों से होते हुए नागरकोट तक पैदल यात्रा पर निकले, पहाड़ों की खामोशी में अकेले, केवल याक की घंटियों की हल्की झंकार और हिमालयी हवाओं में प्रार्थना झंडों की फड़फड़ाहट ही सुनाई दे रही थी। अगले दिन सुबह उन्होंने दुनिया की छत पर सूर्योदय देखा, पश्चिम में धौलागिरी से लेकर पूर्व में कंचनजंगा तक फैला हिमालय का मनोरम दृश्य उनके सामने था।
मिशेल जैसा कोई और आदमी उसने पहले कभी नहीं देखा था। वह ऊर्जा से भरपूर लगता था और जब भी वे किसी कमरे में जाते, सबकी निगाहें उसी पर टिक जाती थीं। फिर भी, ऐसा लगता था मानो उसकी निगाहें सिर्फ उसी पर टिकी हों।
यह एक सपने जैसा था, लेकिन हर सपने की तरह वैलेंटाइन को भी यह चिंता सताती थी कि यह कब खत्म होगा। वह रेस्टोरेंट और किराए की कारों पर खूब पैसा खर्च करता था, और वे हमेशा सबसे अच्छे होटलों में ठहरते थे। उसके पास क्रेडिट कार्डों का कोई न कोई भंडार था।
ऐसा लगता था मानो वह उस 'काम' के बारे में पूरी तरह भूल गया हो, जिसकी वजह से उसे पेरिस छोड़ना पड़ा था। जब भी वह उससे इसके बारे में पूछती, वह टालमटोल करने लगता और गुस्सा हो जाता। दो महीने तक लगातार उसके साथ रहने के बाद भी वह उसके बारे में लगभग कुछ भी नहीं जान पाई थी।
उसने उस पहलू के बारे में न सोचने की कोशिश की। वह बस वर्तमान का आनंद लेना चाहती थी। पिता की आत्महत्या के बाद के उन शुरुआती कुछ दुख भरे हफ्तों में उसने ही उसका सहारा दिया था; अब वह उससे पहले किसी भी चीज़ से ज़्यादा प्यार करती थी। वह अप्रत्याशित और रोमांचक था; और उसने उसे किसी भी पुरुष से ज़्यादा एक स्त्री होने का एहसास दिलाया था।
उसे उससे कभी भी जी नहीं भरता था। रात को वे एक-दूसरे की बाहों में थककर सो जाते थे, उनके शरीर अभी भी एक-दूसरे से लिपटे हुए थे।
बैंकॉक में एक रात जब वे होटल के बिस्तर पर नग्न अवस्था में एक दूसरे के बगल में लेटे थे, मिशेल ने फुसफुसाते हुए कहा: 'आज रात तुम चुप हो। क्या सोच रही हो?'
'मैं सोच रही थी कि मैंने तुम्हें अपने बारे में सब कुछ बता दिया है, लेकिन मैं तुम्हारे बारे में अभी भी बहुत कम जानती हूं।'
‘जानने लायक कुछ नहीं है। मैं एक बहुत ही साधारण इंसान हूँ... मेरी ज़रूरतें भी

साधारण हैं।' उसका हाथ उसकी जांघ के अंदर की रेशमी त्वचा पर फिरा।
क्या आप हमेशा ऐसे ही रहते हैं? एक पांच सितारा खानाबदोश की तरह?
'मेरे हांगकांग और मनीला में अपार्टमेंट हैं। लेकिन मैं वहां शायद ही कभी जाता हूं।'
लेकिन आपके व्यवसाय का क्या? आपके पास तो एक कार्यालय होना ही चाहिए।
'मेरा कारोबार मेरे दिमाग में है। जैसे ही मैं पैसा कमाता हूँ, उसे खर्च कर देता हूँ। मैं कोई साम्राज्य खड़ा नहीं करना चाहता। क्या यह इतना गलत है?'
'नहीं मुझे नहीं लगता।'
'अगर आप कहीं रहना चाहते हैं तो हम ऐसा कर सकते हैं। अगर इससे आपको खुशी मिलेगी तो मैं एक ऑफिस भी किराए पर ले लूंगा।'
'तुम मेरा मजाक उड़ा रहे हो।'
'मैं सच कह रहा हूँ। बैंकॉक में मेरा काम खत्म होते ही मैं तुम्हें हांगकांग ले जाऊँगा। तुम मेरे अपार्टमेंट को सजा सकती हो। अगर तुम चाहो तो हम शादी भी कर सकते हैं।'
उसने उसे कोई जवाब नहीं दिया। शादी? कभी-कभी उसे उम्मीद होती थी कि यह सपना सच हो जाए। लेकिन एक और आवाज़ उसे सावधान रहने को कहती थी। यह मज़ेदार था, यह शानदार था, यह दिलकश था। लेकिन उसे आभास था कि एक दिन यह सब खत्म हो जाएगा।

अध्याय 33

बैंकॉक, थाईलैंड
बैंकॉक, थाई लोगों के लिए क्रुंग थेप। देवदूतों का शहर, सुनहरे मंदिरों का शहर, अगरबत्ती की खुशबू से महकता हुआ, जहाँ केसरिया वस्त्र पहने भिक्षु लाल होंठों वाले बुद्धों के सामने मंत्रों का जाप करते थे; मसाज पार्लरों का शहर जहाँ ग्राहक एक तरफा दर्पण के माध्यम से अपनी पसंद की लड़की का चयन कर सकते थे, और टक्सीडो पहने हुए हट्टे-कट्टे थाई व्यक्ति को अपना नंबर बता सकते थे।
चमकीले रंगों वाले ट्रक हॉर्न बजाते हुए और रत्चादमरी रोड पर जाम लगे ट्रैफिक से जूझते हुए आगे बढ़ रहे थे, उनके ड्राइवर अपनी सीटों के किनारे पर अनिश्चितता से बैठे थे। उन्होंने अपनी सीट का बाकी हिस्सा बुद्ध के लिए आरक्षित रखा था, जो

थाईलैंड की इन खतरनाक और जानलेवा सड़कों पर उनके अदृश्य लेकिन आवश्यक रक्षक थे।
दूर से देखने पर, आधुनिक होटलों की चमचमाती कंक्रीट और कांच की इमारतों के सामने सोने से मढ़े स्तूप सस्ते और घटिया प्रतीत होते थे।
ग्रेस सोमपोल, इंद्रा होटल के हनीमून सुइट में बिस्तर पर नग्न अवस्था में लेटी हुई थी। वह मिशेल को अपने कपड़े उतारते हुए देख रही थी।
उसने कहा, 'मैं डरी हुई हूं।'
‘इसमें बस कुछ ही मिनट लगेंगे और फिर आप अपनी कल्पना से भी कहीं अधिक अमीर हो जाएंगे। किसी को कोई नुकसान नहीं होगा। मुझ पर भरोसा करें।’
'अगर कोई दुकान के पास से गुजरे और अंदर झांक ले तो क्या होगा?'
'अंधेरा होगा। तुम्हें कोई नहीं देखेगा।'
ग्रेस ने उसे गौर से देखा। उसका शरीर उन किक-बॉक्सरों की तरह सुगठित और पतला था जिन्हें वह कभी-कभी लुम्पिनी स्टेडियम में देखने जाती थी। वह कमरे के उस पार गया और बिस्तर के किनारे बैठ गया। उसने अपना हाथ उसके स्तन पर रख दिया।
‘क्या हम यहाँ से अभी नहीं जा सकते? अभी? आज रात?’
'पहले आपको मेरी मदद करनी होगी।'
मुझे नहीं पता कि मैं यह कर पाऊंगा या नहीं।
‘बिल्कुल कर सकते हैं। मैंने कहा था ना, यह आसान होगा। जब बूढ़ा चाओवास जागेगा, तब हम हजारों मील दूर होंगे। चिंता की कोई बात नहीं है।’
मिशेल ने धीरे से खुद को उसके ऊपर लिटाया। उसने उसे चूमा।
'मुझसे वादा करो कि सब ठीक हो जाएगा।'
'चुप रहो, अब मुझ पर भरोसा करो। मैं तुमसे वादा करता हूँ, सब कुछ ठीक हो जाएगा।'
जब मिशेल इंद्र सियाम ज्वैलरी की दुकान में दाखिल हुआ, तो उसे पहली ही नज़र में शक हो गया था कि वह एक धोखेबाज है। उसने अपनी छोटी सी ज़िंदगी में ऐसे कई लोगों को देखा था; उनकी आँखें ही उनकी पोल खोल देती थीं।
लेकिन वह आकर्षक और बेहद अमीर था। उसकी छोटी उंगली पर एक मोटा सा माणिक चमक रहा था, उसके ब्लेज़र की जेब में एक गहरे लाल रंग का रेशमी रूमाल

रखा था और उसकी कलाई पर पीले सोने की एक मोटी ओमेगा घड़ी थी। उसने आगे कोई राय बनाने से पहले ही फैसला कर लिया।
उसने कुछ अंगूठियां देखने के लिए कहा और जब वह उसे अंगूठियां दिखा रही थी, तो उसने उससे थोड़ी छेड़छाड़ भी की। उसने कोई अंगूठी तो नहीं खरीदी, लेकिन उसे रात के खाने पर बुलाया। उसने खुशी-खुशी स्वीकार कर लिया।
वह उसे शेरेटन होटल ले गया, रत्न विज्ञान के अपने ज्ञान से उसे प्रभावित किया और अमेरिका में जीवन के बारे में बातें करके उसे मोहित कर लिया। उसने उसे बताया कि वह खूबसूरत है। उसने उसे न्यूयॉर्क और लास वेगास ले जाने का वादा किया। उसने उसकी बात मान ली क्योंकि वह मानना चाहती थी।
उसने उसे अंदर धकेल दिया। वह हल्की सी चीख पड़ी।
उसने कहा, 'मुझे अमेरिका के बारे में बताओ।'
'मेरे पास एक बड़ा घर और एक बड़ी कार है। मेरे पास अपना स्विमिंग पूल और एक टेलीफोन भी है।'
‘क्या तुम मुझे डिज्नीलैंड ले जाओगे?’
'जहां आप चाहें।'
'क्या तुम सच में मुझसे प्यार करते हो?'
‘हां,’ उसने फुसफुसाते हुए कहा। ‘हां, हां।’
उसने अपनी आँखें बंद कर लीं और उसके लिए चरम सुख का नाटक करने पर ध्यान केंद्रित किया। नहीं तो वह पूरी रात उसके साथ संबंध बनाता रहता।

♦ ♦ ♦

वैलेंटाइन खिड़की के पास खड़ी होकर रामा I रोड पर लाल रंग की टेल लाइटों को देख रही थी। शहर का शोर, गर्मी और पेट्रोल की बदबू उसके वातानुकूलित सुइट से बिलकुल अलग दुनिया लग रही थी। उसे ऐसा लग रहा था जैसे वह किसी बर्फीले टावर में बैठी रानी हो, जो अपने सुंदर राजकुमार के आने और उसे अपना बनाने का इंतज़ार कर रही हो।
मिशेल ने अपने बालों को रंगना बंद कर दिया था, उन्हें छोटा कटवा लिया था ताकि वह फिर से एशियाई दिखने लगे। बैंकॉक आने के बाद से वह सुबह जल्दी निकल जाता था और देर रात को लौटता था, अगर लौटता भी था तो। वह कहता था कि यह

'व्यापार' है। लेकिन किस तरह का व्यापार?
उसने अपना दिन मंदिरों के दर्शन करने और दुकानों व बाज़ारों में खरीदारी करने में बिताने की कोशिश की। लेकिन जल्द ही वह अकेले घूमने से ऊब गई।
वह पेरिस वापस जाने के बारे में सोचने लगी। किसलिए? एक सुनसान दो कमरों वाले अपार्टमेंट में, जहाँ अहंकारी पुरुषों के साथ एक रात के संबंध बनते थे। मिशेल ने अपने हीरे-जवाहरात वाले जीवन से उसे मोहित कर लिया था। वह रोमांचक, जोशीला और मज़ेदार था। उसने खुद से कहा कि जब उसका 'काम' खत्म हो जाएगा, तो वे उसी जीवन में वापस लौट जाएँगे। उसे बस धैर्य रखना होगा।
लेकिन ये किस तरह का धंधा था? ये कानूनी तो हो ही नहीं सकता था, वरना वो इसे लेकर इतना गुप्त न रहता। ये क्या था; बंदूकें, ड्रग्स? और अगर वो ये दिखावा करती है कि उसे पता नहीं है, या उसे परवाह नहीं है, तो इससे उसकी पहचान क्या बनती है?
उसने रूम सर्विस को फोन किया और एक और स्कॉच और सोडा मंगवाया। उसने मन ही मन सोचा, बिलकुल अपनी माँ की बेटी हो। अपनी परेशानियों को शराब में डुबो दो।

♦ ♦ ♦

मिशेल सुबह दो बजे के कुछ देर बाद सियाम इंटरकॉन्टिनेंटल होटल लौटा। वैलेंटाइन खिड़की के पास चमड़े के सोफे पर सिमटकर बैठी थी, उसकी उंगलियां एक खाली गिलास को पकड़े हुए थीं।
'तुम अभी भी जागे हुए हो।'
'आपका दिन कैसा रहा?'
'अच्छा।'
'आपने क्या किया?'
‘बस कारोबार।’
'किस प्रकार का व्यवसाय है?'
'प्लीज, प्रिये, मैं थक गया हूँ। मैं लड़ना नहीं चाहता।'
‘तुमने कहा था कि तुम्हें दो घंटे लगेंगे। आधी रात हो चुकी है। किस काम के लिए तुम्हें सुबह तक बाहर रहना पड़ता है?’ उसने गौर किया कि उसकी आवाज़ लड़खड़ा रही

थी। मिशेल अपने कपड़े उतारने लगा। ‘क्या कोई और औरत है, मिशेल?’
'बिल्कुल नहीं!
‘तुम मुझे कभी कुछ नहीं बताते। तुम क्या करते हो, मिशेल?’
‘यह गैरकानूनी है, ठीक है? जितना कम जानो, उतना अच्छा। मैं चोरी-छिपे कीमती रत्न हासिल करता हूँ और उन्हें बेचता हूँ।’
'क्या यह खतरनाक है?'
‘थोड़ा-बहुत।’ उसने आह भरी और बिस्तर पर बैठ गया। ‘मैं तुमसे इस बारे में बात नहीं करता क्योंकि मुझे डर है कि तुम मुझे छोड़ दोगी। तुम यहाँ पैदा नहीं हुई हो, तुम बिल्कुल नासमझ हो। लेकिन तुम्हें समझना होगा, यहाँ हर कोई भ्रष्ट है। जो लोग सड़कें साफ़ करते हैं, जो पूल के किनारे तुम्हें ड्रिंक्स लाते हैं, वे ईमानदार हैं। और इससे उन्हें क्या फ़ायदा? हाँ, मैं नियमों को थोड़ा-बहुत तोड़ता हूँ। किसी को कोई नुकसान नहीं होता।’
‘मुझे लगता है मैं एक और स्कॉच लूंगी,’ उसने कहा और मेज से बोतल उठाने चली गई। मिशेल ने उसकी कलाई पकड़ ली और उसे बिस्तर पर खींच लिया। उसने उसे दूर धकेलने की कोशिश की।
बस करो! मैं तुमसे प्यार करता हूँ! मुझे कितनी बार यह कहना पड़ेगा?
मुझे तुम पर विश्वास क्यों करना चाहिए?
‘क्योंकि यह सच है। आपको चीजों को इतना मुश्किल क्यों बनाना पड़ता है? मैं जो कुछ भी करता हूँ, वह आपके लिए ही करता हूँ!’
‘आपने कहा था कि हम हांगकांग जाएंगे। आपने कहा था कि हम आपके अपार्टमेंट में रहने लगेंगे।’
'हम ऐसा करेंगे।'
'कब?'
‘जैसे ही मेरा यहाँ का काम खत्म हो जाएगा।’
‘यह कब होगा?’
मैं कल रात तक यहां अपना काम खत्म कर लूंगा। फिर हम जा सकते हैं। मैं वादा करता हूं।
उसने उसके रेशमी पजामा की डोरी ढीली की और अपना हाथ उसके नीचे डाल दिया।
'सब ठीक हो जाएगा। मैं वादा करता हूँ। मैं तुमसे कभी झूठ नहीं बोलूंगा, कभी नहीं।

तुम मेरे लिए पूरी दुनिया हो। पूरी दुनिया।'

अध्याय 34

ग्रेस अंधेरे गलियारे से तेज़ी से चलकर इंद्र होटल की जगमगाती लॉबी में पहुँची। उसने दौड़ने की कोशिश नहीं की। उसने अपने चमड़े के कंधे के बैग को इतनी कसकर पकड़ा हुआ था कि उसकी उंगलियों के जोड़ सफ़ेद पड़ गए थे। वह चौड़े कांच के दरवाज़ों से अंदर घुसी, जिन्हें वर्दीधारी अटेंडेंट ने उसके लिए खोला था, और होटल के सामने खड़ी काली मर्सिडीज़ में कूद पड़ी।

♦ ♦ ♦

उसे विश्वास नहीं हो रहा था।

मिशेल शहर से उत्तर की ओर, बैंकॉक के डॉन मुआंग हवाई अड्डे की ओर जाने वाले सुपरहाइवे की काली पट्टी पर सवार होकर आगे बढ़ा। 450 एसईएल एक चिकनी और लाड़ली बिल्ली की तरह धीरे-धीरे चल रही थी। धान के खेतों और टैपिओका के खेतों का गहरा विस्तार बीच-बीच में जगमगाते रेस्तरां समूहों से टूटता था, जो ट्रकों के लिए ईंधन भरने के स्थान के रूप में काम करते थे।

डैशबोर्ड की रोशनी ने उसके चेहरे को एक शैतानी खौफनाक रूप दे दिया था। उसे यकीन नहीं हो रहा था कि वह दुकान से सिर्फ़ उन कुछ गहनों को लेकर जा सकती है जो उसने इतने गर्व से उसे दिए थे। उनकी कुल कीमत पाँच हज़ार डॉलर से ज़्यादा नहीं थी। उसने कम से कम दस गुना ज़्यादा की उम्मीद की थी।

गाड़ी में चढ़ते हुए उसने हांफते हुए चिल्लाकर कहा, “कोई आया था। वे खिड़की से अंदर झांकने लगे। मैंने उनके जाने का इंतज़ार किया और फिर जितनी जल्दी हो सके गाड़ी से बाहर निकल गई।” उसने अपनी कहानी ऐसे सुनाई मानो वह किसी वीर योद्धा की तरह थी।

उसने उससे कहा था, 'होटल में ठहरे मेहमानों में से एक था। वे खिड़की से कुछ देख रहे थे। किसी को शक क्यों होगा?'

उसने उससे बैग छीन लिया और उसके अंदर की सारी चीजें सीट पर उलट दीं। उसमें मुश्किल से एक दर्जन ही चीजें थीं।

ग्रेस ने दोहराया, 'मैं बहुत डर गई थी। मुझे गले लगा लो।'

उसने उसे थामे रखा था, उसकी निगाहें अभी भी सड़क के दूसरी ओर स्थित होटल पर टिकी थीं, क्योंकि वह जानता था कि वहां एक बड़ा खजाना छिपा है, और वह असुरक्षित है।

‘ग्रेस, तुम्हें वापस जाना होगा,’ उसने फुसफुसाते हुए कहा था।

'मैं नहीं कर सकता।'

'आपको चाहिए।'

‘नहीं, मिशेल,’ वह रोते हुए बोली। ‘कृपया मुझे मजबूर मत करो!’

उसने खुद ऐसा करने के बारे में सोचा। लेकिन ऐसा करना आत्महत्या के समान होता। इस तरह से काम करने का मकसद यही था कि उसे कोई देख न सके। गहनों की दुकान या उस लड़की से उसका कोई संबंध न रहे।

उन्होंने संघर्ष किया।

'क्या?'

‘चाओवास। मुझे लगता है कि वह जानता था। जिस तरह से उसने मुझे देखा। उसने दरवाजे तक पहुंचने की कोशिश की। मुझे उसके साथ वहीं उसके दफ्तर में हाथापाई करनी पड़ी। तुमने कहा था कि पाउडर उसे तुरंत बेहोश कर देगा!’

‘शायद तुमने उसे पर्याप्त नहीं दिया।’ उसने गाड़ी को गियर में डाला और शाम के भीड़भाड़ वाले ट्रैफिक में निकल पड़ा। ‘चिंता मत करो। सब ठीक हो जाएगा।’

एयरपोर्ट जाते समय ग्रेस शांत हो गई। वह यात्री सीट पर सिमटकर बैठ गई और धीरे-धीरे रोने लगी।

डॉन मुआंग से लगभग दस मिनट की दूरी पर, मिशेल ने राजमार्ग से हटकर एक अंधेरी सड़क पर मुड़ गया जो धान के खेतों के बीच से गुजरती थी।

'हम कहाँ जा रहे हैं?'

उसने उससे कहा, 'हमें हीरे छिपाने होंगे। तुम उन्हें अपने कंधे के बैग में रखकर हवाई जहाज में नहीं ले जा सकती।'

उसने रियर मिरर में देखा। उनके पीछे कोई नहीं था। उसने कार रोकी और इंजन बंद कर दिया। ग्रेस ने मुस्कुराते हुए उसकी ओर देखा। 'हमने कर दिखाया,' उसने धीरे से कहा।

'हां, मेरी जान। हमने कर दिखाया।'

बेवकूफ औरत! पाँच हज़ार डॉलर! इतने में तो हांगकांग प्रायद्वीप में रात का खाना भी

मुश्किल से आ पाएगा! तुम्हें क्या लगता है कि मैं इतने में गुज़ारा कर पाऊँगी?
ग्रेस ने पूछा, 'हमारी फ्लाइट कितने बजे रवाना होगी?'
‘एक बजे। पैन एम एयरलाइंस से सैन फ्रांसिस्को के लिए उड़ान।’
‘मैं बहुत डर गई थी,’ ग्रेस ने दोहराया।
मिशेल मुस्कुराया। उसका सुंदर, भोला-भाला चेहरा भी मुस्कुरा उठा। उसने हाथ बढ़ाकर उसे थाम लिया। उसने उसकी गर्दन में धड़कती नब्ज़ महसूस की, कितनी कोमल, कितनी नरम। मानो कोई नन्ही चिड़िया हो।
उसने उसके कंधे से बालों को हटाकर उसकी गर्दन को पूरी तरह से उजागर कर दिया। वैलेंटाइन डे के बाद से उनसे नफरत करना मुश्किल हो गया था। अब तो वे बस एक झंझट बनकर रह गए थे।
‘क्या तुम मुझसे प्यार करते हो?’ ग्रेस ने फुसफुसाते हुए पूछा।
‘बिल्कुल,’ मिशेल ने कहा।
वह इतनी बेवकूफ कैसे हो सकती थी? उसने इस बेवकूफ लड़की पर इतना समय और मेहनत लगाई थी और वह दुकान से मुट्ठी भर बेकार अंगूठियां लेकर चली गई।
‘सब कुछ ठीक हो जाएगा, है ना?’ ग्रेस ने कहा।
'हां, सब ठीक हो जाएगा।'
उसने अपना समय बर्बाद कर दिया था। अब उसे सब कुछ नए सिरे से शुरू करना होगा।

♦ ♦ ♦

भोर की हल्की नींबू जैसी रोशनी थाईलैंड की खाड़ी पर फैल रही थी। श्री राचा नामक छोटे से मछली पकड़ने वाले गाँव के ठीक उत्तर में एक सुनसान समुद्र तट के किनारे झुके हुए ताड़ के पेड़ों के नीचे एक बूढ़ा व्यक्ति अपनी साइकिल चला रहा था। उनकी साइकिल के पीछे एक बाँस की टोकरी थी, जो बाज़ार ले जाने के लिए केले, अंडे और सब्ज़ियों से भरी हुई थी। वे धीरे-धीरे साइकिल चला रहे थे, क्योंकि वे बहुत बूढ़े थे। उनके सामने समुद्र तट की लंबी, धूसर पट्टी क्षितिज तक कंबोडिया की ओर फैली हुई थी।
जैसे-जैसे रोशनी तेज़ होती गई, उसने लहरों के किनारे रेत में एक आकृति देखी, जिसके चारों ओर सफेद झाग रेत को अपनी ओर खींच रहा था। पहले तो उसे लगा कि यह कोई मरा हुआ कछुआ हो सकता है। कुछ कछुए इंसानों जितने बड़े हो जाते थे

और उनके खोल बहुत कीमती होते थे।
वह अपनी साइकिल से उतरा और जांच करने के लिए रेत पर चलने लगा।
उसकी दृष्टि कमजोर थी, इसलिए जब वह कछुए से कुछ ही कदम दूर पहुंचा, तब उसे एहसास हुआ कि वह वास्तव में एक युवती का शरीर था। वह पीठ के बल लेटी हुई थी, उसकी त्वचा चित्तीदार धूसर-नीली थी, लेकिन उस पर छोटे-छोटे गुलाबी सीपियों के टुकड़े बिखरे हुए थे, जो नन्हे रत्नों की तरह चमक रहे थे। उसके बाल पानी में शैवाल की तरह लहरा रहे थे।
केकड़ों ने अपना काम कर दिया था। उसकी आँखें और होंठ गायब हो गए थे।
बूढ़ा आदमी किसी तरह वापस समुद्र तट पर चढ़ा और श्री राचा की ओर जितनी तेज़ी से हो सकता था साइकिल चलाई। उसे पुयाइबन को पुलिस बुलाने के लिए कहना ही होगा।

अध्याय 35

पेरिस
कैप्टन रेने बुडजिंस्की ने बैंकॉक से कार्यालय को अभी-अभी प्राप्त हुए तार का अध्ययन किया:
1116172
प्रति: आईपी पेरिस
हम आपको सूचित करना चाहते हैं कि 5/6/72 को इंद्रा होटल स्थित इंद्रा सियाम ज्वैलरी स्टोर में एक डकैती हुई थी। यह डकैती दुकान बंद करने के बाद मालिक के कर्मचारी द्वारा की गई थी, जिसने उसे नशीली दवा दी थी। कर्मचारी 10,000 बात मूल्य के गहने ले गया।
संदिग्ध की पहचान अब 21 वर्षीय महिला ग्रेस सोमपोल के रूप में हुई है। संदिग्ध का शव 7 जून 1972 को पटाया के पास मृत पाया गया। मृत्यु का कारण गला घोंटना माना जा रहा है। संदिग्ध नग्न अवस्था में थी और लापता वस्तुओं में से कोई भी बरामद नहीं हुई है।
अपराध की प्रकृति और मुख्य संदिग्ध की मृत्यु का तरीका स्पष्ट रूप से सहयोगी की संलिप्तता का संकेत देता है। इंद्र होटल में एक पुरुष के साथ संदिग्ध को देखा गया

है, जो संभवत: विदेशी नागरिक है, जिसकी उम्र 25-30 वर्ष है, मध्य पूर्वी या भारतीय मूल का है, कद छह फुट है, काले बाल हैं और रंग सांवला है। संभावित संदिग्धों का पता लगाने और उन्हें हिरासत में लेने में सहायता का अनुरोध है।
एंड आईपी बैंकॉक
हस्ताक्षरित: प्रीनोम तानोंगसाक (लेफ्टिनेंट कर्नल)
रॉयल थाईलैंड पुलिस (इंटरपोल डिवीजन)
सिगरेट की राख उसके सूट पर गिर गई। अचानक वह खड़ा हो गया, जिससे उसकी कुर्सी कालीन पर लुढ़क गई। एक झटके में उसने अपनी मेज से सारी फाइलें और कागज़ ज़मीन पर बिखेर दिए। दफ्तर में सबकी निगाहें उसकी ओर मुड़ गईं। 'मुझे पता है, यह वही आदमी है!' उसने चिल्लाकर कहा। अपने दाहिने हाथ में केबल पकड़े हुए वह लिफ्ट की ओर बढ़ा और महासचिव का दिन खराब करने के लिए सबसे ऊपरी मंजिल पर चला गया।

♦ ♦ ♦

'नहीं, बुडजिंस्की। जवाब नहीं है।'
लेकिन, महोदय—
'इसकी इजाज़त नहीं है।'
लेकिन ये तो वही है! यही होना चाहिए!
महासचिव एक समझदार व्यक्ति थे। लेकिन पिछले कुछ महीनों में उनके दक्षिण-पूर्व एशिया संपर्क अधिकारी ने उनके धैर्य की परीक्षा ली थी।
'मान लीजिए कि आप सही हैं, कप्तान। आप अपनी खोज कहाँ से शुरू करेंगे? बैंकॉक? दिल्ली? मनीला? सिंगापुर? क्या आप चाहते हैं कि मैं आपको एशिया के दौरे पर भेज दूं?'
'लेकिन निशान ताजा है,' बुडजिंस्की ने विरोध करते हुए कहा। 'हमें गहन जांच करनी होगी। आप थाई लोगों को जानते ही हैं, वे बर्फ के मैदान में खून बहते हाथी का भी पीछा नहीं कर सकते।'
'कैप्टन, आपका काम उनसे संपर्क स्थापित करना है। इसका मतलब है उनके साथ काम करना, न कि उन्हें यह बताना कि उन्हें अपना काम कैसे करना है।'
लेकिन अगर हम इस आदमी का अभी पता लगा सकें तो—

'नहीं, कप्तान जी, यह एक व्यर्थ की खोज है। कृपया याद रखें कि हम खुफिया जानकारी जुटाने वाले हैं, न कि आक्रमणकारी सैनिक।'
हमें इस आदमी को पकड़ना होगा।
महासचिव को लगा कि बुडजिंस्की थके हुए लग रहे हैं। उनकी आँखों के नीचे काले घेरे थे और उनका वजन कम हो गया था। ऐसा लग रहा था कि वे पहले से ज़्यादा धूम्रपान कर रहे हैं, अगर यह मानवीय रूप से संभव हो। इस रफ्तार से तो वे सेवानिवृत्ति की तय तारीख से बहुत पहले ही पूरी तरह से थककर चूर हो जाएंगे।
'कैप्टन, ऐसा लगता है कि यह एक व्यक्तिगत जुनून बन गया है। मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर सकता।'
'हां, मुझे पता है। मुझे खेद है, लेकिन आपको समझना होगा...'
'मैं समझता हूँ। लेकिन मेरा काम यह सुनिश्चित करना है कि यह संगठन अपने चार्टर में निर्धारित सिद्धांतों के अनुसार कार्य करे। मैं आपको इस मामले को आगे बढ़ाने के लिए थाईलैंड जाने की अनुमति नहीं देता। क्या यह स्पष्ट है? यह व्यर्थ और हताशापूर्ण है।'
'हमें हताश होना चाहिए। यह आदमी मनोरोगी है।'
यदि वास्तव में यह एक ही व्यक्ति का काम है, तो आप निःसंदेह सही हैं। लेकिन हम उचित प्रक्रियाओं का पालन करेंगे।
बुडजिंस्की ने अपना सिर झुका लिया। 'जी जनाब, आप सही कह रहे हैं। शायद मुझे कुछ समय के लिए आराम करने की जरूरत है।'
'रेने, तुम्हारी छुट्टी का समय आ गया है। एक महीने की छुट्टी ले लो और पेरिस से बाहर चले जाओ। दो महीने की छुट्टी ले लो।'
'मैं तुम्हारा धन्यवाद करूंगा।'
बुडजिंस्की उठे और लड़खड़ाते हुए दरवाजे की ओर बढ़े।
'वैसे, कैप्टन, थाईलैंड को छुट्टी मनाने की जगह मत समझिएगा? अगर मुझे पता चला कि आप दखलंदाजी कर रहे हैं...'
'नहीं, महोदय। बिलकुल नहीं। यह बात मेरे दिमाग में कभी आई ही नहीं।'

बैंकाक
दुसित थानी बैंकॉक के बेहतरीन होटलों में से एक था, जो रामा थाई रोड के दक्षिणी

छोर पर स्थित एक शानदार सफेद, दस मंजिला महलनुमा इमारत थी। यह धनी एशियाई व्यापारियों का पसंदीदा होटल था और इसकी लॉबी और गलियारे महंगे कॉफी शॉप, रेस्तरां, बुटीक और आभूषण की दुकानों से जगमगाते थे।
अधिकांश ग्राहकों को महानोर्न का नाम बोलने में कठिनाई होती थी, इसलिए उसने उन्हें उसे मे कहकर बुलाने की अनुमति दे दी। वह नारी ज्वैलरी स्टोर में प्रतिदिन सुबह आठ बजे से शाम नौ बजे तक काम करती थी। उसे हर महीने एक रविवार की छुट्टी मिलती थी और उसे 250 बात (लगभग एक सौ बीस डॉलर) मिलते थे। यह एक अच्छी नौकरी थी। मे यह पैसा अपनी माँ को देती थी और अपने पिता की टैक्सी सेवा से होने वाली कमाई के साथ मिलकर, इससे उसके पाँच छोटे भाई-बहनों का भरण-पोषण होता था और हवाई अड्डे के पास स्थित उनके छोटे लकड़ी के घर का कुछ किराया भी निकल जाता था।
मे के ज़्यादातर ग्राहक जापानी और मलय थे। लेकिन एक दोपहर उसने ऊपर देखा तो एक लंबा-चौड़ा यूरेशियन आदमी दुकान में दाखिल हुआ। सबसे पहले उसकी नज़र उसकी मोहक भूरी आँखों और सफ़ेद मुस्कान पर पड़ी। उसने मोती जैसे भूरे रंग का कार्डिन सूट और चमकदार चमड़े के गुच्ची लोफ़र्स पहने हुए थे।
उसे अपनी किस्मत पर यकीन नहीं हो रहा था। दुकान में तीन और लड़कियां थीं, लेकिन वह सीधे उसके पास चला आया।
‘क्या मैं आपकी मदद कर सकती हूँ?’ उसने उस शहर की व्यावसायिक भाषा, अंग्रेजी में कहा।
‘शायद। मुझे कुछ हीरे खरीदने में दिलचस्पी है।’ उसकी मुस्कान ने उसे पिघला दिया। उसने सोचा कि क्या वह उसे कुछ कीमती पत्थरों से ज़्यादा में दिलचस्पी दिला सकती है। उसे शक था कि यह कोशिश फ़ायदेमंद साबित हो सकती है।

♦ ♦ ♦

वैलेंटाइन हिचकिचाई, उसकी उंगली टेलीफोन पर टिकी हुई थी। डायरेक्टरी बिस्तर पर खुली पड़ी थी, जिसमें एयर फ्रांस का नंबर लाल स्याही से घेरा हुआ था।
उन्होंने कहा था कि उनका कारोबार पांच दिन पहले ही खत्म हो जाएगा। लेकिन वे अब भी बैंकॉक में ही थे और वह अब भी हर रात आधी रात के बाद तक बाहर ही रहते थे।

उसने फोन पटक दिया। नहीं, वह यूं ही भाग नहीं जाएगी। उसे सच जानना ही होगा।
उसने अपना बैग उठाया और दरवाजा जोर से बंद करते हुए बाहर चली गई।
लॉबी में वर्दी पहने द्वारपाल ने उसे पहचान लिया और मुस्कुराया।
उसने उससे पूछा, 'क्या आपने महाशय गिरेसे को देखा है?'
उसने सिर हिलाया। 'उसने मुझसे उसके लिए टैक्सी मंगवाने को कहा था।'
'कहाँ जाना है?'
वह आदमी हिचकिचाया। वैलेंटाइन ने अपने पर्स से बीस बात का नोट निकाला और उसे दे दिया।
‘शेरेटन होटल।’
'धन्यवाद।'
'मैं तुम्हारे लिए कुछ भी कर सकता हूं?'
'जी हां, आप मेरे लिए टैक्सी मंगवा सकते हैं।'
'कहाँ जाना है?'
‘शेरेटन होटल।’

♦ ♦ ♦

मे ने रेस्तरां में चारों ओर देखा, सफेद वर्दी में सजे वेटरों, चांदी के भारी कटलरी, चमड़े की जिल्द वाली वाइन लिस्ट और मेनू को देखकर वह दंग रह गई। बाकी मेहमान ज्यादातर धनी यूरोपीय थे, पुरुष महंगे सूट में थे - जैसे मिशेल - और महिलाएं डिजाइनर गाउन में थीं, जिनकी कलाई और गले में पन्ना और हीरे चमक रहे थे। मे बेचैन, शर्मिंदा और डरी हुई सी थी, और मिशेल की बातों पर ध्यान केंद्रित करने की कोशिश कर रही थी।
‘तुम घबराए हुए लग रहे हो,’ मिशेल ने कहा।
‘मैं इतने बड़े रेस्टोरेंट में कभी खाना नहीं खाती,’ मे ने अपनी टूटी-फूटी अंग्रेजी को ध्यान में रखते हुए कहा। उसने उसे बताया था कि वह खुद चार भाषाएँ बोलता है। वह मुझमें क्या देखता है?
‘आराम करो,’ मिशेल ने कहा। ‘मैं तुम्हारे लिए ऑर्डर कर दूंगा। तुम्हें बस मज़े करने हैं।’
मे के घुटने ने मेज के नीचे उसके घुटने को हल्का सा छुआ और उसकी सांसें थम गईं।

उसे अपनी किस्मत पर यकीन नहीं हो रहा था। यह आदमी अमीर, बेहद आकर्षक और सभ्य था। उसने उसे ही क्यों चुना? मे को कई बार कहा गया था कि वह खूबसूरत है, लेकिन उसने कभी नहीं सोचा था कि एक दिन वह इस तरह के आदमी को आकर्षित कर पाएगी। यह सब कुछ अविश्वसनीय लग रहा था।
वह अपनी अनाड़ीपन और झिझक के लिए खुद से नफरत करती थी। वह होटल में देखी गई पश्चिमी महिलाओं की तरह आकर्षक और सभ्य बनना चाहती थी।
शराब आ गई। यह एक महंगी फ्रेंच शैम्पेन थी। उसने गिलास उठाकर टोस्ट किया।
'हमारे लिए,' उसने धीरे से कहा।
उसका मुंह इतना सूख गया था कि वह मुश्किल से बोल पा रही थी। 'हमसे,' उसने कहा। यह हो ही नहीं सकता था। किसी भी क्षण वह जाग जाएगी और उसे एहसास होगा कि यह सब एक सपना था।

♦ ♦ ♦

रेने बुडजिंस्की ने दिन को बैंगनी शाम में बदलते हुए देखा। डूबते सूरज की किरणें एक मंदिर के सुनहरे स्तूप पर चमक रही थीं, और कॉन्वेंट रोड के किनारे बिखरे हुए नारियल के पेड़ धीरे-धीरे काली परछाइयों में तब्दील हो रहे थे।
पॉल हर्बिन बालकनी में आए और उनके बगल में खड़े हो गए। उन्होंने उन्हें एक गिलास दिया और सैन मिगुएल की बोतल से उन्हें बीयर पिलाई। 'अचानक मिली खुशी, रेने।'
‘पॉल, तुम्हें दोबारा देखकर भी अच्छा लगा।’
तो क्या यह छुट्टी का दिन है?
बुडजिंस्की ने अपनी गाउलोइस सिगरेट ढूंढी और एक जलाई। 'कुछ-कुछ।'
‘क्या कभी किसी ने आपसे कहा है कि इन चीजों का सेवन कम कर दें?’
'सब लोग।'
‘आप क्यों नहीं करते?’
कुछ साल पहले मैं चैंप्स एलिसी पर कुछ खूबसूरत लड़कियों को देख रहा था और मुझे एहसास हुआ कि मैं उनकी उम्र का बाप बनने लायक हो गया हूँ। मैंने सोचा कि अब मैं जवानी में मरने के लिए बहुत बूढ़ा हो गया हूँ, तो चिंता क्यों करूँ?
वे दोनों साइगॉन से एक-दूसरे को जानते थे, जब वह दूतावास में एक कनिष्ठ

अधिकारी थे और रेने एसडीईसीई में कार्यरत थे। उन्होंने उसे कभी ज्यादा भावुक होते नहीं देखा था। उन्होंने सुना था कि बेटी के अंतिम संस्कार के अगले दिन ही वह सेंट क्लाउड स्थित अपने कार्यालय में लौट आए थे। यह ठीक वैसा ही था जैसा उन्होंने उनसे उम्मीद की थी, ठीक वैसा ही व्यवहार जिसके कारण उन्हें एक निर्दयी और क्रूर व्यक्ति के रूप में बदनामी मिली थी।

लेकिन यह तो बस चीजों से निपटने का उसका तरीका था। अगर वह असाधारण घंटों तक काम करता था, तो इसलिए नहीं कि उसे अपना काम पसंद था; बल्कि इसलिए कि वह उससे नफरत करता था। वह दुनिया को बचाना चाहता था, वह एक ऐसा योद्धा था जो अपने ही काम को बेकार बनाना चाहता था। उसके जैसे लोग लंबी और स्वस्थ जिंदगी नहीं जीते। यह दुख की बात थी, लेकिन अब कोई उसे बदल नहीं सकता था।

उसके बारे में एक कहानी प्रचलित थी, जिसे सबने सुना था। यह घटना साइगॉन में, डिएन बिएन फू से ठीक पहले घटी थी। एक वियत मिन्ह सैनिक ने एक कैफे में मशीन गन से गोलीबारी की और ग्यारह यूरोपीय लोगों का नरसंहार कर दिया। उनमें से एक छह साल की बच्ची थी। रेने पास ही था और उसने उस आदमी का पीछा करते हुए उसे एक गली में धकेल दिया। उस आदमी की बंदूक जाम हो गई थी, वरना रेने भी मारा जाता। इसके बजाय, उसने वियत मिन्ह सैनिक को जमीन पर गिरा दिया और अपने नंगे हाथों से पीट-पीटकर उसकी हत्या कर दी, जबकि कुछ एआरवीएन सैनिक खड़े होकर देखते रहे।

उनकी पत्नी का साथ ज़्यादा दिन नहीं चला; वे अपने काम के दीवाने थे। उनकी बेटी के साथ उनका रिश्ता कई सालों से तनावपूर्ण था, लेकिन जब उनकी बेटी की मृत्यु हुई, तब वे आखिरकार इस रिश्ते को सुलझाने की कोशिश कर ही रहे थे। घटना के तुरंत बाद उन्होंने पेरिस से उन्हें फोन किया था। वे बुरी तरह नशे में थे और फोन पर रोते रहे थे। हर्बिन सोचता है कि क्या उन्हें अब भी वह बातचीत याद है।

हर्बिन अपने गिलास से खेलने लगा। 'देखो, रेने, ये चीज़...'

'छोड़ो इसे। मैं इसके बारे में बात नहीं करना चाहता।'

‘क्या इसीलिए खान मंत्रालय ने आपको लंबी छुट्टी दी?’

नहीं, मैंने खुद को एक दिया।

‘यह तो तुम्हारी आवाज़ जैसी नहीं लग रही।’

'सच तो यह है कि यह वास्तव में कोई छुट्टी नहीं है।'
मैंने एक पल के लिए भी नहीं सोचा था कि ऐसा होगा। लेकिन सावधान रहना। अगर पेरिस को इसके बारे में पता चल गया, तो फ्रांस में कदम रखते ही तुम्हें पेंशन पर निर्भर रहना पड़ेगा।
मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता, पॉल।
हर्बिन ने अपना गिलास खाली किया और दूसरा गिलास भर लिया। 'तो मुझे बताओ कि यह सब क्या है?'
'पिछले हफ्ते इंद्रा होटल में हुई डकैती। मैं उसी आदमी की तलाश में हूँ।'
जब आप कहते हैं, 'जिस आदमी के पीछे आप पड़े हैं,' तो आपका मतलब है...?
'मेरा और क्या मतलब हो सकता है?'
'क्या आपको यकीन है?'
'सकारात्मक।' उसने जाने से पहले अपनी पूरी फाइल की फोटोकॉपी करवा ली थी। उसके पास इंद्रा डकैती की रिपोर्ट की अतिरिक्त प्रतियां भी थीं; उसने उसे अपनी जैकेट की जेब से निकाला, खोला और अपने दोस्त को दे दिया।
'काले बाल, सांवला रंग। इससे यह संख्या घटकर एशिया में लगभग दस मिलियन लोगों तक सीमित हो जाती है।'
'इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। यह आदमी एक दर्जन अलग-अलग देशों में कम से कम सत्रह हत्याओं के लिए जिम्मेदार है। अब, अगर आप उसकी जगह होते, तो बिना पकड़े गए एक देश से दूसरे देश की यात्रा कैसे करते?'
मैं अलग-अलग नामों का इस्तेमाल करता।
'मतलब?'
'अलग-अलग पासपोर्ट।'
इसलिए मैं उन लोगों के नाम ढूंढना शुरू करने जा रहा हूं जिनके पासपोर्ट पिछले दो हफ्तों में बैंकॉक में चोरी हो गए हैं—'
'हे भगवान, क्या आप जानते हैं कि—'
'...और फिर देखें कि क्या इनमें से कोई नाम डकैती के अगले दिन के विमान यात्रियों की सूची में दिखाई देता है। जब मुझे पता चल जाएगा कि वह कहाँ गया है तो मैं—'
'रेने, रुक जाओ! तुम्हें पता है इस तरह से उसे ढूंढने की संभावना कितनी कम है?'
'सेंट क्लाउड में बैठकर सभी स्टेशनों को अलर्ट भेजने से तो यह बेहतर है। 'एक लंबे,

सांवले अजनबी से सावधान रहें।' मैं क्या कोई बंजारा ज्योतिषी हूँ? पॉल, किसी को तो कुछ करना ही होगा!'
हर्बिन ने सिर हिलाया। 'खैर, मेरे दोस्त, मैं तुम्हें शुभकामनाएं देता हूं।'
'धन्यवाद। मैं आपको भी शुभकामनाएं देता हूं।'
'क्यों?'
क्योंकि तुम मेरी मदद करने वाले हो।
मुझे आश्चर्य हो रहा था कि आप उस बात पर कब आएंगे।
'तुम्हें मेरी मदद करनी होगी। तुम जानते हो कि मैं...'
हर्बिन ने नकली आत्मसमर्पण करते हुए दोनों हाथ ऊपर उठा लिए। 'आपको मुझे सब कुछ विस्तार से बताने की ज़रूरत नहीं है। आप जानते हैं कि मैं आपकी हर संभव मदद करूंगा। बस बता दीजिए।'
मुझे उस दो सप्ताह की अवधि के दौरान चोरी या गुम हुए सभी पासपोर्टों की सूची चाहिए, जो डकैती से पहले दर्ज किए गए हों।
'हमारे दूतावास के लिए यह काफी आसान होना चाहिए। मैं इसे आपको कल उपलब्ध करा सकता हूँ।'
'अन्य दूतावासों का क्या?'
'यह ज़्यादा मुश्किल होगा। उनमें से अधिकतर सहयोग करेंगे। आप किन लोगों को चाहते हैं?'
'सभी यूरोपीय वाणिज्य दूतावास। साथ ही मलेशिया, सिंगापुर, हांगकांग और शायद भारत।'
'धत् तेरे की। और कुछ? कैंसर का इलाज? विश्व शांति?'
'हमें किसी चमत्कार की जरूरत नहीं है, पॉल। बस थोड़ी सी किस्मत चाहिए। बस थोड़ी सी। बाकी मैं कर लूंगा।'

अध्याय 36

वैलेंटाइन शेरेटन होटल की लॉबी से गुज़रे। एशियाई व्यवसायी चमड़े के सोफे पर आराम कर रहे थे, जबकि चमकीले गर्मियों के शर्ट पहने पर्यटक रिसेप्शन डेस्क के आसपास मंडरा रहे थे, कुछ ने सागौन की नक्काशी और स्मृति चिन्ह के रूप में सीपियाँ पकड़ी हुई थीं; एक और समूह फुकेत या पटाया से अभी-अभी लौटा था।

वैलेंटाइन रिसेप्शन पर गया।
उसने डेस्क क्लर्क से पूछा, 'क्या आप मुझे बता सकते हैं कि क्या यहां कोई श्री मिशेल गिरेसे ठहरे हुए हैं?'
क्लर्क ने रजिस्टर चेक किया। 'हमारे पास उस नाम का कोई व्यक्ति नहीं है।'
वैलेंटाइन ने मुंह फेर लिया। उसने नीचे के बार देखे, फिर लिफ्ट से सबसे ऊपरी मंजिल पर स्थित रेस्टोरेंट में गई। वह खिड़की के पास एक दूसरी महिला के साथ बैठा था। लड़की जवान थी, थाई मूल की, बादाम जैसे प्यारे चेहरे वाली। उसने एक छोटी गहरे रंग की स्कर्ट पहनी हुई थी और मेज के नीचे मिशेल का हाथ उसकी नंगी जांघ पर टिका हुआ था।
वैलेंटाइन को ऐसा लगा जैसे किसी ने उसके पेट में लात मार दी हो।
वह हरामखोर।
मिशेल ने ऊपर देखा और उसे पाया। वह लड़की की ओर मुड़ा, उसके कान में कुछ फुसफुसाया और कमरे में उसकी ओर तेज़ी से बढ़ा। वैलेंटाइना मुड़ी और लिफ्ट में वापस चली गई, उसने भूतल का बटन दबाया। जैसे ही दरवाजे बंद हुए, मिशेल उसके बगल में कूदकर अंदर चला गया।
‘वैलेंटाइन। तुम यहाँ क्या कर रहे हो?’
‘तुम बकवास करते हो।’
'क्या गलत?'
‘क्या हुआ? वो लड़की! तुम किसी और लड़की के साथ हो!’
वह एक व्यावसायिक सहयोगी हैं।
‘आप किस धंधे में हैं? पुरुष वेश्यावृत्ति?’
‘प्लीज, वैलेंटाइन। बस होटल वापस जाओ और मेरा इंतजार करो। हम इस बारे में बाद में बात करेंगे।’
‘हम तीनों?’
'प्लीज, प्रिये, यह सिर्फ व्यापार की बात है।'
लिफ्ट के दरवाजे खुले। उसने उसका हाथ पकड़ने की कोशिश की। उसने खुद को छुड़ाया और लॉबी के उस पार भाग गई। वह सामने खड़ी एक टैक्सी में कूद गई।
उसने ड्राइवर से कहा, 'सैम इंटरकॉन्टिनेंटल।'
मिशेल ने यात्री खिड़की से अंदर झुककर कहा, 'यह वैसा नहीं है जैसा आप सोच रहे

हैं! सब ठीक हो जाएगा। मैं वादा करता हूँ!'
‘मुझसे दूर रहो!’ वह ड्राइवर की ओर मुड़ी। ‘बस गाड़ी चलाओ!’
जब वे रामा I स्ट्रीट पर तेजी से आगे बढ़ रहे थे, तब उसने मिशेल को उसका नाम पुकारते हुए सुना।
खैर, उसने सोचा, तुम्हें वही मिला जिसके तुम हकदार थे। वो बस एक और चिकनी-चुपड़ी बातें करने वाला कमीना है जिसकी अक्ल उसकी पैंट में है। और अब वो रोने लगी। उसने पहले कभी किसी आदमी के लिए नहीं रोया था।
खैर, अब सब खत्म हो गया था। जादू टूट गया था। उसे इस घटिया शहर से नफरत थी। यह गर्म, भ्रष्ट, चमकदार और सड़ा हुआ था। रात अंधेरी थी और आसमान में तारे नहीं थे।

♦ ♦ ♦

वैलेंटाइन ने मिनी बार से व्हिस्की की छोटी बोतलें उठाईं और एक के बाद एक तीन बोतलें पी गईं। फिर उसने अपने कपड़े उतार दिए और नहाने के लिए शॉवर चला दिया।
उसने खुद को बर्फीले ठंडे पानी की बौछार सहने के लिए मजबूर किया, जब तक कि पानी की ठंडी बूंदें चुभने न लगीं, ताकि उसके शरीर की सुन्नता दूर हो जाए। उसे यहाँ से निकलना ही था। बाद में वह इस सब का मतलब समझने की कोशिश कर सकती थी।
उसे ताले में चाबी घूमने की आवाज नहीं सुनाई दी।
मिशेल ने दरवाजा धीरे से बंद किया और बाथरूम में चला गया। जैसे ही उसने शावर स्क्रीन को एक तरफ सरकाया, वैलेंटाइन घूमकर चीख पड़ी।
उसने तुरंत खुद को संभाला। वह उसे उसी तरह घूर रहा था जैसे वह यौन इच्छा होने पर घूरता है। खैर, भाड़ में जाओ, मिशेल। अब कभी नहीं। देखो तुम क्या खो रहे हो; उसने अपने उलझे हुए गीले बालों को चेहरे से हटाया। उसने सहजता से बोलने की कोशिश की। 'तुम जल्दी आ गए।'
मैंने दूसरी टैक्सी में आपका पीछा किया।
'तुम्हारे जैसे व्यस्त लड़के को अपनी ऊर्जा बचानी चाहिए।'
'यह वैसा नहीं है जैसा आप सोच रहे हैं।'

मुझे अब कुछ भी नहीं लगता।
आपको मुझ पर विश्वास करना होगा।
मुझे एक तौलिया दो।
'मुझसे वादा करो कि तुम कोई मूर्खतापूर्ण काम नहीं करोगे।'
मैंने कहा, मुझे एक तौलिया दो।
‘मैं तुम्हें मुझे छोड़कर नहीं जाने दूँगा।’ मिशेल ने पानी बंद किया और उसे वापस शावर में धकेल दिया।
‘मिशेल, उसकी उम्र कितनी है? बारह या तेरह?’
हम इस बारे में सुबह बात करेंगे। तुम थके हुए हो।
“हाँ, मैं थक गया हूँ, सारा दिन यहाँ तुम्हारा इंतज़ार करते-करते थक गया हूँ, बार-बार बेवकूफ बनते-बनते थक गया हूँ। तुम जाओ और अपना काम निपटा लो? मुझे थोड़ी नींद चाहिए। कल मेरी लंबी उड़ान है।”
मुझे छोड़कर मत जाओ।
'तुम मुझे क्या समझते हो? कोई छोटी-मोटी वेश्या जिसे तुम जब चाहो इस्तेमाल कर सकते हो?'
'मैं तुम्हें बहुत पसंद करता हूं।'
‘क्या तुम नहीं जानते कि प्यार का मतलब क्या होता है?’
‘तुम्हें मुझे छोड़कर नहीं जाना चाहिए।’
'मुझे उतारो!'
मैं तुम्हें दोबारा मुझे छोड़कर जाने नहीं दूंगा।
‘फिर से? तुम किस बारे में बात कर रहे हो?’
उसने उसकी बांहें पकड़ लीं और उसे ठंडी सफेद टाइलों पर धकेल दिया।
मुझे जाने दो...
‘तुम मुझसे बच नहीं सकते। तुम दुनिया में कहीं भी जाओ, मैं तुम्हें ढूंढ लूंगा।’
‘तुम मुझे चोट पहुँचा रहे हो...’
हमारी किस्मतें एक दूसरे से जुड़ी हुई हैं। तुम मुझे छोड़कर नहीं जा सकते और मैं तुम्हें छोड़कर नहीं जा सकता...
उसने अपनी उंगलियों की मज़बूत पकड़ से उसका जबड़ा दबाया। फिर उसने उसके होंठों पर ज़ोरदार चुंबन किया। यह सिलसिला चलता रहा। वह साँस नहीं ले पा रही

थी। उसने उसके चेहरे पर खरोंचें मारीं, उसकी कमीज़ फाड़ दी। उसने उसकी बांहें पकड़कर उसकी पीठ के पीछे कर दीं। उसने एक हाथ से उन्हें वहीं पकड़े रखा और दूसरे हाथ से अपनी पैंट की ज़िप खोली। फिर उसने खुद को उसके अंदर धकेल दिया।
‘तुम मुझे चोट पहुँचा रहे हो!’
‘तुम मेरी हो, मेरी प्यारी। हमेशा के लिए!’
'इसे रोक!'
लेकिन वह तब तक नहीं रुका जब तक उसने उससे अपना काम पूरा नहीं कर लिया। फिर वह उसे ठंडी टाइल वाली फर्श पर कांपती और बेहाल छोड़कर चला गया।
बाथरूम से बाहर निकलते हुए उसने फुसफुसाते हुए कहा, 'मैं तुमसे प्यार करता हूं।'
उसने उसे कपड़े बदलते सुना। कुछ मिनट बाद उसने दरवाज़ा ज़ोर से बंद होने की आवाज़ सुनी। वह एक बच्चे की तरह सिकुड़कर बैठ गई और रोने लगी। वह कमीना पागल हो गया था। अब उसे एहसास हो गया था कि उसने कितनी बड़ी गलती कर दी है।
वह फर्श पर रेंगती हुई गई, एक बाथरोब ढूंढी और उसे अपने चारों ओर लपेट लिया। उसने बाथरूम के शीशे में खुद को देखा। उसके चेहरे पर मस्कारा फैल गया था और उसके बाएं गाल पर एक गहरा नीला निशान था।
उसे यहाँ से, बैंकॉक से, अभी के अभी निकलना था। आज रात ही।

♦ ♦ ♦

जब मिशेल रेस्तरां में वापस आया, तो ज़्यादातर ग्राहक जा चुके थे। उसे देखकर मे लगभग राहत की वजह से रो पड़ी। मैनेजर उससे बिल के बारे में दो बार पूछ चुका था। मिशेल ने गोल्ड अमेरिकन एक्सप्रेस कार्ड से बिल का भुगतान किया और अच्छी-खासी टिप भी दी। लिफ्ट में पहुँचने तक उसने मे के सवालों का कोई जवाब नहीं दिया।
उसने सोलहवीं मंजिल का बटन दबाया। 'हम कहाँ जा रहे हैं?'
'मेरे कमरे में चलो। मैं चाहता हूँ कि तुम नज़ारा देखो।'
'मुजे जाना है।'
'नहीं, आपको छुट्टी नहीं लेनी है। आज आपकी छुट्टी है।'
‘वह महिला कौन थी?’
दरवाजे खुले। मिशेल ने उसकी कमर में हाथ डाला और उसे बाहर ले गया। वह उसे

शांत गलियारे से होते हुए अपने कमरे में ले गया। अंदर पहुँचकर उसने दरवाजा बंद किया और चाबी बेडसाइड टेबल पर फेंक दी। मे कमरे के बीच में खड़ी थी, अपने चमकीले गुलाबी रंग के हैंडबैग को पकड़े हुए।
मिशेल ने आह भरी। 'मुझे माफ करना। वह मेरा पीछा कर रही है। हमारा अफेयर चल रहा था और मैंने उसे बता दिया था कि यह खत्म हो गया है, लेकिन अब वह मुझे अकेला नहीं छोड़ रही है।'
'तो फिर तुम उसके पीछे क्यों पड़े हो?'
मुझे जिम्मेदारी का एहसास हो रहा है। मुझे डर है कि कहीं वह कोई मूर्खतापूर्ण काम न कर दे।
मे जानती थी कि वह झूठ बोल रहा है। वह बस उसके साथ सोना चाहता था। लेकिन ऐसा आदमी, शायद बहुत उदार भी हो सकता है। उसने अपने परिवार और उस झोपड़ी के बारे में सोचा जिसमें वे सब रहते थे, जहाँ दिन-रात जेट विमानों की तेज़ आवाज़ गूंजती रहती थी। इस आदमी ने अपनी घड़ी के लिए इतना पैसा खर्च किया था जितना वे पूरे साल के किराए में भी नहीं देते थे।
अगर वह कुछ अतिरिक्त पैसे घर ले आती तो उसकी माँ समझ जाती। उसके पिता दुखी तो होते, लेकिन खुशी-खुशी पैसे ले लेते।
मिशेल ने अपनी कमीज उतार दी। उसकी पसलियों पर खून के निशान थे। 'क्या हुआ?'
वह बहुत गुस्से में थी। उसे तुमसे जलन हो रही थी।
वो सोच भी नहीं सकती थी कि गोल आँखों वाली ऐसी औरत उससे जल सकती है। उसे ये ख्याल अच्छा लगा, भले ही ये मुमकिन नहीं लग रहा था। उसने अपनी पैंट उतार दी। उसका शरीर अच्छा था, गठीला और सुडौल। वो पैसों के लिए इससे बुरे काम भी कर सकती थी।
उसने उसे चूमा, उसके हाथ पर हाथ फेरा। 'मैं तुम्हारे सारे सपने सच कर सकता हूँ, क्या तुम जानती हो?'
'तुम्हें अभी मे के सपनों के बारे में पता नहीं है।'
'तो फिर तुम्हें मुझे बताना ही होगा। मैं बहुत उदार व्यक्ति हूँ, मे। तुम्हें बस मुझ पर भरोसा करना होगा।'
उसने उसे चूमने दिया। उसने सोचा कि उसे बता दे कि वह लगभग कुंवारी है, लेकिन

वह इसे खराब नहीं करना चाहती थी। उसने पहले कभी ऐसा कुछ नहीं किया था। उसे उम्मीद थी कि यह सब सार्थक होगा।

♦ ♦ ♦

वैलेंटाइन ने अपने कपड़े अपने सूटकेस में डाले, फिर मेज से अपना बैग उठाया। उसने जल्दी से बैग के अंदर की चीजें देखीं।

उसका पासपोर्ट खो गया था।

'नहीं,' उसने कहा, 'नहीं, वह ऐसा नहीं करेगा।'

उसने कमरे में तलाशी ली, उसे लगा कि शायद उसने पासपोर्ट किसी दराज में रख दिया हो और भूल गई हो। लेकिन उसे पता था कि ऐसा सोचना बेवकूफी होगी, वह हमेशा अपना पासपोर्ट अपने बैग की ज़िप वाली साइड पॉकेट में ही रखती थी।

उसने उसे जाने से रोकने के लिए ही लिया होगा। क्या वह उसे अपने साथ ले गया था या उसने उसे कमरे में छिपा दिया था? लेकिन कहाँ?

मगरमच्छ की चमड़ी का ब्रीफकेस।

उसे वह बिस्तर के नीचे दबा हुआ मिला। ज़ाहिर है, वह बंद था। उसने गुस्से में उसे बिस्तर पर फेंक दिया।

जब उसके पिता सार्वजनिक सेवा में थे, तब उनके पास इसी तरह का छह तालों वाला एक ब्रीफकेस था। उन्होंने अपनी जन्मतिथि - 15 दिसंबर, 1920 - से एक संयोजन बनाया था। यह संयोजन 15-12-20 था। बाएँ ताले का अंक 151 था और दाएँ ताले का 220। उन्होंने उसे बताया था कि यह एक आम प्रणाली थी।

मिशेल ने उसे बताया था कि उसे अपनी जन्मतिथि नहीं पता, इसलिए वह अपना जन्मदिन वियतनामी नव वर्ष टेट के दिन मनाता है, जो कि 31 जनवरी को पड़ता है। इससे संयोजन के पहले चार अंक 31-01 हो जाएंगे। उसने बाईं ओर के ताले के हैंडल को 310 पर घुमाया। ताला खुल गया।

लेकिन उसकी उम्र कितनी थी? उसे याद नहीं आ रहा था। क्या उसने पच्चीस कहा था या छब्बीस? उसने छब्बीस मानकर कोशिश की। इससे उसकी जन्मतिथि 1946 होगी। 31-01-46। उसने दाहिने ताले के हैंडल को 146 पर घुमाया।

नहीं।

उसने 147 प्रयास किए।

यह झट से खुल गया।
'हे भगवान।'
अंदर करीब एक दर्जन पासपोर्ट थे; अमेरिकी, इतालवी, भारतीय, फ्रांसीसी। उसने कुछ नाम पढ़े: जीन-पियरे धुइस्मे, जियोवानी कैरेला, संजय मिश्रा। नाम सब अलग-अलग थे, लेकिन सभी तस्वीरों में मिशेल ही था। कुछ पासपोर्टों में उसके बाल सुनहरे थे, कुछ में काले; कुछ में दाढ़ी या मूंछ थी, और एक में लंबे हिप्पी स्टाइल के बाल थे। लेकिन उन पासपोर्टों में से एक भी उसका नहीं था।
उसने उन्हें एक तरफ रख दिया और नीचे रखी चीज़ों को देखकर असमंजस में पड़ गई। वहाँ सीलबंद पैकेटों में बंद कुछ सिरिंजें और कई छोटी, बिना निशान वाली कांच की बोतलें थीं जिनमें एक पारदर्शी तरल पदार्थ भरा था। उसने एक बोतल का ढक्कन खोला। उसमें कोई गंध नहीं थी। वह असमंजस में ढक्कन को वापस बंद कर दिया। वहाँ गोलियों की बोतलें थीं; मैंड्रैक्स और मोगाडॉन। और पैसे। लगभग दस हजार अमेरिकी डॉलर नकद, करीने से टेप से बंधे हुए बंडलों में।
'तुम हो कौन?' उसने बुदबुदाते हुए कहा।
उसने पासपोर्ट वापस केस में डाले, उसे लॉक किया और उसे वापस ऊपर वाले शेल्फ पर रख दिया।
भयभीत होकर उसने अपना सूटकेस और कंधे का बैग उठाया और कमरे से बाहर भाग गई।

अध्याय 37

जब मे ने अपनी आँखें खोलीं, तो मिशेल पहले से ही जाग चुका था। उसने पर्दे हटा दिए थे और खिड़की के पास एक मेज पर बैठा था। उसके सामने मेज पर एक चांदी की ट्रे रखी थी, जिसमें कॉफी का बर्तन, संतरे का रस, टोस्ट, अंडे, हैम और अनाज रखा था। उसने मे की ओर देखा और मुस्कुराया।
'अरे, तुम जाग गए।'
उसने उससे पूछा, 'कितने बजे?'
'सात।'
मुझे जल्दी करनी होगी। मुझे आठ बजे काम पर जाना है।
वह एक कप कॉफी लेकर आया और बिस्तर के किनारे बैठ गया। 'आराम करो। अपनी

कॉफी पी लो। नहाने के बाद मैं तुम्हारे लिए टैक्सी बुला दूंगा।'
मे ने चारों ओर मखमली पर्दों, कोने में रखे काले चमड़े के सोफे और दीवारों पर लगी सागौन की लकड़ी की पैनलिंग पर नजर डाली। क्लॉक रेडियो पर संगीत बज रहा था और एयर कंडीशनर की वजह से कमरे का तापमान एकदम सही था। तभी उसे डॉन मुआंग के पास स्थित अपने माता-पिता के तंग और घुटन भरे छोटे से घर की याद आ गई।
वह उसके लिए कॉफी लाया। उसका हाथ चादर के नीचे गया और उसने उसकी जांघ को सहलाया। उसने कहा, 'क्या तुम्हें अच्छा लगा?'
मे ने शर्मिंदा होकर सिर हिलाया। थाई पुरुष इस तरह के सवाल नहीं पूछते थे। पुरुष को खुश करना स्त्री का कर्तव्य होता है। वह उसे उलझन में डाल रहा था। उसे रेस्तरां में अचानक आई उस यूरोपीय महिला की याद आई। शायद वह उसकी पत्नी थी। फिर भी, खाना अच्छा था और शायद वह उसे कोई महंगा तोहफा दे जाए। तब सब कुछ सार्थक हो जाएगा।
उन्होंने कहा, 'मुझे कल बैंकॉक छोड़ना होगा।'
'हां।' वह यह देखने के लिए इंतजार करने लगी कि वह बदले में उसे क्या देगा।
तुम्हें मेरे साथ चलना होगा।
मेई के हाथ से कप लगभग गिर ही गया था। 'क्या मैं तुम्हारे साथ चलूँ?'
‘बेशक।’ वह बिस्तर पर झुककर मुस्कुराया। ‘क्या तुम पूरी जिंदगी यहीं रहना चाहती हो?’
‘क्या तुम मुझे सच बता रहे हो?’
‘तुम बहुत खास लड़की हो। मैं तुम्हें हमेशा अपने साथ रखना चाहता हूं।’
मे को समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहे। पिछले साल उसकी एक सहेली, रूंग नाम की गोल-मटोल और हंसमुख चेहरे वाली लड़की ने एक ऑस्ट्रेलियाई से शादी की थी। वह बंदर जैसा दिखता था। उसका शरीर घुंघराले, लाल बालों से ढका हुआ था और उसका तोंद बहुत बड़ा था। फिर भी, मे ईर्ष्या से भरी हुई थी। एक पश्चिमी व्यक्ति से शादी करना उसका हमेशा से सपना था।
रूंग ने मे को एक पत्र भेजा था, जिसमें उसने शेखी बघारी थी कि वह एक बड़े घर में रहती है, जिसमें उसका अपना स्विमिंग पूल और यहाँ तक कि अपनी कार भी है। मे को पूरा यकीन था कि वह झूठ बोल रही है, क्योंकि वह ऑस्ट्रेलियाई महिला बहुत

अमीर नहीं लग रही थी। निश्चित रूप से इस आदमी जितनी अमीर तो बिल्कुल नहीं।
‘क्या हम शादी करवाएंगे?’ मे ने कहा।
‘अरे यार, तुम तो बिल्कुल बेवकूफ छोटे किसान हो,’ मिशेल ने मुस्कुराते हुए फ्रेंच में कहा। फिर वह हँसा और अंग्रेजी में बोला: ‘शायद। एक दिन।’
‘अमेरिका में रहते हैं?’
अगर आप यही चाहते हैं।
मे ने सिर हिलाया। 'ओह हाँ। लेकिन नहीं कर सकती। मेरे पास पासपोर्ट नहीं है।'
मिशेल की जैकेट कुर्सी की पीठ पर टंगी हुई थी। मिशेल ने जेब से कुछ निकाला और उसे बिस्तर पर फेंक दिया। उसने उसे उठाया। वह एक अमेरिकी पासपोर्ट था।
वह पढ़ती है:
उपनाम: डेनियल
दिए गए नाम: मे
जन्मस्थान: थाईलैंड
राष्ट्रीयता: संयुक्त राज्य अमेरिका
'क्या मतलब?'
‘यह आपका है। हमें बस एक तस्वीर चाहिए।’
उसने मिशेल की तरफ देखा, फिर पासपोर्ट पर नज़र डाली। उसे कुछ समझ नहीं आया। उसने डेनियल शब्द की ओर इशारा किया।
‘क्या यही आपका नाम है?’
मिशेल हिचकिचाया। 'हाँ।'
‘यह आपको कैसे मिला?’
'क्या आप परवाह करते हैं?'
मेई अपने हाथों में पकड़ी छोटी हरी पुस्तिका को विस्मय से देखती रही। उसने पन्नों को ऐसे सहलाया मानो वे रेशम के बने हों; एक नाज़ुक, स्वप्निल वस्तु जो किसी भी क्षण धूल में मिल सकती है, जैसे पुराना चर्मपत्र। उसने हमेशा बैंकॉक से बाहर निकलने का सपना देखा था, जैसा उसकी सहेली रूंग ने किया था, लेकिन उसने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि यह कभी सच हो पाएगा।
मिशेल थोड़ा और करीब झुकी। 'क्या तुम इस जिंदगी से थक नहीं गई हो, मे? क्या तुम्हें ढेर सारा पैसा और एक बढ़िया कार नहीं चाहिए? क्या तुम अमेरिका जाकर एक

बड़े घर में रहना और हर रात महंगे रेस्टोरेंट में खाना नहीं खाना चाहती? क्या तुम गहने बेचने की बजाय खरीदना नहीं चाहती?'
उसने सिर हिलाया।
'अगर मैं तुम्हारी मदद करूं, तो क्या तुम मेरी मदद करोगे?'
अचानक सब कुछ समझ में आ गया।
उसे उससे सिर्फ़ शारीरिक संबंध नहीं, बल्कि कुछ और भी चाहिए था। वह ऐसे आदमी से कभी शादी नहीं करने वाली थी; सिर्फ़ मोटे और बदसूरत आदमी ही अपनी पत्नियाँ खरीदते हैं। अजीब बात है, इससे उसे तसल्ली मिली। आख़िरकार, अब वे काम पर लग रहे थे। उसने पासपोर्ट देखा। भला ऐसी चीज़ से एक लड़की क्या-क्या नहीं कर सकती थी!
'तुम क्या चाहते हो?' उसने कहा।

♦ ♦ ♦

जीन-ल्यूक चिराक बैंकॉक स्थित फ्रांसीसी दूतावास में उप आयुक्त के द्वितीय सहायक थे। वे वैलेंटाइन से उम्र में बड़े नहीं थे, लेकिन अपने पद से कहीं अधिक आत्म-महत्व का भाव प्रदर्शित करते थे। उन्होंने बड़ी औपचारिकता के साथ वैलेंटाइन से हाथ मिलाया, जबकि साथ ही साथ वे अपनी निगाहों से उन्हें घूर रहे थे।
'कृपया बैठ जाइए, मैडमोजेल...'
'ब्रेटन।'
'कृपया बैठ जाओ।'
साक्षात्कार कक्ष पहली मंजिल पर एक छोटा सा कार्यालय था, जिसमें न्यू स्ट्रीट की ओर एक छोटी सी खिड़की थी। वहां एयर कंडीशनिंग नहीं थी और हवा में तंबाकू और पसीने की दुर्गंध भरी हुई थी।
'मैं आपकी कैसे मदद कर सकता हूँ?'
मेरा पासपोर्ट चोरी हो गया है।
'ठीक है।' उसने दराज में हाथ डाला और एक सफेद फॉर्म निकाला। 'यह दुर्भाग्यवश एक आम घटना है। पहले, आइए आपकी जानकारी प्राप्त करें।'
उसने अपना घिसा-पिटा पेन उठाया। उसने हर सरकारी प्रक्रिया में पूछे जाने वाले अनगिनत सवालों के जवाब ढूंढने शुरू किए।

अंत में: 'ठीक है, मैडमोजेल। अब, पासपोर्ट। क्या आप मुझे बता सकती हैं कि आपने इसे कहाँ खोया?'
‘मैंने इसे खोया नहीं था। यह चोरी हो गया था। मेरे पर्स से।’
‘यह कहाँ था? सड़क पर?’
‘मेरे कमरे से। उसने इसे मेरे कमरे से लिया।’
‘इसे किसने लिया?’
'मेरा बॉयफ्रेंड। मैंने उसे बताया कि मैं जा रही हूँ, इसलिए उसने इसे मेरे बैग से निकाल लिया।'
अधिकारी ने भौंहें चढ़ा लीं। 'क्या आपने इसकी सूचना पुलिस को दी है?'
'हां, बिल्कुल। उन्होंने कहा कि वे इस पर गौर करेंगे। वे इसमें खास दिलचस्पी नहीं दिखा रहे थे।'
‘तुम्हारा यह दोस्त कहाँ है?’
'मुझे लगता है कि वह अभी भी होटल में ही है। मुझे नहीं पता, मैं तो कल रात ही वहां से निकल गया था।'
'अच्छा ऐसा है।'
'क्या आप?'
उन्होंने कलम नीचे रख दी। ‘हम इस मामले की जांच जरूर करेंगे। क्या आपके पास धनराशि है?’
'थोड़ा बहुत। लेकिन मैं यहाँ एक पल भी नहीं रुकना चाहता। मैं पेरिस वापस जाना चाहता हूँ।'
‘मुझे खेद है, महोदया, लेकिन इन चीजों में समय लगता है। हम चोरी हुए पासपोर्ट को यूं ही तुरंत बदल नहीं सकते…’
क्या आप आपातकालीन 'लेसेज़-पासर' की व्यवस्था नहीं कर सकते?
‘इसमें कुछ दिन लगेंगे। हमें इसकी पुष्टि करने के लिए कुछ पूछताछ करनी होगी…’
‘उस आदमी ने मेरा पासपोर्ट चुरा लिया!’
'हमें अभी भी एक प्रक्रिया का पालन करना है। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि इसमें ज्यादा समय नहीं लगेगा। हम आपसे आपके होटल में संपर्क करेंगे।'
वैलेंटाइन जाने के लिए उठी। वह आदमी जल्दी से उसके लिए दरवाजा खोलने के लिए दौड़ा।

‘मैडम… आपको पता है, अगर आप इस स्थिति को अपनी दोस्त के साथ सुलझा लें तो यह आसान होगा…’
'हां, मुझे लगता है कि यह जल्दी हो जाएगा। लेकिन मैं ऐसा नहीं करने वाला।'
'क्यों नहीं?'।
'क्योंकि मैं बहुत डरी हुई हूँ, महोदय। जब मैं अपना पासपोर्ट ढूंढ रही थी, तो मुझे उनके ब्रीफकेस में कुछ और चीजें मिलीं।'
'क्या अन्य बातों?'
‘नशीली दवाएं। और पैसा।’
‘नशीली दवाएं? आपका मतलब हेरोइन से है?’
‘मुझे नहीं पता कि वे कौन सी दवाएँ थीं। कुछ शामक दवाएँ थीं जिन पर लेबल लगे थे। लेकिन बाकी के बारे में मुझे नहीं पता। मैं विशेषज्ञ नहीं हूँ, महोदय। उसके पास सिरिंज भी थीं।’
पुलिस ने इस बारे में क्या कहा?
‘मैंने उन्हें नहीं बताया?’
'क्यों नहीं?'
क्योंकि मुझे उन पर भरोसा नहीं है। क्योंकि तब शायद मैं इस मनहूस देश से कभी बाहर न निकल पाऊं। मैं इस तरह की जगह पर ड्रग्स से जुड़े किसी भी काम में नहीं पड़ना चाहता।
'इस देश में नशीली दवाओं को लेकर बहुत सख्त कानून हैं।'
मुझे यह पता है, और मैं उनके साथ उलझना नहीं चाहता। मैंने सुना है कि यहाँ पुलिस को आसानी से खरीदा जा सकता है। मुझे नहीं पता कि मिशेल के यहाँ क्या संबंध हैं, या उसके पास कितना पैसा है। मैं यह जोखिम नहीं लेना चाहता।
मैं यह समझता हूँ लेकिन…
‘मैं अपने अवकाश का इंतजार करूंगा, महोदय। मुझे उम्मीद है कि इसमें ज्यादा समय नहीं लगेगा। मेरे पास सीमित धनराशि है।’
लेकिन निश्चित रूप से, आपका एक कर्तव्य है…
‘कर्तव्य? मैं बिना पासपोर्ट के एक विदेशी देश में हूँ, और एक आदमी मेरा पीछा कर रहा है जो शायद पागल है। मैं बस घर जाना चाहती हूँ! आपकी मदद के लिए धन्यवाद, महोदय। जल्द मिलते हैं।’

♦ ♦ ♦

बैंकॉक स्थित एलायंस फ्रांसेज़ की छत से चाओ फ्राया नदी का मनोरम दृश्य दिखाई देता है। बुडजिंस्की, पॉल हर्बिन के साथ छत पर बैठे और रामबुतान और गांठदार ड्यूरियन से लदी लंबी लकड़ी की नावों को धीमी गति से बहते भूरे पानी में ऊपर-नीचे जाते हुए देखा।

दोपहर के इस समय क्लब में सन्नाटा पसरा हुआ था। सफेद जैकेट पहने एक वेटर दोनों आदमियों के लिए सैन मिगुएल की एक बोतल और दो गिलास लेकर आया।

‘अच्छा पॉल, क्या तुम्हारे पास मेरे लिए कुछ है?’

हर्बिन ने अपनी जैकेट की जेब में हाथ डाला और एक मोटा सा लिफाफा निकाला।

'थोड़ा हल्का-फुल्का पढ़ने के लिए। उस सूची में सौ से अधिक नाम हैं।'

‘धन्यवाद, पॉल। मैं आपका आभारी हूँ।’

'तुम पर मेरे सौ रुपये बकाया हैं।'

बुडजिंस्की ने लिफाफा फाड़कर खोला और टाइप किए हुए पन्नों पर एक नजर डाली; नाम, राष्ट्रीयताएँ और पासपोर्ट नंबर।

मुझे अब भी लगता है कि तुम अपना समय बर्बाद कर रहे हो।

'धन्यवाद।'

हर्बिन ने अपनी बियर की चुस्की ली। नदी के किनारे संपान के सींगों की गूंज सुनाई दी।

‘यह नाम सबसे ऊपर मोटे अक्षरों में क्यों छपा है?’

“खैर, यह तो बहुत ही अजीब बात है। कल दोपहर मेरे एक जूनियर, चिराक के पास एक युवती पासपोर्ट चोरी होने की शिकायत लेकर आई। पूछताछ के दौरान वह काफी परेशान हो गया। यह बिल्कुल भी सामान्य बात नहीं थी। इसलिए वह यह मामला लेकर मेरे पास आया।”

'और?'

महिला ने उसे बताया कि उसका पासपोर्ट उसके प्रेमी ने चुरा लिया था। उसने कहा कि जब वह अपने होटल के कमरे की तलाशी ले रही थी तो उसे मुट्ठी भर पासपोर्ट मिले - जिनमें से कोई भी उसका नहीं था - और कुछ ड्रग्स भी मिले।

‘नशीली दवाएं?’

'ऐसा लग रहा था कि उसे पता नहीं था कि वे कौन सी दवाएँ थीं। उसने कहा कि

उसके पास सिरिंज और नींद की गोलियाँ थीं। शायद वह मधुमेह का रोगी है और उसे अनिद्रा की समस्या है।'

‘क्या उसने इसकी सूचना पुलिस को दी है?’

‘उसने कहा कि वह बहुत डरी हुई है। वह दुसित थानी में किसी और नाम से रह रही है। उसने कहा कि वह जितनी जल्दी हो सके फ्रांस वापस जाना चाहती है। उसने कहा कि वह बहुत डरी हुई लग रही थी। मैंने सोचा कि आप जाकर उससे बात करना चाहेंगे।’

‘धन्यवाद पॉल। शायद हम भाग्यशाली रहे।’

'अगर आप इस बारे में सही हैं, तो वही व्यक्ति है जो अपनी किस्मत के भरोसे चल रहा है। देर-सवेर उसका भाग्य खत्म होना ही था।'

‘और जितनी जल्दी हो उतना अच्छा।’ वह उठ खड़ा हुआ और लिफाफे को अपनी जैकेट की जेब में रख लिया।

‘क्या तुम अपनी बियर खत्म नहीं करोगे?’

'अगली बार जब हम साथ में ड्राइव पर जाएंगे तो शैम्पेन पिएंगे, इस कमीने को सलाखों के पीछे पहुंचाने का जश्न मनाने के लिए। मुझे अभी इस लड़की से बात करनी है।'

♦ ♦ ♦

मिशेल ने खाली कमरे में चारों ओर देखा। उसके कपड़े गायब थे, उसका सूटकेस भी; वह बाथरूम में गया। वहाँ उसका मेकअप, परफ्यूम की बोतलें और फर्श पर बिखरे हुए दर्जनों गीले तौलिए न होने से कमरा वीरान लग रहा था।

'प्रेमी?'

नहीं, वह उसे छोड़कर नहीं जाएगी। दोबारा कभी नहीं। वह उससे प्यार करती थी। यह तो सिर्फ व्यापार का मामला था। उसने उसे यह बात समझाई थी। फिर भी उसे समझ क्यों नहीं आई?

वह बेडरूम में गया, दीवार से बेडसाइड लैंप उखाड़कर कमरे में फेंक दिया। वह उसे जाने नहीं देना चाहता था, खासकर तब जब उसे उसे ढूंढने में इतना समय लग गया था।

वह ऐसा नहीं कर सकती थी।

निर्दयी औरत। उसने कहा था कि वह उससे प्यार करती है और फिर उसने ऐसा किया। दूसरी बार उस पर भरोसा करके उसने मूर्खता की। उसके लिए इतना सब कुछ करने के बाद भी उसने उसके साथ ऐसा बर्ताव किया! खैर, वह उसे दोबारा जाने नहीं देगा। वह उसे ढूंढकर वापस लाएगा। उसे सबक सिखाना ही होगा, चाहे कुछ भी हो जाए।

अध्याय 38

सुरिवोंगसे रोड की सभी छह लेन टुक-टुक, गरजते चमकीले ट्रकों और इतनी भरी हुई बसों से भरी हुई थीं कि यात्री किनारों से चिपके हुए और दरवाजों से बाहर लटके हुए थे। हवा धुएं से इतनी भरी हुई थी कि साफ दिनों में भी ऐसा लगता था मानो धुंधले शीशे से देख रहे हों।

दरवाजे पर कोई खटखटाहट हुई थी।

वैलेंटाइन जम गई। वह इतनी डरी हुई थी कि हिल भी नहीं पा रही थी और ज़रा सी भी आवाज़ नहीं कर पा रही थी। एक और दस्तक हुई। शायद होटल से कोई आया हो। वह दरवाज़े के फिश-आई लेंस से देखने लगी और गलियारे में झाँका। 'मैडम ब्रेटन?'

'आप कौन हैं?'

'मेरा नाम कैप्टन रेने बुडजिंस्की है। मैं इंटरपोल से हूं। दूतावास ने मुझे बताया कि मैं आपको यहां पा सकता हूं। मुझे आपसे तुरंत बात करनी है।'

इंटरपोल? वैलेंटाइन ने दरवाजा खोला। उसने देखा कि एक गठीला आदमी सिकुड़े हुए सूट में खड़ा है। उसने अपना पहचान पत्र निकाला और उसे वैलेंटाइन को दिखाया। वह असली लग रहा था। 'क्या मैं आपसे कुछ बात कर सकता हूँ?'

वैलेंटाइन ने उसे अंदर आने दिया और सोफे पर बैठने का इशारा किया। उसने अपनी जेब में अपनी गाउलोइस सिगरेट ढूंढी। 'क्या आपको कोई आपत्ति है?' उसने कहा।

उसने अपना सिर हिलाया। वह खड़ी रही।

उसने अपनी सिगरेट जलाई। 'मेरा दोस्त पॉल कहता है कि मैं बहुत ज्यादा सिगरेट पीता हूँ।'

इंस्पेक्टर, मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ?

'मैं इंस्पेक्टर नहीं हूँ, मैडम। मैं कप्तान हूँ। मैं यहाँ उस रिपोर्ट के संबंध में आया हूँ जो

आपने कल दोपहर दी थी।'
'देखो, मैं बहुत परेशान थी। मुझे कोई परेशानी नहीं चाहिए। मैं बस फ्रांस वापस जाना चाहती हूं।'
आप शायद सोच रहे होंगे कि इंटरपोल का एक जासूस थाईलैंड में क्या कर रहा है।
'नहीं,' वैलेंटाइन ने कहा।
'खैर, मैं तुम्हें बता ही देता हूँ। मैं इन महिलाओं की हत्याओं की जाँच कर रहा हूँ।'
उसने अपनी जेबों में हाथ डाला। उसने एक लिफाफा निकाला। अंदर, मुड़े हुए कई ज़ेरॉक्स किए हुए पन्ने थे, जिन पर महिलाओं की खराब तरीके से कॉपी की गई तस्वीरें थीं, साथ ही उनके नाम, राष्ट्रीयता, पासपोर्ट और पहचान संख्या भी लिखी हुई थी। वैलेंटाइन ने उन्हें देखकर हैरानी से भौंहें चढ़ाईं।
'हम निश्चित रूप से नहीं कह सकते कि उन सभी की हत्या की गई है। हमें अभी तक केवल सात शव मिले हैं। हमें लगता है कि इन अपराधों के लिए जिम्मेदार व्यक्ति ने कई व्यापारियों की भी हत्या की है। ज्यादातर रत्न भंडार के मालिक। आप जानते हैं, वह इस तरह के अपराधों का विशेषज्ञ है।'
मुझे समझ नहीं आ रहा। इससे मेरा क्या लेना-देना है?
'मुझे लगता है कि तुम जानती हो। मुझे लगता है कि होटल में अपने बॉयफ्रेंड का ब्रीफकेस खोलते ही तुम्हें पता चल गया था। देखो, मुझे लगता है कि कोई इन सभी युवतियों को बहला-फुसला रहा है, उनका इस्तेमाल डकैती में मदद के लिए कर रहा है, और फिर उन्हें ठिकाने लगा रहा है।'
वैलेंटाइन को लगा कि कमरा घूमने लगा है। वह भारी मन से बैठ गई।
'दूतावास में मेरे सहकर्मी ने मुझे बताया कि आपके प्रेमी ने आपका पासपोर्ट चुरा लिया है। उसने यह भी कहा कि आपको उसके सामान में पासपोर्टों का जखीरा और अज्ञात ड्रग्स मिले हैं। क्या यह सही है?'
वैलेंटाइन के चेहरे का रंग उड़ गया। उसने मिशेल और शेरेटन रेस्टोरेंट में मिली उस खूबसूरत थाई लड़की के बारे में सोचा।
यह सिर्फ व्यापार है।
वह बाथरूम में भागी और हालांकि उसने सियाम से भागने के बाद से कुछ भी नहीं खाया था, फिर भी उसने दस मिनट तक टॉयलेट बाउल में उल्टी की।

♦ ♦ ♦

बुडजिंस्की को मिनी बार में एक सॉफ्ट ड्रिंक का कैन मिला और उसने उसे एक गिलास में डाला। उसने गिलास उसकी ओर बढ़ाया। उसने कृतज्ञतापूर्वक उसे स्वीकार कर लिया।

उन्होंने कहा, 'ऐसा मेरे साथ आज भी कभी-कभी होता है। कठोर पुलिसवालों की उन कहानियों को भूल जाइए। मैं भी कभी-कभी रात को घर जाकर यही करता था। इंसान एक-दूसरे के साथ क्या-क्या कर सकते हैं, यह देखकर मैं आज भी अचंभित रह जाता हूं।'

‘इंस्पेक्टर—’

कप्तान।

‘कैप्टन... आपको लगता है कि एक ही आदमी ने उन सभी महिलाओं की हत्या की?’

'मैं इस बारे में निश्चिन्त हूं।'

‘और आपको लगता है कि यह मिशेल है?’

क्या यही उसका नाम है?

'यह वही नाम है जो उन्होंने मुझे दिया था।'

'देखिए महोदया, एक ईमानदार आदमी को पासपोर्टों के ढेर की जरूरत नहीं होती और न ही वह अपने ब्रीफकेस में अज्ञात ड्रग्स रखता है। आपने यही कहा था ना?'

वैलेंटाइन ने सिर हिलाया।

‘दूतावास ने कहा कि आपको कुछ बेहोशी की दवाइयां मिली हैं।’

उसके पास सिरिंज भी थीं, और कुछ शीशियों में साफ तरल पदार्थ भी था।

‘क्या आपने उसे कभी खुद पर इनका इस्तेमाल करते नहीं देखा? इसका कोई स्पष्टीकरण नहीं है? उदाहरण के लिए, वह मधुमेह रोगी तो नहीं है?’

उसने सिर हिलाया। 'वह तो किसी एथलीट की तरह गठीला है। क्या आप उसे गिरफ्तार करने जा रहे हैं?'

'मेरे पास यहां गिरफ्तारी करने का कोई अधिकार नहीं है। मैं जेम्स बॉन्ड नहीं हूं और यह मेरा देश नहीं है। मुझे दूतावास के माध्यम से काम करना होगा।'

तो आप क्या करेंगे?

“अभी अगर हम यह कहानी थाई पुलिस को बता दें तो वे पासपोर्ट के मामले में उसे ज़रूर गिरफ्तार कर लेंगे। लेकिन अगर उसके पास अच्छे वकील के लिए पर्याप्त पैसे

हैं, तो वह चौबीस घंटे के भीतर जमानत पर बाहर आ जाएगा। वह दूसरा पासपोर्ट खरीदेगा और फिर देश से बाहर चला जाएगा।"
'नशीली दवाओं का क्या?'
'जब तक मामला हेरोइन या ऐसी ही किसी चीज का न हो, तब तक वह शायद अपनी बातों से इस मामले से बच निकलेगा।'
'तो आप क्या कर सकते हैं?'
'हम थाई अधिकारियों से उस पर नज़र रखने के लिए कह सकते हैं। हम उन्हें बता सकते हैं कि हमें लगता है कि वह एक और डकैती की योजना बना रहा है। अगर थाई अधिकारी उसे हिरासत में लेने वाले हैं, तो हमें उसे अपराध करते हुए रंगे हाथों पकड़ना होगा।'
'मेरा क्या?'
कुछ दिनों में आपको आपका पासपोर्ट मिल जाएगा और आप वापस फ्रांस जा सकते हैं। हमें बस इतना चाहिए कि आप उसका नाम और पता बता दें कि वह कहाँ है। बाकी हम कर देंगे।
उसने एक नोटबुक उसकी ओर सरका दी और उसे अपना पेन थमा दिया। उसने उस पर मिशेल का नाम और सियाम इंटरकॉन्टिनेंटल में उनके सुइट का नंबर लिख लिया। बुडजिंस्की ने नोटबुक उठाई और उस पर एक नज़र डाली। उसका चेहरा पीला पड़ गया।
'कप्तान?'
बुडजिंस्की ने एक और सिगरेट जलाई। उसके हाथ कांप रहे थे। 'आपने बहुत मदद की है।'
'बस इतना ही?'
'लगभग।'
वैलेंटाइन एकदम सख्त हो गया। 'लगभग?'
'आप उन्हें कब से जानती हैं, मैडम?'
'कुछ महीने, बस इतना ही।'
'और इससे पहले, आपको किसी बात पर संदेह करने का कोई कारण नहीं था?'
'मुझे पता था कि वह जो भी कर रहा है, वह गैरकानूनी ही होगा। मैंने सोचा था कि वह एक बदमाश है, मैंने यह नहीं सोचा था कि वह एक राक्षस है। दो रात पहले तक।'

‘दो रात पहले क्या हुआ था?’
‘उसने मुझे बाथरूम में बलात्कार किया।’
'क्यों?'
'क्योंकि मैंने उसे किसी दूसरी महिला के साथ पाया। माफी मांगने के लिहाज से, मुझे वह बिल्कुल अपर्याप्त लगा।'
‘एक और महिला?’
एक प्यारी सी छोटी थाई लड़की।
‘एक वेश्या?’
मुझे ऐसा नहीं लगता। कोई पुरुष आमतौर पर वेश्याओं को रेस्तरां में नहीं ले जाता। वह कौन थी?
मुझे बिल्कुल भी पता नहीं है। मुझे इसमें कोई दिलचस्पी नहीं थी।
मुझे आश्चर्य है कि क्या वह किसी आभूषण की दुकान में काम करती है।
‘इसका क्या महत्व है?’
बुडजिंस्की आगे झुके। 'मुझे कुछ समझाने दीजिए। जैसा कि मैंने कहा, हम थाई पुलिस से आपके प्रेमी पर नज़र रखने के लिए कहेंगे, लेकिन यहाँ की पुलिस बेहद अविश्वसनीय है। अगर यही वह आदमी है जिसकी मुझे तलाश है, तो उसे किसी भी हालत में भागने नहीं दिया जाना चाहिए।'
'इसलिए?'
‘अगर कुछ गड़बड़ हो जाए... अगर हमारी मछली को जाल में कोई छेद मिल जाए... तो वह गायब हो जाएगी, जैसे वह पहले भी कई बार गायब हो चुकी है। मुझे एक बीमा पॉलिसी की जरूरत है।’
'महोदय?'
मैं चाहता हूं कि तुम उसके पास वापस जाओ।
वैलेंटाइन हंस पड़ी और उसने अपना सिर हिलाया।
मुझे नहीं लगता कि वह तुम्हें नुकसान पहुंचाएगा।
‘कैप्टन, आप कभी भी बीमा विक्रेता नहीं बन पाएंगे।’
बुडजिंस्की ने अपनी सिगरेट बुझाई। उसने दूसरी सिगरेट लेने के लिए हाथ बढ़ाया, लेकिन पैकेट खाली था। 'धत् तेरे की।' उसने उम्मीद भरी नजरों से ऊपर देखा। 'क्या तुम सिगरेट पीते हो?'

मैंने इसे छोड़ दिया। मैं स्वस्थ रहना पसंद करता हूँ। इसलिए मना करने का और भी बड़ा कारण है।
‘क्या मैं सीधे-सीधे बात कर सकता हूँ?’ बुडजिंस्की ने उससे पूछा।
आप अब तक काफी आगे बढ़ चुके हैं।
‘तुम अभी तक मरी क्यों नहीं? उसने इन सभी अन्य महिलाओं का इस्तेमाल किया और उनकी हत्या कर दी, तो उसने तुम्हें नुकसान क्यों नहीं पहुंचाया?’
मुझे नहीं लगता कि मैं यह जानना चाहता हूँ।
‘तुम इस सांचे में फिट नहीं बैठतीं। बाकी सभी महिलाएं उसकी चोरी में मदद करने की स्थिति में थीं। लेकिन तुम... तुम एक अप्रत्याशित कड़ी हो। शायद तुम उसकी कमजोरी भी हो।’
‘क्या आपको पता है या आप अनुमान लगा रहे हैं?’
'अगर वह तुम्हें नुकसान पहुंचाना चाहता, तो बहुत पहले ही कर चुका होता।'
वैलेंटाइन ने अपने दाहिने गाल पर पड़े निशान की ओर इशारा करते हुए कहा,
'इंस्पेक्टर, आप इसे देख रहे हैं? यह जन्मचिह्न नहीं है।'
बुडजिंस्की ने कंधे उचकाते हुए कहा, 'तो फिर तुम मेरी मदद नहीं करोगे?'
मुझे लगता है कि आपको मुझसे इस तरह का जोखिम उठाने के लिए कहने का कोई अधिकार नहीं है।
‘तो मान लो कि यह मैं नहीं पूछ रहा हूँ। मान लो कि यह वे सभी औरतें हैं जिनकी उसने हत्या की है। मान लो कि यह वे सभी औरतें हैं जिनकी जान तुम ऐसा करके बचा सकते हो।’ बुडजिंस्की ने सिगरेट के धुएं से सनी अपनी उंगलियों को बेचैनी से रगड़ा। ‘भगवान की कसम, तुम्हारे पास कहीं न कहीं सिगरेट तो होगी ही?’
मुझे यकीन है कि बाहर जाते समय आपको लॉबी में कुछ मिल जाएगा। अलविदा, महोदय।
बहुत खूब। आपके समय के लिए धन्यवाद। मुझे बस उम्मीद है कि हम उसे पकड़ लेंगे। कोई गारंटी नहीं है। यहाँ पुलिस में मेरे कुछ सहकर्मी... मर्सिडीज चलाते हैं और उन्हें महीने में कुछ सौ बात ही वेतन मिलता है।
बुडजिंस्की ने अपने हाथ अपनी पतलून की जेबों में डाले और लड़खड़ाते हुए दरवाजे की ओर चल दिए।
‘कैप्टन, रुकिए।’

बुडजिंस्की मुड़ गया।
‘अगर... अगर मैं सहमत हो जाऊं... तो मुझे क्या करना होगा?’
आपको कुछ भी करने की जरूरत नहीं है। आपको बस वहां मौजूद रहना है ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि हम उसे खो न दें।'
वैलेंटाइन ने अपना चेहरा अपने हाथों में छिपा लिया। 'मुझे नहीं पता। मुझे सोचने के लिए समय दो।'
‘यह आप पर निर्भर करता है। इस दुनिया में साहस एक दुर्लभ वस्तु है। अंततः यह आपके अंतरात्मा का मामला है।’ बुडजिंस्की ने अपनी नोटबुक निकाली और उस पर एक फोन नंबर लिख लिया। उसने वह पन्ना फाड़ दिया। ‘यह मेरे होटल का नंबर है। मुझे कभी भी, दिन हो या रात, फोन कर सकते हैं। मैं इंतजार करूँगा।’
'तुम्हें उसकी बहुत ज़्यादा ज़रूरत होगी।'
'ओह, मुझे याद है। देखिए, उस सूची में एक नाम मेरी बेटी का भी है। उसका नाम नोएल गिरेसे था। एक साल पहले नई दिल्ली के अशोका अस्पताल में उसकी हत्या कर दी गई थी। कोई बात नहीं, मैं चलता हूँ। अलविदा।'

♦ ♦ ♦

वैलेंटाइन सूट नंबर 203 के बाहर खड़ी थी। वह हिचकिचा रही थी। वह अभी भी अपना मन बदल सकती थी, यहाँ से निकल सकती थी, फ्रांस वापस जा सकती थी और इस बुरे सपने को भूल सकती थी।
उसने खुद को मजबूर करके दरवाजा खटखटाया। अब बहुत देर हो चुकी थी।
मिशेल ने दरवाजा खोला। कृतज्ञता से उसका चेहरा खिल उठा। 'भगवान का शुक्र है। तुम मेरे पास वापस आ गए।' वह रोने लगा।
यह अप्रत्याशित था। उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करे। उसने खुद को उसे बाहों में भरते हुए और एक छोटे बच्चे की तरह उसे दिलासा देते हुए पाया।
‘मुझे माफ कर दो,’ उसने कहा। ‘कृपया मुझे फिर कभी छोड़कर मत जाना।’
उसने बुडजिंस्की की कही बात पर विचार किया। सात महिलाएं। 'मिशेल?'
मैं तुमसे बहुत प्यार करता हूँ। क्या तुम यह नहीं जानती? कृपया मुझे फिर कभी छोड़कर मत जाना। तुम्हारे बिना मेरा कुछ भी मायने नहीं रखता।
वह सिसक रहा था।

सात महिलाएं। शायद इससे भी अधिक।
जब उसने उसे गले लगाया, तो वह सोचने लगी कि कहीं यह कोई भयानक गलती तो नहीं है? क्या सच में यही वह राक्षस है जिसकी तलाश बुडजिंस्की कर रहा था?

अध्याय 39

दुसित थानी होटल की आलीशान शान-शौकत से कुछ ही दूरी पर पटपोंग स्थित है, जो शहर के निचले तबके में जगमगाती रोशनी से जगमगाती गलियों की एक ऐसी बस्ती है, जो हर साल दुनिया भर से उमड़ने वाले भूखे नौजवानों की भीड़ को खतरे और आसान यौन संबंध का वादा करती है। शहर के केंद्र में कुछ ही ब्लॉकों में मसाज पार्लर और बार भरे पड़े हैं, जहां काउबॉय हैट और चमकीले गुलाबी जी-स्ट्रिंग पहने थाई लड़कियां स्ट्रोब लाइट और धुंधले अंधेरे में तेज पश्चिमी रॉक संगीत पर पोल डांस करती हैं।
यह एक ऐसे देश में एक विचित्र प्रथा थी जो वैसे तो पूरी तरह से बौद्ध धर्म को मानने वाला देश है, जहाँ किसी दूसरे व्यक्ति के सिर को छूना भी - जो आत्मा का मंदिर है - एक घातक अपमान माना जाता है। सरकार कभी-कभी मीडिया के फायदे के लिए कुछ हद तक अनुचित कृत्यों पर रोक लगा देती थी। लेकिन मुख्य सड़क से दूर, ये शो बिना किसी रोक-टोक के चलते रहते थे। सुडौल शरीर वाली शो गर्ल्स अजीबोगरीब शारीरिक करतबों का प्रदर्शन करती थीं और फुर्तीले नौजवानों के साथ खुलेआम यौन क्रियाएं करती थीं।
वैलेंटाइन सोच रहा था कि वह उसे यहाँ क्यों लाया था। होटल से निकलने के बाद से उसने शायद ही कोई बात कही थी।
चोंगसम पहने एक उदास सी दिखने वाली थाई महिला उनके लिए व्हिस्की और सोडा के दो गिलास लेकर आई। जब मिशेल ने उसे पांच सौ बात का नोट देकर विदा किया तो उसने मुस्कुरा तक नहीं किया।
‘तुम कहाँ गई थी?’ मिशेल ने उससे पूछा।
‘एक होटल में। एरावन होटल में।’
'क्या तुम अकेले हो?'
‘बेशक मैं अकेला था।’
अब उसका मिजाज फिर बदल गया था। उसे वापस पाकर जो शुरुआती राहत मिली

थी, वो अब उदासी और निराशा में डूब गया था। उसे कभी पता नहीं चलता था कि आगे क्या होगा। अब उसके दिमाग में क्या चल रहा होगा? उसे अब भी बुडजिंस्की की आवाज़ सुनाई दे रही थी: तुम मरी क्यों नहीं? उसने तुम्हें नुकसान क्यों नहीं पहुँचाया, जबकि उसने इन सभी दूसरी महिलाओं का इस्तेमाल किया और उनकी हत्या कर दी?

हॉल की बत्तियाँ मंद पड़ गईं और एक स्पॉटलाइट से मंच जगमगा उठा। बांसुरी की मधुर धुन पूरे कमरे में गूंज उठी। एक युवक मंच पर आया, उसने केवल ढीली सफेद पतलून पहनी हुई थी। उसकी त्वचा कॉफी के रंग की थी, उसका शरीर इतना चिकना था कि उसकी हर मांसपेशी फास्फोरसेंट रोशनी में चमक रही थी।

एक झटके में उसने अपनी पतलून उतार दी और पूरी तरह नग्न होकर दर्शकों के सामने आ गया। वह उत्तेजित था; उसके लिंग पर तेल भी लगा हुआ था। मिशेल ने उसका हाथ कसकर पकड़ लिया। उसे लगा जैसे उसका मुंह सूख गया हो।

एक थाई लड़की चमकदार रेशमी सारोंग पहने मंच पर आई, उसके स्तन खुले हुए थे। वह बेहद खूबसूरत थी। उस आदमी ने उसे मंच के पीछे बने ऊंचे चबूतरे पर लिटाया और उसका सारोंग उतार दिया। उसने तुरंत उसके साथ संबंध बनाया और दोनों प्रेम-प्रसंग में डूब गए, उनके शरीर किसी प्राचीन पौराणिक जीव की तरह एक-दूसरे से लिपटकर प्रकाश में कांप रहे थे।

मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर सकती, वैलेंटाइन ने सोचा। उसे लगा था कि यह प्रदर्शन उत्तेजक होना चाहिए था, लेकिन उसे यह केवल शिकारी और परेशान करने वाला लगा। उसने अंधेरे में मिशेल के चेहरे के भाव को समझने की कोशिश की। वह ऊबा हुआ लग रहा था।

संगीत अब बेहद तेज़ और कर्कश हो गया था। पुरुष और स्त्री तड़प रहे थे, मानो परमानंद का दिखावा कर रहे हों। अचानक झांझों की तेज़ आवाज़ आई और एक स्ट्रोब लाइट जला दी गई। इससे पूरा दृश्य भयावह प्रतीत होने लगा।

फिर बत्तियाँ चली गईं।

वैलेंटाइन को एहसास हुआ कि वह अपनी सांस रोके हुए थी। उसने एक लंबी आह भरी और अपना पेय उठाया। उसकी हथेलियाँ पसीने से तर थीं और उसने उन्हें गिलास पर रखकर ठंडा किया।

'रुको,' मिशेल ने फुसफुसाते हुए कहा। 'यह अभी खत्म नहीं हुआ है।'

मंच के पीछे से कहीं से ढोल की पतली, खोखली सी थाप सुनाई दी। खून जैसे लाल रंग के दो छोटे-छोटे धब्बों ने अंधेरे मंच पर अकेली खड़ी लड़की और एक छोटी सी टोकरी को रोशन किया। वह टोकरी के सामने घुटनों के बल बैठी और ढक्कन हटाया। अंदर जो कुछ था उसे देखकर दर्शक दंग रह गए।

'एक कोबरा,' वैलेंटाइन ने फुसफुसाते हुए कहा।

उसकी आँखें माणिक की तरह चमक रही थीं, उसकी जीभ अपने आसपास के वातावरण को समझने की कोशिश में अंदर-बाहर हो रही थी। वह टोकरी से उठा, ढोल की बढ़ती हुई ध्वनि के साथ उसका शरीर खुल गया, मानो वह गुलाबी रोशनी में तैर रहा हो।

लड़की टोकरी के और करीब सरक गई, अपनी पीठ को इस तरह झुकाया कि सांप का सिर उसकी उभरी हुई छातियों से कुछ ही इंच की दूरी पर हवा में झूलने लगा। सांप ने कई बार हमला करने के लिए अपनी पीठ झुकाई और फिर पीछे हट गया। अचानक ढोल बजना बंद हो गए।

अचानक सन्नाटा छा गया। लड़की ने टोकरी के दोनों ओर घुटने फैला रखे थे, सिर पीछे की ओर झुका हुआ था, और उसके स्तन साँप के सामने थे। वैलेंटाइन को लगा जैसे उसे अपने दिल की धड़कन सुनाई दे रही हो।

उसने कोबरा के सिर को हिलते-डुलते और नीचे झुकते हुए देखा।

अंततः लड़की धीरे-धीरे खिसकती हुई दूर चली गई, और दर्शकों ने राहत की सांस ली। अब वह पहुंच से बाहर थी। वह खड़ी हुई और मंच से गायब हो गई।

वैलेंटाइन ने मिशेल की ओर मुड़कर कहा, 'सांप का दूध निकाल लिया गया है, है ना? कोई खतरा नहीं था।'

मिशेल ने अपना सिर हिलाया। 'रुको।'

लड़की का प्रेमी मंच पर फिर प्रकट हुआ और उसने टोकरी से कुछ ही दूरी पर मंच पर कुछ रख दिया। वह एक बांस का पिंजरा था, और पिंजरे के अंदर एक जीवित मुर्गी थी।

जब चिड़िया ने साँप को देखा, तो वह अपनी कैद से भागने की कोशिश करने लगी और लकड़ी की सलाखों से बुरी तरह टकराने लगी। कोबरा ने खुद को खोलकर मंच पर रेंगना शुरू किया। वह सलाखों से कुछ इंच की दूरी पर रुका और अपना सिर ऊपर उठाया।

‘नहीं!’ वैलेंटाइन ने भयभीत होकर फुसफुसाया।
पक्षी फड़फड़ाया और छटपटाया, सांप के दांत अभी भी उसके शरीर में धंसे हुए थे।
लाल पिन लाइट की रोशनी में पंख हवा में तैर रहे थे।
मुर्गी ने एक बार फिर फड़फड़ाया और फिर स्थिर हो गई।
एक देहहीन आवाज मंच पर गूंजी: 'और इसलिए, देवियों और सज्जनों, जैसा कि आपने देखा है, सुंदरता सांप को मोहित कर सकती है और उसे शांत कर सकती है। लेकिन जब सुंदरता गायब हो जाती है, तो सांप हमला करता है। आपके ध्यान के लिए धन्यवाद। शुभ रात्रि।'
शो खत्म होने के बाद मिशेल ने कहा कि वह थक गया है। वे टैक्सी से अपने होटल वापस गए। मिशेल ने पूछा, 'शो कैसा लगा?'
'मुझे इससे नफ़रत थी।'
वह हँस पड़ा। 'यह तो बस एक मुर्गी थी।'
‘यह मुर्गी की बात नहीं थी। यह पूरी घटना ही बुरी थी। यह शैतानी थी।’
वे सियाम इंटरकॉन्टिनेंटल के प्रांगण में पहुँचे और वर्दीधारी दरबान ने आगे बढ़कर उसके लिए दरवाजा खोल दिया। वह मिशेल की ओर मुड़ी। 'अब क्या?'
‘कमरे में ही रहो। मैं तुम्हें बाद में फोन करूंगा।’
'आप कहां जा रहे हैं?'
मुझे कुछ व्यावसायिक कार्य निपटाने हैं।
फिर वही शब्द। कारोबार। क्या यह वही युवती थी जिसके साथ उसने उसे पिछली रात देखा था?
सात महिलाएं।
'शुभ रात्रि मिशेल।'
मैं तुम्हें फोन करूंगा। तुम कमरे में ही रहना।
उसने रामा I रोड पर टैक्सी को टेल लाइटों की धुंध में गायब होते हुए देखा।

♦ ♦ ♦

सिट्राकोर्न ने ऊपर देखा, उसका चेहरा बंदर जैसी झुंझलाहट से सिकुड़ा हुआ था।
'जल्दी करो, लड़की। बाकी ट्रे तिजोरी में रखो।' उसने अपना ध्यान फिर से दिन के हिसाब-किताब पर लगा दिया।
मे ने वैसा ही किया जैसा उसे कहा गया था। वह और सिट्राकोर्न दुकान में अकेले थे।

उस दोपहर दूसरी लड़की चुपके से अपने लिए एक बोतल कोल्ड ड्रिंक खरीदने गई थी और एक ग्राहक को संभालते हुए उसे काउंटर के नीचे रख दिया था। मे ने चुपके से वह पाउडर बोतल में मिला दिया था जो मिशेल ने उसे दिया था और एक घंटे बाद उस लड़की ने सिट्राकोर्न को बताया कि उसे तबीयत खराब लग रही है और उसने उसे जल्दी घर भेज दिया।

मे ने अपने पर्स में हाथ डाला और सिरिंज निकाली। उसने एक घंटे पहले शौचालय में इसे भर लिया था। उसके हाथ कांप रहे थे। उसने गहरी सांस ली और खुद को शांत रखने की कोशिश की।

उसने एक डिस्प्ले कैबिनेट का ताला खोला और उसमें से कई ट्रे निकालीं। उसने ट्रे के पीछे सिरिंज को हथेली में छिपा लिया। फिर वह वापस ऑफिस में चली गई।

'जल्दी करो,' सिट्राकोर्न ने उससे कहा। 'मुझे ताला लगाने से पहले स्टॉक की जाँच करनी होगी।'

उसने ट्रे को तिजोरी में रखा, फिर सिट्राकोर्न की ओर देखा। वह उसकी ओर पीठ करके खड़ा था और कैलकुलेटर में हिसाब-किताब कर रहा था।

अभी करो। मेई चलकर आई और उसने सिरिंज को उसकी बांह में चुभो दिया।

सिट्राकोर्न ने घबराकर हल्की सी चीख मारी और पलट गया। उसने सिरिंज खाली की और देखा कि गहरे खून की एक धार उसकी कमीज़ की आस्तीन पर फैल गई है।

'तुम क्या कर रहे हो?' सिट्राकोर्न चीख पड़ा। वह उससे दूर हट गया और अपनी बांह से लटकी सिरिंज को घूरने लगा। उसने उसे ज़मीन पर पटक दिया और फिर हैरानी और सदमे से पीला पड़ा चेहरा लिए उसकी ओर देखने लगा।

'क्या कर डाले?'

मे पीछे हट गई।

सिट्राकोर्न उठने की कोशिश कर रहा था, लेकिन उसके पैर उसका साथ नहीं दे रहे थे। उसकी आँखें ऊपर की ओर घूम गईं। उसने सहारा लेने के लिए मेज के किनारे को पकड़ने की कोशिश की, लेकिन हवा में उसके हाथ-पैर बेअसर रहे। वह एक तरफ लुढ़क कर ज़मीन पर गिर पड़ा।

उसे अपने किए पर विश्वास नहीं हो रहा था।

वह दुकान में वापस गई और मिशेल की कही हर बात याद करने की कोशिश करने लगी; उसे अपने कंधे के बैग से सब कुछ खाली करना था। जो कुछ भी ले जाना है,

वह बैग में समा जाना चाहिए, आप लॉबी में एक बड़ा थैला और चेहरे पर मास्क लेकर नहीं चल सकतीं। सब कुछ सामान्य दिखना चाहिए।
सबसे पहले सबसे महंगी चीज़ें ले लीजिए। सबसे बड़े पत्थरों से शुरुआत कीजिए। छोटी-छोटी खरोंचों वाली कई मामूली अंगूठियों के बजाय कुछ बड़ी चीज़ें ले जाना बेहतर है। जल्दी से काम निपटाइए, फिर सारी लाइटें बंद कर दीजिए और दरवाज़ा बंद कर दीजिए। मैं बाहर आपका इंतज़ार करूँगा। मैंने एक काली मर्सिडीज़ किराए पर ली है। वहाँ से हम हवाई अड्डे के लिए निकलेंगे।
मे ने हर रात की तरह ट्रे समेट लीं। फिर उसने लाइट बंद की, ऑफिस में गई और दरवाजा बंद कर लिया।
उसने मिशेल के निर्देशानुसार दिन भर की कमाई में से सबसे बड़े नोट अपने बैग में रख लिए, फिर तिजोरी की ओर गई। उसे यह तय करने में ज्यादा समय नहीं लगा कि क्या लेना है। उसने पूरे दिन सिर्फ इसी बारे में सोचा था।
पंद्रह मिनट बाद मेई दुसित थानी होटल की लॉबी से गुज़री, उसका बैग लापरवाही से उसके कंधे पर टंगा हुआ था। उसे अपनी शांति का एहसास हो रहा था, यह देखकर वह हैरान थी। जीवन में पहली बार उसे लग रहा था कि वह सबसे बेहतर है; उन गोल-मटोल आँखों वाले मेहमानों से, उस घमंडी चौकीदार से जो हमेशा उस पर अश्लील टिप्पणियाँ करता था, सबसे। काश तुम्हें पता होता कि मैंने अभी क्या किया है, उसने मन ही मन सोचा।
वह सामने के दरवाज़े से अंदर गई और सामने के प्रांगण को पार किया। जब वह सड़क पर पहुँची तो एक मर्सिडीज़ ने अपनी हेडलाइट्स उसकी ओर चमकाईं। मिशेल पिछले दस मिनट से गोलचक्कर पर चक्कर लगा रहा था। उसने गाड़ी रोकी और वह उसमें बैठ गई।
मिशेल ने नीली रंग की बिना नंबर प्लेट वाली टोयोटा कार को नहीं देखा जो रचादमरी रोड पर उनका पीछा कर रही थी। उसे लगा कि उसने एक बार फिर एकदम सही अपराध अंजाम दिया है।

अध्याय 40

जैसे ही शाम ढली, दक्षिण-पश्चिम से एक तूफान शहर की ओर बढ़ा और गर्म, उष्णकटिबंधीय मूसलाधार बारिश शुरू हो गई। मानसून के दौरान शहर धूसर और

मैला-कुचैला लग रहा था। उमस दम घोंटने वाली थी। बुडजिंस्की को महसूस हुआ कि पसीने की एक बूँद उसकी रीढ़ की हड्डी से नीचे की ओर धीरे-धीरे बहने लगी है।
'रेने, तुम्हें क्या लगता है?' हर्बिन ने कहा। 'क्या यह वही है?'
मुझे इस बात का पूरा यकीन है।
'क्या उसने आपको कुछ और बताया?'
नहीं। लेकिन मुझे उसके चेहरे पर यह साफ दिख रहा था। वह भी यही सोचती है।
उन्होंने चुपचाप अपनी बीयर पी। काफी देर तक वहाँ सिर्फ सूरीवोंगसे रोड पर वाहनों की धीमी गड़गड़ाहट और छतों से टपकते पानी की हल्की-हल्की आवाज ही सुनाई दे रही थी।
उनके सिर के ऊपर मच्छर भिनभिना रहे थे। अंत में: 'थाई लोगों का क्या?'
बुडजिंस्की ने कहा, 'प्रेनोम के आदमी सियाम पर नजर रख रहे हैं। अब से बैंकॉक में वह जहां भी जाएगा, कोई न कोई उस पर नजर रखेगा।'
और अगर वह नहीं है तो?
'ये वही है। वह कहती है कि उसकी एक और प्रेमिका है, इसलिए वह किसी और डकैती की योजना बना रहा होगा। इस बार उसे एक बड़ा झटका लगने वाला है।'

♦ ♦ ♦

मिशेल ने रचादमरी रोड से मुड़कर रॉयल बैंकॉक स्पोर्ट्स क्लब की ऊंची दीवारों के समानांतर चलने वाली एक गली में प्रवेश किया। उन्होंने पीछे देखने वाले शीशे में जल्दी से देखा कि कहीं कोई उनका पीछा तो नहीं कर रहा है। खुली नालियों और कूड़े के ढेर के बीच से धीरे-धीरे गाड़ी चलाते हुए, उनकी हेडलाइट्स मंद थीं।
अंततः वह रुका और उसने इंजन बंद कर दिया।
मे घबराहट से आगे झुक गई। 'हम क्यों रुक रहे हैं, कृपया बताएं?'
'कोई बात नहीं,' मिशेल ने कहा। उसने चारों ओर देखा। अच्छा हुआ, गली सुनसान थी।
'क्या हम एयरपोर्ट जा रहे हैं?'
'जी हां, जी हां। रुको।' उसने उसकी गोद से बैग छीन लिया। वह काफी भारी लगा।
'तुमने वही किया जो मैंने तुमसे कहा था?'
'सब कुछ। हाँ।'

उसने ग्लव कम्पार्टमेंट खोला और बैग का सारा सामान उसमें उड़ेल दिया। डैशबोर्ड की हल्की रोशनी में हीरे, नीलम और पन्ना चमक रहे थे। 'अच्छा। तुमने अच्छा किया, मे।'
‘अब हम डॉन मुआंग चलें?’ मे ने दोहराया।
वह मुस्कुराया। उसे उसके लिए दुख हुआ। वैलेंटाइन ने सब कुछ उलझा दिया था। पहले वह मे को अपने साथ ले जाता। यह चाल पहले भी कारगर साबित हुई थी। उन्हें देश से बाहर निकालो, फिर उन्हें ठिकाने लगा दो। एशिया में पुलिस मृत विदेशियों के मामलों में ज़्यादा दिलचस्पी नहीं लेती थी, सिवाय तब जब वे श्वेत हों।
लेकिन अब वेलेंटाइन वहाँ था और वह जा नहीं सकता था। मे को बैंकॉक में ही मरना होगा। देखो वह उसे कैसे देख रही थी। वह लगभग उसकी घबराहट को महसूस कर सकता था, और इससे उसे गुस्सा आ गया।
‘हम यहीं क्यों रुकें?’ मे ने दोहराया।
'चुप रहो। मैं सोच रहा हूँ।'
जैसे ही उन्हें उसका शव मिलेगा, वे उसकी तलाश शुरू कर देंगे। उसे वैलेंटाइन को साथ लेकर जल्द से जल्द शहर से निकलना होगा। उन्हें ग्रेस मिल चुकी थी। यह दुर्भाग्यपूर्ण था। उसे उम्मीद थी कि लहरों के साथ उसका शव समुद्र में बह गया होगा।
मे घबरा गई और कार से बाहर निकलने की कोशिश करने लगी। मिशेल ने उसे पकड़ लिया और वापस उसकी सीट पर खींच लिया। 'तुम कहाँ जा रही हो?'
वह जानती थी। मिशेल ने उसकी आँखों में यह देख लिया था।
उसने चीखने से रोकने के लिए उसका मुंह हाथ से ढक दिया। उसने उसे काट लिया, और वह चिल्लाते हुए अपना हाथ हटा लिया। उसने उसे फिर से पकड़ने की कोशिश की, लेकिन उसने उसके चेहरे पर टक्कर मार दी।
‘कुतिया!’ उसने गाली दी।
उसने खुद को कार से बाहर फेंक दिया।
मिशेल ने उसकी कलाई पकड़ ली। उसने खुद को छुड़ाने की कोशिश की, लेकिन वह बहुत ताकतवर था। इस बार, जब उसने उसे वापस कार के अंदर खींचा, तो उसका दूसरा हाथ उसकी गर्दन पर कस गया। उसने फिर से चीखने की कोशिश की, लेकिन उसकी उंगलियों के गले पर कसने से उसकी आवाज़ दब गई। वह आगे की सीट पर गिर पड़ी, उसके पैर बेतहाशा हवा में इधर-उधर पटक रहे थे।
उसने सोचा, औरतें। वे तो बिल्कुल वेश्याएं थीं।

♦ ♦ ♦

वैलेंटाइन खिड़की के पास खड़ी होकर शीशे में अपनी परछाई को निहार रही थी। कमरा कितना ठंडा और शांत था, बाहर की गर्मी और शोरगुल से बिल्कुल अलग। तुमने ये क्या कर दिया, वैलेंटाइन? ये तो पूरी तरह गड़बड़ हो गई। क्या बुडजिंस्की गलत हो सकता है, क्या कोई संभावना है कि उसने कोई गलती की हो, क्या मिशेल निर्दोष हो?

उसने सिरिंजों और पासपोर्टों के बारे में सोचा, रेस्तरां में उस थाई लड़की के बारे में। मुझे आश्चर्य है कि क्या वह किसी आभूषण की दुकान में काम करती है। उसने बाथरूम के ऊपरी शेल्फ पर ब्रीफकेस को ढूंढा।

गया।

वो चीज़ें चाहे जिस काम के लिए हों, वो आज रात उनका इस्तेमाल करने की योजना बना रहा था। वो बस यही प्रार्थना कर रही थी कि ये सब जल्दी खत्म हो जाए। वो इस तरह की और रातें बर्दाश्त नहीं कर सकती थी।

♦ ♦ ♦

मे का संघर्ष कमजोर पड़ने लगा। वह काम खत्म करने ही वाला था कि गली के अंत में उसे कुछ परछाइयाँ हिलती हुई दिखाई दीं, और बंदूकों से सुरक्षा बेल्ट हटने की हल्की सी आवाज सुनाई दी। उसने उसे छोड़ दिया और मे का शरीर सीट से नीचे फिसल गया। कौन था? पुलिस ही होगी, बैंकॉक में बहुत कम चोर बंदूकें रखते हैं। उसने गाड़ी भगा ले जाने के बारे में सोचा, लेकिन फिर अपना इरादा बदल दिया। जैसे ही वह इग्निशन चालू करता, वे गोली चला देते। इसके अलावा, गली के दोनों ओर खुले सीवर थे। तेज गति से गाड़ी चलाना असंभव था।

एक और रास्ता था।

मिशेल ने अपने जूते उतारे, सीट पर सरका और खुले दरवाजे से बाहर निकल गया। उसे अपने नीचे मे का बेजान शरीर महसूस हुआ।

पेट के बल लेटे हुए, उसने गली की ओर पीछे मुड़कर देखा।

उनमें से तीन लोग झुककर कार की ओर बढ़ रहे थे।

उन्होंने उसे कैसे ढूंढा?

वह अंधेरे में छिपकर कार से दूर चला गया, इस उम्मीद में कि अंधेरा उसे बचा लेगा। वह गोलियों की आवाज़ का इंतज़ार करता रहा, लेकिन कोई आवाज़ नहीं आई। वह और तेज़ी से भागा। वह पहुँच ही जाएगा। पुलिस! वे सब बेवकूफ हैं।

अचानक, गली के आखिरी छोर पर खड़ी एक कार की हेडलाइट्स जल उठीं और उसकी आँखें चौंधिया गईं। वह पीछे की ओर लड़खड़ा गया। उसे चीखें सुनाई दीं, चारों ओर से आदमी उसकी ओर दौड़ते हुए आ रहे थे और उसे नीचे लेट जाने को कह रहे थे। यह सब कैसे हुआ? मिशेल मुस्कुराया, अपने हाथ ऊपर उठाए और आराम से बैठ गया। सब खत्म हो गया था। फिलहाल के लिए।

उन आदमियों ने उसे घेर लिया और ज़मीन पर पटक दिया। उन्होंने उसके हाथ पीछे की ओर खींचकर हथकड़ी लगा दी। उनमें से एक ने उसे लात मारी। मिशेल दर्द से कराह उठा और आगे के वारों से बचने के लिए अपने घुटनों को अपनी छाती तक ले आया।

वे उसे घसीटकर इंतज़ार कर रही एक गाड़ी तक ले गए और पिछली सीट पर डाल दिया। पुलिसकर्मी दोनों तरफ से गाड़ी में कूद पड़े। उसे केंद्रीय पुलिस मुख्यालय ले जाते समय रास्ते भर उसकी गर्दन पर एड़ी दबाए रखी गई।

मिशेल को इसका कोई आशय नहीं था। वह बेचैनी से यह समझने की कोशिश कर रहा था कि आखिर क्या गड़बड़ हुई है। उसे धोखा दिया गया था। 'वैलेंटाइन,' उसने दांत पीसते हुए धीरे से कहा।

♦ ♦ ♦

फोन की घंटी बजी।

वैलेंटाइन ने उसे झटपट ले लिया।

'कौन है भाई?'

‘बुडज़िंस्की।’

क्या उन्होंने उसे पकड़ लिया है?

'हां। उन्होंने उसे पकड़ लिया है।'

वैलेंटाइन कालीन पर अपने घुटनों के बल बैठ गई।

‘अब सब ठीक है। सब कुछ खत्म हो गया है।’

वैलेंटाइन ने रिसीवर को कालीन पर गिरने दिया। शुक्र है। अब वह फिर से सो सकती थी।

अध्याय 41

मेजर-जनरल वारोंग लेकचोर्न शांत भाव से उदासीन थे। तंग, खिड़कीविहीन दफ्तर में उमस भरी गर्मी थी। ऊंची छत पर एक धीमा पंखा चल रहा था और उनके सिर के ऊपर एक फ्लोरोसेंट लाइट टिमटिमा रही थी और भिनभिना रही थी।

मिशेल धातु की कुर्सी पर आराम से बैठा था, उसके पैर क्रॉस किए हुए थे और हाथ धैर्य और सहनशीलता की मुद्रा में जुड़े हुए थे। उन्होंने हथकड़ियां हटा दी थीं, लेकिन दो सशस्त्र पुलिसकर्मी दरवाजे पर सावधान मुद्रा में खड़े थे।

‘आपका नाम क्या है?’ वारोंग ने पूछा।

'धुइस्मे. जीन-पियरे धूइस्मे।'

‘आप दुसित थानी होटल में अतिथि हैं?’

नहीं, मैं सियाम होटल में ही रुक रहा हूँ। देखो, ये सब क्या चल रहा है?

‘आज रात तुम्हारी प्रेमिका ने होटल के आर्केड में स्थित नारी ज्वैलरी स्टोर के मालिक को नशीली दवा देकर लूट लिया—’

मिशेल उसे हैरानी से देखता रहा, उसका मुंह खुला रह गया। 'उसने क्या किया?'

फिर वह होटल से बाहर निकली और आपकी कार में बैठ गई।

मिशेल ने अपनी जैकेट की जेब में हाथ डाला और पतली रूसी सिगार का एक पैकेट निकाला। 'तो?'

‘क्या आपको इसके बारे में पता था?’

'बिल्कुल नहीं। मैं इस लड़की को मुश्किल से ही जानता हूँ। हमने बस डिनर पर जाने का प्लान बनाया था, बस इतना ही।'

तो आप इस अपराध के बारे में किसी भी जानकारी से इनकार करते हैं?

'बिल्कुल, मैं करता हूँ। यह सब कुछ बेतुका है।'

वारोंग ने उसे सिगरेट जलाते हुए देखा। वाह, क्या बढ़िया सिगरेट है!

‘उस लड़की ने मेरे बारे में क्या कहा है?’

उसने कुछ नहीं कहा है। वह अभी भी बेहोश है।

‘बेहोश? तुमने उसके साथ क्या किया है?’

‘हमने कुछ नहीं किया। मेरे अधिकारियों की रिपोर्ट है कि आपने उसका गला घोंटने की कोशिश की।’

'बकवास।'
‘उन्होंने आपकी कार के ग्लव बॉक्स में लापता सामान भी बरामद किया। क्या आप इसे भी नकारते हैं?’
‘बेशक। शायद तुम्हारे आदमियों ने उन्हें वहाँ रखा हो। मुझे कैसे पता?’ मिशेल ने छत की ओर धुएँ का एक लंबा गुबार उड़ाया। ‘देखिए, जनरल, क्या मैं अब जा सकता हूँ?’
मुझे खेद है कि यह संभव नहीं है। पहले, हम इस लड़की से बयान लेंगे। जब वह बात करने के लिए तैयार होगी।
‘यह कब होगा? मुझे कल हांगकांग में एक महत्वपूर्ण काम है।’
'इसे इंतजार करना होगा।'
मिशेल का रवैया बदल गया। वह आगे की ओर झुका और अपनी आवाज़ धीमी कर ली, मानो किसी पुराने और भरोसेमंद दोस्त के साथ किसी निजी समस्या पर चर्चा करने वाला हो।
‘देखिए, जनरल, आप जानते ही हैं कि मामला क्या है। मैं एक व्यापारी हूँ, अकेला यात्रा कर रहा था। मैं दुसित थानी में एक आभूषण की दुकान में उपहार खरीदने गया था, और वहीं मेरी मुलाकात इस लड़की से हुई। वह मुझसे बहुत दोस्ताना व्यवहार कर रही थी, इसलिए मैंने उसे कुछ बार खाने पर बुलाया। मुझे जरा भी अंदाजा नहीं था कि वह एक अपराधी है। यह सब कुछ बेतुका है।’
मुझे नहीं लगता कि आप समझ रहे हैं। यह बहुत गंभीर अपराध है, श्री धुइस्मे। वाकई बहुत गंभीर।
“ओह, लेकिन मैं समझता हूँ, जनरल। और मैं आपकी जांच में सहयोग करने के लिए अपनी पूरी कोशिश करूंगा। वास्तव में, मेरा मानना है कि मेरे पास आपको दिखाने के लिए कुछ ऐसा है जो इस मामले की पूरी तस्वीर बदल सकता है।”
'आगे बढ़ो।'
‘यह मेरे ब्रीफकेस में है।’
मगरमच्छ की चमड़ी से बना वह डिब्बा कमरे के कोने में बिना खुला पड़ा था। वारोंग के आदमियों ने उसे मर्सिडीज की डिक्की से निकाला था।
वारोंग ने अपने एक आदमी से उसे मेज पर रखवाया। उसने उसे खोलने की कोशिश की। 'यह बंद है।'
मिशेल ने कहा, 'मैं चाहूंगी कि जब इसे खोला जाए तो हम अकेले हों। यह बहुत ही

संवेदनशील सबूत है।'
वारोंग ने सोचा। फिर उसने दरवाजे पर खड़े दो हथियारबंद पुलिसकर्मियों की ओर मुड़कर कहा, 'आप जा सकते हैं।'
उन लोगों ने सलाम किया और कमरे से चले गए।
'तो फिर,' वारोंग ने कहा, 'आपको मुझे क्या दिखाना है?'

♦ ♦ ♦

लेफ्टिनेंट-कर्नल प्रेनोम तानोंगसाक थाईलैंड के लिए इंटरपोल के संपर्क अधिकारी थे। बुडजिंस्की ने बैंकॉक के केंद्रीय पुलिस मुख्यालय की धूसर दीवारों वाली संकरी इमारत से होते हुए मेजर-जनरल वारोंग लेकचोर्न के कार्यालय तक उनका पीछा किया। इमारत गलियारों और फीके भूरे कमरों का एक भूलभुलैया थी, जहाँ खाकी वर्दी पहने पुलिसकर्मी पुरानी रेमिंगटन राइफलों पर झुके रहते थे या मेजों के चारों ओर बैठकर ताश खेलते थे।
वारोंग के सामने डेस्क पर एक फाइल खुली हुई थी और वह एकाग्रता से अपना सिर झुकाए अपनी रिपोर्ट में कुछ अंतिम नोट्स जोड़ रहा था। उसने उन्हें विनाइल की दो कुर्सियों की ओर इशारा किया।
बुडजिंस्की अपनी उत्तेजना को मुश्किल से ही रोक पा रहा था। वह लॉबी से दौड़कर दूसरी मंजिल पर स्थित प्रेनोम के कार्यालय तक पहुंचा। उसकी सांस फूल रही थी और वह ठीक से सांस नहीं ले पा रहा था।
उसने अपनी जेब में हाथ डाला और एक गाउलोइस सिगरेट जलाई।
'क्या वह तुम्हारे पास है?' उसने वारोंग से कहा।
वारोंग ने हाथ उठाकर इशारा किया कि उसे अपना काम खत्म करना है। बुडजिंस्की ने चिट्टाकोर्न की ओर देखा, जिसने कंधे उचकाते हुए कहा, हमें इंतजार करना होगा।
बुडजिंस्की ने मन ही मन सोचा, "भाड़ में जाए ये सब।" वह डेस्क के पार झुकते हुए बोला, "मैंने पूछा था, क्या तुमने उस कमीने को पकड़ लिया है?"
स्ट्रिप लाइट में वारोंग के चश्मे की रोशनी चमक उठी। 'वह चला गया।'
वहां सन्नाटा छा गया।
'चला गया? तुम किस बारे में बात कर रहे हो?'
वह हिरासत से फरार हो गया।
बुडजिंस्की ने अपनी सिगरेट फर्श पर फेंक दी और उछलकर खड़ा हो गया। 'उसने ये

क्या किया?'
‘वह हिरासत से फरार हो गया है। एक घंटे पहले।’
‘वो तो एक कुख्यात हत्यारा है! तुमने उसे जाने दिया?’
मैंने उसे जाने नहीं दिया। वह भाग निकला।
बुडजिंस्की को अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ। तानोंगसाक ने अपना हाथ अपनी बांह पर रख लिया, उन्हें डर था कि कहीं वह गुस्सैल फ्रांसीसी मेजर जनरल पर हमला न कर दे।
वह कैसे बच निकला?
‘वह मेरे दफ्तर के बाहर, गलियारे में था। वह भाग गया होगा।’
‘तुमने उसे गलियारे में छोड़ दिया? गार्ड कहाँ थे?’
'उसे भागने देने के लिए जिम्मेदार लोगों को कड़ी सजा दी जाएगी।'
‘उसके हथकड़ी का क्या हुआ?’
‘उन्हें हटा दिया गया था। यह महत्वपूर्ण नहीं है। हमारे पास लड़की और गहने हैं। वह तो सिर्फ एक सहयोगी था।’
बुडजिंस्की ने तानोंगसाक की ओर देखा। 'क्या तुमने उसे नहीं बताया?'
तनोंगसाक ने नजरें हटाईं और छत पर कुछ ऐसा देखा जिसमें उसकी गहरी दिलचस्पी थी।
'मुझे क्या बताओ?'
हमने प्रत्यर्पण के लिए आवेदन किया था।
'हम?'
‘इंटरपोल।’
‘मुझे सलाह नहीं दी गई थी।’ उसने तनोंगसाक की ओर घूरकर देखा। ‘क्या मुझे सलाह दी गई थी, कर्नल?’
'नहीं, महोदय।'
बुडजिंस्की को अपनी बात पर यकीन नहीं हो रहा था। वह मेजर जनरल की मेज पर झुक गया। 'उसने आपको कितना भुगतान किया?'
'क्या यह कोई आधिकारिक दौरा है, कैप्टन?'
बुडजिंस्की ने कोई जवाब नहीं दिया।
‘तो मुझे लगता है कि हमारी चर्चा यहीं समाप्त होती है। फ्रांस की आपकी यात्रा

मंगलमय हो।'
बुडजिंस्की ने वारोंग के कागज़ों को एक झटके में डेस्क से उठाकर ज़मीन पर फेंक दिया। 'तुम मूर्ख, लालची छोटे कमीने!'
वारोंग उछलकर खड़ा हो गया। 'निकल जाओ! निकल जाओ!'
वह कुछ नहीं कर सकता था। बुडजिंस्की ने वारोंग के घमंडी, सपाट चेहरे पर मुक्का मारने की तीव्र इच्छा को दबा लिया। वह मुड़ा और कमरे से बाहर निकल गया।
'कैप्टन, आपके वरिष्ठ अधिकारियों को इसके बारे में पता चल जाएगा!'
मुझे यकीन है कि वे ऐसा करेंगे, बुडजिंस्की ने सोचा। मुझे अब कोई परवाह नहीं है।

अध्याय 42

वह बांस के पिंजरे में थी।
उसे महसूस हुआ कि जेल में बंद उसकी आँखों में कोई उसे देख रहा है, और जब उसने ऊपर देखा तो उसे सलाखों के आसपास एक किंग कोबरा नाचता-झूलता दिखाई दिया। वह फँस गई थी। वह भाग नहीं सकती थी।
अचानक उसने अपने नुकीले दांतों से उस पर हमला कर दिया। उसने दर्द से चीख मारी, और फिर कोबरा का सिर एक चेहरे में बदल गया।
मिशेल का चेहरा।
वह उसके ऊपर जलती हुई मशाल लिए खड़ा था। उसने दूर जाने की कोशिश की लेकिन वह अपने हाथ-पैर हिला नहीं पा रही थी।
'तुमने मुझे धोखा दिया,' मिशेल ने फुसफुसाते हुए कहा। 'मुझे पता है कि यह तुमने ही किया है। तुमने मुझे फिर से धोखा दिया है।'

♦ ♦ ♦

वह पसीने से भीगी हुई बिस्तर पर बैठ गई।
दरवाजे पर कोई जोर-जोर से दस्तक दे रहा था।
वह बिस्तर से उछलकर उठी और बगल की मेज पर रखी अपनी घड़ी ढूंढने लगी। डेढ़ बज रहे थे: भला कौन हो सकता है?
मिशेल? लेकिन ऐसा नहीं हो सकता। बुडजिंस्की ने उसे बताया था कि उसे गिरफ्तार कर लिया गया है। उसने रेशमी ड्रेसिंग गाउन पहना और दरवाजे की ओर गई। इससे

पहले कि वह फिश-आई लेंस से देख पाती, उसे खांसी की आवाज सुनाई दी।
बुडजिंस्की!
उसने दरवाजा जोर से खोल दिया।
वह उसे धक्का देते हुए कमरे में चला गया। उसने वही कल वाला सिकुड़ा हुआ सूट पहना हुआ था और उसकी आँखों के नीचे के काले घेरे ऐसे लग रहे थे जैसे उनमें सीसा भरा हो। वह खिड़की के पास चमड़े के सोफे पर बैठ गया और अपनी जेबों में सिगरेट ढूंढने लगा। सिगरेट जलाने के बजाय उसने पैकेट कमरे में फेंक दिया।
'तुम कहां सोये हो?'
‘बेशक मैं सो रहा था। क्या हुआ? यह मिशेल है ना? वह भाग गया है।’
उन कमीनों ने उसे जाने दिया।
लेकिन आपने कहा था कि उन्होंने उसे गहनों की दुकान की एक लड़की के साथ पकड़ा था...
‘उन्होंने ऐसा किया। फिर उन्होंने उसे पुलिस मुख्यालय के गलियारे में छोड़ दिया, न कोई गार्ड था, न हथकड़ी।’
'क्या?'
आपने कहा था कि आपका दोस्त अपने साथ काफी नकदी लेकर चलता था।
वैलेंटाइन ने सिर हिलाया। 'अमेरिकी डॉलर। उसके सूटकेस में रबर बैंड से बंधे हुए मोटे-मोटे बंडल थे।'
‘अच्छा, अब आपको पता चल गया होगा कि क्यों।’ बुडजिंस्की ने आह भरी। ‘वे हमेशा कहते हैं कि थाई लोगों के पास सबसे बेहतरीन पुलिस बल है जिसे पैसे से खरीदा जा सकता है।’
वैलेंटाइन बिस्तर पर लुढ़क गया। 'अगर वह वापस यहाँ आ गया तो क्या होगा?'
‘इसीलिए तो मैं सीधे यहीं आ गया। क्या आपको उससे कोई खबर नहीं मिली?’
'नहीं।'
बुडजिंस्की ने अपना सिर अपने हाथों में पकड़ लिया। 'यह घटिया देश।'
‘वे उसे कैसे जाने दे सकते हैं? तुमने मुझे बताया था कि उसने इन सभी महिलाओं की हत्या की थी...’
‘थाईलैंड के लोगों ने डकैती करने वाली लड़की को पकड़ लिया है और उन्होंने सभी लापता गहने बरामद कर लिए हैं। उसकी रिपोर्ट से पता चलेगा कि मिशेल महज एक

सहयोगी था। वह भागने में मदद करने वाला ड्राइवर था।'
लेकिन उस लड़की का क्या? वो तो बोलेगी ही, है ना?
'काफी समय तक नहीं। तुम्हारी दोस्त ने लगभग उसका गला घोंटकर मार डाला था। बहुत चोट पहुंचाई है। शायद वह अपनी बाकी जिंदगी में एक फुसफुसाहट से ज्यादा बोल भी न पाए। वैसे भी कोई उसकी बात सुनने वाला नहीं है।'
क्या आप कुछ नहीं कर सकते?
'यहाँ मेरा कोई अधिकार नहीं है। और यह कोई आधिकारिक दौरा नहीं है।'
लेकिन आपने कहा था कि आप इंटरपोल के साथ हैं।
'मैं हूं। लेकिन उन्होंने मुझे नहीं भेजा। मैं यहां निजी काम से आया हूं।'
'अपनी बेटी?'
उसने सिर हिलाया। 'जब मेरे बॉस को इसके बारे में पता चलेगा तो मेरी बुरी तरह से पिटाई हो जाएगी। मैंने शायद थाई पुलिस बल के एक मेजर जनरल का अपमान कर दिया है।'
तो क्या बस इतना ही? क्या सब खत्म हो गया?
नहीं, यह खत्म नहीं हुआ है। अभी नहीं।
‘क्या आपको लगता है कि वह फिर भी यहाँ वापस आएगा?’
बुडजिंस्की ने कंधे उचकाते हुए कहा, 'शायद। लेकिन ज़्यादा संभावना यही है कि वह सीधे हवाई अड्डे चला गया होगा। वारोंग ने उसकी मदद की होगी। वह उसे वापस तो बिल्कुल नहीं चाहता, वह तो बस शर्मिंदगी का कारण बनेगा। आपका दोस्त शायद पहले ही देश से बाहर जाने वाले विमान में सवार हो चुका होगा।'
'तो आप क्या करने वाले हैं?'
बुडजिंस्की ने उसे घूरकर देखा।
उसे अचानक समझ आ गया कि उसका क्या मतलब था। उसने अपना सिर हिलाया।
'नहीं। मैं अब और नहीं कर सकती।'
‘मैं तुम्हें मजबूर नहीं कर सकता। लेकिन जब तक हम उसे पकड़ नहीं लेते, तब तक यह सिलसिला नहीं रुकेगा, तुम यह जानते हो। और मेरा अनुमान है कि अगर तुम उसके पीछे नहीं जाओगे, तो वह तुम्हारे पीछे आएगा।’
'मैं नहीं कर सकता।'
'आपको क्या लगता है कि पकड़े जाने से पहले वह कितनी और महिलाओं की हत्या

कर देगा?'
वैलेंटाइन झुकी और ज़मीन पर पड़े गौलोइसेस सिगरेट के पैकेट को उठाया। उसने दोनों के लिए सिगरेट जलाई।
मुझे लगा था कि आप धूम्रपान नहीं करतीं, मैडम।
‘मैं नहीं जानती।’ वह काफी देर तक खिड़की पर खड़ी रही, उसके कहे शब्दों के बारे में सोचती रही। उसे लगा, मुझे उन सभी दूसरी लड़कियों के बारे में सोचना चाहिए, जिन्हें वह अभी तक नहीं पा सका है। लेकिन सबसे ज़्यादा उसे बुडजिंस्की की कही बात चुभी थी कि वह उसके लिए वापस आएगा। उस रात जब मिशेल ने उसे शावर में घेर लिया था, तब उसने उससे क्या कहा था? हमारी किस्मतें एक-दूसरे से जुड़ी हुई हैं। तुम मुझसे कभी दूर नहीं जा सकतीं, और मैं तुमसे कभी दूर नहीं जा सकता... मैं फंस गया हूँ। मुझे इसे पूरा करना ही होगा।
'आप मुझसे क्या करवाना चाहते हैं?'
‘बस यहीं रुको और इंतजार करो, बस इतना ही।’
'किस लिए?'
'हो सकता है कि वह आपसे संपर्क करने की कोशिश करे और आपसे कहीं मिलने का इंतजाम करे।'
'वो ऐसा क्यों करेगा?'
‘वह आपसे प्यार करता है, मैडमोजेल। मुझे नहीं पता क्यों, लेकिन आप अलग हैं। वह आपके लिए जोखिम भी उठाएगा।’
‘मुझे नहीं पता। अगर आपने मुझसे कुछ दिन पहले पूछा होता... लेकिन अब जब आप मुझे बता रहे हैं कि उसने इन सभी महिलाओं की हत्या कर दी है... क्या ऐसा आदमी वास्तव में किसी से प्यार कर सकता है?’
'शायद अपने ही तरीके से। यह प्यार से ज़्यादा जुनून है। मैंने इसे पहले भी देखा है।'
लेकिन अगर उसे पता चल जाए कि यह मैंने ही किया था...
‘उसे कैसे पता चलेगा? अगर उसे तुम पर शक होता, तो वह आज रात डकैती को अंजाम नहीं देता।’
'शायद।'
'क्या आप मेरी मदद करेंगे?'
‘अगर वो फोन करे तो मुझे क्या करना चाहिए?’

‘यह इस बात पर निर्भर करता है कि वह क्या कहता है। वह जो भी करने को कहे, मान लो। सबसे ज़रूरी बात यह पता लगाना है कि वह कहाँ है। एक बार जब हम उसे ढूंढ लेंगे, तो बाकी काम मैं कर लूंगा।’
‘पुलिस का क्या?’
‘उनका क्या?’
'वे कहां हैं?'
बुडजिंस्की ने तिरछी आंखों से उसे देखा। 'पुलिस को इसके बारे में पता नहीं है।'
तो क्या हम इसमें अकेले हैं?
उसने अपने कंधे उचका दिए।
वैलेंटाइन ने कैप्टन के फ्रांसीसी अंदाज में कंधे उचकाने की नकल की।
बुडजिंस्की को इस विडंबना का एहसास नहीं हुआ। उन्होंने कहा, 'मैं जो कर रहा हूं वह मेरे कमीशन की शर्तों से बाहर है।'
'महान।'
लेकिन सब कुछ इस बात पर निर्भर करता है कि आपका दोस्त यहाँ से कहाँ जाता है। एशिया भर में पुलिस बलों में मेरे कई सहयोगी और संपर्क हैं। हालाँकि मुझे डर है कि बैंकॉक में मेरे अब ज़्यादा संपर्क नहीं बचे हैं।
क्या तुम्हारे पास बंदूक है?
बुडजिंस्की ने अपनी जैकेट की जेब थपथपाई। 'बेशक।'
‘अच्छा, मुझे शब्दों से ज़्यादा बंदूकों से सुरक्षा महसूस होती है।’ उसने उसे एक तकिया फेंक दिया। ‘लो, आज रात तुम यहीं सोफे पर सोओगे। शुभ रात्रि।’

♦ ♦ ♦

वैलेंटाइन सुइट 203 की खिड़की पर खड़ी होकर शहर के ऊपर सूर्योदय देख रही थी, जिससे स्तूप पिघले हुए सोने की तरह चमक रहे थे और चाओ फ्राया नदी पर छाई धुंध छंट रही थी। नींद की कमी के कारण उसकी आँखें सूजी हुई और भारी लग रही थीं। बुडजिंस्की सोफे पर बेसुध पड़ा था और किसी हाथी की तरह खर्राटे ले रहा था। उसका चेहरा देखने में बिल्कुल भी आकर्षक नहीं लग रहा था, उसके गालों पर दो दिन पुरानी भूरी दाढ़ी थी और कमीज का एक बटन खुला था जिससे उसका बड़ा सा बालों वाला पेट दिख रहा था। वह किसी शीतनिद्रा में सो रहे भालू जैसा लग रहा था।

वैलेंटाइन ने रूम सर्विस से दो लोगों के लिए नाश्ता मंगवाया और फिर बाथरूम में चली गई। उसने अपने कपड़े उतार दिए और शॉवर में घुस गई, जहाँ गर्म पानी की तेज़ धार ने उसके डर और पसीने को धो डाला।
उसे उम्मीद थी कि बुडजिंस्की का अनुमान गलत हो; उसने प्रार्थना की कि उसे मिशेल से फिर कभी कोई खबर न मिले। वह बस इस बुरे सपने के खत्म होने का इंतज़ार कर रही थी, ताकि वह फ्रांस वापस जाकर अपनी ज़िंदगी नए सिरे से शुरू कर सके। अगली बार वह आकर्षण से सावधान रहेगी। शायद कोई शर्मीला और रूखे स्वभाव वाला व्यक्ति। दयालुता का भी अपना महत्व होता है।
अगर अगली बार मौका मिला तो: वह बार-बार वही सोच रही थी जो उसने इस बाथरूम में कहा था: तुम मुझसे कभी दूर नहीं जा सकती, और मैं तुमसे कभी दूर नहीं जा सकता...
रूम वेटर नाश्ता लेकर आया। उसके जाने के बाद, वैलेंटाइन ने एक काली कॉफी डाली और उसे सोफे के बगल वाली मेज पर रख दिया। फिर उसने बुडजिंस्की को जगाया।
वह लगभग एक मिनट तक चली खांसी के दौरे के दौरान इंतजार करती रही। जब खांसी बंद हुई तो उसने अपनी सिगरेट निकाली और एक जला ली। 'अब ठीक है।'
'कैप्टन, आपकी पत्नी तो संत ही रही होंगी।'
'क्यों?'
'कम से कम तुम्हारी खर्राटे की आवाज तो बर्दाश्त कर लूं।'
‘वह कोई संत नहीं थीं, मैडमोजेल। उन्हें बस ऐसा लगता था।’
फोन की घंटी बजी। वह उसे देखती रही और बजने देती रही। बुडजिंस्की ने घबराकर उसे फोन उठाने का इशारा किया।
अंत में: ‘हैलो?’
'मिस ब्रेटन?' मृदुभाषी थाई ऑपरेटर ने उनका नाम ब्लेट्टन उच्चारित किया।
'हाँ।'
'आपके लिए एक लंबी दूरी की कॉल है। कृपया प्रतीक्षा करें।'
उसे अंतरराष्ट्रीय कनेक्शन की हल्की सी आवाज़ सुनाई दी। फिर: 'वैलेंटाइन?'
‘मिशेल?’
मुझे अफसोस है कि कुछ हो गया है। मुझे तुरंत यहाँ से जाना पड़ा।

‘जा रहे हो? तुम कहाँ हो?’
‘भारत। वाराणसी। क्या आप मेरे साथ यहाँ आ सकते हैं?’
उनकी आवाज़ इतनी शांत थी, मानो वे मुझे सप्ताहांत के लिए अपने बीच हाउस में आमंत्रित कर रहे हों। 'भारत? आप भारत में क्या कर रहे हैं?'
मैं बाद में समझाऊंगा। क्या आपके पास कलम और कागज का एक टुकड़ा है?
उसने बिस्तर के पास रखी मेज पर नजर डाली। बुडजिंस्की ने पिछली रात फोन के बगल में एक नया पैड और दो बॉलपॉइंट पेन सावधानीपूर्वक रख दिए थे।
'जी हां, आगे बढ़ो।'
‘ध्यान से सुनो...’ कुछ मिनट बाद वैलेंटाइन ने फोन रख दिया। उसने बुडजिंस्की को सिर हिलाकर इशारा किया। बात पक्की हो गई थी। वह सही था, मिशेल उसे कभी जाने नहीं देगा। यही एकमात्र रास्ता था।
‘तो?’ बुडजिंस्की ने उससे पूछा।
‘वह वाराणसी में है। वह चाहता है कि मैं कल उससे वहीं मिलूं।’
उसने कॉफी का कप उठाया। उसका हाथ इतना कांप रहा था कि कॉफी चारों तरफ गिर गई। वह फूट-फूटकर रोने लगी। बुडजिंस्की ने उसे अपनी बाहों में भर लिया और कहा कि सब ठीक हो जाएगा, लेकिन वे दोनों जानते थे कि ऐसा नहीं होगा।

अध्याय 43

वाराणसी, भारत
गंगा नदी हिंदू कुश की क्रिस्टलीय बर्फ में स्थित अपने स्रोत से निकलती है और दुनिया के सबसे गर्म, शुष्क और घनी आबादी वाले मैदानी इलाकों में से ढाई हजार मील की दूरी तय करते हुए अंततः बंगाल की खाड़ी में गिरती है।
अपने मार्ग के मध्य में यह वाराणसी शहर से होकर बहती है, जो भारत के सभी शहरों में सबसे पवित्र है, बेबीलोन जितना प्राचीन है, और चालीस शताब्दियों से लगभग अपरिवर्तित स्थान है। यहीं पर बुद्ध ने अपना पहला उपदेश दिया था और यहीं पर सम्राट अशोक ने एक मंदिर का निर्माण करवाया था जिस पर बलुआ पत्थर का एक स्तंभ खुदा हुआ है जिस पर धर्म चक्र, यानी विधि का पहिया, अंकित है, जो आज भी भारतीय राष्ट्रीय ध्वज पर प्रदर्शित होता है।

यह सब ईसा से तीन सौ साल पहले हुआ था।
वाराणसी पहुँचते-पहुँचते गंगा एक सुस्त और गंधकयुक्त कीचड़ मात्र रह जाती है। घनी आबादी वाले शहर का गंदा पानी सीधे नदी में बहा दिया जाता है और काले रंग के शोर मचाते पक्षियों के झुंड के पीछे लगभग छिपी हुई कचरा ढोने वाली नावें अपने बदबूदार कचरे को नदी में डाल देती हैं।
लेकिन हिंदुओं के लिए, यह नदी देवी, दिव्य माँ का प्रतीक है, जो स्वर्ग और पृथ्वी के बीच बहती है। भक्तों का मानना है कि इससे अधिक शुद्ध, इससे अधिक मधुर जल कोई नहीं है। वाराणसी की इस दिव्य नदी में स्नान करना सभी पापों को धो देता है। हजारों लोग हर सुबह घाटों पर आकर इस सबसे पवित्र नदी में अपनी आस्था का पाठ करते हैं, धोती पहनकर भूरे रंग के घूमते हुए पानी में उतरते हैं और नदी के चौड़े किनारे पर उगते हुए सूर्य के सामने हाथ उठाकर प्रार्थना करते हैं। इसे ध्यान और प्रार्थना में पूरा जीवन व्यतीत करने से भी अधिक पुण्यकारी कार्य माना जाता है। और वाराणसी में मरना सीधे स्वर्ग जाने के समान है।
नदी के किनारे घाटों पर श्मशान घाट बने हुए हैं, खुले मंडप जहां चांडाल कहलाने वाले अछूत मृतकों के शवों को रखे पलंगों में आग लगाते हैं, जबकि सफेद साड़ियों में विधवाएं शोकगीत गाती हैं। जब शरीर अंततः जलकर राख और हड्डियों में तब्दील हो जाता है, तो उसे नदी में विसर्जित कर दिया जाता है, जहां वह गुलाब और गेंदे की पंखुड़ियों के साथ धारा में बह जाता है।
यह कल्पना से परे, समझ से परे एक दृश्य है, भिखारियों, साधुओं और फूल बेचने वालों का एक दंगा, प्राचीन शहर के भूरे रंग के टावर अंत्येष्टि की चिताओं से निकलने वाले धुएं की रस्सियों से धुंआ से सने हुए हैं।
एक दिन सुबह-सुबह मिशेल दशाश्वमेध घाट की सबसे निचली सीढ़ी पर आया और धीरे-धीरे अपने कपड़े उतार दिए। उसने ठंड से बचने के लिए अपनी छाती और बांहों पर सरसों का तेल लगाया और फिर, केवल एक सफेद धोती पहने हुए, वह घाट की फिसलन भरी सीढ़ियों से उतरकर मैली नदी में चला गया।
वह काफी देर तक वहीं खड़ा रहा, हाथ जोड़कर प्रार्थना कर रहा था। फिर उसने घुटने टेके और अपना सिर पानी में डुबो दिया, और एक मिनट तक पूरी तरह डूबा रहा। जब वह अंत में रोंगटे खड़े हुए पानी से बाहर निकला, तो उसने दूर मैदान पर फैले विशाल और पीले सूरज को प्रणाम करते हुए अपनी बाहें उठाईं।

उन्होंने अपने आप को सभी पापों से मुक्त कर लिया था। वे फिर से पूर्ण हो गए थे। वह पवित्र था।

डॉन मुआंग हवाई अड्डा, बैंकॉक

बैंकॉक से कोलकाता जाने वाली एयर इंडिया की फ्लाइट के लिए आखिरी बोर्डिंग कॉल की घोषणा हो चुकी थी। वहां से वेलेंटाइन को वाराणसी के लिए कनेक्टिंग फ्लाइट लेनी थी।

बुडजिंस्की ने टर्मिनल में भीड़ के बीच से रास्ता बनाते हुए अपना रास्ता बनाया, उनके कंधे पर एक फ्लाइट बैग लटका हुआ था। उनका मोती जैसे भूरे रंग का सूट बुरी तरह से सिकुड़ा हुआ था और दोनों बगलों के नीचे पसीने के स्थायी दाग थे।

उसे सांस लेने में तकलीफ हो रही थी।

बुडजिंस्की बड़बड़ाया, 'बेकार का देहात! बहुत प्रदूषण है। सीने के लिए हानिकारक है।' वह बैठ गया और एक सिगरेट जलाई। 'क्या उन्होंने फ्लाइट को फोन किया है?'

'अभी-अभी,' वैलेंटाइन ने कहा। 'तुम कहाँ गए थे?'

'मैंने कल दिल्ली में इंटरपोल के अधिकारी को फोन किया था। वह मेरा पुराना दोस्त है। मैंने उससे कहा कि वह वाराणसी पुलिस से उस होटल की जांच करवाए जहां वह आपसे मिल रहा है, क्लार्क्स होटल। मैंने उसे सिर्फ यह जानने के लिए फोन किया था कि क्या उसे कोई और जानकारी मिली है।'

क्या वह वहाँ है?

'उन्होंने उस विवरण से मेल खाने वाले किसी व्यक्ति को नहीं देखा है। बेशक, इसका कोई मतलब नहीं है।'

'तो अब आगे क्या?'

'हम योजना के अनुसार आगे बढ़ेंगे। हम वाराणसी पहुँचने तक साथ-साथ यात्रा करेंगे और क्लार्क होटल में अलग-अलग चेक-इन करेंगे। मैं तुम्हें अपनी नज़रों से ओझल नहीं होने दूँगा।'

क्या भारतीय पुलिस हमारी मदद करेगी?

जैसा कि मैंने कहा, दिल्ली में तैनात इंटरपोल का आदमी मेरा पुराना दोस्त है। उसने वाराणसी के पुलिसकर्मियों से तरह-तरह के झूठ बोले हैं। वे हमारी मदद करेंगे।

बुडजिंस्की ने दीवार पर लगे प्रस्थान स्क्रीन की ओर देखा। "धत् तेरे की। आखिरी

कॉल। चलो। चिंता मत करो, मैं तुम्हें अपनी नज़रों से ओझल नहीं होने दूंगा। मैं वादा करता हूँ।"

वाराणसी, भारत
क्लार्क होटल रेलवे स्टेशन के पास छावनी क्षेत्र में स्थित था। इसका निर्माण 1930 के दशक में हुआ था। यह एक भव्य दो मंजिला एडवर्डियन इमारत थी, जिसके सफेद रंग से रंगे बरामदों और छतों पर बोगनविलिया की लताएँ फैली हुई थीं। बगीचों में बरगद के पेड़ों की छाया में सपेरे बैठे रहते थे।
वैलेंटाइन पीले और काले रंग की एम्बेसडर टैक्सी से उतरी और लॉबी में चली गई। उसे उम्मीद थी कि मिशेल उससे हवाई अड्डे पर मिलेगा। हालाँकि उसने उसे देखा नहीं था, फिर भी उसे बेचैनी महसूस हो रही थी कि कोई उस पर नज़र रख रहा है। अब पेरिस में उनकी मुलाकात के बारे में सोचते हुए, वह सोच रही थी कि उसने पहले कितनी बार उसका पीछा किया होगा।
लॉबी में एक आदमी बैठा टाइम्स ऑफ इंडिया पढ़ रहा था। उसके अंदर आते ही उसने उसकी तरफ देखा, फिर वापस अखबार पढ़ने लगा। क्या वह पुलिसवाला था? उसने यही उम्मीद की।
उसने काउंटर क्लर्क से कहा, 'मुझे एक कमरा चाहिए। एक सिंगल कमरा।'
‘कितनी रातों के लिए?’ वह आदमी एक आकर्षक गुजराती था, जिसकी मुस्कान सुनहरे दांतों के बीच गैप वाली थी।
'मुझें नहीं पता।'
‘कोई बात नहीं,’ उसने कहा और रजिस्टर उसकी ओर बढ़ा दिया। ‘कृपया अपना नाम और पता लिखिए।’ वह अपने पीछे लगे बोर्ड के पास गया और एक चाबी निकाली।
‘क्या मेरे लिए कोई संदेश है?’ वैलेंटाइन ने उससे पूछा। ‘मेरा नाम ब्रेटन है। वैलेंटाइन ब्रेटन।’
‘अरे, मिस ब्रेटन? जी हाँ, जी हाँ।’ वह अपने पीछे कबूतरों के खानों की पंक्ति में वापस गया और एक लिफाफा निकाला।
उसने उसे उसके सामने डेस्क पर रख दिया। वैलेंटाइन ने मिशेल की लिखावट पहचान ली। 'यह कब भेजा गया था?'
'आज सुबह।'

‘इसे किसने पहुंचाया? वह कैसा दिखता था?’
भारतीय ने कंधे उचकाते हुए कहा, 'मुझे याद नहीं है।'
‘यूरोपीय नहीं?’
'अरे नहीं, बिलकुल नहीं।'
‘धन्यवाद,’ वैलेंटाइन ने कहा।
उसने चाबी ली और अपने कमरे में चली गई, कुली उसका सामान लेकर उसके आगे-आगे तेजी से चल रहा था। उसने कुली को टिप दी और फिर दरवाजा बंद कर लिया। उसने कांपती उंगलियों से लिफाफा खोला:
प्रिय,
मुझे खेद है कि मैं आपसे मिलने के लिए यहाँ उपस्थित नहीं हो सका। इसमें कुछ नहीं किया जा सकता था। कल दोपहर को राज बाजार स्ट्रीट और द मॉल के चौराहे पर मुझसे मिलें। मैं आपको सब कुछ समझा दूंगा।
मैं तुम्हें बहुत पसंद करता हूँ, मिशेल।

♦ ♦ ♦

वाराणसी की अपराध शाखा में जासूस निरीक्षक लाई गुप्ता सिंह का कार्यालय धूल भरी फाइलों से भरा पड़ा था। खाकी दीवारों पर मैल जमा हुआ था। डेस्क के ऊपर एक बोर्ड लटका हुआ था:
पुलिस अधिकारी वर्दीधारी एक नागरिक होता है।
और प्रत्येक नागरिक एक पुलिस अधिकारी है
बिना वर्दी के।
कमरे के एक कोने में दो तीन-मंजिला फाइलिंग कैबिनेट रखे थे और उनमें से एक के दराज खुले लटके हुए थे, जिससे कागज़ ज़मीन पर बिखरे पड़े थे। स्याही से सने लकड़ी के डेस्क के किनारे पर भी कई फाइलें लटकी पड़ी थीं।
गुप्ता सिंह ने मेज के दूसरी ओर बैठे व्यक्ति को गौर से देखा। उसकी दाढ़ी बढ़ी हुई थी और वह जुआरी की तरह लग रहा था, मानो उसने रात भर जुआ खेला हो। उसका सूट सिकुड़ा हुआ और राख से सना हुआ था। हे भगवान! लगता है वह उसी में सोया होगा।
दिल्ली ने उन्हें इस आदमी को हर तरह का सहयोग देने के लिए कहा था। स्वयं जासूस-अधीक्षक अभियंता ने संकेत दिया था कि अशोका होटल में सनसनीखेज

डकैती और दोहरे हत्याकांड के लिए जिम्मेदार व्यक्ति अब वाराणसी में है। यह अविश्वसनीय रूप से सौभाग्य की बात थी। मामले का सफल समाधान लगभग निश्चित रूप से पदोन्नति दिला सकता था। हो सकता है कि उनका नाम टाइम्स ऑफ इंडिया में भी छप जाए।

गुप्ता सिंह ने कहा, 'दिल्ली ने मुझे आपके आगमन की सूचना दे दी है, मेरे सभी संसाधन आपकी सेवा में तत्पर हैं।'

'धन्यवाद, इंस्पेक्टर,' बुडजिंस्की ने कहा। 'मैं इसकी सराहना करता हूँ।'

छोटे से भारतीय पुलिसकर्मी ने सिर हिलाते हुए पूछा, 'क्या आपके पास इस अपराधी की तस्वीर है?'

बुडजिंस्की ने अपनी जेब में हाथ डाला। 'बस यही हैं। मैंने इन्हें उसकी प्रेमिका से लिया है।'

उसने दो रंगीन तस्वीरों को डेस्क पर सरका दिया।

'इस तस्वीर में दिख रही लड़की? क्या वह वाराणसी में है?'

'हाँ, सही है। मुझे उम्मीद है कि वह हमें उसके पास ले जाएगी।'

'इस आदमी के खिलाफ गिरफ्तारी वारंट जारी किए गए हैं?' डिटेक्टिव-सुपरिटेंडेंट इंजीनियर ने बताया कि वह अशोका में हुए इस बेहद चौंकाने वाले अपराध में शामिल था।'

'इंटरपोल के पास उसके लिए कम से कम दो लंबित प्रत्यर्पण आदेश हैं।'

'मैं समझ गया। और वह किस नाम का इस्तेमाल करता है?'

'उसने कई नामों का इस्तेमाल किया है। थाई पुलिस उसे जीन-पॉल धुइस्मे के नाम से जानती है। उसने इस महिला को बताया कि उसका नाम मिशेल गिरेसे है।'

"अगर वह वाराणसी में है तो मैं आपको यकीन दिलाता हूं कि वह हमसे बच नहीं पाएगा। क्या आपके पास कोई सुराग है?"

बुडजिंस्की ने इंस्पेक्टर को वह नोट दिया जो वैलेंटाइन को उस दोपहर मिला था।

'तो हमने उसे पकड़ लिया!' गुप्ता सिंह ने विजयी भाव से कहा। उन्होंने खुशी से ताली बजाई। 'हमने उसे पकड़ लिया!'

अध्याय 44

बुडजिंस्की एक जर्जर गली के कैफे में बैठे और कोका-कोला का घूंट लिया। उन्होंने

मुंह बनाया। गर्मी थी। मॉल के सामने वाली जर्जर दुकानों पर संस्कृत और घटिया अंग्रेजी में हाथ से लिखे साइनबोर्ड लगे थे: 'केमिस्ट और दवा विक्रेता', और बगल वाली दुकान पर 'दर्जी और कपड़ा विक्रेता'। चौक मोटर स्कूटरों, रिक्शा, साइकिलों और टैक्सियों से भरा हुआ था।

सूट जैकेट में खुद को मोटा और असहज महसूस करते हुए उसने अपनी टाई ढीली कर ली। वह जैकेट उतारकर वाराणसी के सभी लोगों को यह दिखाना नहीं चाहता था कि उसकी बगल में कंधे के होल्स्टर में बेरेटा पिस्तौल है।

उसने अपनी घड़ी देखी। पच्चीस मिनट बीत चुके थे। कुछ गड़बड़ हो गई थी। वैलेंटाइन अभी भी कोने पर खड़ी थी, उसका चेहरा चौड़ी किनारी वाली भूसे की टोपी और काले चश्मे के नीचे छिपा हुआ था। उसे एक बरगद के पेड़ के नीचे थोड़ी सी छाया मिल गई थी, लेकिन पिछले आधे घंटे से वह फेरीवालों और रिक्शा चालकों की अंतहीन भीड़ से जूझ रही थी। वह देख सकता था कि वह घबरा रही थी।

राज बाज़ार स्ट्रीट से एक शादी का जुलूस गुज़र रहा था। झांझ और सूसाफोन की झंकार और ढोल की गूंजती हुई ताल तेज़ होती जा रही थी। बुडजिंस्की बिना किसी रुचि के देखता रहा।

संगीतकारों को एक भव्य चलते-फिरते बैंडस्टैंड पर धकेला जा रहा था, उनका संगीत - अगर उसे संगीत कहा जा सकता है, बुडजिंस्की ने सोचा - लाउडस्पीकरों द्वारा तेज किया जा रहा था। दूल्हे के चारों ओर भीड़ उमड़ रही थी, जो एक सफेद घोड़े पर सवार था। वह अभी बच्चा ही था, और अपने शाही कपड़ों और कांच के रत्नों से जड़ी पीली पगड़ी में भी वह बेहद दयनीय लग रहा था।

बारात उसके पीछे-पीछे गली से होते हुए दुल्हन के घर की ओर जा रही थी। कुछ मेहमान एसिटिलीन लाइटों के झूमर लिए हुए थे। दूल्हे को छोड़कर बाकी सभी लोग खूब आनंदित लग रहे थे।

उसने दोबारा अपनी घड़ी देखी। साढ़े बज चुके थे।

आखिर क्या गड़बड़ हुई थी?

उसने नोट क्यों छोड़ा होगा, वह उससे व्यक्तिगत रूप से मिलने के लिए वहां क्यों नहीं गया था?

चौक के चारों ओर सादे कपड़ों में एक दर्जन पुलिसकर्मी पैदल और गाड़ियों में तैनात थे, जो उसके इशारे का इंतजार कर रहे थे। सबसे बुरी स्थिति यही हो सकती थी कि

मिशेल न आए।
वैलेंटाइन को कोई खतरा नहीं था।
प्रेमी ...
उसने दोबारा देखा।
वह चली गई थी।

♦ ♦ ♦

वह सोच रही थी कि उसे कब तक इंतजार करना चाहिए। वह आधा घंटा लेट था। कुछ तो हुआ होगा। वह निश्चित रूप से नहीं आ रहा था।
वह सड़क पर अपनी ओर आती हुई बारात को देखती रही। माहौल बेहद खुशनुमा था। फिर भी, वैलेंटाइन मुस्कुरा पड़ी।
फटी हुई सफेद जैकेट, नीली पतलून और लाल टोपी पहने शादी के बैंड के सदस्य अपने सुनहरे पल का भरपूर आनंद उठा रहे थे। मधुर संगीत की जगह शोर का बोलबाला था। ढोल और तुरही की गूंज इतनी तेज़ थी कि कान बहरे हो रहे थे।
शोर और रंगों में खोई हुई वैलेंटाइना को वेस्पा स्कूटर तब तक दिखाई नहीं दिया जब तक वह लगभग उसके ऊपर नहीं आ गया। स्कूटर फुटपाथ पर, कुछ ही फीट की दूरी पर रुका। स्कूटर सवार, जो पगड़ी और धोती पहने एक सांवले रंग का हिंदू था, उसे हाथ हिलाकर इशारा कर रहा था।
वह अचरज से पलटकर देखने लगी। यह मिशेल था।
'जल्दी करो! चढ़ो! हमारा पीछा किया जा रहा है!'
वह हिचकिचाई। बुडजिंस्की उससे मात्र पचास गज की दूरी पर, चौक के दूसरी ओर था, लेकिन जुलूस के कारण वह क्षण भर के लिए उसकी नज़र से ओझल हो गया था। क्या उसने देखा था कि क्या हो रहा था?
'वैलेंटाइन! जल्दी!'
अगर वह अब उसके साथ नहीं जाती, तो उसे पता चल जाएगा कि उसने क्या किया है। वह हमेशा के लिए गायब हो जाएगा।
वह स्कूटर के पीछे कूदकर बैठ गई।
कुछ ही क्षणों में वे चले गए, मिशेल ने ग्रैंड ट्रंक रोड पर वाहनों की भीड़ के बीच कुशलतापूर्वक रास्ता बनाया।

वह पक्कू महलों की ओर चल पड़ा, जो घाटों और मदनपुरा रोड के बीच स्थित मध्ययुगीन गलियों का एक जाल था। वह प्राचीन गलियों में बहुत तेज़ी से गाड़ी चला रहा था, जिससे छोटे बच्चे और यहाँ तक कि एक वृद्ध साधु भी उसके रास्ते से हट गए। वैलेंटाइन को दूर से पुलिस सायरन की आवाज़ सुनाई दी।
मिशेल ने अचानक ब्रेक लगाया और गाड़ी से कूद गया। उसने उसका हाथ पकड़ लिया। 'जल्दी! इधर आओ!'
वह उसे दोपहर के अंधेरे में डूबी सड़कों पर ले गया। शहर के ऊपर काले मानसूनी बादल मंडरा रहे थे। एक तूफान आने वाला था।
वैलेंटाइन उसके पीछे-पीछे घिसटता चला गया, दहशत और घबराहट से व्याकुल। पूरी योजना बुरी तरह विफल हो गई थी। वे एक और संकरी घाटी में पहुँचे। यह एक बंद रास्ता था, नदी की ओर जाने का रास्ता पीले मलबे के ढेर से अवरुद्ध था जहाँ नदी किनारे की एक इमारत गंगा में गिर गई थी। मिशेल रुक गया, उसकी छाती ज़ोर-ज़ोर से धड़क रही थी, पसीने की बूँदें उसके चेहरे से बह रही थीं।
‘मिशेल...?’
उसने उसका हाथ छोड़ दिया।
‘हैलो वैलेंटाइन।’
'क्या हो रहा है?'
उसने पगड़ी उतार दी। वह उसका रूप देखकर दंग रह गई। उसने अपने बाल फिर से सुनहरे रंग में रंगवा लिए थे, जिससे उसके चेहरे पर उभरी निराशा की गहरी लकीरें और भी स्पष्ट हो गईं।
उन्होंने कहा, 'वे हमारा पीछा कर रहे हैं।'
'कौन?
‘पुलिस। क्या आपने उन्हें नहीं देखा? वे पूरे चौक के चारों ओर थे।’
‘मुझे कोई पुलिस नहीं दिखी, मिशेल। क्या हो रहा है? हम यहाँ क्यों हैं, तुमने क्या किया है?’
उसने उसे कोई जवाब नहीं दिया। उसने कहा, 'यहीं रुको। मैं यह सुनिश्चित कर लूंगा कि कोई हमारा पीछा तो नहीं कर रहा है।'
वह वापस खाई की ओर भागा और गायब हो गया।
वैलेंटाइन उसे देखती रही। उसने सोचा, मुझे यहाँ से निकलना होगा। सब कुछ बर्बाद

हो गया है। वह कोने की ओर भागी। दो आदमी उसके पास से एक सफेद कफ़न में लिपटे शव को तश्तरी पर रखकर श्मशान घाटों की ओर जा रहे थे। एक बूढ़ा सफेद दाढ़ी वाला साधु पालथी मारकर जमीन पर बैठा था, उसका नग्न शरीर सफेद राख से सना हुआ था।

किधर? बस नदी से दूर हो जाओ, उसने सोचा। नए कस्बे की ओर। लेकिन यह इतना आसान नहीं था; पक्कू महलों की गलियाँ ऊँचे-ऊँचे भूरे-पीले घरों, दीवारों में बने छोटे-छोटे छेदों जैसी दुकानों और गुमनाम दरवाजों के बीच से होकर गुज़रती थीं, जहाँ दृष्टिहीन भिखारी खुरदुरे पंजों से उसकी ओर बढ़ते थे। जितना दूर वह भागती, उतना ही वह भूलभुलैया में फँसती चली जाती।

एक बिना चमड़ी वाली गाय, जिसकी नाक से भाप निकल रही थी, उसके पास से गुजरी और उसे पीछे धकेलते हुए दीवार से सटा दिया।

आसमान से मूसलाधार बारिश होने लगी। बुडजिंस्की, तुम कहाँ हो?

♦ ♦ ♦

बुडजिंस्की नीली पुलिस फिएट से बाहर निकले और अपने चारों ओर उमड़ी भीड़ को घूरने लगे; हाथ से बुनी साड़ियों में महिलाएं, कुर्ते और सफेद धोती पहने भूरे रंग के पुरुष, लगभग नग्न रिक्शा चालक और घाट से लौट रहे पर्यटक, जो निकॉन और कैनन कैमरों से लदे हुए थे।

मिशेल और उस लड़की का कोई पता नहीं। हे भगवान! ये सब कैसे हो गया? उसने तो उससे वादा किया था कि वो उसका ख्याल रखेगा। आखिर ये सब कैसे बिगड़ गया?

चौक पर बीस पुलिसकर्मी मौजूद थे और किसी तरह वे उसे ढूंढ नहीं पाए।

♦ ♦ ♦

घबराओ मत, उसने सोचा। बस शांत रहो। एक दुबला-पतला हिंदू, अपनी छोटी सी दुकान में एक स्टूल पर बैठा, उसे बड़ी उत्सुकता से देख रहा था। वह अपनी बिक्री के लिए रखे पूजा के सामानों के बीच लगभग खोया हुआ था; पवित्र जल की बोतलें, रंगीन तिलक पाउडर, लत-ए-दाना की थालियाँ, वो सफेद मिठाइयाँ जो हिंदू अपने देवताओं को चढ़ाते हैं।

उसकी एक आंख धुंधली थी, मोतियाबिंद से ढकी हुई थी। उसने अपना सिर उसकी ओर ऐसे हिलाया, मानो उसके चारों ओर रखी अंधेरी बोतलों में से किसी एक से निकला कोई दुष्ट जिन्न हो।

'कृपया... मैं वापस सड़क पर कैसे जाऊं?' वैलेंटाइन ने उससे पूछा।

उसने एक बोतल उसकी ओर बढ़ा दी, पान से काले हुए दांत एक बनावटी मुस्कान में दिखाई दे रहे थे।

'सड़क!' वैलेंटाइन ने दोहराया। 'होटल!'

उसने अपना सिर हिलाया और हिंदी में उस पर कुछ चिल्लाया।

'क्लार्क का होटल!'

उसने उसकी आस्तीन पकड़ी और बोतल उसके हाथ में देने की कोशिश की। लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ।

वह अंधाधुंध नदी से दूर भागने लगी, बस नदी से दूर भागना चाहती थी।

♦ ♦ ♦

मिशेल ने उसे महा दुर्गा मंदिर की ओर नाले में भागते हुए देखा। अपनी बेगुनाही साबित करने का यह उसका आखिरी मौका था। अगर वह उसका इंतज़ार करती, जैसा कि उसने उसे बताया था, तो शायद उसे अपने अंतर्ज्ञान पर संदेह होता। लेकिन अब उसे पूरा यकीन था कि उसने उसके साथ विश्वासघात किया है।

उनकी मैडोना बाकी सभी मैडोना जैसी ही थी।

एक वेश्या।

♦ ♦ ♦

वह संकरी गली एक खुले आंगन में जाकर खुलती थी। वैलेंटाइन दौड़कर अंदर गया और हांफते हुए दीवार से टिक गया।

पत्थरों से बनी सड़कों पर मूसलाधार बारिश का पानी बह रहा था, अपने साथ हर तरह की गंदगी बहाकर ला रहा था। हवा उमस भरी थी। शहर से खुले नाले जैसी बदबू आ रही थी।

वह किसी मंदिर में थी। उसे दूर की दीवार से एक चेहरा अपनी ओर घूरता हुआ दिखाई दिया, जो अनगिनत हिंदू देवताओं में से एक था। मंदिर एक गुंबददार मंडप था, जो पीतल के पिंजरे से घिरा हुआ था। वह एक कदम और करीब गई।

वह भयानक था। उसका सिर सिकुड़ा हुआ और काला था, जिसमें नुकीले दांत थे और

पागल औरत जैसी भयानक आंखें थीं। उसकी चोंच में एक रत्नजड़ित अंगूठी थी। एक हाथ में फंदा, दूसरे में खोपड़ी से सजा डंडा और तीसरे हाथ में खून से लथपथ एक कटा हुआ सिर था। एक नुकीला पैर एक काले चूहे के शरीर पर टिका हुआ था।
पीछे से बाहों ने उसे जकड़ लिया और कसकर पकड़ लिया।
वह चीख पड़ी।
'वैलेंटाइन! क्या तुम ठीक हो?'
'मिशेल?'
'क्या हुआ? मैं तुम्हें ढूंढ नहीं पा रहा था।'
'मैं... मैं डर गई थी। जब तुम वापस नहीं आए, तो मैं तुम्हें ढूंढने निकल पड़ी।'
'पक्कू महलों में खो जाना आसान है। तुम खुशकिस्मत हो कि मैंने तुम्हें ढूंढ लिया।'
उसने अपनी गर्दन पर उसकी गर्म सांस महसूस की। 'क्या तुम जानते हो कि वह कौन है?'
'यह बहुत बुरा है। चलो चलते हैं।'
'यह भगवान भवानी हैं। काली माता।'
यह बुराई है।
'वह काली हैं। आपने बंगाल में रहने वाले ठगों, उन डाकुओं के बारे में सुना होगा? वह उनकी देवी थीं। वे रास्ते में यात्रियों से दोस्ती करते, फिर उन्हें जहर देते, गला घोंटते, कभी-कभी जिंदा जला देते। फिर वे अपनी लूटी हुई संपत्ति को भक्ति के प्रतीक के रूप में काली के मंदिर में लाते थे।'
'कृपया... मिशेल...'
'देखो! वेदी पर!'
एक छोटा काला सांप किसी तरह मंदिर के अंदर घुस गया था। वह काली मां के पैर से होते हुए, उसकी बाहों से गुजरता हुआ उसके खुले जबड़ों में घुस गया।
'नाग,' मिशेल ने फुसफुसाते हुए कहा। 'भारत में लोग मानते हैं कि यह किसी देवता का अवतार है, क्योंकि यह अपनी त्वचा उतार सकता है और इसकी आँखों का सम्मोहक प्रभाव होता है। और हाँ, इसका डंक तो जानलेवा होता ही है।'
उसने उसे और करीब खींच लिया और वह चीख पड़ी। उसने धीरे से उसके चेहरे से बालों की एक लट हटाई। 'सब ठीक है,' उसने फुसफुसाते हुए कहा। 'डरो मत। वे चले गए हैं।'

'कौन?'
‘पुलिस। अब वे हमें नहीं ढूंढ सकते। हम सुरक्षित हैं।’
वह उसे आंगन से बाहर ले गया, उसका हाथ उसने कसकर पकड़ रखा था। 'इधर आइए। मेरा एक कमरा यहीं पास में है। वे हमें वहां कभी नहीं ढूंढ पाएंगे।'

♦ ♦ ♦

हजारों वर्षों से तीर्थयात्री गंगा में स्नान करने के लिए वाराणसी आते रहे थे। साठ के दशक के उत्तरार्ध में, सीमित बजट वाले हिप्पी भी आने लगे थे। कई परिवारों ने इस अवसर का लाभ उठाया और कमरे किराए पर देकर अपनी सीमित आय को बढ़ाने का काम शुरू किया। कुछ स्थान साफ-सुथरे थे, अधिकतर गंदे थे। लेकिन सभी सस्ते थे। मिशेल उसे जिस कमरे में ले गया, वह बेदी स्टेट सिल्क को-ऑप मार्केटिंग फेडरेशन लिमिटेड के ऊपर एक विशाल इमारत में था। वे एक अंधेरी और दुर्गंधयुक्त सीढ़ी से ऊपर गए। कमरे का प्लास्टर उखड़ रहा था और दीवारों पर गहरे धब्बे थे। कमरे में केवल एक लोहे के फ्रेम वाला पलंग, एक पुरानी अलमारी और एक बेंत की मेज थी। छत से बारिश का पानी टपक कर कोने में बने एक छोटे से गड्ढे में जमा हो रहा था। सियाम इंटरकॉन्टिनेंटल से बहुत दूर। मिशेल ने उनके पीछे दरवाजा बंद कर दिया।
'बेचारा वैलेंटाइन। तुम कांप रहे हो।'
‘क्या हो रहा है? पुलिस तुम्हारे पीछे क्यों पड़ी है?’
‘पार्किंग का उल्लंघन।’
मेरा मजाक मत उड़ाओ।
मैं अभी इस बारे में बात नहीं करना चाहता।
दरवाजे पर दस्तक हुई। मिशेल ने दरवाजा खोला। मकान मालिक बेदी था, जो कद में छोटा, दाढ़ी न बनाया हुआ, टूटे दांतों वाला एक हिंदू था। वह एक पुरानी चांदी की थाली में चाय का एक बर्तन और दो कप लाया था। उसने उसे खिड़की के बगल वाली मेज पर रख दिया।
उसके जाने के बाद, मिशेल ने दो कप भरे और एक कप उसे देते हुए कहा, 'लो।'
उसने कृतज्ञतापूर्वक चाय पी ली। उसका मुँह इतना सूखा था कि वह मुश्किल से कुछ निगल पा रही थी। चाय गर्म और बिना चीनी की थी, और जैसे ही उसने उसे पिया, उसके दिमाग में बेचैनी से कई विकल्प घूमने लगे। उसे हिम्मत जुटाकर जल्द से जल्द

उससे दूर जाना था।
‘ये कैसी जगह है? हम यहाँ नहीं रुक सकते। ये बहुत गंदी है।’
मुझे खेद है, लेकिन अब यह आवश्यक है।
'चलो क्लार्क के घर में मेरे कमरे में वापस चलते हैं।'
यह बहुत खतरनाक है।
उसने अपना कप मेज पर रख दिया। 'मैं यहाँ नहीं रुक सकती, मिशेल। मैं जा रही हूँ।'
‘तुम ऐसा नहीं कर सकती।’ उसने उसे पकड़ लिया और अपनी ओर खींच लिया।
‘क्या हुआ? मुझे दोबारा देखकर तुम्हें खुशी नहीं हुई?’
‘हाँ, लेकिन—’
उसने उसे चूमा।
उसकी उंगलियों ने उसका ब्लाउज फाड़ दिया और उसने उसे जबरदस्ती उस गंदे बिस्तर पर लिटा दिया।
उससे झगड़ा मत करो, वैलेंटाइन ने सोचा। उससे प्यार करो। बाद में, जब वह सो जाए, तो तुम चुपके से निकल जाना।
‘मुझसे प्रेम करो,’ उसने फुसफुसाते हुए कहा, ‘मुझसे इस तरह प्रेम करो कि मैं इसे हमेशा याद रखूं।’

♦ ♦ ♦

मिशेल उसके बगल में सो रहा था। वह देखने में बिल्कुल मासूम लग रहा था, जैसे कोई छोटा बच्चा हो। उसने उठने की कोशिश की, लेकिन उसका सिर भारी लग रहा था। वह मुश्किल से अपनी आँखें खुली रख पा रही थी। नहीं, वैलेंटाइन! तुम्हें यहाँ से चले जाना चाहिए।
कमरा घूमने लगा।
उसने अपनी आँखें बंद कर लीं और मतली कम होने का इंतज़ार किया। उसने दोबारा कोशिश की, लेकिन ऐसा लगा जैसे उसके हाथ-पैर सीसे से भरे हों। उसे पसीना आने लगा। वह ध्यान केंद्रित नहीं कर पा रही थी।
चाय! क्या उसने उसकी चाय में कुछ मिला दिया था?
नहीं। हे भगवान, नहीं। घबराकर उसने बिस्तर से नीचे उतरने की कोशिश की, लेकिन उसकी मांसपेशियां हरकत नहीं कर रही थीं।

उसके कानों में भनभनाहट होने लगी और उसकी आंखों के सामने गुलाबी जेली जैसा पदार्थ छा गया। सब कुछ अंधेरा हो गया।

अध्याय 45

वर्दीधारी दो पुलिसकर्मी बेदी स्टेट सिल्क को-ऑप मार्केटिंग फेडरेशन लिमिटेड में दाखिल हुए। बेदी उस फटे-पुराने पर्दे के पीछे से निकले, जिसने सीढ़ियों के नीचे स्थित उस छोटे से अंधेरे कमरे को विभाजित कर रखा था, जिसे वे कार्यालय के रूप में इस्तेमाल करते थे।

'आप क्या चाहते हैं?'

पुलिसकर्मियों में से एक, सार्जेंट ने अपनी जेब में हाथ डाला और उस तस्वीर की एक प्रति निकाली जिसे बुडजिंस्की थाईलैंड से अपने साथ लाया था।

सार्जेंट ने कहा, 'हम इस आदमी की तलाश कर रहे हैं। क्या आपने उसे देखा है?'

बेदी ने तस्वीर ली और उसे घूरने लगा। उसने अपना सिर हिलाया। 'नहीं, मैंने इस आदमी को पहले कभी नहीं देखा।'

क्या इस समय आपके साथ कोई रह रहा है?

‘सिर्फ एक व्यक्ति। जोधपुर के एक बहुत ही सम्मानित सज्जन।’

सार्जेंट ने हल्की सी आवाज़ निकाली और तस्वीर को वापस अपनी जेब में रख लिया। "ठीक है, अगर तुम इस आदमी को देखो तो हमें तुरंत बताना।"

‘उसने क्या किया है?’

उन्होंने गर्व से कहा, 'वह एक कुख्यात अंतरराष्ट्रीय अपराधी है।' इस तरह की जांच में शामिल होने से उन्हें बहुत महत्व प्राप्त था।

‘किस तरह का अपराधी?’

दूसरे पुलिसकर्मी ने आत्म-प्रशंसा के माहौल में खुद को शामिल करने की उत्सुकता दिखाते हुए कहा, 'एक हत्यारा।'

सार्जेंट ने आगे कहा, 'याद रखना, अगर तुम उसे देखो तो हमें तुरंत बताना।'

बेदी उनके पीछे-पीछे बाहर गया। उसने गले के पिछले हिस्से से पान का रस थूका और ज़मीन पर थूक दिया। 'उसने किसका खून किया?'

‘एक महिला। दरअसल, उसने कई महिलाओं की हत्या की है। शायद सौ तक,’ सार्जेंट ने अपनी जानकारी को बढ़ा-चढ़ाकर बताते हुए कहा।

वे सड़क पर आगे बढ़ गए। उनके लिए यह एक लंबा दिन होने वाला था। इंस्पेक्टर गुप्ता ने उन्हें वाराणसी के सभी होटलों और गेस्ट हाउसों की जाँच करने का आदेश दिया था।

बेदी ने सोच-विचार करते हुए अपने गुप्तांग को खुजलाया और वापस अंदर चला गया। मिशेल पर्दे के पीछे से बाहर निकला और उसकी ओर देखकर मुस्कुराया। उसने हिंदी में कहा, 'आपको इतने सारे सवाल पूछने की ज़रूरत नहीं थी।'

बेदी ने उनसे कहा, 'मुझे जिज्ञासा थी।'

'खैर, ज्यादा उत्सुक मत बनो। यह खतरनाक है।' मिशेल ने अपनी जेब में हाथ डाला और एक सौ रुपये के पांच नोट निकाले। 'ये लो। यही हमारा समझौता था।'

बेदी ने पैसे अपने कुर्ते की जेब में ठूंस दिए।

'मेरे जाने पर पाँच सौ रुपये और देने हैं। बस याद रखना - तुमने मुझे देखा नहीं है।' मिशेल जाने के लिए मुड़ा।

बेदी ने कहा, 'वे तुम्हें बहुत बुरी तरह से चाहते होंगे। शायद इसके लिए उन्हें इनाम मिले।'

मिशेल ने घृणा से भौंहें चढ़ाईं। 'ठीक है, एक हजार रुपये।'

तीन हजार।

'अपना गला काटना शायद सस्ता पड़ेगा।'

बेदी डरा हुआ था, लेकिन उसे अवसर का फायदा उठाना आता था। उसने बुदबुदाते हुए कहा, 'मैं गरीब आदमी हूँ। मैं आपकी बहुत बड़ी सेवा कर रहा हूँ।'

'दो हजार रुपये। और अगर तुमने पुलिस को बताने के बारे में सोचा भी तो तुम्हें शिव से उम्मीद से कहीं ज्यादा जल्दी मुलाकात करनी पड़ेगी।'

मिशेल बाहर चला गया और बेदी को अपने सिर के ऊपर लकड़ी की सीढ़ियों पर उसके कदमों की बिल्ली जैसी धीमी आहट सुनाई दी। उसने चिड़चिड़ाकर अपना पेट खुजलाया। उसे कैसे पता चलता कि यह सनकी पश्चिमी व्यक्ति एक बड़ा अपराधी है? ऐसा लग रहा था जैसे वाराणसी का हर पुलिसवाला उसे ही ढूंढ रहा हो।

उन्हें यह पसंद नहीं आया।

उन्हें यह बिल्कुल भी पसंद नहीं आया।

♦ ♦ ♦

मिशेल बिस्तर के किनारे बैठ गया और उसे सोते हुए देखता रहा। उसने हाथ बढ़ाकर

धीरे से उसके गाल को सहलाया। वह उसके साथ ऐसा कैसे कर सकती थी? पहले तो उसे यकीन ही नहीं हुआ, उसने खुद को समझाने की कोशिश की कि ज़रूर कोई गलती हुई होगी। लेकिन जब उसने उसे चौक पर इंतज़ार करते देखा, उन सभी पुलिसवालों को देखा - बेवकूफ! क्योंकि उन्होंने अपनी वर्दी थाने में छोड़ दी थी, उन्हें लगा कि वे अदृश्य हो गए हैं - तो उसे यकीन हो गया कि अब कोई शक नहीं था। फिर भी उसने उसे एक आखिरी मौका दिया था। अगर वह नाले में उसका इंतज़ार करती, तो उसे यह मानने का लालच हो जाता कि वह अनजाने में शिकार बन गई थी, उसे पता नहीं था कि उसका पीछा किया जा रहा है। लेकिन इसके बजाय वह एक डरे हुए खरगोश की तरह भाग गई।
बैंकॉक में उसने सब कुछ खो दिया था; दुसित थानी ऑपरेशन से मिला मुनाफा, लगभग सारा पैसा, एक को छोड़कर सारे पासपोर्ट। अब तो वैलेंटाइन भी उसके खिलाफ हो गया था। ठीक वैसे ही जैसे जोगिंदर और एड्रिएन उसके खिलाफ हो गए थे। जिन-जिनसे उसने कभी प्यार किया था, सब उसे बर्बाद करने पर तुले थे।
तो अब उसे उस चीज़ को नष्ट करना होगा जिससे वह प्यार करता था।

♦ ♦ ♦

वह जागने लगी थी। मैंड्रैक्स का असर कम हो रहा था। उसने उसका दाहिना हाथ उठाया और अपनी गोद में रख लिया। उसने उसकी कोहनी के ऊपर एक पट्टी बांधी और उसकी बांह में एक हल्की नीली नस ढूंढ ली। बेडसाइड टेबल पर एक सिरिंज तैयार रखी थी, उसने उसे उठाया और सुई की नोक से थोड़ी सी दवा गिरा दी। इससे वह रात भर सोएगी। सुबह सब कुछ तैयार होगा।

♦ ♦ ♦

बुडजिंस्की और इंस्पेक्टर लाई गुप्ता सिंह ने क्लार्क होटल की लॉबी में बातचीत की। गुप्ता सिंह ने कहा, 'हम उसे ढूंढ निकालेंगे, उसके बचने का कोई रास्ता नहीं है।'
बुडजिंस्की ने सिगरेट का टुकड़ा अपने कप में गिरा दिया। वह बुझ गया और डूब गया। गुप्ता सिंह ने अपने चेहरे पर घृणा के भाव को छिपाने की कोशिश की। एक धर्मनिष्ठ सिख होने के नाते वे धूम्रपान नहीं करते थे और सिगरेट की दुर्गंध से उन्हें घृणा होती थी। उन्हें यह भी पसंद नहीं था कि अच्छी मैसूर कॉफी का इस्तेमाल सिगरेट के टुकड़ों को बुझाने के लिए किया जाए।

आपको ऐसा क्यों लगता है कि वह अभी भी वाराणसी में है?
'हमारे जवान हवाई अड्डे पर, रेलवे स्टेशनों पर, बस स्टेशनों पर तैनात हैं। वह इसी शहर में कहीं है।'
'मॉल के चारों ओर तुम्हारे आदमी तैनात थे, फिर भी उसने उसे तुम्हारी नाक के नीचे से छीन लिया।'
गुप्ता सिंह ने आलोचना पर भड़कते हुए कहा, 'आपकी नाक भी वहां मौजूद थी।'
हमें इनाम देना होगा।
गुप्ता सिंह ने बेबसी जताते हुए हाथ फैला दिए। 'मैं बिना अनुमति के सरकारी धन का उपयोग ऐसे काम पर नहीं कर सकता। इसके लिए अनुरोध किया जा चुका है।'
तब तक बहुत देर हो चुकी होगी।
हम उसे ढूंढ लेंगे।
'तो तुम मुझे यही बताते रहते हो।'
'आप जाकर थोड़ी देर सो लीजिए, महोदय। जैसे ही हमें कोई सुराग मिलेगा, मैं आपको फोन कर दूंगा।'
बुडजिंस्की ने सिगरेट निकालने के लिए हाथ बढ़ाया, फिर गुप्ता सिंह को राहत देते हुए, उसने अपना इरादा बदल दिया।
गुप्ता सिंह ने आगे कहा, 'अब कोई कुछ नहीं कर सकता।'
'ठीक है,' बुडजिंस्की ने कहा।
फिर, गुप्ता सिंह के लिए यह एक भयानक दृश्य था जब वह उठा और उस कॉफी का एक घूंट पिया जिसमें उसने कुछ ही क्षण पहले अपनी सिगरेट फेंकी थी। मानो उसे इसका एहसास ही न हो। उसने कप पटक दिया और लड़खड़ाते हुए चला गया।
'हम उसे ढूंढ निकालेंगे!' गुप्ता सिंह ने उसके पीछे से पुकार लगाई। 'वह बच नहीं सकता!'

♦ ♦ ♦

बुडजिंस्की अपने कमरे में अकेले बैठे दीवार को घूर रहे थे।
उन्हें पता था कि उनका करियर खत्म हो चुका है। उन्होंने बैंकॉक में एक पुलिस प्रमुख का अपमान किया था, प्रत्यर्पण आदेशों के बारे में भारतीयों से झूठ बोला था। उन्होंने वो सब कुछ किया था जो महासचिव ने उन्हें न करने का आदेश दिया था। फ्रांस लौटते

ही उन्हें सूली पर चढ़ा दिया जाएगा।
अपने करियर को दांव पर लगाना एक बात थी, लेकिन अपनी बेटी के हत्यारे को पकड़ने की धुन में उसने एक और युवा जीवन को खतरे में डाल दिया। यह अक्षम्य था।
उसकी मुट्ठियाँ कस गईं। 'हे भगवान,' उसने फुसफुसाते हुए कहा, 'मैंने क्या कर दिया?'

♦ ♦ ♦

भोर होने से एक घंटा पहले, चंद्रमा अस्त हो चुका था और रात अपने चरम पर थी। लेकिन इस समय भी, तीन नेत्रों वाले भगवान शिव के हजारों भक्त हर सुबह की तरह अंधेरी गलियों से होते हुए गंगा की काली, चिकनी धारा की ओर बढ़ रहे थे।
पवित्र। शाश्वत। स्वर्ग की सीढ़ी।
वे नंगे पैर घाट की प्राचीन पत्थर की सीढ़ियों से नीचे उतरे, जैसे उनके पूर्वज चार सहस्राब्दियों से हर सुबह करते आए थे। कड़ाके की ठंड के बावजूद वे मटमैले पानी में डुबकी लगाने के लिए तैयार थे।
ब्राह्मण पंडित बाँस की छतरियों के नीचे बैठकर भक्तों को चंदन का लेप और सिंदूर बेच रहे थे, ताकि वे स्नान के बाद इसे अपने माथे पर लगा सकें। मंदिरों में घंटियाँ बज रही थीं और नदी में शंख की गूँज सुनाई दे रही थी।
नदी किनारे अंगीठियों के पास साधु बैठे थे, उनके शरीर सफेद राख से लिपटे हुए थे और गले में गेंदे के फूलों की चमकीली नारंगी मालाएँ थीं। वे मंत्रों का जाप कर रहे थे जबकि भीड़ उनके चारों ओर धक्का-मुक्की कर रही थी, कुछ लोग श्रद्धापूर्वक साधुओं के चरणों को स्पर्श कर रहे थे तो कुछ साधुओं द्वारा रौंदे गए धूल का एक मुट्ठी भर हिस्सा उठा रहे थे।
'हरे राम, हरे कृष्ण, हरे ओम।'
वे भोर की प्रतीक्षा कर रहे थे, जो अंधकार पर सूर्य की प्रतीकात्मक विजय का प्रतीक थी।

♦ ♦ ♦

वैलेंटाइन एक गहरी और भयानक नींद से जागी। उसे दीवारों पर कुछ काली परछाइयाँ

हिलती-डुलती सुनाई दीं। पास ही एक गैस का लैंप टिमटिमा रहा था और सुलग रहा था।
उसने अपने हाथ-पैर हिलाने की कोशिश की, लेकिन वे सुन्न और बेकार थे।
उसने याद करने की कोशिश की कि उसके साथ क्या हुआ था। उसने मदद के लिए चिल्लाने के लिए अपना मुंह खोला, लेकिन उसकी जीभ मुंह में भारी सी लग रही थी, और कोई आवाज़ नहीं निकली।
'अरे, तुम जाग गई,' उसने किसी को फुसफुसाते हुए सुना। 'अच्छा। लगभग भोर हो ही गई है।'
उसकी आंखों के सामने एक चेहरा कौंधा। मिशेल।
मिशेल।
उसे याद था।
उसने उठने की कोशिश की, लेकिन व्यर्थ। वह लकवाग्रस्त थी, अपने ही शरीर में कैदी बन चुकी थी।
'यह केटामाइन का एक रूप है,' मिशेल ने कहा। 'मैंने इसे कुछ महीने पहले हांगकांग में खरीदा था। जिस रसायनज्ञ ने मुझे यह बेचा था, उसने कहा था कि यह एक तरह का स्ट्रेटजैकेट है।'
उसने उसके चेहरे पर हाथ फेरा।
'क्या तुम्हें वो दिन याद है जब तुम गई थीं? तुम तब भी बहुत खूबसूरत लग रही थीं, बिल्कुल अभी की तरह। बस तुम्हारी त्वचा थोड़ी पीली थी।' उसने अपनी उंगली उसकी बांह पर फेर दी। 'यह भोर से ठीक पहले का समय था, बिल्कुल अभी की तरह। आज सुबह ठंडक है, लेकिन उस सुबह बहुत गर्मी थी। तुम्हारे स्तनों के बीच ठीक यहीं पसीने की एक बूंद थी। तुम बहुत खूबसूरत थीं, बेहद खूबसूरत। मैं तुम्हें बहुत प्यार करता था, एड्रिएन। तुम मेरी जिंदगी थीं।'
उसकी आवाज इतनी धीमी थी कि उसे सुनने के लिए उसे काफी ध्यान से सुनना पड़ता था।
'तुमने हरे रंग की फ्रॉक पहनी थी, बिल्कुल ऐसी ही।' वैलेंटाइना अपना सिर हिलाकर यह नहीं देख पा रही थी कि उसने क्या किया है, लेकिन उसे एहसास हुआ कि उसने बेहोशी की हालत में उसे कपड़े पहनाए थे।
वह किस बारे में बात कर रहा था?

'मैं तब बेबस थी, बिल्कुल तुम्हारी तरह। तुम्हें मुझे छोड़कर जाने से रोकने के लिए मैं कुछ भी नहीं कर सकती थी।'
वह पागल है।
कल मैंने पवित्र नदी में अपने पाप धो डाले। अब तुम्हारी बारी है। हमें तुम्हें फिर से पवित्र करना होगा।
उसने उसके चेहरे पर कुछ फेंका, एक महीन सफेद लिनेन की चादर। फिर उसने उसे सहजता से बिस्तर से उठाया, दरवाजे तक ले गया और सीढ़ियों से नीचे ले गया।
सड़क पर पहुंचते ही उसे अचानक ठंड का एहसास हुआ, उसने मिशेल को किसी से हिंदी में कुछ कहते सुना। एक आदमी की आवाज सुनाई दी। वहां किसी जानवर की तेज गंध थी।
वैलेंटाइन ने सोचा, एक तांगा। एक टट्टू और गाड़ी। वह मुझे कहाँ ले जा रहा है?
मिशेल ने उसे मुलायम चमड़े की सीट पर लिटाया और उसके बगल में चढ़ गया।
वैलेंटाइन ने गाड़ी को अचानक आगे बढ़ते हुए महसूस किया और फिर वे अंधेरे में आगे बढ़ गए, घोड़ों के खुर पत्थरों पर खट-खट की आवाज़ कर रहे थे।
उसने चीखने की कोशिश की, लेकिन कोई आवाज नहीं निकली।
उसने मिशेल की फुसफुसाहट सुनी: 'मुझे ऐसा करने का खेद है। लेकिन तुमने मुझे धोखा दिया। यह कर्म का फल है। यह नियम है। हमें तुम्हें फिर से पवित्र करना होगा।'
अचानक उसे समझ आ गया। टट्टू वाला उसकी मदद नहीं कर सका क्योंकि उसे लगा कि वह पहले ही मर चुकी है। लिनेन की चादर ही उसका कफ़न थी।
'मैं तुम्हें फिर से पवित्र कर दूंगा,' मिशेल ने कहा। 'मुझ पर भरोसा करो, एड्रिएन। मुझ पर भरोसा करो।'

अध्याय 46

बेदी ने सीढ़ियों पर कदमों की आहट सुनी। वह अपनी चारपाई से उठा और दरवाजे से झाँका। उसने देखा कि एक विदेशी व्यक्ति सफेद कफ़न में लिपटे शव को सीढ़ियों से नीचे ले जाकर इंतज़ार कर रहे तांगे में रख रहा है।
शिवा! उसने उसे अपने ही घर में मार डाला! अगर पुलिस ने उसे अभी पकड़ लिया तो वह बड़ी मुसीबत में पड़ जाएगा। हो सकता है उसे जेल में भी डाल दिया जाए।
उसने पैसे लेने के लिए खुद को कोसना शुरू कर दिया। उसे पुलिस के पास जाकर

इनाम की मांग करनी चाहिए थी। यह बिल्कुल भी अच्छा नहीं था।
उसने विदेशी को ड्राइवर को उसे घाटों पर ले जाने का आदेश देते हुए सुना।
बेदी दुविधा में पड़ गया, एक तरफ तो उसे विदेशियों का डर सता रहा था, वहीं दूसरी तरफ उसे यह भी पता था कि अगर पुलिस को पता चल गया कि उसने उनसे झूठ बोला है तो वे उसके साथ क्या करेंगे। उसने फैसला किया, नहीं। दो हजार रुपये के लिए भी यह बहुत बड़ा जोखिम था।
कुछ ही क्षणों बाद वह अंधेरी गलियों से नंगे पैर दौड़ते हुए पुलिस चौकी की ओर जा रहा था।

♦ ♦ ♦

वैलेंटाइन बेहोशी की हालत में थी। अचानक उसे एहसास हुआ कि बेबी बग्गी का हल्का-हल्का हिलना बंद हो गया है, और उसने महसूस किया कि किसी मजबूत बांहों ने उसे सीट से उठा लिया है। वह जानती थी कि यह मिशेल है, उसकी खुशबू भी उसे पहचान में आ रही थी।
उसे पानी की लहरों की आवाज सुनाई दी। वे जरूर घाटों पर होंगे।
'मैंने जो कुछ भी किया, वह तुम्हारे लिए किया,' मिशेल कह रहा था, 'मैं बस यही चाहता था कि तुम मुझ पर गर्व करो, एड्रिएन।'
एड्रिएन।
उसकी माँ का नाम। उसने उसे उस नाम से क्यों पुकारा? आखिर वह क्या कर रहा था?
स्मृति का एक अंश वापस आ गया, जैसे किसी पुरानी डायरी का फटा हुआ पन्ना। उसने बगीचे में एक जंगली जंगली सूअर की सूंघने की आवाज़ सुनी, सफेद बरामदे पर काली परछाइयाँ दौड़ती हुई देखीं। हवा भुनी हुई मूंगफली की खुशबू से महक रही थी।
उसकी मां बरामदे में सो रही थी। उसके मुंह के कोने पर लार की एक बूंद थी और उसकी सांसों से शराब की गंध आ रही थी।
'मिशेल,' उसने उसे फुसफुसाते हुए सुना, 'मुझे माफ कर दो, मिशेल।'
और फिर उसने आंद्रे गोंडेट की आवाज सुनी। 'मेरे पिता कहते हैं कि तुम मिश्रित नस्ल की हो।'
मिशेल।

यही वह शैतान था जो इतने सालों से उसे सता रहा था।
‘सब ठीक है, एड्रिएन,’ उसने गुनगुनाते हुए उससे कहा। ‘जल्द ही यह सब खत्म हो जाएगा। मैं तुम्हें फिर से पवित्र कर दूंगा।’

♦ ♦ ♦

सार्जेंट मदन लाई अपने दफ्तर के कोने में लकड़ी के पलंग पर सो रहे थे। वे बहुत थके हुए थे। सारा दिन उस मनहूस विदेशी का पीछा करते हुए शहर में घूमते-घूमते उन्होंने अपनी सारी थकान मिटा दी थी। उन्हें रात की ड्यूटी से नफ़रत थी। वे घर पर अपनी पत्नी मोनी के साथ बिस्तर पर सोना ज़्यादा पसंद करते। मोनी के गोल-मटोल शरीर के बारे में सोचते ही उनकी बेचैनी और बढ़ जाती थी।
वह खाकी कुर्ते और शॉर्ट्स पहने सख्त पलंग पर लेटा था, उसकी लाठी उसकी छाती पर टिकी थी। उसे नींद आ गई। उसने कुंडी लगे लकड़ी के दरवाजे पर पहली हल्की दस्तक नहीं सुनी।
बाहर बेदी का डर और गुस्सा बढ़ता जा रहा था।
उसने फिर से दस्तक दी, इस बार और जोर से।
उसने फिर कोशिश की। और फिर से, इस बार अपने मुक्कों से।
सार्जेंट मदन लाई ने एक आंख खोली और आह भरी। फिर वही भयानक धमाके की आवाज आ रही थी।
‘कोई दरवाजे पर है, मोनी,’ उसने धीरे से कहा।
अचानक उसे याद आया कि वह कहाँ है। शिवा! शायद इंस्पेक्टर ही था! वह उछलकर खड़ा हुआ और लड़खड़ाते हुए कमरे के उस पार गया और दरवाजा खोल दिया।
परछाई में खड़े फटे कुर्ते में एक छोटे से भूरे रंग के आदमी को देखकर वह आश्चर्य से पलकें झपकाने लगा। उसने दरवाजे के पास लटके मिट्टी के तेल के लैंप को उठाया और उसकी रोशनी उसके चेहरे पर डाली।
उसने अपनी वर्दी सीधी की और गरिमापूर्ण मुद्रा अपनाने की कोशिश की। 'तुम्हें क्या चाहिए?'
‘वह विदेशी!’ बेदी ने फुसफुसाते हुए कहा। ‘मैंने उसे देखा है!’
‘कौन सा विदेशी?’ मदन लाई ने कहा, नींद से उसका दिमाग अभी भी सुस्त था।
अचानक उसे याद आया। ‘हत्यारा?’

‘जी हां, जी हां! मैं जितनी जल्दी हो सका आ गया। जल्दी आओ!’
'मुझे इंस्पेक्टर को फोन करना होगा,' सार्जेंट ने कहा और जल्दी से अंदर चला गया।

♦ ♦ ♦

क्लार्क के होटल में बुडजिंस्की के कमरे में टेलीफोन की घंटी बजी। उसने बिस्तर के पास रखे लैंप को टटोला, उसे चालू किया और फिर रिसीवर को उसके स्टैंड से उठा लिया।
‘बुडज़िंस्की।’
गुप्ता ने कहा, 'हमने उसे पकड़ लिया है। गाड़ी रास्ते में है। तीन मिनट में लॉबी में पहुंच जाइए।'

♦ ♦ ♦

वैलेंटाइन मिशेल की बाहों में एक गुड़िया की तरह पड़ी थी। उजाला हो रहा था। उसे मंत्रोच्चार की आवाजें सुनाई दे रही थीं और जलते चंदन की खुशबू आ रही थी।
‘क्या यह तैयार है?’ उसने मिशेल को कहते हुए सुना।
'जी साहब,' एक आवाज गुर्राई।
‘डरो मत,’ मिशेल ने कहा। ‘मैं तुम्हें बचा लूंगा।’ उसने महसूस किया कि पतले लिनेन के कपड़े के ऊपर से उसके होंठ उसके गालों को छू रहे हैं।
अलविदा, एड्रिएन।
उसे पास ही जलती हुई सरकंडों की चटकने की आवाज़ और लकड़ी के धुएं की तीखी बदबू सुनाई दी। हे भगवान, यह नहीं!
नहीं, मिशेल।
नहीं कि।

♦ ♦ ♦

बुडजिंस्की नीली पुलिस फिएट की पिछली सीट से उछलकर बाहर आया और अचरज से चारों ओर देखने लगा। हर तरफ पुलिस थी, जो चौंके हुए तीर्थयात्रियों के चेहरों पर टॉर्च की रोशनी डाल रही थी। नदी के किनारे गुस्से भरी चीखें गूंज रही थीं, हर कोई अचानक इतनी बड़ी संख्या में पुलिस की मौजूदगी से भयभीत था।
गुप्ता सिंह उसके बगल में प्रकट हुए। ‘वह घाटों पर कहीं है! हमें जल्दी करनी होगी!’
वे हरि चंद्र घाट पर थे। बुडजिंस्की अंधेरे में बेखबर गंगा की ओर दौड़ पड़ा। दूर क्षितिज पर सूर्य की पहली पीली-चमकीली किरण दिखाई दी, जिससे नदी पर सुनहरी किरणें

पड़ रही थीं।
एक घाट से एक आदमी की तेज आवाज आ रही थी। एक पुलिसकर्मी बेतहाशा सीटी बजा रहा था।
धुएं का एक गुबार हवा में ऊपर उठा।

♦ ♦ ♦

वैलेंटाइन कराह उठा।
हवा के एक झोंके ने उसके चेहरे से चादर हटा दी। उसने अपने चारों ओर चंदन की बंधी हुई गठरियाँ देखीं, जो नारंगी लौ के केंद्र की तरह धुआँ उगल रही थीं। उमड़ते पीले बादल छँट गए, और उसने मिशेल को देखा, जिसका सिर मुंडा हुआ था और उसने केवल एक मोटा सफेद शोक वस्त्र ओढ़ा हुआ था।
उसके पीछे चांडाल खड़ी थी। उसके झुर्रियों से भरे भूरे चेहरे पर frown आ गया। वह अनिश्चितता से उसकी ओर एक कदम बढ़ा।
मैं ज़िंदा हूँ, क्या तुम देख नहीं सकते? मैं ज़िंदा हूँ!
उसने अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति से अपना हाथ हिलाया। इतना ही काफी था कि उसका वजन पलंग के किनारे पर चला गया और वह चादर के नीचे से छूटकर झूलने लगा।
बूढ़ा आदमी घबराकर दहाड़ा, उसकी चीखें नदी के किनारे गूंज उठीं। वह उसे बचाने के लिए उसकी ओर दौड़ा। मिशेल ने उसका रास्ता रोक दिया, और उसने उसके दाहिने हाथ में चाकू की चमक देखी।
जब चांडाल ने देखा कि मिशेल हथियारबंद है, तो वह रुक गया। बूढ़े बैल की तरह दहाड़ते हुए, वह मुड़ा और सीढ़ियों से ऊपर की ओर तेजी से भाग गया।
मिशेल ने चादर वापस अपने चेहरे पर डाल ली। वैलेंटाइन जानती थी कि सब खत्म हो चुका है।
धुएं की दुर्गंध से उसे उल्टी आने लगी। अब उसे आग की लपटों की गर्मी महसूस हो रही थी। काश यह जल्दी खत्म हो जाए, उसने सोचा। बस जल्दी खत्म हो जाए।

♦ ♦ ♦

बुडजिंस्की ने उसे सबसे पहले देखा था।
मुंडा सिर और कमर पर कपड़ा होने के बावजूद, वह उसके खड़े होने के तरीके से ही समझ गया कि यह वही है, मानो वह पूरी दुनिया का मजाक उड़ा रहा हो। यह वही

होना चाहिए था।
फिर उसने बूढ़े चांडाल को घाट पर लड़खड़ाते हुए अपनी ओर आते देखा, जो अर्थी पर सफेद कफन में लिपटी हुई आकृति की ओर इशारा कर रहा था, जो अब पीले धुएं के पर्दे के पीछे लगभग अदृश्य हो चुकी थी।
बुडजिंस्की ने चेतावनी भरी आवाज़ लगाई और सीढ़ियों से नीचे भागा। मिशेल ने ऊपर देखा और उसे पाया। अचानक वह गायब हो गया, भोर के प्रकाश में लुप्त हो गया।
बुडजिंस्की ने पीछा करने की कोशिश नहीं की। उसे वैलेंटाइन तक पहुंचना था।
हे भगवान, मुझे समय पर पहुंचा देना।
उसने खुद को धुएं और आग की लपटों में झोंक दिया और कफ़न में लिपटे हुए शरीर को अर्थी से नीचे खींच लिया।

भाग छह

परीक्षण

अगस्त 1973

अध्याय 47

दिल्ली
भारत में न्याय आसानी से या सस्ते में नहीं मिलता था। अदालतें अत्यधिक बोझ से दबी हुई थीं, एक विशाल और उदासीन नौकरशाही के कारण उनका कामकाज ठप्प था। व्यवस्था विलंब, रिश्वतखोरी और अक्षमता से ग्रस्त थी। दसवीं शताब्दी में शुरू हुआ एक मामला अभी भी लंबित था।
1948 में स्वतंत्रता के बाद ब्रिटिश कॉमन लॉ प्रणाली को बरकरार रखा गया, लेकिन जूरी द्वारा मुकदमे की परंपरा को समाप्त कर दिया गया। इसके बजाय, दोषी या निर्दोष होने का फैसला एक ही न्यायाधीश द्वारा किया जाता था।
भारतीय अदालत में बहुत कम चौंकाने वाली घटनाएं होती थीं और न ही कोई

नाटकीय घटनाक्रम देखने को मिलता था। आरोप तय होने के बाद, पुलिस और लोक अभियोजक प्रथम सूचना रिपोर्ट (एफआईआर) तैयार करते थे। इस एफआईआर में मामले से संबंधित सभी सबूत शामिल होते थे: आरोपी, गवाहों, रोग विशेषज्ञों और पुलिस के बयान, साथ ही साथ बहुत सी निराधार अफवाहें भी।

निचली अदालत के मजिस्ट्रेट यह तय करने के लिए एफआईआर पढ़ते थे कि क्या उनकी राय में प्रथम दृष्टया मामला बनता है। यदि वे सहमत होते, तो मामला सुनवाई के लिए पेश किया जाता था। उस समय तक सभी लोग एफआईआर पढ़ चुके होते थे: बचाव पक्ष और अभियोजन पक्ष के वकील, आरोपी, यहां तक कि प्रेस भी। यह दस्तावेज़ अक्सर सैकड़ों पन्नों का होता था, एक फटा हुआ बंडल जो ढीले ढंग से रस्सी से बंधा होता था, जिसके पन्ने मुड़े हुए, सिकुड़े हुए और दागदार होते थे।

अप्रत्याशित गवाहों को शायद ही कभी पेश किया जाता था, नए सबूत भी शायद ही कभी प्रदर्शित किए जाते थे। इसके बजाय, बचाव पक्ष के वकील ने अभियोजन पक्ष के मामले को निराधार साबित करने का प्रयास किया, जैसा कि एफआईआर में कहा गया है।

मिशेल लगभग एक साल से तिहाड़ जेल की मोटी और बदसूरत दीवारों के पीछे कैद था, और उसकी एकरसता केवल प्रारंभिक सुनवाई के लिए पार्लियामेंट स्ट्रीट की अदालतों में जाने से ही टूटती थी।

हैरानी की बात यह है कि वह वाराणसी में गुप्ता सिंह की पुलिस को चकमा देने में कामयाब रहा। उसे चार दिन बाद कलकत्ता में गिरफ्तार किया गया और उस पर चोरी का पासपोर्ट रखने का आरोप लगाया गया। स्थानीय अधिकारियों को यह समझने में तीन दिन लग गए कि उन्होंने उस व्यक्ति को हिरासत में ले लिया है जिसकी तलाश आधी दुनिया कर रही थी।

इस मामले ने पूरी दुनिया में सुर्खियां बटोरीं। जैसे-जैसे संदिग्ध पीड़ितों की सूची बढ़ती गई, फिलीपींस, हांगकांग, सिंगापुर, मलेशिया और अंत में थाईलैंड से लगभग हर दिन प्रत्यर्पण के आदेश आने लगे।

जनता की दिलचस्पी चरम पर पहुंच गई। अफवाह थी कि मिशेल क्रिश्चियन इक्कीस महिलाओं की मौत के लिए जिम्मेदार था। भारत के रविवार के अखबारों में उसके बारे में लगातार खबरें छपती रहीं। वह एक सेलिब्रिटी बन गया था।

अब, एक साल बाद, तिस हिज़ारी अदालतों की भीड़भाड़ वाली, होगार्थियन

अराजकता में, मिशेल क्रिश्चियन का मुकदमा शुरू होना था।

♦ ♦ ♦

मोहिंदर सिंह ने सफेद रुमाल से अपना चेहरा पोंछा और अपने रंगीन चश्मे को नाक पर थोड़ा ऊपर सरकाया। उन्होंने जज को प्रणाम किया और अपने पहले गवाह का नाम सुनाया।

संजय बेदी अदालत में दाखिल हुए, अचानक उनकी ओर मुड़े चेहरों की भीड़ को देखकर उनकी आंखें उल्लू की तरह झपक रही थीं। ऐसा लग रहा था मानो उन्हें किसी भी क्षण भीड़ के उनके खिलाफ हो जाने का डर सता रहा हो। मोहिंदर सिंह ने अधीरता से मेज पर अपनी तर्जनी उंगली थपथपाई। उन्हें इस बात का डर सता रहा था कि उनका विरोधी उस बेचारे बूढ़े आदमी के साथ क्या करेगा।

♦ ♦ ♦

वहाँ न तो कोई कटघरा था और न ही गवाहों का। सफेद कुर्ते में सजे संजय बेदी, बेंच के चारों ओर जमा वकीलों और कनिष्ठ वकीलों की भीड़ के बीच में खड़े थे। मिशेल उनसे कुछ ही दूरी पर बैठा था, उन्हें घृणा भरी निगाहों से घूर रहा था, इतनी नज़दीक कि मानो उन्हें छू सकता हो। उसने दंडबेरी पहन रखी थी, उसके टखनों में मोटे स्टील के हथकड़े थे जो उसकी बेल्ट से जुड़े दो फुट लंबे डंडे से बंधे थे। उसकी बाईं कलाई एक लंबी जंजीर से एक सैनिक से बंधी हुई थी।

नवाब और उनके साथी मिशेल के बगल में बैठे थे; अभियोजक और उनके कनिष्ठ मौलवी दूसरी तरफ बैठे थे।

'तुम्हारा नाम क्या है?' मोहिंदर ने उससे पूछा।

बेदी ने मिशेल की तरफ देखा और सिहर उठा। वह इससे पहले कभी अदालत में नहीं आया था। उसे पता नहीं था कि यह ऐसा होगा।

'जब मैं यहां से बाहर निकलूंगा तो तुम्हें मार डालूंगा,' मिशेल ने फुसफुसाते हुए कहा।

'आपका नाम क्या है?' मोहिंदर ने दोहराया।

'बी-बेदी, साहब।'

जज मिश्रा आगे की ओर झुके और ऊपर लगे पंखों की तेज आवाज के बीच सुनने की कोशिश करने लगे।

'आपका पूरा नाम,' मोहिंदर सिंह ने कहा।

‘Sanjoy Bedi.’
‘उसने क्या कहा?’ जज मिश्रा ने पूछा।
‘संजय बेदी,’ मोहिंदर ने उनसे कहा। लोक अभियोजक का धैर्य जगजाहिर था। होना ही था। उनका काम तो बस गवाहों को एफआईआर में पहले से दर्ज हर बात को दोहराना था। ‘आपका पेशा क्या है?’
बेदी ने अपना भाषण शुरू किया। उन्हें इसका अभ्यास करने के लिए काफी समय मिला था। मिशेल की तरह, उन्हें भी पिछले एक साल से तिहाड़ में रखा गया था। यह एक प्रथागत प्रक्रिया थी, जिससे प्रमुख गवाहों को इच्छानुसार पेश किया जा सके। एक निर्दोष व्यक्ति को होने वाली इस पीड़ा पर कभी विचार नहीं किया गया।
‘मैं एक ईमानदार आदमी हूँ, साहब—’
‘यह क्या था?’ जज मिश्रा ने पूछा।
‘उसने कहा कि वह एक ईमानदार आदमी है’ मोहिंदर सिंह ने उसे बताया।
‘क्या कभी कोई और तरह का भी था?’ नवाब खिलखिलाकर हँसे और दर्शकों की स्वीकृति के लिए गैलरी की ओर मुड़े। वहाँ हंसी की एक लहर दौड़ गई।
‘हमें पूरा यकीन है कि आप ईमानदार आदमी हैं। लेकिन आपका पेशा क्या है?’ मोहिंदर ने कहा।
‘मेरे पास रेशम का एक बड़ा स्टोर है, साहब।’
‘किस शहर में?’
वाराणसी में।
जज मिश्रा दर्द भरी अभिव्यक्ति के साथ आगे झुके। 'मुझे सुनाई नहीं दे रहा है। गवाह को कहिए कि वह बेंच के करीब खड़ा हो और जोर से बोले।'
अभियोजक ने बेदी को बेंच के पास आने का इशारा किया। बूढ़ा व्यक्ति धीरे-धीरे आगे बढ़ा। वह अब छत से रिसकर आए पानी के एक गड्ढे में नंगे पैर खड़ा था। वह फटेहाल और दयनीय दिख रहा था।
‘तो फिर,’ मोहिंदर सिंह ने पूछा, ‘क्या आप हमें बता सकते हैं कि क्या हुआ था—’
जज मिश्रा ने बीच में ही टोकते हुए कहा, 'जरा रुकिए, शुरू से फिर से शुरू कीजिए। मैंने अभी तक कुछ नहीं सुना है।'
मोहिंदर सिंह ने सिर हिलाया और मुस्कुराया। फिर उसने पूरी ताकत से कहा, 'तो अब आपका पूरा नाम क्या है?'

बारिश फिर से शुरू हो गई। मोहिंदर को अपनी बात सुनाने के लिए चिल्लाना पड़ा। उसने बूढ़े आदमी से जीवनी संबंधी कई सवाल पूछे ताकि उसे सही आवाज़ और स्वर में बोलने की आदत हो जाए। अंत में, उसने कहा:
अब मैं चाहता हूं कि आप अपने बाईं ओर बैठे व्यक्ति को देखें। क्या आपने उसे पहले कभी देखा है?
बेदी ने मुड़कर मिशेल को घूरकर देखा, उसे इस बात की तसल्ली थी कि विदेशी भारी जंजीरों में सुरक्षित रूप से बंधा हुआ था। वह अपनी बांह पर मिशेल की गर्म सांस महसूस कर सकता था।
'तुम तो गए काम से,' मिशेल ने फुसफुसाते हुए कहा।
बेदी को महसूस हुआ कि उसके घुटने जवाब देने लगे हैं।
पीपी ने दोहराया, 'कृपया प्रश्न का उत्तर दें। क्या आपने उसे पहले देखा है?'
जी हाँ, साहब...
कृपया हमें बताएं कि कहाँ और कब।
'वह मुझसे एक कमरा किराए पर लेना चाहता था, साहब। मैंने उसे अपना सबसे अच्छा कमरा दे दिया।'
'मुझे लगता है कि यह शौचालय होगा,' नवाब ने कहा।
मोहिंदर ने जज मिश्रा की ओर देखा, मानो वे हस्तक्षेप करें। लेकिन कोई हस्तक्षेप नहीं हुआ।
'यह घटना 5 जुलाई, 1972 को हुई थी।'
बेदी हिचकिचाया। 'जी साहब।'
और उसने कैसे कपड़े पहने थे?
'उन्होंने पगड़ी पहनी हुई थी, साहब। और धोती और सफेद कमीज भी।'
तो क्या वह भेस बदलकर आया था?
'आपत्ति!' नवाब उछलकर खड़े हो गए। 'मेरे मुवक्किल ने भेस नहीं बदला था। बचाव पक्ष यह साबित करना चाहता है कि प्रश्न में उल्लिखित व्यक्ति मेरा मुवक्किल नहीं था। इसलिए, उसने भेस नहीं बदला था।'
न्यायाधीश मिश्रा इस पर विचार करने लगे। भारतीय अदालतों में गवाही को शब्दशः दर्ज नहीं किया जाता था; बल्कि न्यायाधीश उसे अपनी व्यक्तिगत पसंद के अनुसार संपादित और सेंसर कर देते थे।

‘आपत्ति स्वीकार की गई।’ वह अदालत के क्लर्क की ओर मुड़ा, जो नीली और सुनहरी पगड़ी पहने और घनी दाढ़ी वाला एक सिख था। ‘5 जुलाई, 1972 को पगड़ी और धोती पहने एक आदमी मेरे बोर्डिंग हाउस में आया था। वह कुछ-कुछ प्रतिवादी जैसा दिखता था।’
सिख की पुरानी रेमिंगटन राइफल खड़खड़ाहट के साथ चालू हो गई।
जज मिश्रा ने पब्लिक प्रॉसिक्यूटर की ओर रुख किया और कहा, 'जारी रखें।'
मोहिंदर सिंह ने आह भरी और सिर हिलाया। हालात ठीक नहीं चल रहे थे।
क्या आपने इस महिला को पहले कभी देखा है?
मोहिंदर सिंह ने एक फटा हुआ भूरा फोल्डर उठाया। उन्होंने उसमें से वैलेंटाइन ब्रेटन की एक काली-सफेद तस्वीर निकाली और बेदी को सौंप दी। फिर वह तस्वीर दरबार में घुमाई गई। दर्शक दीर्घा में बैठे लोग और पत्रकार मंडली उस तस्वीर की एक झलक पाने के लिए उत्सुकता से अपनी गर्दनें ऊपर उठा रहे थे।
‘हां,’ बेदी ने कहा। ‘वह इस महिला को होटल लेकर आया था।’
‘इससे वह जरूर प्रभावित हुई होगी,’ नवाब ने मुस्कुराते हुए कहा। उसके चापलूसों ने तुरंत ठहाके लगा दिए।
मोहिंदर सिंह ने न्यायाधीश मिश्रा की ओर विनती भरी निगाहों से देखा, जिन्होंने अब भी जानबूझकर उन्हें अनदेखा कर दिया था। मोहिंदर सिंह ने मन ही मन कड़वाहट से सोचा, क्या वो भी डरे हुए हैं?
उन्होंने आगे कहा, ‘यह 7 जुलाई, 1972 की बात है?’
जी साहब।
'कितने बजे?'
“यह दोपहर का समय था, साहब। मुझे समय का पता नहीं है।”
और फिर क्या हुआ?
‘वह उसे कमरे में ले गया। मैं उनके लिए चाय लेकर आया। उसने ही चाय मंगवाई थी।’
“एक बहादुर आदमी!” नवाब चिल्लाया। फिर हंसी गूंज उठी।
‘और फिर क्या हुआ?’
‘मैंने उसे फिर कभी नहीं देखा, साहब। अगली सुबह—’
जी हां, जी। हम उस पर भी बात करेंगे। मोहिंदर सिंह रुक गए। वे उस व्यक्ति के

बयान के उस हिस्से पर पहुँच गए थे जिस पर उन्हें खुद भी संदेह था। “पुलिस आपसे कब मिलने आई थी?”

बेदी कुछ बुदबुदाया और ज़मीन की ओर देखने लगा। तेज़ बारिश की आवाज़ और नवाब के दो कनिष्ठ वकीलों की आपस में तीखी बहस के बीच सभी लोग उसकी बात सुनने की कोशिश कर रहे थे।

‘पुलिस आपके घर कब आई थी?’

‘मुझे पक्का नहीं पता, साहब।’

‘क्या अभियुक्त लड़की को वापस होटल ले आया था?’

जी हाँ, साहब...

‘उन्होंने आपको इस आदमी की तस्वीर दिखाई?’ मोहिंदर ने मिशेल की ओर इशारा किया।

जी हाँ, साहब...

‘आपने पुलिस को यह क्यों नहीं बताया कि जिस व्यक्ति की वे तलाश कर रहे थे वह आपके घर में रह रहा था?’

बेदी ने भयभीत होकर न्यायाधीश की ओर देखा।

“मैंने उन्हें पहचाना नहीं, साहब। तस्वीर में उन्होंने पश्चिमी कपड़े पहने थे और उनके बाल बहुत काले थे। अगली सुबह ही, जब वे लड़की के साथ चले गए, तब मैंने उन्हें बिना पगड़ी के देखा...”

बूढ़े आदमी की आवाज़ धीमी पड़ गई। मोहिंदर ने नवाब को विजयी मुस्कान के साथ देखा। जज मिश्रा ने कोर्ट क्लर्क की ओर रुख किया। ‘गवाह का कहना है कि जब पुलिस ने उसे तस्वीर दिखाई, तो उसने आरोपी को उस व्यक्ति के रूप में नहीं पहचाना जो उससे कमरा किराए पर ले रहा था। जारी रखें...’

♦ ♦ ♦

ओबेरॉय होटल नई दिल्ली के प्रमुख होटलों में से एक था। एक तरफ गोल्फ कोर्स और दूसरी तरफ हुमायूं का मकबरा स्थित था। इसमें नई दिल्ली का एकमात्र स्काईलाइन कॉकटेल बार, स्काई लार्क, मौजूद था।

जांच अधीक्षक रवि इंजीनियर अपने मेहमान को खिड़की के पास वाली मेज पर ले गए और दो जिन और टॉनिक मंगवाए। इंजीनियर और बुडजिंस्की की मुलाकात दुनिया

भर में पुलिस सम्मेलनों में कई बार हो चुकी थी और इंटरपोल के काम से भारतीय राजधानी की अपनी पिछली दो यात्राओं के दौरान वे पक्के दोस्त बन गए थे। नोएल की हत्या के मामले को इंजीनियर ने ही संभाला था और व्यक्तिगत रूप से उनके शव को पेरिस वापस लाने की निगरानी भी उन्होंने ही की थी।

जब बुडजिंस्की मुकदमे के लिए भारत लौटे, तो इंजीनियर ने उन्हें दिल्ली स्थित अपने घर में रहने के लिए आमंत्रित किया था।

इंजीनियर एक ब्राह्मण थे, दुबले-पतले, तपस्वी, पीली त्वचा और छोटे, भूरे बालों वाले व्यक्ति थे। उन्होंने कैम्ब्रिज में शिक्षा प्राप्त की थी और बुडजिंस्की को वे आज भी ब्रिटिश सेना के मेजर जैसे ही लगते थे। उनकी पतली, कटी हुई मूंछें इस प्रभाव को और बढ़ा रही थीं।

'अच्छा, भारतीय न्याय व्यवस्था के बारे में तुम्हारा क्या विचार है, दोस्त?' उसने बुडजिंस्की से अंग्रेजी में पूछा।

बुडजिंस्की ने जिन की बोतल गटक ली। 'यह कोई मुकदमा नहीं, एक सर्कस है।'

'ओह, मुझे नहीं पता। मुझे लगा कि आज वहां का माहौल काफी शालीन था। कभी-कभी तो हालात बिल्कुल बेकाबू हो जाते हैं।'

'अभियोजक – उसे क्या कहते हैं? पीपी। वो बिलकुल बेवकूफ है।'

नहीं, बस उसमें प्रेरणा की कमी है, बात खत्म। उस काम को करने के लिए प्रेरणा की कमी होना स्वाभाविक है। इसमें उसकी कोई गलती नहीं है।

यह सिलसिला महीनों तक चल सकता है।

'यह संभव है।' इंजीनियर ने खिड़की से बाहर देखा। दूर आसमान में बिजली चमक रही थी।

अगर उन्होंने उसे जाने दिया तो मैं खुद उसे मार डालूंगा। मैं कसम खाता हूं।

'अरे बाप रे! खून-खराबा नहीं, दोस्त। चलो इसे शालीनता से संभालते हैं और यह सुनिश्चित करते हैं कि उसे फांसी दी जाए।'

मुझे परवाह नहीं कि यह कैसे किया जाता है।

'वे उसे दोषी ठहरा देंगे, रेने।'

'वें करेंगे?'

एक और ड्रिंक ले लो। और चिंता मत करो। कल सब ठीक हो जाएगा।

♦ ♦ ♦

यह मुकदमे का दूसरा दिन था।

नवाब अपने आसन से ऐसे धीरे-धीरे उठे जैसे कोई शिकारी पक्षी अपने काले पंख फैला रहा हो। गाउन के नीचे उन्होंने एक बेदाग ढंग से सिला हुआ काला कोट, धूसर धारीदार पतलून और सफेद कॉलर पहना हुआ था। वे बूढ़े रेशम व्यापारी से काफी लंबे थे, और यह अंतर सभी को स्पष्ट था। बेदी, जो पहले से ही बुरी तरह भयभीत थे, बेहोश होने की कगार पर लग रहे थे।

नवाब ने बेदी की लंबी, नुकीली नाक को गौर से देखा। फिर उन्होंने हाथ बढ़ाया और उनके एक कनिष्ठ सहायक ने इशारे पर उनकी हथेली में एक तस्वीर रख दी।

‘क्या यही वह तस्वीर है जो पुलिस ने आपको दिखाई थी?’ उसने कहा।

जी हाँ, साहब...

‘क्या आपने उस समय मेरे ग्राहक को नहीं पहचाना?’

बेदी को बोलने में दिक्कत हो रही थी। 'नहीं, साहब।'

'क्यों नहीं?'

उसके कपड़े। उसके बाल।

‘उसके बालों में क्या अलग था?’

‘यह उचित था। साहब—’

आपने कहा था कि उसने पगड़ी पहन रखी थी।

बेदी को एहसास हुआ कि वह किस जाल में फंस गया है। उसने अपने पैरों की तरफ देखा।

पुलिस के आने से पहले आपने अपने किराएदार को कितनी बार देखा था?

‘मुझे पक्का नहीं पता, साहब...’

एक बार? दो बार? एक दर्जन बार? तीन सौ बार?

बेदी सिर से पैर तक कांप रहा था। मोहिंदर सिंह ने नज़रें फेर लीं। वह यह सब देख नहीं पा रहा था।

'शायद एक दर्जन बार।'

‘क्या वह हमेशा पगड़ी पहनता था?’

जी हाँ, साहब...

‘लेकिन आपको उसके बालों का रंग तो पता था?’ बेदी ने कोई जवाब नहीं दिया।

नवाब ने विजयी भाव से कमरे में चारों ओर देखा। 'ठीक है, तो फिर आपने कब तय किया कि आपका किराएदार ही वह आदमी है जिसे पुलिस ढूंढ रही है?'
'अगली सुबह, साहब।'
'उस समय क्या समय हुआ था?'
'मुझे यकीन नहीं है ...'
'आप शाम पांच बजे पुलिस स्टेशन पहुंचे। जब आपको पता चला कि आपका किराएदार वही व्यक्ति है जिसकी पुलिस तलाश कर रही है, तो आप सीधे वहीं गए?'
जी साहब।
लेकिन उस समय तो अंधेरा होता है, है ना?
नोड।
'क्या तुम सो नहीं रहे थे?'
'मैं जाग गया, साहब। मैंने उन्हें सीढ़ियों पर इधर-उधर घूमते सुना।'
'और आपने उसे घोर अंधेरे में तुरंत पहचान लिया, जबकि इससे पहले आप दिन के उजाले में भी उसे एक दर्जन बार पहचानने में नाकाम रहे थे? क्या यह सही है?' बेदी ने कोई जवाब नहीं दिया। 'मैंने कहा - क्या यह सही है?'
बेदी मानो टूटकर बिखरने वाले थे। वे दृढ़ता से फर्श की ओर देखते रहे, एक शब्द भी बोलने में असमर्थ।
मोहिंदर नवाब द्वारा अंतिम प्रहार किए जाने का इंतजार कर रहा था।
'यह सब 8 जुलाई, 1972 को हुआ था। क्या यह सही है?' जब बेदी ने कोई जवाब नहीं दिया तो नवाब चिल्लाया: 'यह तुम्हारी गवाही में है! तुमने कहा था कि जिस आदमी को तुम मेरा मुवक्किल समझ रहे थे, वह 8 जुलाई, 1972 को कफ़न में लिपटी लाश को घाटों पर ले गया था।' उसने बूढ़े हिंदू के चेहरे के सामने फटी हुई एफआईआर लहराई। 'यह इसमें है! तो?' बेदी ने सिर हिलाया। 'ज़ोर से बोलो! जज तुम्हें सुन नहीं पा रहे!'
जी जी, साहब...
'आज कौन सा दिन है?'
'मुझे नहीं पता,' बेदी ने धीरे से कहा।
नवाब जीत की चमक से दमकते हुए अदालत की ओर मुड़ा। 'उसे पता नहीं है।' उसने कमर पर हाथ रखकर एक कदम आगे बढ़ाया। 'तुम्हारी पूरी गवाही झूठ का पुलिंदा है,

है ना?' नवाब चिल्लाया।
बेदी ने सिर हिलाया। 'जी साहब।'
मोहिंदर सिंह कराह उठा और उसने अपना सिर अपने हाथों में रख लिया।

अध्याय 48

बुडजिंस्की पुरानी दिल्ली में इंजीनियर के विला की बालकनी पर बैठे थे। बगीचा गुड़हल के फूलों से जगमगा रहा था। मैनाएं ऊंची दीवारों पर मंडरा रही थीं और एक बुलबुल चिड़ियों के झुंड के साथ चूने के पेड़ पर पहरा दे रही थी। सुबह सुहावनी और धूप से भरी थी, लेकिन क्षितिज पर दोपहर के तूफान के लिए क्यूमुलस बादलों के गुच्छे जमा हो रहे थे।
एक नौकर नींबू पानी का घड़ा लेकर आया। इंजीनियर ने माफी मांगते हुए मुस्कुराते हुए कहा, 'माफ़ कीजिए। मैं नौकरों के सामने शराब नहीं पीता।'
बुडजिंस्की ने अपने ही विचारों में खोए हुए कंधे उचका दिए।
इंजीनियर को उसकी चिंता सता रही थी। उसका वज़न बहुत कम हो गया था। पहले वह तंदुरुस्त दिखने के बजाय दुबला-पतला और बूढ़ा लग रहा था। चलते समय उसमें पहले जैसी फुर्ती नहीं रही थी। एक समय रेने बुडजिंस्की किसी बलि के बकरे जैसा था। अब वह किसी पुरानी लकड़ी जैसा था जिसे घुटने पर रखकर तोड़ा जा सकता था।
‘आप उसके बारे में क्या सोचते हैं?’ बुडजिंस्की ने अचानक कहा।
'यह कहना मुश्किल है। मैं मनोविज्ञान को विशेषज्ञों पर छोड़ देता हूं।'
‘औरतें अब भी उसकी चापलूसी करती हैं। कल अदालत में मैंने एक लड़की को देखा - एक गोरी लड़की, एक पश्चिमी महिला - उसने उसे फूल फेंका। उसने बीस महिलाओं को मार डाला है! इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। औरतें अब भी उसे किसी फिल्म स्टार की तरह मानती हैं।’ उसने पेश किए गए नींबू पानी को अनदेखा कर दिया। ‘क्या आप मुझे तिहाड़ जेल भिजवा सकते हैं?’
'क्यों?'
‘मैं उससे बात करना चाहता हूँ। मैं नोएल के बारे में जानना चाहता हूँ... मुझे समझना होगा, नहीं तो मैं पागल हो जाऊँगा।’
मुझे खेद है। यह मेरे बस में नहीं है। अगर मैं ऐसा कुछ कर भी सकता, तो भी मैं ऐसा

नहीं करता। मैं तुम्हें अपने साथ ऐसा करने नहीं दूंगा।'
'तुम किस बारे में बात कर रहे हो?'
‘कितनी देर तक तुम सिर्फ बातें करते रहोगे, इससे पहले कि तुम उसका गला पकड़ लो? फिर पुलिस तुम्हें भी जेल में डाल देगी।’
यह फायदेमंद होगा।
मुझे नहीं लगता।
बुडजिंस्की ने अपनी कमीज की जेब में रखी सिगरेट निकाली और एक सिगरेट जलाई। उसके हाथ कांप रहे थे। 'क्या तुम्हें लगता है कि वह पागल है?'
‘शायद। उन सभी महिलाओं की हत्या करना... ऐसा करने के लिए कोई आदमी पागल ही होगा। लेकिन उसकी डकैतियों में एक तरह की शातिर चालाकी है। मुझे नहीं लगता कि वह पागल है, मुझे लगता है कि उसमें आत्मा ही नहीं है। हम मानते हैं कि हर इंसान में आत्मा होती है, लेकिन मुझे नहीं लगता कि यह सच है।’
'जारी रखें।'
‘एक आत्माविहीन व्यक्ति आकर्षक और मोहक बनना सीख सकता है। आखिरकार, ये तो सामाजिक कौशल ही हैं। वह अपने दिमाग का इस्तेमाल दूसरों की तुलना में कहीं अधिक कुशलता से कर सकता है क्योंकि वह भावनाओं से मुक्त होता है। फिर भी, जब बात सहानुभूति और करुणा महसूस करने की आती है, तो वह ऐसा नहीं कर पाता। इस लिहाज से, उसका उद्धार असंभव है।’
फिर भी, वैलेंटाइन के साथ वह भावनाओं के बहकावे में आ गया। इसी वजह से अंत में वह पकड़ा गया।
‘अरे, वो महिला। क्या आपको पता है कि वो अब कहाँ है?’
‘नहीं,’ बुडजिंस्की ने कहा। ‘वह गायब हो गई है।’

♦ ♦ ♦

यह मुकदमे का चौथा दिन था।
मोहिंदर सिंह ने अपने दूसरे गवाह, वाराणसी के उस बूढ़े चांडाल को बुलाया था। वह गंदे सूती पजामे में लिपटा हुआ था और उसकी पगड़ी मैली-कुचैली थी। वह एक हरिजन था और वकीलों और उनके चापलूसों का समूह उससे मुंह फेरकर पीछे हट गया।

मोहिंदर सिंह बड़े आत्मविश्वास के साथ उठे। उन्हें पूरा यकीन था कि आज का दिन बहुत अच्छा जाएगा। 'आपका नाम क्या है?'

‘रणवीर लक्ष्मण।’ उस व्यक्ति की आवाज़ दमदार, गहरी और आत्मविश्वास से भरी थी। निम्न जाति से होने के बावजूद, उसने एक शांत गरिमा बनाए रखी।

'आपका व्यवसाय क्या है?'

'मैं हरिचंद्र घाट का चांडाल हूं, साहब।'

बेदी की तरह ही, मोहिंदर ने उस व्यक्ति से सहजता का परिचय कराने और बातचीत को आगे बढ़ाने के लिए कई सामान्य जीवनी संबंधी प्रश्न पूछे। फिर उन्होंने मिशेल की ओर इशारा करते हुए पूछा, 'क्या आपने इस व्यक्ति को पहले कभी देखा है?'

लक्ष्मण ने धीरे से अपना सिर घुमाया और मिशेल की ओर देखा। मिशेल ने भी उनकी आँखों में देखा। 'जी साहब...'

आपने उसे कब देखा था?

'यह उस महिला को जान से मारने की कोशिश करने से एक दिन पहले की बात है।'

नवाब लकड़ी की बेंच पर ऐसे आराम कर रहे थे जैसे कोई रोमन सीनेटर किसी अय्याशी भरी पार्टी में बैठा हो। अचानक वे ऐसे उछल पड़े जैसे उन्हें किसी ने डंक मार दिया हो। 'आपत्ति!'

जज ने सिर हिलाया। 'मंजूर।'

मोहिंदर सिंह ने जल्दी से सिर हिलाया। 'अपराध होने से एक दिन पहले। 7 जुलाई, 1972। क्या यह सही है?'

लक्ष्मण ने सिर हिलाया। 'जी साहब।'

और वह आपसे मिलने क्यों आया था?

उन्होंने कहा कि उनकी पत्नी की मृत्यु हो गई है। वे चाहते थे कि उनके शरीर को घाटों पर जलाया जाए और उनकी राख को गंगा माता में विसर्जित किया जाए।

‘क्या आपको यह अजीब नहीं लगा? एक यूरोपीय से इस तरह का अनुरोध?’

मुझे नहीं पता था कि वह यूरोपीय है। उसने पगड़ी और धोती पहन रखी थी। मुझे लगा कि वह हिंदू है।

नवाब उछलकर खड़े हो गए। 'आपत्ति! बचाव पक्ष का कहना है कि गवाह जिस व्यक्ति का जिक्र कर रहा है वह हिंदू था।'

'अनुमत।'

पीपी ने आगे सवाल किया, 'तो क्या व्यवस्थाएं कर ली गई थीं?'
जी साहब।
और आपने उसे अगली बार कब देखा?
“अगली सुबह, साहब। वह उस महिला को लेकर आया। वह एक सफेद चादर में लिपटी हुई थी। वह उसे अपनी बाहों में उठाकर सीढ़ियों से नीचे ले गया। मुझे कुछ भी गलत नहीं लगा।”
'तब क्या हुआ?'
लक्ष्मण ने मिशेल की ओर देखा, गले से कुछ बलगम निकाला और सीधे अपने पैरों के बीच थूक दिया। आसपास खड़े वकीलों ने गर्दन उठाकर पान के रंग के उस थूक के धब्बे को ऐसे देखा मानो वह कोई नया सबूत हो।
न्यायाधीश ने कहा, 'गवाह अदालत में थूकने से परहेज करेगा।'
‘फिर क्या हुआ?’ मोहिंदर सिंह ने उससे पूछा।
‘उसने उसे पलंग पर लिटाया और आग जला दी गई। तभी चादर हटी और मैंने उसका चेहरा देखा। उसके होंठ हिले। मुझे एहसास हुआ कि वह अभी भी जीवित है।’
‘क्या आपने तब उस महिला को बचाने की कोशिश की?’
जी साहब।
और क्या इसके बाद प्रतिवादी ने आपको उसे पैलेट से हटाने से रोकने के लिए हस्तक्षेप किया?
‘उसने मुझे चाकू से धमकाया। इसलिए मैं मदद लेने के लिए भागा।’
‘और इसी समय पुलिस मौके पर पहुंची?’
जी साहब।
‘धन्यवाद। आपका गवाह।’

♦ ♦ ♦

नवाब न्यायाधीश की पीठ के नीचे स्थित अपने स्थान से शान से उठे और प्रेस गैलरी की ओर चल पड़े। वे कुछ क्षण के लिए एक तरफ खड़े रहे, ताकि दरबारी पत्रकार जो जल्दी-जल्दी रेखाचित्र बना रहे थे, उन्हें सुविधा हो सके। फिर वे लक्ष्मण की ओर मुड़े।
'क्या आपको यकीन है कि मेरा ग्राहक वही व्यक्ति है जिसे आपने उस सुबह घाटों पर देखा था?'

जी साहब।
‘बिल्कुल उसके जैसा?’
नहीं, बिलकुल नहीं। उसने पगड़ी और धोती पहन रखी थी और—’
‘तो तब वह बिल्कुल अलग दिखते थे?’
लक्ष्मण को समझ नहीं आ रहा था कि क्या जवाब दें। जज मिश्रा ने कोर्ट स्टेनोग्राफर की ओर रुख किया। 'गवाह ने कहा कि अपराध से एक दिन पहले उसने जिस व्यक्ति को देखा था, वह आरोपी से बिल्कुल अलग था।'
रेमिंगटन इंजन खड़खड़ाहट के साथ चालू हो गया।
जज मिश्रा ने कहा, 'जारी रखें।'
मोहिंदर सिंह ने अपना सिर हिलाया।
नवाब ने उत्साह से आगे बढ़ते हुए पूछा, 'हर साल कितने हिंदू आपकी सेवाओं के लिए आपके पास आते हैं?'
‘मुझे नहीं पता, साहब।’
‘सैकड़ों?’
‘बहुत सारे।’
'बहुत सारे। और आपको धोती पहने एक साधारण दिखने वाला आदमी याद होगा।'
'जो व्यक्ति आपको चाकू से धमकाता है, उसे आप कभी नहीं भूलते।'
‘अहा, मैं समझ गया,’ नवाब ने कहा और भौंहें चढ़ा लीं, मानो समझने की बहुत कोशिश कर रहे हों। ‘तो आप यह कह रहे हैं कि आपको वह घटना अगली सुबह से ही याद है, जब यह सब हुआ था।’
लक्ष्मण हिचकिचाया, अब वह अनिश्चित था।
‘हां,’ लक्ष्मण ने कहा।
‘यह कितने बजे का समय था?’
'भोर हो जाओ, साहब।'
‘भोर। तो अंधेरा था?’
जी हाँ, साहब, लेकिन—’
तो आप यह कह रहे हैं कि आपको लगता है कि मेरा मुवक्किल वही आदमी था जिसे आपने उस सुबह घाट पर देखा था, बारह महीने से भी अधिक समय पहले अंधेरे में घटी एक घटना की आपकी स्मृति के आधार पर?

मुझे पूरा यकीन है कि यही वह व्यक्ति है।
‘लेकिन आपने तो हमें पहले ही बता दिया है कि यह अपराध सूर्योदय से पहले हुआ था। आपकी दृष्टि तो वाकई असाधारण है।’ नवाब ने मुँह फेर लिया और दरबार के प्रवेश द्वार के ऊपर दीवार पर टंगी घड़ी की ओर इशारा करते हुए पूछा, ‘कितने बजे हैं?’
लक्ष्मण ने कमरे में इधर-उधर देखते हुए कहा, 'मुझे... मुझे नहीं पता।'
पौने एक बज रहे हैं। और घड़ी मात्र पच्चीस गज दूर है। आपकी दृष्टि वाकई असाधारण है। असाधारण रूप से कमजोर। और कोई सवाल नहीं।

♦ ♦ ♦

‘मैं एंड्रयू रोसेन को फोन करता हूँ।’
अमेरिकी नागरिक अदालत में सुस्त चाल से दाखिल हुआ, उसके पतले सुनहरे बाल कंधों तक लटके हुए थे और चेहरे पर हल्की दाढ़ी थी। भारतीय जेलों में लंबे समय तक रहने के दौरान उसका वजन कम हो गया था और उसकी फटी हुई सफेद सूती कमीज उसके कंधों पर ढीली लटक रही थी।
अदालत कक्ष में अपनी जगह लेते समय उसने मिशेल की नजरों से बचने की कोशिश की।
मोहिंदर सिंह ने अपना चश्मा लगाया और अपने मुकदमे के नोट्स देखे।
'आपका क्या नाम है?'
‘एंड्रयू रोसेन।’
आपकी राष्ट्रीयता क्या है?
‘अमेरिकी।’
‘आप संयुक्त राज्य अमेरिका से हैं?’
'हाँ।'
‘और आपका पेशा क्या है?’
'मैं एक छात्र हूँ।'
‘हा!’ नवाब ने अपनी जैकेट से रुई का एक टुकड़ा निकाला और गवाह के पैरों के पास गिरा दिया। मोहिंदर ने इस दखल को अनसुना कर दिया, क्योंकि अब तक वह समझ चुका था कि उसे जज से कोई मदद नहीं मिलेगी।
उन्होंने मिशेल की ओर इशारा करते हुए कहा, 'इस आदमी को देखो।'

एंडी ने खुद को मजबूर करके पीछे मुड़ा। मिशेल उसकी ओर झुका और फुसफुसाते हुए बोला, 'मैं तुम्हारे अंडकोष काट कर तुम्हारे गले में ठूंस दूंगा।'
क्या आप उसे पहचानते हैं?
एंडी को बोलने में बहुत मुश्किल हो रही थी। उन्होंने वादा किया था कि अगर वह गवाही देगा तो उसे रिहा कर देंगे। वह तिहाड़ जेल में और पाँच साल नहीं गुजार सकता था। उसे यह करना ही था।
मैंने पूछा, क्या आप उसे पहचानते हैं?
'हाँ।'
आपने उसे पहले कहाँ देखा है?
'बॉम्बे में। हम एक ही सेल में रहते थे।'
'आप दोनों बॉम्बे बंदरगाह की जेल में एक ही सेल में साथ थे, क्या यह सही है?'
'हाँ।'
‘क्या आप हमें बता सकते हैं कि आपको उनके बारे में क्या याद है?’
‘खैर, वह काफी हिंसक था। उसने इस आदमी की हत्या कर दी। एक कनाडाई।’
‘क्या उसने किसी की हत्या की?’
नवाब उठे और अपने गाउन को विशाल पंखों की तरह फैला लिया। 'आपत्ति!'
“खैर, मैंने उसे ऐसा करते नहीं देखा। यह जेल में फैली एक अफवाह थी। लोगों ने कहा कि उसने शौचालय में एक आदमी को घेर लिया और उसका सिर कंक्रीट के ब्लॉक पर पटक दिया।”
‘कैदी के बारे में आपको और क्या याद है?’
'खैर, वह जेल से बाहर निकलने के लिए काफी बेचैन था।'
क्या इसका कोई विशेष कारण था?
'हां। उसने कहा कि उसे अपने पिता से हिसाब बराबर करना है।'
‘उसका बूढ़ा आदमी?’
उसके पिता ने कहा था कि वह उसे मार डालेगा।
मोहिंदर सिंह ने आत्मविश्वास से भरे होकर अपने अंगूठे अपनी जैकेट की जेबों में डाल लिए। नवाब अपनी कुर्सी से आधा उठा और फिर अपना इरादा बदल लिया।
आपने उसे आखिरी बार कब देखा था?
‘ठीक पहले... वह...’

'घोषित करना।'
‘भागने से ठीक पहले’।
‘उसके भागने से ठीक पहले। क्या आपने यही कहा था?’
'हाँ।'
तो क्या यह आदमी भागा हुआ अपराधी है?
‘उन्होंने उसे किसी भी चीज़ के लिए दोषी नहीं ठहराया, यार...’
और कैदी ने बॉम्बे जेल से कब भागने की कोशिश की?
‘यह जनवरी 1968 की बात है।’
‘धन्यवाद। आपका गवाह।’
नवाब सो गए प्रतीत हो रहे थे। कुछ क्षण बाद उन्होंने नाटकीय अंदाज़ में जम्हाई ली, अपने हाथ-पैर फैलाए और फिर धीरे-धीरे उठे, मानो उठना उनके लिए बहुत मुश्किल हो। उन्होंने एंडी रोसेन को काफी देर तक ऐसे देखा जैसे वह कोई ऐसी चीज़ हो जो उन्हें अभी-अभी किसी चट्टान के नीचे मिली हो।
'आपकी आयु कितनी है?'
‘तेईस, यार।’
‘तेईस। क्या आपने कभी काम किया है?’
'क्या?'
मैंने पूछा, क्या तुमने कभी काम किया है? क्या तुम्हारे पास कोई नौकरी थी?
मैंने तुम्हें बताया था, मैं एक छात्र हूँ।
'उसने क्या कहा?' जज मिश्रा ने गर्दन झुकाते हुए कहा।
नवाब ने बताया, 'उसने कहा कि वह तेईस साल का है और उसने अपने जीवन में कभी एक दिन भी काम नहीं किया है।'
जज मिश्रा ने इस बात को शब्दशः अदालत के स्टेनोग्राफर को दोहराया।
‘आपका वर्तमान पेशा क्या है?’
‘हे भगवान, ये क्या है?’ एंडी ने पीपी से गुहार लगाई, जिसने बेबसी से कंधे उचका दिए।
क्या आपका वर्तमान में कोई पेशा है?
‘तुम्हें पता है मैं ऐसा नहीं करता। मैं तिहाड़ जेल में हूँ।’
‘आप दिल्ली में यहीं जेल में हैं।’

'हाँ।'
‘किस अपराध के लिए?’
मुझे कब्जे के आरोप में पकड़ा गया।
जज मिश्रा ने भौंहें चढ़ाकर नवाब की ओर देखा।
उन्हें मादक पदार्थों के कब्जे के आरोप में गिरफ्तार किया गया था।
‘वो कोई खतरनाक ड्रग्स नहीं थे, यार। बस कुछ मामूली सी बुद्धा स्टिक्स थीं।’
जज मिश्रा ने स्टेनोग्राफर को लिखवाया, 'गवाह को हेरोइन की आपूर्ति करने के आरोप में गिरफ्तार किया गया था।'
‘आप दिल्ली में कितने समय से जेल में हैं?’
दो साल।
और आपको पांच साल और सेवा करनी है।
'हाँ।'
और उससे पहले आप बंबई की जेल में थे।
‘यह सिर्फ कुछ महीनों के लिए था। उसके बाद मैं वापस अमेरिका चला गया।’
और जब आप भारत वापस आए तो आपको फिर से नशीली दवाओं के सेवन के आरोप में गिरफ्तार कर लिया गया?
'हां, मुझे बुरे कर्मों का फल मिला है।'
‘आप कब से ड्रग्स ले रहे हैं?’
मुझे नहीं पता यार। शायद पंद्रह या सोलह साल की उम्र से ही।
‘कब से?’ जज मिश्रा ने पूछा।
‘महाराज, जब से वह छोटा बच्चा था,’ नवाब ने समझाया। फिर वह उस युवा अमेरिकी की ओर मुड़ा। ‘तो क्या आप नशे के आदी हैं?’
‘क्या हर कोई ऐसा नहीं है?’
‘और क्या आपको अक्सर मतिभ्रम होता है?’
नहीं यार, मुझे मतिभ्रम नहीं होता। ये क्या है?
तो आप ड्रग्स क्यों लेते हैं?
‘यह एक अच्छी यात्रा है। इससे अच्छा महसूस होता है। इससे दुनिया और भी बेहतर जगह बन जाती है, है ना?’
तो क्या आप ड्रग्स इसलिए लेते हैं क्योंकि इससे दुनिया के प्रति आपकी धारणा बदल

जाती है?
'हाँ मैं अनुमान करता हुँ।'
'तो क्या नशे के आदी होने के कारण आप ऐसी चीजें देख पाते हैं जो दूसरे लोग नहीं देख पाते?'
‘अरे देखो, मैंने ऐसा नहीं कहा था…’
‘पुलिस ने आप पर इस मामले में गवाह बनने के लिए दबाव डाला था। क्या यह सही नहीं है?’
यह बात बिल्कुल सच थी। कोई और रास्ता नहीं बचा था। उसके पिता ने उसकी मदद करने से साफ इनकार कर दिया था। उन्होंने यह बात स्पष्ट कर दी थी। "तुम मेरी प्रतिष्ठा पर धब्बा हो और अपने परिवार पर बोझ हो। अब सबक सीखने का समय आ गया है।" यह बात दो साल पहले की है। मानो दो सौ साल बीत गए हों।
वह तिहाड़ में और पांच साल नहीं गुजार सकता था।
नहीं, उन्होंने मुझ पर दबाव नहीं डाला।
नवाब मुस्कुराया। 'सच में? मुझे बताइए कि तिहाड़ जेल कैसी है।'
एंडी अचानक हुए इस बदलाव से हैरान रह गया। 'यह तो एकदम घटिया जगह है।'
'मैं क्षमा चाहता हूँ?'
‘ये तो नरक है, यार।’
‘वे तुम्हें क्या खिलाते हैं?’
‘आपको दिन में एक बार एक चपाती और आधा कप दूध मिलता है। और शायद थोड़ी दाल भी। अगर आपके पास पैसे नहीं हैं तो आप भूखे मरेंगे। गार्ड आपसे हर चीज़ का पैसा वसूलते हैं।’
‘और क्या आपका कमरा आरामदायक है?’
‘मैं सर्दी-गर्मी में एक घटिया कंबल ओढ़कर पत्थर के फर्श पर सोता हूँ। हर जगह चूहे ही चूहे हैं।’ एंडी की आँखों में आँसू आ गए। उसका धैर्य जवाब दे रहा था। ‘ये बहुत बुरा हाल है यार। तुम सोच भी नहीं सकते कि ये कितना बुरा है।’
मुझे लगता है कि कोई भी व्यक्ति ऐसी स्थिति से निकलने के लिए कुछ भी करेगा।
‘अगर मैं अपनी माँ को भी बेच दूँ तो—’ एंडी रुक गया। उसने पीपी की तरफ देखा, लेकिन वह छोटा भारतीय फर्श की ओर घूर रहा था।
नवाब ने कहा, 'कितने सौभाग्य से आपको इतनी दूर नहीं जाना पड़ा। यह आदमी दूर

का रिश्तेदार भी नहीं लगता। और कोई सवाल नहीं।'

अध्याय 49

यह मुकदमे का पांचवा दिन था।

हालात ठीक नहीं थे। नवाब ने अपनी प्रतिष्ठा के अनुरूप ही काम किया, अभियोजन पक्ष के गवाहों को अपने इशारों पर नचाते हुए और धमकाते हुए, इस तरह से पेश किया कि जब तक उनका काम खत्म हुआ, ठोस सबूत महज अटकलें, कल्पना या मनगढ़ंत बातें बनकर रह गए थे।

बुडजिंस्की दिन-ब-दिन अदालत में बैठा रहता था, उसके भीतर एक बेबस गुस्सा पनप रहा था। वह कमीना ऐसा लग रहा था मानो बच निकलेगा।

कुछ तो होना ही था।

♦ ♦ ♦

मोहिंदर सिंह का कार्यालय पार्लियामेंट स्ट्रीट कोर्ट के बगल में एक प्राचीन इमारत में था। बुडजिंस्की उन दरवाजों के पास से गुजरे जिन पर लिखा था, 'वी.एस. सुब्रमणियन, बीए (ऑक्सफोर्ड) एलएलबी एडवोकेट, हाई कोर्ट' और 'डी.के. चंद्रशेखर एडवोकेट, शपथ आयुक्त, पूर्व अभियोजन उप अधीक्षक, पुलिस। सम्मान: राष्ट्रपति पदक, पुलिस और अग्निशमन सेवा पदक।'

सीलन से भरे दफ्तरों के तहखाने में चमकीले रंग की साड़ियों में सजी स्टेनोग्राफरों की भीड़ लगी हुई थी, गलियारे सफेद पजामे पहने फाइलों को पकड़े संदेशवाहकों से भरे हुए थे। बारिश से भीगी सड़कों पर वकीलों के जूते गीले होने से बचाने के लिए कुली उन्हें पीठ पर लादकर प्रवेश कक्ष तक ले जा रहे थे।

मोहिंदर सिंह का कार्यालय तीसरी मंजिल पर था। दरवाजे पर केवल इतना लिखा था, 'मोहिंदर सिंह, लोक अभियोजक'। दरवाजा आधा खुला था और लोक अभियोजक अपनी मेज पर कुछ कागजों पर झुके हुए थे। उनकी हल्के नीले रंग की पगड़ी थोड़ी टेढ़ी थी। वे बड़ी मेहनत से अपनी पेंसिल की नोक तेज कर रहे थे।

बुडजिंस्की ने दरवाजा धक्का देकर खोला और अंदर चला गया।

‘श्रीमान सिंह,’ उन्होंने कहा।

पुलिस अधिकारी उसे देखकर जरा भी आश्चर्यचकित नहीं हुआ। उसने लकड़ी की

कुर्सी की ओर हल्के से इशारा किया। 'बैठ जाइए, महोदय।' वह उठा नहीं और अपने काम में लगा रहा।
बुडजिंस्की बैठ गए और चारों ओर देखा। दफ्तर तंग था, हर दीवार पर अलमारियों में कानून की किताबें और फाइलें ठसाठस भरी हुई थीं।
'मैं तुम्हारे सर के लिए क्या कर सकते हैं?'
बुडजिंस्की ने अंग्रेजी में कहा: 'मैं जानना चाहता हूं कि आप मुझे गवाही देने के लिए कब बुलाएंगे।'
‘सब कुछ सही समय पर होगा, महोदय, सब कुछ सही समय पर होगा।’
‘मैं साफ-साफ कहता हूँ।’ बुडजिंस्की आगे झुके और अपनी बात पर ज़ोर देने के लिए अपनी तर्जनी उंगली से मेज के किनारे को थपथपाया। ‘हम यह केस हार रहे हैं।’
‘हम’, महोदय?’
‘देखो, मैं पूरी जिंदगी पुलिसवाला रहा हूँ। मैंने बहुत सारे आपराधिक मुकदमे देखे हैं। मुझे पता है कि कब कोई मामला गड़बड़ हो रहा है।’
'बहुत बुरा हुआ। मैं इस शब्द से परिचित नहीं हूँ। क्या यह फ्रेंच शब्द है?'
'मिस्टर सिंह, मामला हाथ से छूट रहा है। मैं हर दिन उस अदालत में बैठकर यह तमाशा देखता हूँ और मुझे विश्वास नहीं हो रहा कि क्या हो रहा है। वह आदमी चोर, हत्यारा और क्रूर है और आप उस चालाक वकील को अपने ऊपर हावी होने दे रहे हैं।'
‘क्या आपको लगता है कि आपकी गवाही से स्थिति बदल जाएगी?’
'हां, मुझे लगता है ऐसा होगा।'
‘ठीक है। महोदय, मुझे एक बात बताइए, मैंने सुना है कि आपको हाल ही में नौकरी से बर्खास्त कर दिया गया है। आप अंतर्राष्ट्रीय पुलिस आयोग में कप्तान थे, है ना?’
‘इंटरपोल। और मुझे बर्खास्त नहीं किया गया था। यह समय से पहले सेवानिवृत्ति थी। स्वास्थ्य कारणों से।’
‘मैं देख रहा हूँ कि आप अभी भी इस बारे में रक्षात्मक रुख अपना रहे हैं, इसलिए मैं इस मुद्दे को ज़्यादा नहीं खींचूँगा। लेकिन अगर मैं, एक साधारण सा सरकारी वकील, आपसे ऐसी प्रतिक्रिया प्राप्त कर सकता हूँ, तो आप मेरे प्रतिभाशाली सहयोगी, नवाब का सामना कैसे करेंगे?’
बुडजिंस्की हताश होकर अपनी कुर्सी पर पीछे झुक गए। 'मुझे खेद है। बात बस इतनी सी है कि मेरी बेटी...'

'मैं जानता हूं कि मैं अपने प्रतिष्ठित सहकर्मी की अदालती हरकतों की बराबरी नहीं कर सकता। लेकिन अभी निराश मत होइए, महोदय। मेरे पास अभी भी एक तुरुप का पत्ता बाकी है।'
'क्या यह ऐसी कोई बात है जो एफआईआर में दर्ज नहीं है?'
'शायद। आप देखेंगे।'

♦ ♦ ♦

बुडजिंस्की केले के पेड़ों पर गिरती बारिश की आवाज़ सुन रहा था। उसकी बगल और पीठ पर खुजली हो रही थी, जिसे वह चिड़चिड़ाकर खुजला रहा था। बगीचे की दीवार के उस पार, सड़क अचानक आई तेज़ बारिश से लबालब भरी हुई थी। उसने एक आदमी को अपनी धोती समेटकर सड़क पार करते देखा, जिसने दूसरे हाथ से अपने सिर पर एक काली छतरी पकड़ रखी थी।
मौसम भी उनके उत्साह के अनुरूप प्रतीत हो रहा था।
उसने मीठे काले चावल के दलिया का कटोरा एक तरफ धकेल दिया और बारिश की धूसर चादर को घूरने लगा: उसे फिर से नोएल की याद आई और उसके अंदर गुस्सा फिर से उबल उठा। सब कुछ बेहद निराशाजनक था।
'सुप्रभात, रेने।'
उसने ऊपर देखा। सामने इंजीनियर था, सांवला, शांत और गरिमापूर्ण, खुली गर्दन वाली कमीज और हल्के भूरे रंग की पतलून पहने हुए। 'बोनजोर, रवि।'
‘यह देखा?’ इंजीनियर ने उस सुबह के टाइम्स ऑफ इंडिया की एक प्रति अपने सामने मेज पर फेंक दी। बुडजिंस्की ने उसे उठा लिया।
'यह क्या है?'
‘मुखपृष्ठ। इसे पढ़ें।’
वैलेंटाइन ब्रेटन मुकदमे के लिए वापस लौटेंगे
उन्होंने उसे ढूंढ लिया।
इंजीनियर बैठ गया और अपने लिए चाय डाली। 'कहानी के अनुसार, वह उनके पास आई थी। भारतीयों ने महीनों पहले ही उसकी तलाश छोड़ दी थी।'
मुझे इस पर विश्वास नहीं है।
‘मैं भी नहीं।’ उसने अपनी गोद में एक नैपकिन मोड़ा। ‘न ही नवाब को पता चलेगा। देखते हैं कि क्या वह जज को यह यकीन दिला पाता है कि एक औरत उस आदमी को

नहीं पहचानती जिसने उसे जान से मारने की कोशिश की।' उसने मेज पर रखी थाली से पपीते का एक टुकड़ा उठाया और अपना कांटा उठाया। 'अच्छी खबर सुनकर मुझे हमेशा भूख लग जाती है।'

अध्याय 50

वैलेंटाइन ब्रेटन को पहले वाराणसी के जनरल इन्फर्मरी में ले जाया गया था। लेकिन अगले दिन बुडजिंस्की ने उनके लिए दिल्ली और फिर वापस पेरिस जाने का इंतजाम किया। इसका खर्च उन्होंने अपनी जेब से उठाया था। दो सप्ताह तक वह हॉस्पिटल डेस इनवैलिड्स के बर्न यूनिट में जीवन और मृत्यु के बीच जूझती रहीं।

उसके चेहरे के बाएँ हिस्से, बाएँ हाथ और कंधे तथा बाएँ पैर के पिछले हिस्से पर दूसरे और तीसरे दर्जे के जलने के घाव थे। डॉक्टरों ने उसे स्ट्रेप्टोकोकल संक्रमण से बचाने के लिए हर चार घंटे में टेट्रासाइक्लिन का इंट्रामास्कुलर इंजेक्शन देने का आदेश दिया, अन्यथा यह संक्रमण उसकी जान ले सकता था।

पहले कुछ हफ्तों तक वह दर्द निवारक दवाओं के हल्के सहारे पर जी रही थी, जिसने उसे सबसे भीषण दर्द से बचाया। जब दवाएं बंद की गईं और वैलेंटाइन को पूरी तरह से होश आया, तो उसने किसी से बात नहीं की। उसने बुडजिंस्की से, डॉक्टरों से, किसी भी नर्स से या अपने दोस्तों से एक शब्द भी नहीं कहा।

एक मनोवैज्ञानिक ने बताया कि यह पोस्ट-ट्रॉमेटिक स्ट्रेस था।

बुडजिंस्की उससे अस्पताल में मिलने जाते रहे, लेकिन उसमें पहचान का कोई संकेत नहीं दिखा। उन्हें डर था कि उसके साथ जो कुछ हुआ था, उससे उसकी मानसिक स्थिति पूरी तरह से नष्ट हो गई थी।

तीन महीने बाद वैलेंटाइन ब्रेटन अस्पताल से डिस्चार्ज होकर गायब हो गईं। भारतीय अधिकारियों को उम्मीद थी कि उन्हें उनसे एक विस्तृत और निर्णायक बयान मिल जाएगा। लेकिन उन्हें वैलेंटाइन के बिना ही मिशेल क्रिश्चियन के खिलाफ अपना मामला आगे बढ़ाना पड़ा।

अफवाहें थीं; उन्हें एक निजी मनोरोग क्लिनिक में भर्ती कराया गया था; वह सुदूर डोर्डोग्ने में एक दूर के रिश्तेदार के साथ रहने चली गई थीं; उन्हें नेपाल के एक दूरस्थ बौद्ध मठ में देखा गया था।

अब वह भारत लौट रही थी। बुडजिंस्की उसे दोबारा देखने के लिए बेताब था।

वह उससे माफी मांगना चाहता था।

♦ ♦ ♦

बुडजिंस्की दोपहर से बीस मिनट पहले अदालत कक्ष में पहुँचे। भिखारी बेंचों पर सो रहे थे, नग्न बच्चे ज़मीन पर रो रहे थे, वकील भिखारियों की भीड़ में धक्का-मुक्की कर रहे थे और कानूनी दस्तावेजों के मोटे-मोटे गट्ठे पकड़े हताश दिखने वाले लोग किसी भी अधिकारी का ध्यान आकर्षित करने के लिए चिल्ला रहे थे जो उनकी बात सुन ले। कभी-कभार एक कौआ खुली खिड़की से अंदर उड़कर आता और घबराकर धक्का-मुक्की करती, मूर्ख भीड़ के सिर के ऊपर से ऐसे फड़फड़ाता जैसे पागलपन का संदेशवाहक हो।

उन्होंने प्रेस के लिए आरक्षित अनुभाग में अपनी सीट ढूंढी और प्रतीक्षा करने लगे। मिशेल को देखने से पहले ही उन्होंने उसकी आवाज़ सुनी; भारी बूटों और जंजीरों की खड़खड़ाहट के बाद प्रवेश द्वार पर पहरेदारों की एक टुकड़ी प्रकट हुई, जिसने उन्हें खाकी वर्दी की दीवार से घेर लिया। बुडजिंस्की को देखकर उन्होंने उसे व्यंग्यात्मक मुस्कान दी।

बुडजिंस्की ने नज़रें फेर लीं।

जब वह मुड़ा तो मिशेल अपने बगल में दुबके युवा अमेरिकी लेखक से फुसफुसा रहा था, जो जल्दी-जल्दी एक नोटबुक में कुछ लिख रहा था। अफवाहें थीं कि उसकी जीवन कहानी के लिए न्यूयॉर्क के प्रकाशक के साथ हुआ अनुबंध पचास हजार डॉलर का था।

‘वह बहुत ही सुंदर है, है ना?’

बुडजिंस्की मुड़ा। उसके पीछे कुर्सियों की कतार में दो युवतियाँ बैठी थीं, जिन्होंने पश्चिमी शैली की टी-शर्ट और जींस पहनी हुई थी। उनकी आँखें उत्साह से चमक रही थीं और मिशेल पर टिकी हुई थीं।

बुडजिंस्की ने कहा, 'वह एक निर्मम हत्यारा है।'

उनमें से एक ने कहा, 'वह निर्दोष है।'

बुडजिंस्की ने उनकी तरफ पीठ कर ली। मिशेल ने अब उन दोनों लड़कियों को देख लिया था और उनकी तरफ मुस्कुरा रहा था। वे चौंक गईं और कांप उठीं। उनमें से एक को कहते सुना, 'वह कितना सुंदर है! वह ऐसा कर ही नहीं सकता!'

अभियोजन पक्ष ने वैलेंटाइन को ब्रेटन बताया है।
एक सप्ताह में पहली बार, अदालत कक्ष में सन्नाटा छा गया। वकीलों का समूह भी शांत हो गया, क्योंकि वे पसीने से तर दर्शकों और पत्रकारों की भीड़ की तरह, उस महिला की एक झलक पाने के लिए अपनी गर्दनें गड़ाए बैठे थे, जिसके बारे में उन्होंने इतना कुछ सुना और पढ़ा था।
वह सोने की कढ़ाई वाली शुद्ध सफेद साड़ी पहनकर अंदर आईं। मुस्लिम चौदेरेई की शैली में उनका सिर और चेहरा ढका हुआ था। छह खाकी वर्दीधारी सैनिकों की सुरक्षा में उन्हें दरबार में ले जाया गया, जिन्होंने भीड़ को चीरते हुए आगे बढ़ने में उनकी मदद की।
बुडजिंस्की ने गर्दन उठाकर उसे देखने की कोशिश की। उसे बेंच की ओर ले जाया गया, वकीलों की भीड़ में उसके लिए आरक्षित स्थान पर। नवाब भी खड़े होकर उत्सुकता से उसे घूर रहे थे।
मोहिंदर सिंह भावहीन होकर इंतजार करते रहे।
बुडजिंस्की ने अपने चेहरे से पसीना पोंछा। वेलेंटाइन अब उसकी ओर पीठ करके खड़ी थी और पत्रकारों और वकीलों की भीड़ में खो गई थी।
सभी लोग इंतजार कर रहे थे। कमरे में केवल बिजली के पंखों की हल्की आवाज़ सुनाई दे रही थी।
यह भारतीय अदालत में एक दुर्लभ घटना थी। गवाह ने एफआईआर में पहले कोई बयान नहीं दिया था और वह क्या कहेगी, यह लोक अभियोजक के अलावा किसी को भी पता नहीं था।
मोहिंदर सिंह उसके बगल में आकर खड़ा हो गया। उसने उसके कान में कुछ फुसफुसाया, फिर जोर से बोला: 'कृपया हमें अपना नाम बताइए।'
वैलेंटाइन ने अपना घूंघट हटा दिया। उसके आसपास खड़े पुरुषों के मुंह से हैरानी भरी आह निकली। बुडजिंस्की को गहरा दर्द महसूस हुआ। उसकी कितनी सुंदरता बची थी?
फिर अचानक, वैलेंटाइन ने अपना सिर घुमाया। मानो वह किसी को ढूंढ रही हो।
शायद मुझे, बुडजिंस्की ने सोचा।
‘हे भगवान,’ उसने धीरे से कहा।
उसके चेहरे का एक हिस्सा वैसा ही था जैसा उसे याद था; एकदम सही। लेकिन दूसरा

हिस्सा... उस पर ताज़े ज़ख्मों के निशान थे, जिनसे उसकी नाक, होंठ और गाल की बनावट धुंधली हो गई थी। ऐसा लग रहा था मानो किसी मूर्तिकार ने मोम से किसी देवी का सिर बनाया हो, लेकिन उसे आग के बहुत पास रख दिया हो, जिससे चेहरे का आधा हिस्सा पिघल गया हो। यह कुछ हद तक पूर्णता थी, कुछ हद तक भयावहता। बुडजिंस्की को ऐसा महसूस हुआ जैसे उसका एक हिस्सा खून बह रहा हो और मर रहा हो।

यह मेरी ग़लती है।

फिर वह पीपी की ओर मुड़ गई।

‘कृपया हमें अपना नाम बताएं,’ उसने दोहराया।

‘वैलेंटाइन ब्रेटन।’

'आपकी उम्र कितनी है, मिस ब्रेटन?'

'इक्कीस।'

और आपकी राष्ट्रीयता क्या है?

‘फ्रेंच।’

बुडजिंस्की ने आवाजों की लय पर ध्यान केंद्रित किया, मोहिंदर की एकरस आवाज, वैलेंटाइन का मधुर लहजा, जो सामान्य औपचारिकताओं को दोहरा रहा था।

फिर: 'आप प्रतिवादी को कितने समय से जानते हैं?'

'मेरी उनसे मुलाकात लगभग अठारह महीने पहले पेरिस में हुई थी।'

‘और इस आदमी से आपका क्या रिश्ता था?’

वैलेंटाइन ने पहली बार मिशेल की ओर देखा। वे इतने करीब थे कि एक-दूसरे को छू सकते थे। मिशेल की आँखें आधी बंद थीं, उसका सिर पीछे की ओर झुका हुआ था, मानो वह किसी छोटे बच्चे को कहानी सुनाते हुए सुन रहा हो।

हम प्रेमी थे।

क्या यह सच नहीं है कि जब आप बैंकॉक में आरोपी के साथ थे, तब इंटरपोल के कैप्टन रेने बुडजिंस्की ने आपसे संपर्क किया और आपको आरोपी के संपर्क में रहने के लिए कहा क्योंकि वह कई हत्याओं के संदेह में था?

नवाब उछलकर खड़े हो गए। 'आपत्ति!'

जज मिश्रा आगे झुके। 'क्या यह प्रासंगिक है, पीपी?'

'जी हां, माननीय न्यायाधीश। इसका उद्देश्य अपराध के पीछे के मकसद का पता

लगाना है।'
'आपत्ति खारिज की।'
नवाब अपनी सीट पर वापस बैठ गया, उसका चेहरा झुंझलाहट से देवताओं की ओर मुड़ा हुआ था।
‘मुझे बताया गया था कि मिशेल संदेह के घेरे में है,’ वैलेंटाइन ने जवाब दिया।
‘तो क्या आप कैप्टन बुडजिंस्की के अनुरोध पर उनके पीछे वाराणसी गए थे?’
नहीं। मैं तो वैसे भी चला जाता।
पीपी ने इस विस्तृत प्रश्न को टाल दिया। 'और वाराणसी पहुंचने पर क्या हुआ?'
मेरे होटल में एक नोट मिला। मिशेल की तरफ से। वह चाहता था कि मैं अगले दिन उससे मिलूं।
‘और कैप्टन बुडजिंस्की ने आपको यह मुलाकात करने की सलाह दी थी?’
'हां। लेकिन, जैसा कि मैंने कहा, मैं वैसे भी चला जाता।'
‘क्या आपको पता था कि पुलिस उसे गिरफ्तार करने का इरादा रखती है? कि उसके खिलाफ गिरफ्तारी वारंट जारी किया गया था—’ मोहिंदर अपने नोट्स देखने के लिए झुका।
'हां, मुझे पता था। मैंने उसे चेतावनी दी थी।'
मोहिंदर चौंक गया। 'आपने उसे चेतावनी दी थी?'
'पुलिस उसे परेशान कर रही थी। मुझे विश्वास था कि वह निर्दोष है। जब मैंने उसे देखा, तो मैंने चिल्लाकर उससे कहा कि हम पर नज़र रखी जा रही है और हमें जितनी जल्दी हो सके वहां से निकल जाना चाहिए।'
मोहिंदर ने अपनी जैकेट की जेब में रुमाल ढूँढा। उसने अपने माथे से पसीना पोंछा और चश्मा नाक पर ठीक किया। 'फिर वह तुम्हें श्री बेदी के स्वामित्व वाले गेस्ट हाउस में ले गया।'
'यह सही है।'
'यहीं पर उसने तुम्हें नशीली दवा दी थी।'
नवाब फिर से अपने पैरों पर खड़ा हो गया, अब सतर्क था, खून की आहट महसूस कर रहा था। 'आपत्ति! सरकारी वकील गवाह को गुमराह कर रहा है!'
'अनुमत।'
मोहिंदर ने तेवर चढ़ाए और घबरा गया। 'क्या आप हमें अपने शब्दों में बता सकते हैं

कि उस बोर्डिंग हाउस में क्या हुआ था?'
‘मिशेल और मैंने फैसला किया कि अगर वह तुरंत वाराणसी से निकल जाए तो यह सबसे अच्छा होगा।’
बुडजिंस्की वैलेंटाइन का चेहरा नहीं देख पा रहा था, लेकिन पीपी को देख सकता था। छोटा सिख अब खूब पसीना बहा रहा था। वह लड़खड़ाने लगा था। 'क्या आपने तय किया कि उसे चले जाना चाहिए?'
'हां। मैंने पीछे रुकने का फैसला किया। उसके अकेले भाग निकलने की संभावना अधिक थी।'
‘तुम झूठ क्यों बोल रहे हो?’
'मैं झूठ नहीं बोल रहा हूँ!'
नवाब जज की बेंच से टेक लगाकर पीछे झुक गए और मौन प्रशंसा में ताली बजाते हुए बोले: 'शाबाश!'
कृपया हमें बताएं कि उसके बाद क्या हुआ।
‘कोई मेरे कमरे में घुस गया।’
'कौन?'
'मुझें नहीं पता।'
'तुम झूठ बोल रही हो!'
नवाब उछलकर खड़े हो गए। 'न्यायाधीश अपने ही गवाह को परेशान कर रहे हैं!'
जज मिश्रा अचंभित रह गए। बचाव पक्ष के वकील अब अभियोजन पक्ष के गवाह का बचाव करते प्रतीत हो रहे थे। उन्होंने मोहिंदर की ओर रुख किया। 'आपत्तियाँ स्वीकार हैं।'
‘जब यह... यह अज्ञात व्यक्ति आपके कमरे में घुस आया तो क्या हुआ?’
‘उसने मेरे मुंह पर कपड़ा रख दिया। उसमें से तेज गंध आ रही थी, इसलिए मुझे लगता है कि कपड़े पर कोई रसायन था। शायद क्लोरोफॉर्म। मुझे बस इतना ही याद है। मैं बेहोश हो गई थी। अगली बात जो मुझे याद है वह यह है कि मैं घाटों पर जाग गई। वह आदमी मुझे उठाकर पानी के किनारे ले जा रहा था।’
‘यही आदमी था!’ मोहिंदर ने मिशेल की ओर इशारा करते हुए चिल्लाकर कहा।
‘नहीं,’ वैलेंटाइन ने एकदम शांत भाव से कहा। ‘नहीं, मैंने तुम्हें बताया था, जिसने ऐसा किया, उसने मुझे अपनी बाहों में पकड़ रखा था। मैंने उसका चेहरा ध्यान से देखा था।

वह एक भारतीय था। वह मिशेल नहीं था। कोई और था। मिशेल मेरे साथ ऐसा नहीं कर सकता। वह मुझसे प्यार करता था। वह निर्दोष है।'
अदालत में सन्नाटा छा गया। अभियोजन पक्ष का मामला अपराध की पीड़िता के हाथों बुरी तरह धराशायी हो गया था। मुकदमा समाप्त हो गया।
मिशेल क्रिश्चियन को रिहा कर दिया जाएगा।
पत्रकार दरवाजे की ओर दौड़ पड़े। नवाब उछलकर खड़े हो गए और वैलेंटाइन की पीठ थपथपाने लगे। 'शाबाश! शाबाश!' वे चिल्ला रहे थे। 'आज न्याय हो गया!'
बुडजिंस्की ने उस तक पहुँचने की कोशिश की, लेकिन वकीलों और सैनिकों की भीड़ में उसकी दुबली-पतली, सफेद कपड़ों वाली आकृति खो गई। पीपी चिल्ला रहा था, 'वह झूठ बोल रही है! वह झूठ बोल रही है!'
अदालत कक्ष में केवल मिशेल ही ऐसा व्यक्ति था जो हिला तक नहीं था। वह अपनी जंजीरों में जकड़ा हुआ एकदम स्थिर बैठा था। वह हंस रहा था।
बुडजिंस्की किसी तरह अदालत कक्ष से बाहर निकलने में कामयाब रहा।
वैलेंटाइन! क्यों?
क्यों?

♦ ♦ ♦

बाहर सड़क पर काली और पीली रंग की एम्बेसडर कार आकर रुकी। बुडजिंस्की ने बालकनी से उनके आने का नजारा देखा। सफेद साड़ी पहने दुबली-पतली महिला कार से उतरी और बगीचे से होते हुए तेजी से बरामदे की ओर बढ़ी।
'कपिल उसे नीचा दिखाएगा,' इंजीनियर ने कहा। 'मैं तुम्हें अकेला छोड़ दूं, ठीक है, मेरे दोस्त?'
बुडजिंस्की ने कहा, 'धन्यवाद।'
इंजीनियर चला गया। कुछ देर बाद दरवाजा खुला और कपिल वैलेंटाइन को कमरे में ले आया।
कपिल ने झुककर अभिवादन किया और अपने पीछे दरवाजा बंद कर दिया।
'कैप्टन बुडजिंस्की।'
वह उसकी ओर एक कदम बढ़ा, उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करे, उसका अभिवादन कैसे करे। 'हैलो, वैलेंटाइन। कृपया बैठ जाइए।'

‘धन्यवाद।’ उसने बेंत की बनी एक कुर्सी चुनी, और उसकी निगाहें पतले घूंघट के पीछे से उसे निहार रही थीं। नक्काशीदार महोगनी की मेज पर एक चांदी की चायदानी रखी थी। बुडजिंस्की ने बिना चीनी वाली चाय के दो कप डाले।
‘मुझे नहीं लगा था कि मैं तुम्हें फिर कभी देख पाऊँगी। तुम्हारे अस्पताल से छुट्टी मिलने के बाद—’
‘मैं फ्रांस में नहीं रुक सकी। एक बार मिशेल मुझे एक जगह ले गया था। वह नेपाल में है। मैं वहां गई थी।’
'अच्छा ऐसा है।'
उसने उससे प्याला ले लिया। ‘आप कैसे हैं?’
ठीक है। आने के लिए धन्यवाद।
मैंने सुना था कि तुम मुझसे मिलना चाहते हो।
'बिल्कुल।'
‘आप जानना चाहते हैं कि मैंने ऐसा क्यों किया।’
उसने सोचा, वह अब भी उससे प्यार नहीं कर सकती। उसने उसके साथ जो किया उसके बाद तो बिल्कुल नहीं।
'हाँ।'
'मुझे माफ करना, रेने। मैं तुम्हें यह नहीं बता सकता। शायद एक दिन बता पाऊँगा।'
यह वह जवाब नहीं था जिसकी उसे तलाश थी। उसने अदालत में उसकी कहानी लिख रहे पत्रकार और अदालत में उसके पीछे बैठी उन दो लड़कियों के बारे में सोचा जो उस कमीने के साथ छेड़छाड़ कर रही थीं। 'बस मुझे बता दो कि तुम अब भी उससे प्यार नहीं करती हो।'
'जैसा कि मैंने रेने से कहा, कुछ चीजें ऐसी होती हैं जिन्हें अभी जानना बेहतर नहीं होता।'
‘वह वहां से नहीं निकल पाएगा, तुम्हें पता है। सिंगापुर और फिलीपींस से उसके प्रत्यर्पण के आदेश हैं। और अगर वे उसे नहीं पकड़ पाए, तो मैं उस कमीने का काम तमाम कर दूंगा।’
‘कृपया, कप्तान—’
‘मैं अब कप्तान नहीं हूं। उन्होंने मुझे निकाल दिया है।’
'मुझे माफ़ करें।'

‘चिंता मत करो। मैंने वही किया जो मुझे करना था।’ बुडजिंस्की ने सिगरेट जलाई। ‘मैं इन्हें छोड़ने की सोच रहा था। नोएल हमेशा मुझे इसके लिए टोकती रहती थी। लेकिन पिछले बारह महीनों में इसे छोड़ने का कोई अच्छा मौका नहीं मिला।’
‘शायद अब?’
'नहीं, यह भी सही समय नहीं लगता।' वे शर्मिंदा होकर चुपचाप बैठे रहे जबकि वैलेंटाइन अपनी चाय की चुस्की ले रही थी।
क्या मुझसे मिलने का यही एकमात्र कारण था?
बुडजिंस्की उठे और बालकनी पर जाकर खड़े हो गए। ‘देखिए, मुझे नहीं पता कि यह कैसे कहूँ... लेकिन... आपके साथ क्या हुआ...’
‘क्या आप क्षमा चाहते हैं?’
‘मैं कभी भी एक सच्चा कैथोलिक नहीं था, वैलेंटाइन। मैं बस तुम्हें यह बताना चाहता था कि मुझे खेद है। यह सब मेरी गलती थी। यह बात मुझे मरने तक सताती रहेगी।’
‘आपको पता है, जब मैं नेपाल में थी, तो वहाँ के भिक्षुओं ने मुझे कर्म के बारे में समझाने की कोशिश की। यह एक कर्ज की तरह है जिसे चुकाना ही पड़ता है। कभी यह हमारा अपना कर्ज होता है, कभी पिछले जन्म का। यह ऐसा कर्ज भी हो सकता है जो हमें अपने माता-पिता से विरासत में मिला हो। जो भी कर्ज था, मैंने अब उसे चुका दिया है।’ वह खड़ी हुई और उसने उसके कंधे पर हाथ रखा। ‘खुद को परेशान मत करो। मैंने जो किया वह मेरा फैसला था, और मेरी नियति थी। अगर मैं वाराणसी में उसके पीछे नहीं जाती, तो वह मेरे पीछे फ्रांस आ जाता। उसने एक बार मुझसे कहा था कि हमारी नियति एक दूसरे से जुड़ी हुई है। वह सही था।’
बस इतना कह दो कि तुम मुझे माफ कर देते हो।
‘माफ़ करने जैसा कुछ नहीं है। मैंने तो तुम्हें कभी दोषी ठहराया ही नहीं।’ वह मुड़ी और दरवाज़े की ओर चली गई। ‘अलविदा, कैप्टन।’
अब तुम कहाँ जाओगे?
मुझे नहीं पता। यह इस बात पर निर्भर करता है कि मिशेल का क्या होता है।
‘वैसे... क्या आपको पता है कि पेरिस पुलिस ने आपके पिता की मौत के मामले की फाइल दोबारा खोल दी है?’
वैलेंटाइन अपने पैरों पर लड़खड़ाती हुई प्रतीत हुई। एक पल के लिए बुडजिंस्की को लगा कि वह बेहोश हो जाएगी। उसने उसकी मदद करने के लिए हाथ बढ़ाया, लेकिन

उसने अपना हाथ ऊपर उठाया और कहा, 'मैं ठीक हूँ।'
मुझे लगा कि आपको यह पता होना चाहिए।
'मिशेल?'
उसने सिर हिलाया। 'क्या तुम अब भी उससे प्यार कर सकती हो?'
उन्होंने कहा, 'मैं आपको कभी यह नहीं समझा सकती कि मैं मिशेल के लिए क्या महसूस करती हूं।'
उसके पीछे दरवाजा धीरे से बंद हो गया। टैक्सी अभी भी सड़क पर उसका इंतजार कर रही थी। उसने सोचा कि क्या वह उसे फिर कभी देख पाएगा।

अध्याय 51

मिशेल को खाली कोठरी में ले जाया गया। एक गार्ड ने उसे कमरे के बीचोंबीच रखी बेंच पर धकेल दिया। उसे फिर से डंडाबेरी में जंजीरों से बांध दिया गया था ताकि वह अपने आगंतुक से मिल सके। पिछले एक साल से वह तीन कदम चौड़ी और पांच कदम गहरी एक तंग कोठरी में भूख से तपा हुआ रह रहा था और सो रहा था। उसे हर दिन एक चपाती, आधा कप खट्टा दूध, पतली हरी दाल की एक कटोरी और कुछ मसली हुई बीन्स का सूप मिलता था। उसे किसी से मिलने की अनुमति नहीं थी, न रेडियो, न अखबार। वह एक सख्त पत्थर के फर्श पर सिर्फ एक चिकने ऊनी कंबल के नीचे सोता था, दिन भर कैद से पागल हो चुके लोगों की कराह और बड़बड़ाहट सहता था; और रात में बड़े-बड़े काले चूहों के झुंड के उत्पात से जूझता था।
एक दीवार से एक जंग लगा पाइप निकला हुआ था, और उसमें से कभी-कभार भूरा पानी निकलता था। लेकिन उसके पास पानी का यही एकमात्र स्रोत था, इसलिए वह दिन हो या रात, इस कम मात्रा में मिलने वाले पानी को पीने के लिए अपने हाथों को थालकर भर लेता था।
मानसून के दौरान उनकी कोठरी में पानी भर गया।
जब भी उसे उसकी कोठरी से बाहर निकाला जाता था, तब उसे लोहे की हथकड़ियों में जकड़ा जाता था, जिससे उसके पैर और कलाई छिल गए थे और उनमें मवाद पड़ गया था। उसका पूरा शरीर जूँ और पिस्सू के काटने से हुए घावों से भरा हुआ था, जिनमें संक्रमण हो गया था।
निजी तौर पर, उसे उम्मीद थी कि अदालत उसे दोषी ठहराएगी। वे उसे सात साल की

सजा सुनाएंगे, शायद दस साल की, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। इस बीच, उसे उस हास्यास्पद किताब के लिए अग्रिम राशि मिल जाएगी जिसे अमेरिकी प्रकाशक उससे लिखवाना चाहता था और उससे वह तिहाड़ जेल से बाहर निकल सकता था।
लेकिन अगर उसे सिंगापुर या यहां तक कि थाईलैंड में प्रत्यर्पित किया जाता है, तो वहां त्वरित सुनवाई हो सकती है और उसे बचने का कोई रास्ता निकालने का मौका मिलने से पहले ही फांसी दी जा सकती है।
उन्हें एक चमत्कार की जरूरत थी।
दरवाजा खुला और वैलेंटाइन दो गार्डों के साथ अंदर आई। वह उसके सामने वाली मेज पर बैठ गई।
उसने अपना घूंघट हटाया। उसने उसे ठंडे भाव से देखा, हालाँकि उसकी बाईं आँख घावों के बेजान धब्बे से घिरी हुई थी। उसके होंठों का एक कोना घावों से जम गया था, जबकि दूसरा पछतावे भरी मुस्कान में मुड़ा हुआ था।
'हैलो मिशेल,' उसने अंग्रेजी में कहा।
'तुम वो आखिरी व्यक्ति हो जिसे मैं देखने की उम्मीद कर रहा था।'
'क्यों? मेरे और तुम्हारे बीच एक रिश्ता है, प्रिय। तुमने खुद ही यह कहा था।'
क्या तुम यहाँ जीत का जश्न मनाने आए हो?
नहीं। मैं... माफी मांगने आया हूँ।
'बैंकॉक के लिए? या कल के लिए?'
'कल? लेकिन... मैंने तुम्हारी मदद की थी। मैंने तुम्हें बचाया था।'
'मुझे बचाया? किसलिए? थाई लोगों के लिए?'
'थाई लोग?'
मुझे प्रत्यर्पित किया जाना है।
उसने तुरंत अंग्रेजी से फ्रेंच में बात करना शुरू कर दिया ताकि गार्ड समझ न सकें।
'कोई बात नहीं। मैं इसीलिए तो आई हूँ। मेरे पास एक योजना है।'
मिशेल ने पलकें झपकाईं। 'आगे बोलो।'
'तुम्हारे यहाँ होने की वजह मेरी गलती है। इसलिए तुम्हें यहाँ से बाहर निकालना मेरी ही जिम्मेदारी है।'
'कैसे?'
'मैं तुम्हें वर्दी और भेस बदलने का सामान दिलवा सकता हूँ। और पहरेदारों को रिश्वत

देने के लिए कुछ पैसे भी। मैं एक पहरेदार को पैसे देकर उसे तिहाड़ जेल में भिजवा दूँगा। फिर तुम बाहर निकल सकते हो।'

'तुम पागल हो।'

'क्या मैं ऐसा हूँ? यहाँ का वार्डन महीने में तीन सौ रुपये कमाता है। आपको क्या लगता है कि इसे थोड़ा कम अटपटा बनाने में कितना खर्च आएगा?'

'क्या आप यह सब व्यवस्थित कर सकते हैं?'

'बिल्कुल।'

'अगर मैं दीवारों के बाहर निकल जाऊं तो क्या होगा?'

मैं मुख्य द्वार के पास इंतजार करूँगा। मेरे पास वाहन होगा और हम सीधे रक्सौल में नेपाली सीमा तक जाएंगे। शहर से बाहर निकलने तक मैं तुम्हें पीछे छिपाकर रखूँगा।

'कब?'

'कल रात।'

'कितने बजे?'

ग्यारह बजे। अगली सुबह तक किसी को पता भी नहीं चलेगा कि तुम चली गई हो। नेपाल से हम दक्षिण अमेरिका के लिए उड़ान भरेंगे। मैंने सब कुछ तैयार कर लिया है - पासपोर्ट, नए कपड़े, सब कुछ। दो दिन में तुम सुरक्षित पहुँच जाओगी, और हम अपना जीवन फिर से शुरू कर सकेंगे।

उसकी आँखें चमक रही थीं, मानो कोई छोटा बच्चा उसकी स्वीकृति की उम्मीद कर रहा हो।

'मैंने तुम्हें कम आंका,' मिशेल ने कहा।

'समय समाप्त हो गया है,' गार्डों में से एक ने कहा।

वैलेंटाइन जाने के लिए खड़ा हो गया।

'तुम ऐसा क्यों कर रही हो?' मिशेल ने उससे पूछा।

'तुम्हें नहीं पता?'

मुझे लगा था कि तुम मुझसे नफरत करते हो।

'मैंने किया। अस्पताल में भर्ती रहने के दौरान, मैं लंबे समय तक बस यही सपने देखती रही कि तुम्हारी मृत्यु के हज़ारो तरीके क्या हो सकते हैं। लेकिन फिर मुझे एहसास हुआ कि अगर मैंने तुम्हें मार डाला, तो मैं अपने ही एक हिस्से को मार डालूँगी। मैं तुम्हें चाहती हूँ, मिशेल। मैं तुम्हें वापस चाहती हूँ।'

उसके पीछे दरवाजा बंद हो गया।
मिशेल उसे घूरता रहा। हे भगवान! उसे सच में लगता है कि मैं उसे वापस अपना लूँगा? उसके किए गए सारे कारनामों के बाद। और इस हालत में। ऐसी भयानक औरत के साथ संबंध बनाने के ख्याल से ही वह काँप उठा। काश वह उस सुबह वाराणसी में मर गई होती।
अब उसे उसे दोबारा मारना पड़ेगा।

♦ ♦ ♦

वैलेंटाइन चांदनी चौक की ओर चल पड़ीं, जो जामा मस्जिद और लाल किले के बीच स्थित एक प्रसिद्ध बाज़ार है। यह एक घुमावदार गलियों और गलियारों का जाल है, जहाँ 1956 की ऑस्टिन हीली के पुर्जों से लेकर .38 स्मिथ एंड वेसन रिवॉल्वर के गोला-बारूद तक सब कुछ मिल सकता था। पीतल के थूकदानों से छोटे हरे सांपों को वश में किया जा रहा था और पवित्र गायें छोटी दुकानों के रंगीन दरवाजों के सामने से धीरे-धीरे गुजर रही थीं। वहाँ हर तरफ मसालों और गोबर की दुर्गंध फैली हुई थी।
उसने खाकी वर्दी, सोने की चोटी, विग, नकली दाढ़ी और खाकी पगड़ी अलग-अलग खरीदी। उसे जामा मस्जिद के पास एक छोटी सी गहनों की दुकान में सैन्य प्रतीक चिन्ह, रिबन और पदक मिले। उसकी सूची में आखिरी वस्तु ने ही उसे सबसे ज्यादा परेशानी में डाला।
अंततः उसे वह चीज़ मिल गई जिसकी उसे तलाश थी, एक सुनसान गली के अंत में स्थित एक जर्जर हवेली में। खरीदारी महंगी थी और उसे ले जाना असंभव था। उसे इसे बाद में लेना होगा।
सोने के दांत वाले एक जैन से वैन काफी कम कीमत पर खरीदी गई थी। वैलेंटाइन को लगा कि यह चोरी की है। इसका कोई महत्व नहीं था। इसकी जरूरत सिर्फ कुछ घंटों के लिए ही होगी।
आखिरकार सब कुछ तैयार हो गया। उसने तिहाड़ जेल के एक गार्ड को पांच सौ रुपये दिए ताकि गत्ते का डिब्बा मिशेल को उसकी कोठरी में पहुँचा दिया जाए।
जल्द ही वह आज़ाद हो जाएगा। वह अपनी खुशी को मुश्किल से ही रोक पा रही थी।

♦ ♦ ♦

गार्ड ने दरवाजा खोला और एंडी रोसेन को अंदर धकेल दिया। दरवाजा उसके पीछे फिर से जोर से बंद हो गया।

बाहर खिड़की पर लगी सलाखों के पीछे दीवार पर टंगी मिट्टी के तेल की लालटेन से ही रोशनी आ रही थी। मिशेल कोने में बेसुध पड़ा सो रहा था।
एंडी दबे पांव उसकी ओर बढ़ा।
'मिशेल!'
कोई जवाब नहीं मिला। वह और करीब आया।
'मिशेल!'
हलचल मच गई और एंडी ने खुद को पीठ के बल लेटा हुआ पाया, मिशेल की कोहनी उसके गले पर दबी हुई थी। 'मैं तुम्हें कैसे मारूँ? क्या मैं तुम्हारी गर्दन तोड़ दूँ या धीरे-धीरे अपनी उंगलियों से तुम्हारा गला घोंट दूँ?'
एंडी ने उस हाथ को बुरी तरह से नोच डाला जिससे उसका गला घुट रहा था।
नहीं, कृपया... कुछ है क्या... औरत...
अचानक उसे फिर से सांस लेने की शक्ति मिली। मिशेल ने उसके बाल पकड़े और उसका सिर फर्श से ऊपर उठाया। 'बोलो।'
'एक गार्ड ने मुझे उस महिला... वैलेंटाइन... की तरफ से कुछ दिया... एक डिब्बा।'
'कहाँ है?'
एंडी अंधेरे में फर्श पर हाथ-पैर मार रहा था। उसने उसे अपनी ओर धकेला। 'मैंने इसे खोला नहीं है। कसम से।'
खिड़की के नीचे पीली रोशनी के छोटे से चौकोर हिस्से में मिशेल ने डोरी की जिल्द फाड़ दी। उसने अंदर रखी चीज़ों को छाँटा। वैलेंटाइन ने जो वादा किया था, वह सब कुछ उसमें था। यहाँ तक कि एक सस्ती घड़ी भी।
वैलेंटाइन के हाथ से लिखा एक नोट था: 'मुख्य द्वार। ग्यारह बजे। हॉर्न की आवाज़ सुनें। एक लंबा, दो छोटे।'
'मिशेल, अदालत में जो कुछ हुआ उसके लिए मुझे खेद है,' एंडी ने अंधेरे में कहीं से कहा। 'मुझे ऐसा करना पड़ा। मैं अब और बर्दाश्त नहीं कर सकता। खैर, मुझे पता था कि तुम कोई न कोई रास्ता निकाल लोगे।'
मिशेल ने कोई जवाब नहीं दिया।
'मैंने ठीक ही किया, है ना? मैंने उस महिला से कहा था कि मैं ये चीजें आपको पहुंचा दूंगा।'
अंधेरे से मिशेल की मुट्ठी निकली और उसने एंडी को सेल में दूर तक पटक दिया।

'चले जाओ।'
एंडी ने गार्ड को पुकारने के लिए चीख मारी। उसके पीछे कोठरी का दरवाजा जोर से बंद हो गया।

♦ ♦ ♦

मिशेल ने उस घड़ी में समय देखा जिसे वैलेंटाइन ने चुपके से अंदर लाया था। ग्यारह बजने में दस मिनट बाकी थे, तभी उसने अपनी गंदी सफेद टी-शर्ट और जींस उतारी और खाकी कुर्ता और शॉर्ट्स पहन लिए।
उनमें से एक अजीब सी गंध आ रही थी। मिशेल सोच रहा था कि वैलेंटाइन को वे कहाँ से मिले होंगे। शायद किसी बदबूदार बाज़ार में।
उसने बाकी बचा सामान खाली किया और मुस्कुराया। विग और दाढ़ी चिपकाने के लिए थोड़ी सी गोंद भी थी। उसने हर छोटी-बड़ी बात का ध्यान रखा था। उसने पगड़ी पहनी, इलास्टिक की पट्टी को ठुड्डी के नीचे कसकर बांधा और फिर खाकी रंग की पट्टियाँ और सैंडल पहने।
वह तैयार था।
उसने इंतजार किया।
कुछ मिनट बाद, उसने वह आवाज़ सुनी। एक कार का हॉर्न। एक लंबा हॉर्न, उसके बाद दो छोटे हॉर्न। यही उसका संकेत था।
मिशेल ने गार्ड को मुख्य वार्डन को बुलाने के लिए चिल्लाकर कहा। जब वे कोठरी में अकेले थे, तो उसने उसे वे बीस हजार रुपये दे दिए जो वैलेंटाइन ने वर्दी की जैकेट में लपेटकर बक्से के नीचे रखे थे।
वार्डन काफी प्रभावित हुआ। यह रकम लगभग छह साल के वेतन के बराबर थी। उसने कहा, 'मेरे साथ आइए।'
वह उसे बाहर व्यायाम के मैदान में ले गया। वहाँ सन्नाटा था। जेल की दीवारों के ऊपर एक भारी, पीला चाँद लटका हुआ था। मिशेल ने अपनी लाठी एक हाथ के नीचे दबा ली। उसने सोचा, यह तो अच्छा संकेत है।
अब हिम्मत दिखाते हुए इसका सामना करना होगा।
वह परिसर में शान से चलते हुए अपनी जांघ पर अपनी लाठी थपथपा रहा था। भीतरी द्वार के पास दो पहरेदार तेल के दीपक की रोशनी में खड़े थे। उसे देखते ही उन्होंने अपनी राइफलें उठाईं और सलाम किया।

मिशेल ने हिंदी में चिल्लाते हुए कहा: 'गेट खोलो! जल्दी करो!'
उनमें से एक ने चाबियों के गुच्छे से छेड़छाड़ की और लोहे का फाटक चरमराते हुए खुल गया। मिशेल इंतजार करता रहा। वह ज्यादा जल्दबाजी में दिखना नहीं चाहता था।
उसने दूसरे गार्ड को पकड़ा, उसकी राइफल छीन ली और रोशनी में उसकी जांच करने का दिखावा किया। फिर उसने राइफल को चौंके हुए सैनिक की बाहों में वापस पटक दिया।
'यह राइफल बहुत गंदी है। इसे साफ करो!'
जी साहब।
वह बाहर निकल गया
यह सब इतना आसान था। बहुत-बहुत आसान।

♦ ♦ ♦

भीतरी और बाहरी दीवारों के बीच एक और परिसर था। एक पत्थर के मेहराब में मुख्य द्वार थे, जो लोहे की कीलों से जड़े हुए विशाल द्वार थे, प्रत्येक चालीस फीट ऊँचा और दस फीट चौड़ा। इन्हें शायद ही कभी खोला जाता था। एक बड़े द्वार में एक छोटा दरवाजा बनाया गया था, और यहीं से नए कैदियों को लाया जाता था और - बहुत कम बार - रिहा किया जाता था।
एक अकेला गार्ड अंधेरे में आराम कर रहा था। मिशेल ने उसकी सिगरेट की रोशनी देखी।
'सावधान!' उसने गरजते हुए कहा।
उस आदमी ने हांफते हुए सिगरेट गिरा दी। उसकी राइफल जमीन पर गिर पड़ी। वह उसे उठाने के लिए झट से उठा।
'तुम्हारा नाम क्या है?' मिशेल ने गुस्से से पूछा।
'कॉर्पोरल शास्त्री,' उस व्यक्ति ने हकलाते हुए कहा।
"सुबह उठते ही सबसे पहले वार्डन के दफ्तर में हाजिर हो जाओ। तुमने अपनी वर्दी पर कलंक लगा दिया है! अब यह गेट खोलो!" गार्ड ने आदेश का पालन किया। मिशेल अंदर चला गया।
कुछ देर बाद उसने अपने पीछे दरवाजा जोर से बंद होने की आवाज सुनी।
उसने यह कर दिया था।

वह मुक्त था।
उसने सुनसान सड़क पर नज़र डाली। वैन लगभग पचास गज दूर खड़ी थी। वैन ने उसकी ओर हेडलाइट्स चमकाईं। वह जीत के अंदाज़ में अपनी छड़ी हवा में लहराते हुए उसकी ओर दौड़ा। छड़ी नाली में जा गिरी।
वह वैन बिल्कुल वैसी ही थी जैसी जंगल के हरे रंग की बस में वह हर दिन तिस हिज़ारी अदालत तक जाता था, एक पुरानी बेडफोर्ड कार, जिसमें खिड़कियां नहीं थीं। वैलेंटाइन कूदकर बाहर निकला और पीछे के दरवाजे के पास खड़ा हो गया, उसे उसके लिए खोलकर रखा।
'जल्दी!' उसने उस पर फुफकारा। 'अंदर चलो!'
वह अंदर कूदा, और उसने अपने पीछे दरवाजा जोर से बंद कर दिया। उसने नकली दाढ़ी उतार दी और हंसने लगा।

♦ ♦ ♦

'क्या अब आप पेरिस वापस जा रहे हैं?' इंजीनियर ने पूछा।
'जब तक वह मर नहीं जाता, तब तक नहीं।'
इंजीनियर ने बची हुई बीयर बुडजिंस्की के गिलास में डाल दी। 'वे उसे जाने नहीं देंगे। अगले कुछ दिनों में उसका प्रत्यर्पण कर दिया जाएगा।'
मुझे तो यकीन ही नहीं हो रहा। वो अब भी उससे प्यार कैसे कर सकती है?
'हमारे देश में चीजें बहुत सरल हैं, दोस्त। हम आम तौर पर महिलाओं को अपनी मनमानी नहीं करने देते। इंदिरा गांधी को छोड़कर, बेशक।'
'मुझे हैरानी होती है कि अगर नोएल यहाँ होती तो क्या कहती। शायद वो भी उसे माफ़ कर देती: 'अरे पापा, उसे छोड़ दो। उसका इरादा मुझे मारने का नहीं था। वो बस थोड़ा ज़्यादा उत्तेजित हो गया था।' शायद मैं ही अकेली हूँ जिसे उसके किए की परवाह है। क्या तुम्हें भी ऐसा ही लगता है, रवि?'
मैं कभी किसी महिला के विचारों को समझने की कोशिश नहीं करूंगा। लेकिन मुझे यह सोचकर दुख होता है कि उस लड़की के साथ जो हुआ वह बहुत शर्मनाक है। वह कभी बहुत खूबसूरत रही होगी।
'हां,' बुडजिंस्की ने सहमति जताते हुए कहा। 'वह थी।'

अध्याय 52

वैन पुरानी दिल्ली के यातायात में हिचकोले खाती हुई आगे बढ़ रही थी; रात के इस समय भी टैक्सियों, ट्रकों और मोटर रिक्शाओं का वही शोरगुल सुनाई दे रहा था। "तुम तो सच में प्रतिभाशाली हो, प्यारी," उसने मन ही मन सोचा। "काश तुम अब इतनी खूबसूरत होती।"

मुझे तुम्हें मारना पड़ेगा।

उसे अंधेरे में कुछ सरसराहट सुनाई दी। यहाँ घना अंधेरा था और उसे कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। फिर वही आवाज़ आई, सरसराहट और घिसटने की, जैसे कोई भारी और गीली चीज़ धातु के फर्श पर घिसट रही हो।

'वहाँ कौन है?' मिशेल ने कहा।

वह घबरा गया और पीछे के दरवाजे की ओर बढ़ा, हैंडल ढूंढने लगा। वहाँ कोई हैंडल नहीं था। उसने दरवाजे को धक्का दिया। बंद था।

उसे फिर से सरसराहट की आवाज सुनाई दी, और उसने खुद को कोने में फेंक दिया, जिससे वह जितना संभव हो उतना छोटा लक्ष्य बन गया।

वह क्या बकवास था?

'प्रेमी!'

घबराओ मत। वो तुम्हें कुछ नहीं करेगी, उसने तो बस तुम्हें तिहाड़ से छुड़ाया है। वह रेंगते हुए वैन के आगे पहुंचा और ड्राइवर के केबिन से अलग करने वाली धातु की दीवार पर मुक्का मारा।

'प्रेमी!'

फिर वही आवाज़। वो करीब आ रही थी।

उसने खुद को उससे दूर फेंक दिया, उसका शरीर वैन के दूसरे कोने से टकराया। हे भगवान! जो भी था, वह उसका पीछा कर रहा था।

उसने फिर से वैन की दीवार पर मुट्ठी मारी। वेलेंटाइन ने अब तक उसकी आवाज सुन ली होगी।

'मैं तुम्हें चाहती हूँ, मिशेल। मैं तुम्हें वापस चाहती हूँ।' वह उससे प्यार करती थी, उसे उसकी ज़रूरत थी, इसीलिए उसने उसके खिलाफ गवाही देने से इनकार कर दिया था।

'वैलेंटाइन! वैन रोको!'

उसने उसे जवाब क्यों नहीं दिया?

'प्रेमी!'

♦ ♦ ♦

उस सांप को बर्मा से पकड़ा गया था। वह एक जालीदार अजगर था, जो अजगर परिवार के सबसे बड़े अजगरों में से एक है, जिसकी कुंडली तीस फीट मोटी और घुमावदार होती है। आम तौर पर वह इंसानों से डरता है।

वह मिशेल को देख नहीं सका। उसके चेहरे के गड्ढों में मौजूद गर्मी के प्रति संवेदनशील अंगों ने सबसे पहले उसे महसूस किया, और फिर उसकी फुर्तीली जीभ ने कुर्ते पर लगी सूअर की चर्बी की गंध को सूंघ लिया। सूअर उसका पसंदीदा शिकार थे। वह हमला करने के लिए आगे बढ़ा।

वैन के धातु के फर्श से आ रही तीव्र कंपन से उसकी भूख और बढ़ गई। ये ध्वनियाँ उसके निचले जबड़े की विशाल हड्डी के माध्यम से उसके कान के पर्दे तक पहुँचीं और उसे पता चल गया कि उसका शिकार असहाय और भयभीत है।

इसके विशाल जबड़े खुले, जिससे सौ से अधिक सुई जैसे नुकीले दांत दिखाई दिए, जो छह चमकदार पंक्तियों में इसके गले की ओर झुके हुए थे। लेकिन ये दांत काटने या चबाने के लिए नहीं थे; इनका उद्देश्य शिकार को जकड़ कर रखना था, ताकि यह अपने कुंडलियों का उपयोग करके उसे कुचल सके।

मिशेल को लगा जैसे किसी चीज ने उसके पैर को काट लिया हो और वह चीख पड़ा। किसी चीज़ ने उसके कंधों को जकड़ लिया, एक विशालकाय तंबू जो किसी आदमी की बांह जितना मजबूत था। उसने खुद को छुड़ाने की कोशिश की, लेकिन व्यर्थ। मांसपेशियों की एक ठंडी पट्टी ने उसे बेरहमी से जकड़ लिया।

वह उसे घसीटते हुए ज़मीन पर घसीटने लगा और उसने फिर से अपनी चीख सुनी। एक और कुंडल उसकी कमर के चारों ओर लिपट गया। उसने चिल्लाने की कोशिश की, लेकिन उसके फेफड़ों में साँस नहीं थी। लोहे की पट्टियाँ उसका दम घोंट रही थीं। उसने अपनी एक पसली के टूटने की आवाज सुनी।

जब वैलेंटाइन उससे जेल में मिलने आई थी, तब उसने उसे यह कहते हुए सुना था, 'मैं तुम्हें चाहती हूं, मुझे तुम्हारी जरूरत है,' और अब उसे पूरी तरह से स्पष्ट हो गया था कि उसने क्या किया था।

उसके दिमाग में तेज रोशनी कौंध गई। उसे विश्वास नहीं हो रहा था कि इसका अंत

इस तरह होगा।
उसने अपनी आँखें बंद कीं और उसे सफेद कपड़ों में सजी एड्रिएन दिखाई दी, जो लाल रंग से रंगे नाखून से उसे इशारा कर रही थी, मानो उसे लकड़ी की सीढ़ियों से उतरकर साइगॉन की गलियों में अपने पीछे आने के लिए कह रही हो। इस बार वह उसे पीछे नहीं छोड़ने वाली थी।
मिशेल ने चीखने की कोशिश की: 'एड्रीएन!' लेकिन कोई आवाज़ नहीं निकली। उसने आखिरी बार उसे धोखा दिया था।

♦ ♦ ♦

वैलेंटाइन ने उसकी मृत्यु सुनी। उसकी अंतिम पीड़ा ने उसे कोई संतोष नहीं दिया। उसने सोचा था कि यह एक ऐसा क्षण होगा जिसका आनंद लिया जा सकेगा। वह गलत थी।
यह सरासर न्याय था, पूर्ण न्याय।
उसने अस्पताल डेस इनवैलिड्स के बर्न यूनिट के बारे में सोचा; एक शांत और एकांत दुनिया जहाँ हर कोई मास्क और लंबे हरे रंग के कीटाणुरहित वस्त्र पहने रहता था और यहाँ तक कि हवा भी साफ, छनी हुई और शुद्ध थी। पहले दो हफ्तों तक वह मॉर्फिन के हल्के सफेद बादलों पर तैरती रही थी।
लेकिन तभी दर्द शुरू हो गया।
यह उसकी बिना त्वचा वाली देह पर जलते हुए तेज सूरज की तरह था, पीड़ा की लहरें उसे तब तक कराहने, चीखने और सिसकने पर मजबूर कर रही थीं जब तक कि ड्यूटी पर मौजूद नर्स उसके लिए कुछ और मॉर्फिन नहीं ले आई।
उसने मिशेल को फिर से उसका नाम पुकारते सुना। वह वैन के किनारे पर लात मार रहा था। उसने खुद को इसके लिए तैयार किया। जल्द ही यह सब खत्म हो जाएगा।
उसने उस दिन के बारे में सोचा जब पट्टियाँ हटाई गई थीं और आईने में उसे उस भयानक अजनबी का सामना करना पड़ा था। क्या मिशेल इतनी मूर्ख और घमंडी थी कि उसे लगा कि वह उसे कभी माफ कर पाएगी?
दबी हुई चीखें धीरे-धीरे तेज होती गईं और फिर शांत हो गईं। अंतिम संघर्ष की कोड़े जैसी मार की आवाज ही रह गई, फिर सन्नाटा छा गया।
खत्म हो गया।

उपसंहार

मथुरा के बाहर, सड़क पर

आगरा

कांस्टेबल सुनील बोस ने अपने दाहिने हाथ में जेमी बार उठाया और सावधानी से काली बेडफोर्ड वैन की ओर बढ़े। वे पीछे के दरवाजे के पास इंतजार करने लगे।

सार्जेंट जगदीश शर्मा ने केबिन की जाँच की। खाली।

उन्होंने कहा, 'इसे खोलो।'

गांव वालों ने बताया कि वैन दिन भर से वहीं खड़ी थी, मानो उसे छोड़ दिया गया हो। शायद इसके पीछे कोई मामूली वजह हो। वे पता लगा लेंगे।

बोस ने जेमी (एक प्रकार का औजार) की नोक को पीछे के दरवाजों के बीच फंसाया और उसे खोलने के लिए जोर लगाया। ताला धमाके के साथ टूट गया।

सार्जेंट ने दरवाजा जोर से खोल दिया।

पहले तो उसे लगा कि वह किसी बेहद मोटी रस्सी के कुंडल को देख रहा है। फिर उसने उसे हिलते हुए देखा और उसे समझ आ गया कि वह क्या है। वह चौंक गया और एक कदम पीछे हट गया।

‘शिव,’ उसने फुसफुसाते हुए कहा।

अजगर ने पहले अपने शिकार को आकार देने की कोशिश की, कंधों के जोड़ों को अलग करने का प्रयास किया। लेकिन शिकार बहुत बड़ा निकला, और आदमी के धड़ और पैरों का निचला हिस्सा अभी भी उसके मुंह से बाहर निकला हुआ था, जो लार के चिपचिपे घोल से सना हुआ था। उसका शरीर बुरी तरह फूला हुआ था, अजगर बिना पलक झपकाए उनकी ओर घूर रहा था, असहाय, अपने ही शिकार का कैदी।

बोस ने मुंह फेर लिया और जमीन पर उल्टी कर दी।

शर्मा ने अपना सिर हिलाया। वह सोच रहा था कि मुख्यालय में लोग इस बारे में क्या प्रतिक्रिया देंगे।

पेरिस

रेने बुडजिंस्की कब्रगाह के पास जेब में हाथ डाले खड़े थे। यहाँ एकदम शांति थी और सुबह की धुंध ने शहर के शोर को दबा रखा था। नोएल को एक छोटे से बीच के पेड़ के नीचे दफनाया गया था। साफ मौसम में उसे शहर के क्षितिज का निर्बाध दृश्य दिखाई देता था। उसे यह दृश्य बहुत पसंद आता।

वह घुटनों के बल बैठ गया, समाधि के नीचे रखे फूलदान से पुराने फूल हटाकर उनकी जगह ताजे लाल गुलाब रख दिए। उसकी मोटी भूरी उंगलियाँ उन्हें सजाने में थोड़ी अनाड़ी थीं, और कुछ देर बाद जाकर वह संतुष्ट हुआ।

‘नोएल, अभी मेरे साथ एक लड़की रह रही है,’ उसने फुसफुसाते हुए कहा। ‘नहीं, ऐसा नहीं है जैसा तुम सोच रही हो। हम प्रेमी नहीं हैं। वह तुमसे भी छोटी है। सुंदर? हाँ, बहुत सुंदर। बस इन निशानों को छोड़कर... उसने बहुत मुश्किल समय देखा है। मैं उसकी देखभाल कर रहा हूँ। दुनिया में वापस जाने से पहले उसे किसी की देखभाल की ज़रूरत है। मैं आखिरकार पिता बनने की कोशिश कर रहा हूँ। मुझे पता है तुम इस पर हँसोगी। लेकिन मुझमें क्षमता है, तुम्हें पता है।’ वह खड़ा हो गया और अपनी रचना की प्रशंसा करने लगा। ‘तुम्हें वह पसंद आती। वह बिल्कुल तुम्हारे जैसी है।’

उसने अपनी जेब में सिगरेट के लिए हाथ डाला, एक सिगरेट निकाली, फिर अपना इरादा बदल दिया। उसने उसे वापस पैकेट में रख दिया। 'वह मुझे सिगरेट छुड़वाने की कोशिश कर रही है। मुझे पता है कि तुम भी उसके साथ होती। अलविदा जान। अच्छी नींद लेना।'

वह मुड़ा और द्वार की ओर चलने लगा। धुंध छंटने लगी और सुबह की हवा मीठी महकने लगी।

कॉलिन फाल्कनर द्वारा लिखित अन्य रचनाएँ:

डीआई चार्ली जॉर्ज क्राइम सीरीज़।

ल्यूसिफर फॉल्स

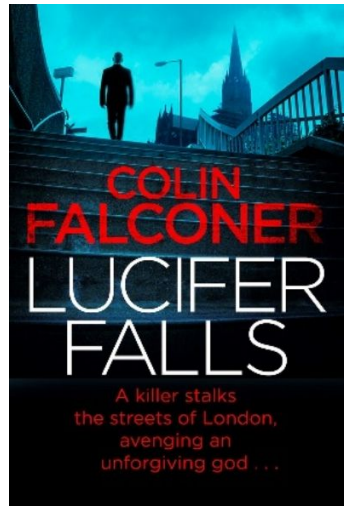

'प्रामाणिकता से भरपूर। ऐसे किरदारों से भरा हुआ जिन्हें आप मुझे सचमुच परवाह है... मैंने आखिरी कुछ अध्याय नहीं पढ़े। मैंने उन्हें चट कर लिया। यह एक शानदार अनुभव था।
एम. डब्ल्यू. क्रेवन (द पपेट शो के लेखक)

मासूमियत मर जाती है

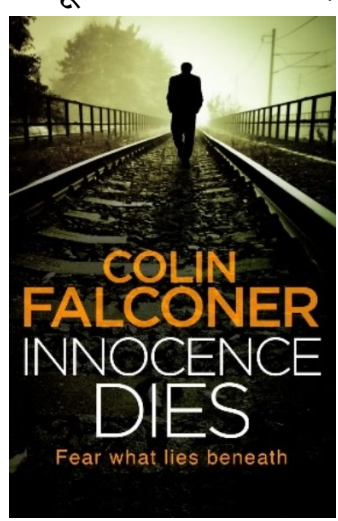

तीसरी पुस्तक, 'एन्जिल्स वीप', 2020 में प्रकाशित होगी।
कॉलिन फाल्कनर की और भी किताबें देखने के लिए, यहाँ जाएँ: colinfalconer.org.